विश्वास और अविश्वास

चर्चाएँ और तुलनाएँ

रिसाले-ए-नूर संग्रह

विश्वास और अविश्वास

चर्चाएँ और तुलनाएँ

बेदिउज्जमां ने नर्सी से कहा

अनुवादक:
हुसेन अकारसु

न्यू जर्सी

मूल रूप से तुर्की में इमान वे कुफ़ूर मुवाज़ेनेलेरी, सहदमार यायिनलारी के रूप में प्रकाशित हुआ।
इस्तांबुल, 2005

14 13 12 11 1 2 3 4

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.
345 क्लिफ्टन एवेन्यू, क्लिफ्टन, एनजे, 07011,
यूएसए

www.thelightpublishing.com

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा उपलब्ध है

आईएसबीएन 978-1-59784-265-6 (हार्डकवर)

द्वारा मुद्रित
Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

विषयसूची

प्रस्तावना: विश्वास और अविश्वास के बीच तुलना ix

पहला शब्द: बिस्मिल्लाह का मूल्य .... 1 दूसरा शब्द: संतोष का रास्ता .... 5 तीसरा शब्द: सही रास्ता चुनना .... 7 चौथा शब्द: निर्धारित प्रार्थनाओं का मूल्य .... 9 पाँचवाँ शब्द: विश्वासियों के लिए सही प्रशिक्षण .... 11 छठा शब्द: सर्वोच्च लेन-देन .... 15 सातवाँ शब्द: मानव सुख का द्वार .... 21 आठवाँ शब्द: धर्म की आवश्यकता .... 25 बारहवाँ शब्द: कुरान की बुद्धिमत्ता के बीच एक संक्षिप्त तुलना

और मानव दर्शन और वैज्ञानिकता .... ३१ तेरहवाँ वचन: युवा लोगों और कैदियों के साथ बातचीत .... ३३ दुखी, युवा लोगों के एक समूह के लिए एक चेतावनी और सबक .... ३५ कैदियों के साथ बातचीत .... ३८ कैदियों के लिए एक प्रभावी सांत्वना .... ४० कैदियों को सलाह .... ४१ कैदियों के बीच भाईचारे की आवश्यकता .... ४२ एक महत्वपूर्ण मामला .... ४३ चौदहवाँ वचन: मेरी असावधान आत्मा के लिए एक चेतावनी सबक .... ४५ सत्रहवाँ वचन: सांसारिक जीवन का अर्थ, और

सांसारिक दुर्भाग्य के लिए उपाय .... 47 पहला स्टेशन .... 47 दूसरा स्टेशन: एक प्रार्थना .... 50 “मैं उनसे प्रेम नहीं करता जो बैठते हैं” 53

मार्गदर्शित और असावधान लोगों की दुनियाओं का वर्णन............. 56

तेईसवाँ वचन: विश्वास के गुण और हमारे दुख और सुख पर

टिप्पणियाँ .... 59 पहला

अध्याय .... 59 दूसरा अध्याय: मानवीय दुख और सुख

पर पाँच टिप्पणियाँ .... 67 चौबीसवाँ वचन: प्रेम, उपासना और धन्यवाद .... 81 पच्चीसवाँ वचन: कुरान की चमत्कारिकता या अद्वितीयता ... 89 तीसरी किरण की दूसरी चमक: कुरान की सदैव ताज़गी .... 89 ग्यारहवीं किरण: विश्वास के कुछ फल 95

दसवें विषय का परिशिष्ट: विश्वास सारे उदासी और अकेलेपन को खुशी में बदल देता

है .... ९५ छब्बीसवाँ वचन: ईश्वरीय नियति में विश्वास और जिद्दी, अहंकारी आत्मा को चुप कराना ....

९७ तीसवाँ वचन: अहंकार या मानव स्वत्व का प्रदर्शन .... १०१ बत्तीसवाँ वचन: विनाश का मार्ग

और खुशी का रास्ता 115

पहली झलक: पैगम्बर योना की प्रार्थना के साथ ईश्वर की शरण

लेना .... 123 सत्रहवीं झलक: दूसरा यूरोप और कुरान के छात्र .....127 चौबीसवीं झलक: महिलाओं के लिए ड्रेस कोड .... 135 पहला अक्षर: प्रतीकात्मक प्रेम और सच्चा प्रेम .... 141 नौवां अक्षर: मानवीय भावनाओं या झुकावों का उन्मुखीकरण, और

ईमान (विश्वास-विश्वास) और इस्लाम (मुस्लिम होना) .... 143 उनतीसवाँ अक्षर: ईश्वर आकाशों और धरती का प्रकाश है .....147 ग्यारहवीं किरण: विश्वास के कुछ फल .... 151 दूसरे मामले का सारांश .... 151 तीसरा

मामला .... 154 चौथा

मामला 158

आठवें मामले का सारांश .... 160 पंद्रहवीं किरण: निर्माता से स्वयं निर्माता के बारे में पूछना .... 167 उनतीसवीं किरण: विश्वास सबसे बड़ा आशीर्वाद क्यों है

मानव जाति के लिए .... 173 पहला

बिंदु .... 173 दूसरा

बिंदु .... 176 तीसरा

बिंदु 176

चौथा बिन्दु .... 177 छठा
बिन्दु .... 178 सातवाँ
बिन्दु .... 178 आठवाँ
बिन्दु .... 180 सत्य की
झलक .... 181 प्रतिनिधित्वों या
आदर्श रूपों की दुनिया में एक सभा में: इस्लाम और आधुनिक सभ्यता के बीच तुलना, तथा
वैज्ञानिक प्रतिभा और इस्लाम के मार्गदर्शन के बीच
तुलना .... 181 सभी सच्चे दर्द गुमराही में हैं, और सभी सच्चे सुख विश्वास में हैं: कल्पना में सजे
एक महान सत्य 188

सूचकांक 195

प्रस्तावना

विश्वास और अविश्वास के बीच तुलना सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है।

रिसाले-ए-नूर संग्रह में महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं , जो रिसाले (पत्र) से बनी हैं, जिनमें अविश्वास और अविश्वास की ठोस शब्दों में तुलना की गई है। रिसाले-ए-नूर संग्रह में बेदीउज्जमान सईद नूरसी (1877-1960) की रचनाएँ शामिल हैं, जो इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों के सबसे प्रभावी और गहन प्रतिनिधियों में से एक होने के नाते, तुर्की में बीसवीं सदी की दूसरी तिमाही में इस्लाम के समग्र पुनरुद्धार की शुरुआत की। उन्होंने अपना जीवन इस्लाम के प्रति प्रेम और जोश से भरा हुआ बिताया, एक बुद्धिमान और संतुलित सक्रियता का पीछा करते हुए जो ठोस तर्क पर आधारित थी, और कुरान और पैगंबर के उदाहरण का अनुसरण किया।

रिसाले -ए-नूर आधुनिक लोगों को उनके अपने शब्दों में इस्लाम और आस्था की व्याख्या करता है और उनके आधुनिक दिमाग को संबोधित करता है। आस्था और अविश्वास दोनों का विश्लेषण करते हुए, उन्होंने इस्लामी आस्था के मूल तत्वों को साबित करने और मानव जीवन में ईश्वर की पूजा के अर्थ और महत्व को समझाने के लिए स्पष्ट रूप से तर्कपूर्ण तर्कों का इस्तेमाल किया।

आसानी से समझ में आने वाली कहानियों, तुलनाओं और स्पष्टीकरणों का उपयोग करते हुए, सैद नूरसी ने स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत किए, जो दर्शाते हैं कि आधुनिक वैज्ञानिक खोजें वास्तव में धर्म की सच्चाईयों का समर्थन और सुदृढ़ीकरण करती हैं। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि और सभी आंतरिक और बाहरी सुविधाओं को संबोधित करने की कुरानिक पद्धति का उपयोग किया, ताकि लोगों को सृष्टि की वास्तविक प्रकृति और उद्देश्यों को समझने के लिए ब्रह्मांड और उसके कामकाज का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। यह बदले में, एक निर्माता के गुणों और भगवान के सेवकों के रूप में उनके अपने कर्तव्यों को सीखने की ओर ले जाता है।

सईद नूरसी ने ब्रह्माण्ड की वास्तविक प्रकृति को उसके रचयिता के व्यापक संकेत के रूप में समझाया, तथा स्पष्ट तर्कों के माध्यम से दिखाया कि जब ब्रह्माण्ड को इस प्रकार पढ़ा जाए तो विश्वास के सभी मूल सिद्धांतों को तर्कसंगत रूप से सिद्ध किया जा सकता है।

चूंकि विश्वास आधुनिक विज्ञान पर आधारित है, इसलिए यह भौतिकवाद, प्रकृतिवाद और नास्तिकता से अछूता और दृढ़ रहता है।

ऐसे विश्वासी सभी वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को ब्रह्मांड की कार्यप्रणाली को उजागर करने के रूप में देखते हैं। ब्रह्मांड को एक विशाल और अनंत के रूप में देखना

एक जटिल और अर्थपूर्ण एकीकृत पुस्तक जो अपने एकल लेखक का वर्णन करती है, सभी खोजें और प्रगति विश्वास को मजबूत, गहरा और विस्तारित करती हैं। इस प्रकार उनकी सबसे बुनियादी ज़रूरतें—परमेश्वर के सबसे सुंदर नामों और गुणों को पहचानकर उसकी आराधना करना और उसके नियमों का पालन करना—पूरी हो जाती हैं।

खुद सईद नूरसी ने रिसाले-ए-नूर को बुद्धिमानी भरे कुरान की सच्ची व्याख्या के रूप में वर्णित किया है जो इसकी चमत्कारिकता से उत्पन्न होती है। ठोस और तर्कसंगत तर्कों के माध्यम से इस्लामी विश्वास के छह स्तंभों को साबित करने और मानवीय विवेक और मूल प्रकृति को गवाह के रूप में पेश करने के अलावा, विशेष रूप से तुलनाओं के माध्यम से यह विश्वास और अविश्वास के बीच के अंतर और वास्तविक प्रकृति को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है। यह दर्शाता है कि गुमराही में इस दुनिया में भी एक तरह का नर्क है, जबकि विश्वास में एक तरह का स्वर्ग है। यह पापों, बुरे कामों और निषिद्ध सुखों में गंभीर पीड़ाओं को दर्शाता है, और साबित करता है कि स्वर्ग के समान सुख अच्छे कर्मों और सद्गुणों और धर्म की सच्चाइयों में पाए जाते हैं।

रिसाले-ए-नूर के बारे में निम्नलिखित प्रश्न पूछा गया : "ऐसा क्यों है कि इसके दुर्भावनापूर्ण, जिद्दी विरोधियों द्वारा इसके विरुद्ध लगातार किए जा रहे हिंसक हमलों और इसके साथ उनके क्रूर व्यवहार के बावजूद, तथा इसे नष्ट करने और लोगों को इससे दूर भगाने के लिए इसके विरुद्ध उनके शर्मनाक झूठ और प्रचार के बावजूद, रिसाले-ए-नूर अभूतपूर्व तरीके से फैल रहा है और देश-विदेश में बड़े उत्साह के साथ पढ़ा जा रहा है, लोगों के दिलो-दिमाग पर छा रहा है?" जो उत्तर दिया गया वह ऐसा था मानो वह विश्वास और अविश्वास के बीच तुलना का वर्णन कर रहा हो। यह इस प्रकार है:

रिसले-ए-नूर, चमत्कारी होने या अद्वितीय होने के आधार पर, बुद्धिमानी भरे कुरान पर एक सच्ची टिप्पणी होने के नाते, यह दर्शाता है कि गुमराही में इस दुनिया में भी एक तरह का नर्क है, जबकि ईमान में एक तरह का जन्नत है। यह पापों, बुरे कामों और निषिद्ध सुखों में होने वाली पीड़ाओं की ओर इशारा करता है, और दर्शाता है कि अच्छे कामों और सद्गुणों और धर्म की सच्चाइयों में जन्नत के सुख जैसे सुख पाए जाते हैं। इस तरह यह उन समझदार लोगों को बचाता है जो बुराई और गुमराही में गिर गए हैं। क्योंकि इस समय दो भयानक वास्तविकताएँ हैं:

पहला : चूँकि मानवीय भावनाएँ, जो चीज़ों के परिणामों के प्रति अंधी हैं और भविष्य की ढेर सारी खुशियों के बजाय तत्काल आनंद के एक औंस को प्राथमिकता देती हैं, मन और तर्क पर हावी हो गई हैं, इसलिए उनके दुर्गुणों से भटके हुए लोगों को बचाने का एकमात्र तरीका उन्हें वह दर्द दिखाना है जो उनके स्पष्ट सुखों के पीछे छिपा है और इस तरह उनकी भावनाओं को परास्त करना है। जैसा कि आयत से संकेत मिलता है, वे वर्तमान, सांसारिक जीवन को परलोक के बजाय चुनते हैं (14:3), यहाँ तक कि वे लोग भी जो विश्वास करते हैं और जानते हैं कि वे क्या चाहते हैं।

आख़िरत की हीरे जैसी नेमतों और सुखों का एक निश्चित हिस्सा सांसारिक सुखों को तरजीह देता है, जो कांच के टुकड़ों की तरह हैं जो जल्द ही उनके ऊपर टूटकर बिखर जाएंगे। इसलिए, लोगों (ईमान या अविश्वास के) को इस वास्तविकता और दुनिया के प्रति प्रेम के कारण गुमराह लोगों का अनुसरण करने से बचाने का एकमात्र तरीका उन्हें गुमराही के रास्ते में मौजूद नारकीय यातनाओं और दर्द को दिखाना है। यही वह तरीका है जिसका रिसाले-ए-नूर अनुसरण करता है। क्योंकि इस समय, पूर्ण अविश्वास से आने वाली हठधर्मिता और वैज्ञानिक भौतिकवाद या वैज्ञानिकता और बुराई की लत के कारण होने वाली गुमराही के सामने, केवल दस या बीस में से एक को ही बुराई से दूर किया जा सकता है और नरक के अस्तित्व और उसकी यातनाओं को साबित करके, उन्हें सर्वशक्तिमान ईश्वर का एक निश्चित ज्ञान देकर इसे छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। हालाँकि, इस निर्देश को प्राप्त करने के बाद भी, यह अभी भी संभव है कि ऐसे लोग कहें: "ईश्वर क्षमाशील और दयावान है, और नरक बहुत दूर है," और अपने व्यभिचार में लगे रहें। उनके दिल और आत्मा उनकी भावनाओं से पराजित हो जाते हैं।

इस प्रकार, विश्वास और अविश्वास के बीच अपनी अधिकांश तुलनाओं के माध्यम से अविश्वास और गुमराही की इस दुनिया में दुखद और भयानक परिणामों को दिखाते हुए, रिसाले-ए-नूर सबसे जिद्दी और अभिमानी लोगों को भी उन अशुभ, अवैध सुखों के संबंध में घृणा महसूस कराता है, जिससे वे पश्चाताप करते हैं। छठे, सातवें और आठवें वचन में छोटी तुलना, और बत्तीसवें वचन के तीसरे चरण में लंबी तुलना सबसे अधिक भटके हुए और गुमराह व्यक्ति को उनके द्वारा अनुसरण किए जा रहे मार्ग से दूर कर देती है, जिससे उन्हें जो सिखाया जाता है उसे स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जाता है। एक उदाहरण के रूप में, मैं संक्षेप में उन कथनों को बताऊंगा जो प्रकाश की आयत (24:35) - जो ईश्वर के साथ आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है - ने मुझे कल्पना की यात्रा पर दिखाया, जो वास्तव में वास्तविकता थी। जो लोग इसका विस्तृत विवरण चाहते हैं , वे सिक्के-ए-तस्दीक-ए-गायबी (अदृश्य की पुष्टि करने वाली मुहर) के अंत का संदर्भ ले सकते हैं।

उस काल्पनिक यात्रा के दौरान मैंने देखा कि पशु जगत को भोजन की आवश्यकता है, और मैंने इसे भौतिकवादी दर्शन के चश्मे से देखा। उनकी असंख्य आवश्यकताओं और भयंकर भूख के सामने उनकी कमजोरी और नपुंसकता ने उस राज्य को सबसे दयनीय और दर्दनाक दिखाया। चूँकि मैं गुमराह और असावधान लोगों की आँखों से देख रहा था, इसलिए मैं चिल्लाया। फिर अचानक मैंने कुरान की बुद्धि और विश्वास की दूरबीन से देखा कि ईश्वर का नाम जो दयालु है, वह चमकते सूरज की तरह सर्व-प्रदाता के संकेत में उदय हुआ था, और उस भूखे, दुखी पशु जगत को अपनी दया के प्रकाश से चमका रहा था।

फिर मैंने पशु जगत में एक और दयनीय क्षेत्र देखा

जो अंधकार में घिरा हुआ था और जहाँ युवा अपनी ज़रूरत और बेबसी से जूझ रहे थे। यह किसी को भी दया आने के लिए काफ़ी था। मुझे ग़लत राह पर चलने वाले लोगों की नज़र से देखने का पछतावा हुआ। अचानक, विश्वास ने मुझे अलग-अलग नज़रिए दिए और मैंने देखा कि नाम सर्वशक्तिमान करुणामय स्नेह और कोमलता के चिह्न के साथ उभर रहा है। इसने उस दर्दनाक दुनिया को इतने सुंदर और प्यारे अंदाज़ में एक ख़ुशहाल दुनिया में बदल दिया और इसे इस तरह से रोशन कर दिया कि मेरी शिकायत और दुख के आँसू खुशी और धन्यवाद के आँसुओं में बदल गए।

फिर मानवता की दुनिया मुझे सिनेमा के पर्दे पर दिखाई दी। गुमराह लोगों की दूरबीन से फिर से देखने पर, मैंने उस दुनिया को इतना अंधकारमय और भयानक देखा कि मैं अपने दिल की गहराइयों से चिल्ला उठा। मनुष्य की इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएँ अनंत काल तक फैली हुई हैं; उनके पास ऐसे विचार और धारणाएँ हैं जो पूरे ब्रह्मांड को घेर लेती हैं और शाश्वत जीवन, शाश्वत सुख और स्वर्ग के लिए गंभीर इच्छाएँ और तड़प होती हैं। उनके पास जन्मजात क्षमताएँ और शक्तियाँ हैं जो अप्रतिबंधित और स्वतंत्र हैं। साथ ही, उनकी कमज़ोरी, नपुंसकता और बहुत ही संक्षिप्त जीवन के बावजूद, उनकी असंख्य ज़रूरतें और उद्देश्य हैं, और वे अनगिनत विरोधियों के हमलों और अंतहीन आपदाओं के प्रहारों के संपर्क में हैं। मौत के निरंतर खतरे के तहत, वे दयनीय परिस्थितियों में एक संक्षिप्त और उथल-पुथल भरा जीवन जी रहे हैं। मृत्यु और वियोग के निरंतर आघातों से पीड़ित और कष्ट में अपनी आजीविका के लिए प्रयास करते हुए - हृदय और अंतरात्मा के लिए सबसे अधिक पीड़ादायक और भयावह स्थिति - वे सीधे कब्र की ओर बढ़ रहे हैं, जो गुमराह लोगों को हमेशा के लिए अंधकार का द्वार प्रतीत होता है। मैंने देखा कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से और समूहों में अंधकार के उस कुएं में फेंका जा रहा है।

मानवता की दुनिया को अंधकार की ऐसी परतों के नीचे देखकर मैं अपने हृदय, आत्मा और मन से, बल्कि अपनी सारी शक्तियों और अपने अस्तित्व के सभी कणों से चिल्लाने ही वाला था, कि तभी कुरान से निकलने वाली आस्था की रोशनी और शक्ति ने गुमराही के इन चश्मों को तोड़ दिया, और मुझे देखने का एक अलग माध्यम प्रदान किया।

मैंने देखा कि ईश्वर का नाम जो न्यायी है, वह सर्वज्ञ के चिह्न में सूर्य की तरह उदय हुआ, सर्वदयालु का नाम सर्वदानी के चिह्न में, सर्वदयालु का नाम सर्वक्षमा करने वाले के चिह्न में, सर्वपुनरुत्थान करने वाले का नाम सर्वस्व प्राप्त करने वाले के चिह्न में, सर्वपुनरुत्थान करने वाले का नाम सर्वकृपा करने वाले के चिह्न में, तथा सर्वपालक का नाम प्रभु के चिह्न में। उन्होंने मानवता की उस पूरी अंधेरी दुनिया को प्रकाशित कर दिया, जिसके भीतर कई अन्य दुनियाएँ हैं। उन्होंने इन नारकीय स्थितियों को दूर किया और, द्वार खोले।

परलोक की चमकदार दुनियाओं की खिड़कियाँ मानवता की दुनिया पर प्रकाश बिखेर रही थीं। मैंने कहा: “सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं; अस्तित्व में मौजूद कणों की संख्या के लिए ईश्वर का धन्यवाद!” मैंने देखा और दृष्टि से उत्पन्न होने वाली निश्चितता की सीमा तक जाना कि विश्वास में इस दुनिया में भी एक तरह का स्वर्ग है, जबकि गुमराही में एक तरह का नर्क है।

फिर धरती का साम्राज्य दिखाई दिया। कल्पना की उस यात्रा में दर्शनशास्त्र के अंधकारमय, काल्पनिक नियम और धर्म का पालन न करने वाले विज्ञान के नियमों ने मेरी कल्पना के सामने एक भयावह दुनिया प्रस्तुत की। अत्यंत प्राचीन पृथ्वी के जहाज पर अंतरिक्ष में यात्रा करते हुए - जो एक वर्ष में उतनी दूरी तय करती है जितनी दूरी तय करने में मनुष्य को पच्चीस हजार वर्ष लगेंगे, जिसकी चाल तोप के गोले से सत्तर गुना तेज है, और जो एक ऐसी संरचना है जो किसी भी क्षण टूट सकती है और जिसके भीतरी भाग निरंतर परिवर्तनशील और उथल-पुथल में रहते हैं - दयनीय मानवजाति अत्यंत उजाड़ अंधकार में फंसी हुई प्रतीत हुई। मुझे चक्कर आने लगा और मैं लगभग आत्म-नियंत्रण खो बैठा। मैंने दर्शनशास्त्र के चश्मे को जमीन पर फेंक दिया और उन्हें तोड़ दिया। फिर, अचानक, मैंने कुरान और विश्वास के ज्ञान से प्रकाशित दृष्टि से देखा। मैंने आकाश और पृथ्वी के रचयिता, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ पालनकर्ता, ईश्वर, आकाश और पृथ्वी के स्वामी, तथा सूर्य और चन्द्रमा के अधिपति, इन नामों को दया, ऐश्वर्य और प्रभुता के चिन्हों के साथ सूर्य के समान उदय होते देखा।

उन्होंने उस अंधकारमय, उजाड़ और भयावह दुनिया को इतनी चमक से प्रकाशित किया कि मेरी आस्था की नज़र में धरती एक पूरी तरह से सुव्यवस्थित, अधीन, सुखद और सुरक्षित बर्तन के रूप में दिखाई दी, जिसमें सभी के भविष्य-दर्शन संग्रहीत हैं। मैंने इसे एक जहाज या हवाई जहाज या ट्रेन के रूप में देखा, जिसे व्यापार और आनंद के लिए तैयार किया गया है, जो सूर्य के चारों ओर भगवान के क्षेत्रों के माध्यम से आत्माओं के साथ प्राणियों को ले जाता है, वसंत, ग्रीष्म और पतझड़ की उपज को जीविका की ज़रूरत वाले लोगों तक पहुँचाता है।

मैंने कहा: "विश्वास के अनुग्रह के लिए पृथ्वी के परमाणुओं की संख्या तक ईश्वर की स्तुति और आभार!"

इस प्रकार रिसाले-ए-नूर में अनेक उदाहरणों और उपमाओं के साथ यह सिद्ध किया गया है कि दुराचार और गुमराह लोग इस दुनिया में भी नारकीय यातनाएँ झेलते हैं, जबकि ईमान की अभिव्यक्ति के कारण, ईमान और नेकी के लोग इस्लाम और मानवता के पेट के माध्यम से स्वर्गीय सुखों का स्वाद चख सकते हैं। वे अपने ईमान की मात्रा के अनुसार लाभ उठाने में सक्षम हैं। लेकिन इन तूफानी समयों में, धाराएँ इंद्रियों को सुन्न कर देती हैं और मनुष्य का ध्यान परिधीय, व्यर्थ मामलों में बिखेर देती हैं और उन्हें अपने में समाहित कर लेती हैं, उनकी इंद्रियों को सुन्न कर देती हैं, सही तर्क और चिंतन को नष्ट कर देती हैं। परिणामस्वरूप, गुमराह लोग अस्थायी रूप से अपनी आध्यात्मिक पीड़ा को पूरी तरह से महसूस करने में असमर्थ हो जाते हैं,

जबकि मार्गदर्शन प्राप्त करने वाले लोग असावधानी से घिरे रहते हैं और मार्गदर्शन के सुखों की सच्ची सराहना नहीं कर पाते।

इस युग की दूसरी भयंकर सच्चाई: आज की तुलना में, पहले के समय में विज्ञान पर अंध विश्वास और अंध विश्वास से उत्पन्न होने वाली गुमराही बहुत कम थी, और हठधर्मी, दृढ़निश्चयी अविश्वास से उत्पन्न होने वाली हठधर्मिता भी बहुत कम थी । इस कारण, उस समय के धार्मिक विद्वानों की शिक्षा और तर्क संदेह से उत्पन्न किसी भी अविश्वास को दूर करने के लिए पर्याप्त थे। चूँकि लगभग सभी लोग ईश्वर में विश्वास करते थे, इसलिए अधिकांश लोग ईश्वर के बारे में शिक्षा और नरक की आग के बारे में चेतावनी मिलने के बाद गुमराही और बुराई छोड़ देते थे। लेकिन अब एक छोटे से शहर में सौ पूर्ण अविश्वासी हैं, जबकि पहले केवल एक ही था। विज्ञान और शिक्षा पर अंध विश्वास के कारण भटकने वाले, विश्वास की सच्चाई का हठपूर्वक विरोध करने वाले, पहले के समय की तुलना में सौ गुना अधिक संख्या में हैं। चूंकि ये हठीले इनकार करने वाले लोग फिरौन के अहंकार के साथ विश्वास की सच्चाई का विरोध करते हैं, इसलिए एक पवित्र सत्य अवश्य होना चाहिए जो इस दुनिया में उनके अविश्वास की नींव को परमाणु विस्फोट की ताकत से पूरी तरह से नष्ट कर देगा, उनके आक्रमण को रोक देगा और उनमें से कुछ को विश्वास में ले आएगा।

ईश्वर का अनंत धन्यवाद हो कि अपनी अनेक तुलनाओं और इस समय की बुराइयों के लिए दिए गए उपायों के साथ, रिसाले-ए-नूर, जिसमें कुरआन की चमत्कारी व्याख्या की कुछ झलकियाँ हैं, कुरआन की हीरे जैसी तलवार से उन सबसे बुरे इनकार करने वालों को भी परास्त कर देती है। ईश्वरीय एकता और ब्रह्मांड के परमाणुओं की संख्या तक मौजूद विश्वास की सच्चाइयों के प्रमाण और तर्क बताकर, पच्चीस वर्षों से यह सबसे गंभीर हमलों के सामने पराजित नहीं हुआ है; बल्कि विजयी रहा है। ईमान और अविश्वास, सही मार्गदर्शन और गुमराही की अपनी तुलनाओं के साथ, रिसाले -ए-नूर इन सच्चाइयों को स्वयं-साक्ष्य रूप से साबित करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बाईसवें वचन के दूसरे पड़ाव, बत्तीसवें वचन के पहले पड़ाव, तैंतीसवें वचन के "विंडोज़" और मूसा के असा-यी मूसा के ग्यारह प्रमाणों में प्रमाणों और झलकियों को देखे, और यदि उनकी रोशनी में अन्य तुलनाओं पर विचार किया जाए, तो यह समझा जा सकता है कि यह कुरान की सच्चाईयाँ हैं जो रिसाले-ए- नूर में प्रकट हुई हैं जो इस समय पूर्ण अविश्वास और हठीले पथभ्रष्टता को चूर-चूर कर देंगी और नष्ट कर देंगी।

विश्वास और अविश्वास के बीच तुलना ऊपर दिए गए उत्तर में बताई गई अधिकांश तुलनाओं से बनी है। रिसाले-ए-नूर संग्रह की कुछ को छोड़कर बाकी सभी पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है और तुग़रा बुक्स द्वारा प्रकाशित किया गया है। वे इस प्रकार हैं:

शब्द – इस्लामी विश्वास और विचार का पुनर्निर्माण
पत्र - इस्लामी विचार, विश्वास और जीवन पर पत्र
द ग्लेम्स – कुरानिक ज्ञान और आध्यात्मिकता पर विचार
किरणें - इस्लामी विश्वास, विचार, उपासना और कार्य पर विचार
अल-मथनावी अन-नूरी – प्रकाश का बीजारोपण
मूसा की लाठी - इस्लामी आस्था, ईश्वरीय अस्तित्व और एकता पर विचार

तर्क - कुरान की वाक्पटुता को समझने की कुंजी
सत्य की झलक - स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए नुस्खे

प्रकाशक

पहला शब्द

बिस्मिल्लाह का महत्व

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

Bइस्मिल्लाह (ईश्वर के नाम पर) सभी अच्छे कामों की शुरुआत है चीजें, इसलिए हम इससे शुरू करेंगे। यह धन्य वाक्यांश इस्लाम का प्रतीक है, जिसे सभी प्राणी अपनी स्वभावगत जीभों के माध्यम से निरंतर दोहराते हैं। यदि आप इसकी अनंतता को समझना चाहते हैं-

सामर्थ्य और आशीष के एक पवित्र स्रोत के रूप में, निम्नलिखित दृष्टान्त पर विचार करें:

रेगिस्तान में जहाँ असभ्य लोग रहते हैं, यात्रियों को एक आदिवासी सरदार के नाम और संरक्षण में यात्रा करनी चाहिए, अन्यथा वे डाकुओं से परेशान हो जाएँगे और यात्रा के लिए आवश्यक चीजें नहीं जुटा पाएँगे। दो लोग, एक विनम्र और दूसरा अभिमानी, यात्रा पर निकले। विनम्र व्यक्ति ने आदिवासी सरदार का नाम प्राप्त किया; अभिमानी व्यक्ति ने नहीं। पहले ने हर जगह सुरक्षित यात्रा की। जब भी उसे कोई डाकू मिला, तो उसने कहा: "मैं फलां आदिवासी सरदार के नाम पर यात्रा कर रहा हूँ," और इस तरह वह अकेला रह गया।

वह जिस भी तंबू में जाता था, वहाँ उसका सम्मान किया जाता था। इसके विपरीत, अहंकारी व्यक्ति को विपत्ति और निरंतर भय का सामना करना पड़ता था, क्योंकि उसे हर ज़रूरत के लिए संघर्ष करना पड़ता था और भीख माँगनी पड़ती थी। वह नीच और नीच बन गया।

हे अभिमानी आत्मा! तुम ही वह पथिक हो और यह संसार रेगिस्तान है।
आपकी कमज़ोरी और गरीबी अनंत है, और आपके सामने आने वाले शत्रु और अभाव अनगिनत हैं। इसे देखते हुए, इस दुनिया के शाश्वत स्वामी और शाश्वत शासक का नाम पुकारें, क्योंकि केवल वही आपको इस तरह की भीख और भय से मुक्ति दिला सकता है।

बिस्मिल्लाह एक बरकत वाला ख़ज़ाना है। यह आपकी असीम कमज़ोरी और ग़रीबी को सर्वशक्तिमान और दयालु की असीम शक्ति और दया से बांधकर, उसके सर्वोच्च दरबार में सबसे ज़्यादा ध्यान दिए जाने वाले सिफ़ारिशकर्ता में बदल देता है।
जब आप बिस्मिल्लाह कहते हैं, तो आप उसके नाम पर काम करते हैं। आप राज्य के नाम पर काम करने वाले एक सैनिक की तरह हैं, किसी से नहीं डरते, कानून और राज्य के नाम पर सभी काम करते हैं, और सभी बाधाओं के बावजूद डटे रहते हैं।

हर चीज़ अपने अस्तित्व के तरीके से बिस्मिल्लाह का ज़िक्र कैसे करती है ? उदाहरण के लिए: एक अजनबी शहर में आकर उसके लोगों को एक निश्चित जगह पर इकट्ठा होने का आदेश दे सकता है ताकि वे एक निश्चित काम पर काम कर सकें। अगर इस आदेश का पालन किया जाता है, तो जाहिर है कि अजनबी शासक की ताकत और अधिकार के नाम पर काम कर रहा है, न कि अपने। उसी तरह, हर चीज़ सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर काम करती है। छोटे-छोटे बीज और दाने अपने सिरों पर बड़े-बड़े पेड़ उठाते हैं और पहाड़ों जितने भारी वजन उठाते हैं। हर पेड़ बिस्मिल्लाह कहता है और रहमत के खजाने से अपने हाथों में फल भरकर एक थाल में हमें देता है। हर बगीचा, ईश्वरीय शक्ति की रसोई से एक खाना पकाने का बर्तन जहाँ अनगिनत तरह के स्वादिष्ट भोजन तैयार किए जाते हैं, बिस्मिल्लाह कहता है।

सभी धन्य जानवर (जैसे गाय, ऊँट, भेड़ और बकरियाँ) बिस्मिल्लाह कहते हैं और दया की प्रचुरता से दूध के झरने बन जाते हैं। वे हमें, सर्व-प्रदाता के नाम पर, जीवन के जल की तरह सबसे नाजुक और शुद्ध भोजन प्रदान करते हैं। हर पौधा और घास का पत्ता, हर जड़ और तना, बिस्मिल्लाह कहता है। सभी पौधे, पेड़ और घास की जड़ें और रेशे, रेशम की तरह नरम, बिस्मिल्लाह कहते हैं और कठोर पत्थरों और मिट्टी को भेदते हैं। उसका नाम, दयालु का नाम, सब कुछ उनके अधीन कर देता है।

एक पेड़ की शाखाएँ आसमान में फैली होती हैं और इसकी जड़ें कठोर चट्टानों और मिट्टी में बेरोकटोक फैलती हैं। कुछ पौधे ज़मीन के अंदर फल देते हैं और नाज़ुक, हरे पत्ते तीव्र गर्मी के बावजूद लंबे समय तक नमी बनाए रखते हैं। ये वास्तविकताएँ प्रकृतिवादी को परेशान करती हैं। वे प्रकृतिवादी की अदृश्य आँखों में उँगली डालकर कहते हैं: “तुम कठोरता और गर्मी की शक्ति पर इतना भरोसा करते हो, फिर भी वे ईश्वरीय आदेश का पालन करते हैं। इसीलिए पौधे की जड़ों का प्रत्येक नरम रेशा, मूसा की छड़ी की तरह, आज्ञा का पालन करता है: और हमने कहा: 'अपनी छड़ी से चट्टान पर मारो!' (2:60) और चट्टान में घुस जाता है। पैगंबर अब्राहम के शरीर के अंगों की तरह हर नाजुक , कागज़ की तरह पतला पत्ता तीव्र गर्मी की अवहेलना करते हुए कहता है:

सभी चीज़ें अपने अंदर बिस्मिल्लाह कहती हैं और अल्लाह के नाम से उसकी नेमतें हम तक पहुँचाती हैं। इसी तरह हमें भी बिस्मिल्लाह कहना चाहिए, उसके नाम पर देना और लेना चाहिए, और उनसे कुछ भी स्वीकार नहीं करना चाहिए जो अल्लाह के नाम पर नहीं देते।

प्रश्न: हम लोगों को उनके द्वारा लाए गए हर सामान के लिए भुगतान करते हैं, भले ही वे केवल “ट्रे-लेयर” हों। उनका सच्चा स्वामी, परमेश्वर हमसे क्या भुगतान चाहता है?

उत्तर: सभी बहुमूल्य उपहारों और वस्तुओं का जो हम आनंद लेते हैं, उसका सच्चा दाता होने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है: स्मरण, धन्यवाद, और मनन।

शुरू में बिस्मिल्लाह कहना याद दिलाने का तरीका है, और उनके अंत में अल-हमदु लिल्लाह (सभी प्रशंसा और कृतज्ञता भगवान के लिए है) कहना एक आदमी है-

धन्यवाद का भाव। चिंतन का अर्थ है हमेशा उस अनमोल और अमूल्य उपहार के बारे में सोचना और ध्यान रखना जो हमें अनंत काल से मांगे गए परमेश्वर की शक्ति के चमत्कारों और उनकी दया से उपहार के रूप में प्राप्त होता है।

अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति का हाथ चूमते हैं जो आपके लिए कोई कीमती उपहार लेकर आया है, लेकिन असली भेजने वाले (राजा) को नहीं पहचानते, तो आप बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। असली दानदाता को भूलकर, दिखावटी दानदाता की प्रशंसा करना और उससे प्रेम करना, इससे भी बुरी बात है। हे आत्मा! अगर तुम ऐसी मूर्खता से बचना चाहते हो, तो भगवान के नाम पर दो और लो। शुरू करो और अंत तक उसी के नाम पर काम करो। यही बात है।

दूसरा शब्द

संतोष का मार्ग

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

जो लोग ग़ैब पर ईमान लाते हैं (2:2)

यदि आप यह समझना चाहते हैं कि महान संतुष्टि का आनंद कैसे लिया जाए विश्वास के माध्यम से आशीर्वाद और पूर्णता और सहजता का अनुभव कैसे करें, इसके लिए निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें:

दो लोग मौज-मस्ती और व्यापार दोनों के लिए यात्रा करते हैं। पहला व्यक्ति घमंडी और निराशावादी है, और इसलिए वह उस देश में पहुँच जाता है जिसे वह सबसे दुष्ट देश मानता है। वह खुद को गरीब और निराश लोगों से घिरा हुआ देखता है जो गुंडों से परेशान हैं और बर्बाद जीवन जी रहे हैं। वह जहाँ भी जाता है, उसे वही दुखद, दर्दनाक स्थिति दिखाई देती है, मानो पूरा देश शोक का घर हो। इस दर्दनाक स्थिति को महसूस न करने के लिए, उसे नशे में धुत होने के अलावा कोई और रास्ता नहीं सूझता। उसे हर कोई दुश्मन और विदेशी लगता है। उसे लाशों और अनाथों के भयानक दृश्य दिखाई देते हैं, और उसकी आत्मा पीड़ा में डूब जाती है।

दूसरा व्यक्ति, जो ईश्वर-भक्त, सभ्य और न्यायप्रिय है, एक ऐसे देश में जाता है जिसे वह बहुत अच्छा समझता है। एक विश्वव्यापी उत्सव को देखकर वह हर कोने में खुशी और आनंद पाता है, और ईश्वर को याद करने के लिए एक घर उल्लास से भरा हुआ पाता है। उसके लिए हर कोई प्यारा दोस्त है, यहाँ तक कि एक रिश्तेदार भी। वह कर्तव्यों से सामान्य मुक्ति के उत्सव को शुभकामनाओं और धन्यवाद के नारे के साथ देखता है। "ईश्वर सर्व-महान है" और "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है" की खुशी भरी पुकार के साथ सैनिकों की भर्ती के लिए ढोल और बैंड को सुनकर, वह अपने और दूसरों के आनंद से खुश होता है। वह एक आरामदायक व्यापार का आनंद लेता है और ईश्वर को धन्यवाद देता है।

जब वह कुछ देर बाद लौटता है, तो वह दूसरे आदमी से मिलता है, उसकी स्थिति को समझता है और कहता है: "तुम पागल हो गए हो। जो बुरी और बदसूरत चीजें तुम देखते हो, वे तुम्हारी आंतरिक दुनिया से आती हैं और उसे दर्शाती हैं। तुम हँसी की कल्पना करते हो।

रोना-धोना और अपने कर्तव्यों से मुक्त होकर लूटपाट और लूटपाट का शिकार होना। अपने होश में आओ और अपने दिल को साफ करो, ताकि तुम्हारी आँखों से यह अशुभ पर्दा हट जाए और तुम सच्चाई देख सको। यह एक व्यवस्थित, समृद्ध और सभ्य देश है, जिसके शासक शक्तिशाली, दयालु और न्यायप्रिय हैं। इसलिए चीजें वैसी नहीं हो सकतीं, जैसी तुम देखते या सोचते हो।" आदमी अपने होश में आता है और पछतावे से भर जाता है: "हाँ, मैं उन सभी नशीले पदार्थों के कारण वास्तव में पागल हो गया हूँ। धन्यवाद। मुझे ऐसी नारकीय स्थिति से बचाने के लिए भगवान तुमसे प्रसन्न हों।"

हे मेरी आत्मा! पहला व्यक्ति एक अविश्वासी या लापरवाह पापी को दर्शाता है जो इस दुनिया को सामान्य शोक की जगह के रूप में देखता है, सभी जीवित चीजें अलगाव और क्षय के दर्द के कारण रोते हुए अनाथों के रूप में, लोगों और जानवरों को मौत से कटे हुए अकेले और असभ्य प्राणियों के रूप में, और विशाल जनसमूह (पहाड़ और महासागर) को आत्मा के बिना भयानक लाशों के रूप में देखता है। उसका अविश्वास और गुमराही बड़ी चिंताओं को जन्म देती है जो उसे पीड़ा देती हैं।

दूसरा व्यक्ति सर्वशक्तिमान ईश्वर में विश्वास करता है और उसकी पुष्टि करता है। वह दुनिया को एक ऐसी जगह के रूप में देखता है जहाँ लोग उसकी महिमा करते हैं, उसकी प्रशंसा करते हैं और उसका गुणगान करते हैं, लोगों और जानवरों के लिए एक अभ्यास क्षेत्र और लोगों और जिन्न के लिए एक परीक्षा कक्ष। जानवरों और मानवता को निष्क्रिय कर दिया जाता है ताकि मृत्यु के बाद विश्वासी आध्यात्मिक आनंद में दूसरी दुनिया की यात्रा कर सकें - क्योंकि इस दुनिया को आबाद होने और इसमें काम करने के लिए एक नई पीढ़ी की आवश्यकता है।

सभी जानवर और लोग किसी कारण से इस दुनिया में आते हैं। सभी जीवित चीजें सैनिक या अधिकारी के रूप में हैं, जो अपने नियुक्त कार्य से खुश हैं। हम जो ध्वनि सुनते हैं वह उनकी प्रशंसा और महिमा है जब वे शुरू करते हैं, या काम करते समय उनकी खुशी, या उनके समाप्त होने पर उनका धन्यवाद। विश्वासी सभी चीजों को आज्ञाकारी सेवक, मित्रवत अधिकारी, अपने सर्व-दयालु स्वामी और सर्व-दयालु स्वामी की एक प्यारी पुस्तक के रूप में देखते हैं।

ऐसे कई और खूबसूरत, उदात्त और आनंददायक सत्य विश्वास से उत्पन्न होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि विश्वास में स्वर्ग के तौबा वृक्ष का बीज होता है, जबकि अविश्वास में नरक के ज़क्कुम वृक्ष का बीज होता है।

सुरक्षा और खुशहाली सिर्फ़ इस्लाम (ईश्वर के प्रति समर्पण) और ईमान में ही पाई जाती है। इसलिए हमेशा ईश्वर का शुक्रिया अदा करते हुए कहें: "इस्लाम और पूर्ण ईमान के लिए ईश्वर की प्रशंसा हो।"

तीसरा शब्द

सही रास्ता चुनना

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ऐ लोगो! इबादत करो... (2:21)

I यदि आप उससे मिलने वाले आनंद और लाभ को समझना चाहते हैं उपासना के साथ-साथ, बुराई, अपव्यय और परमेश्वर की आज्ञाओं की अनदेखी से होने वाली हानि और विनाश को समझने के लिए, निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: दो सैनिकों को एक दूर के शहर में जाने के लिए कहा जाता है।

साथ-साथ यात्रा करते हुए, वे एक चौराहे पर आते हैं और एक बुद्धिमान व्यक्ति से मिलते हैं जो उन्हें बताता है: "दाईं ओर की सड़क जोखिम मुक्त है, और दस में से नौ यात्रियों को बहुत फायदा होता है लेकिन कोई नुकसान नहीं होता है। बाईं ओर की सड़क कोई लाभ नहीं देती है, और दस में से नौ यात्रियों को बहुत नुकसान होता है। दोनों सड़कें समान लंबाई की हैं। लेकिन एक अंतर है: जो लोग बाईं ओर की सड़क लेते हैं, जिसमें कोई नियम या कोई प्रभारी नहीं है, वे बिना उपकरण या हथियारों के यात्रा करते हैं, और इसलिए आरामदायक और सहज दिखाई देते हैं। जो लोग दाईं ओर की सड़क लेते हैं, जो सैन्य आदेश के अधीन है, वे अपने साथ किट-बैग में अपना भोजन और एक भारी हथियार रखते हैं जो हर दुश्मन को परास्त कर देगा और उसे हरा देगा।"

एक सैनिक दायाँ रास्ता लेता है। अपने भारी बोझ को उठाते हुए, उसका दिल और आत्मा एक साथ किसी भी बोझिल कर्ज और भय से मुक्त हो जाते हैं। शांति से यात्रा करते हुए, वह अपने गंतव्य पर पहुँचता है, जहाँ उसे एक ईमानदार सैनिक के योग्य इनाम मिलता है जो अपने कर्तव्यों का पूरी तरह से पालन करता है। दूसरा सैनिक बायाँ रास्ता लेता है। कुछ भी भारी न उठाते हुए, उसका दिल और आत्मा फिर भी असंख्य खतरों और चिंताओं से ग्रस्त है। वह लगातार भयभीत और जरूरतमंद रहता है।

जब वह नियत शहर में पहुंचता है तो उसके साथ एक विद्रोही और भगोड़े जैसा व्यवहार किया जाता है।

अब, मेरी अनुशासनहीन और शारीरिक आत्मा, ध्यान दो। पहला सैनिक परमेश्वर के आज्ञाकारी सेवक का प्रतिनिधित्व करता है; दूसरा सैनिक विद्रोहियों का प्रतिनिधित्व करता है

और जो अपनी इच्छा का अनुसरण करते हैं। यह मार्ग आत्माओं की दुनिया से आने वाली जीवन रेखा है, जो इस दुनिया और कब्र से गुज़रती है, और परलोक की ओर बढ़ती है।

भारी बोझ और हथियार पूजा और धर्मपरायणता हैं। पूजा एक कठिन मांग लगती है, लेकिन वास्तव में यह अवर्णनीय शांति और आराम देती है।
नमाज़ पढ़ने वाले लोग अशहादु अन ला इलाहा इल्लल्लाह (मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है) पढ़ते हैं, जो सृष्टिकर्ता और सर्व-प्रदाता है। केवल वही हानि और लाभ पहुँचा सकता है। वह सर्वज्ञ है जो कोई भी काम व्यर्थ नहीं करता, वह दयावान है जिसकी दया और कृपा प्रचुर है। ईमान रखने वाला सिपाही हर घटना में ईश्वर की दया के धन का द्वार देखता है और प्रार्थना और विनती के माध्यम से उस पर दस्तक देता है। यह महसूस करते हुए कि उसका प्रभु और पालनहार सब कुछ नियंत्रित करता है, वह उसकी शरण में जाता है। ईश्वर पर भरोसा रखते हुए और उसके प्रति पूरी तरह समर्पित होकर, वह बुराई का प्रतिरोध करता है। उसका ईमान उसे पूर्ण आत्मविश्वास देता है।

हर अच्छे काम की तरह, साहस भी ईश्वर में विश्वास और उसके प्रति निष्ठावान भक्ति से ही पैदा होता है। हर बुरे काम की तरह, कायरता गलत मार्गदर्शन से पैदा होती है। अगर धरती फट जाए, तो ईश्वर के सच्चे दिल वाले सेवक डरेंगे नहीं - वे इसे हमेशा से चाहने वाले की शक्ति का चमत्कार भी मान सकते हैं। एक तर्कवादी लेकिन अविश्वासी दार्शनिक धूमकेतु को देखकर कांप सकता है, कहीं ऐसा न हो कि वह धरती से टकरा जाए।

(हाल ही में हैली धूमकेतु के देखे जाने पर कुछ अमेरिकियों ने इस प्रकार प्रतिक्रिया व्यक्त की थी।)

हमारी अंतहीन मांगों को पूरा करने की क्षमता नगण्य है। हम उन कष्टों से घिरे हुए हैं जिनका सामना हमारी अपनी शक्ति नहीं कर सकती। हमारी शक्ति सीमित है जहाँ तक हम पहुँच सकते हैं, फिर भी हमारी इच्छाएँ और माँगें, दुख और पीड़ा, हमारी कल्पना जितनी ही व्यापक हैं।

जो व्यक्ति सत्य के प्रति पूरी तरह से अंधा नहीं है, वह समझता है कि हमारा सबसे अच्छा विकल्प ईश्वर के प्रति समर्पित होना, उसकी आराधना करना, विश्वास करना और उस पर भरोसा रखना है। एक सुरक्षित मार्ग एक खतरनाक मार्ग से बेहतर है, भले ही उसके सुरक्षित मार्ग की संभावना बहुत कम हो। विश्वास का मार्ग निश्चित रूप से व्यक्ति को अनंत आनंद की ओर सुरक्षित रूप से ले जाता है; वहीं, अविश्वास और अपराध का मार्ग लाभदायक नहीं है और इसमें अनंत नुकसान की निश्चितता है। यहां तक कि इसके यात्री भी इस सत्य से सहमत हैं, जैसे कि अनगिनत विशेषज्ञ और अंतर्दृष्टि और अवलोकन वाले लोग।

अंत में, दूसरी दुनिया के आनंद की तरह, इस दुनिया में भी खुशी ईश्वर के प्रति समर्पण और उनके समर्पित सेवक होने पर निर्भर करती है। इसलिए हमेशा उनकी प्रशंसा करें और कहें: "उनके मार्ग में आज्ञाकारिता और सफलता के लिए ईश्वर की प्रशंसा हो," और उनका शुक्रिया अदा करें कि हम मुसलमान हैं।

चौथा शब्द

निर्धारित प्रार्थनाओं का मूल्य

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निर्धारित प्रार्थनाएँ धर्म का आधार हैं।

यदि आप इसके महत्व और मूल्य को पूरी तरह से समझना चाहते हैं निर्धारित प्रार्थनाएँ, और वे कितने कम खर्च में प्राप्त की जाती हैं, और जो व्यक्ति उनकी उपेक्षा करता है, वह कितना पागल और कितना बड़ा नुकसान उठाता है, इस बारे में निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: एक शासक अपने दो सेवकों में से प्रत्येक को चौबीस सोने के सिक्के देता है और उन्हें अपने एक खूबसूरत खेत में बसने के लिए भेजता है जो दो महीने की यात्रा दूर है। वह उनसे कहता है: “इस पैसे का उपयोग अपने टिकट, अपनी आपूर्ति और पहुँचने के बाद अपनी ज़रूरत की चीज़ें खरीदने के लिए करें। एक दिन की यात्रा के बाद, आप एक पारगमन स्टेशन पर पहुँचेंगे। आप वहाँ से या तो कार से या ट्रेन से या जहाज से या हवाई जहाज से आगे बढ़ सकते हैं। आप अपनी राजधानी के अनुसार एक चुन सकते हैं।”

नौकर चले जाते हैं। एक नौकर स्टेशन पहुँचने से पहले बहुत कम पैसे खर्च करता है। वह अपने पैसे का इतना बुद्धिमानी से इस्तेमाल करता है कि उसका मालिक उसे हज़ार गुना बढ़ा देता है। दूसरा नौकर स्टेशन पहुँचने से पहले चौबीस में से तेईस सिक्के जुए में हार जाता है। पहला नौकर दूसरे को सलाह देता है: "इस सिक्के से अपना टिकट खरीद लो, नहीं तो तुम्हें पैदल चलना पड़ेगा और भूख से तड़पना पड़ेगा। हमारा मालिक बड़ा उदार है। शायद वह तुम्हें माफ़ कर दे। शायद तुम हवाई जहाज़ ले लो, ताकि हम एक दिन में खेत पहुँच जाएँ। नहीं तो तुम्हें पैदल जाना पड़ेगा और रेगिस्तान पार करते हुए दो महीने की भूख और अकेलेपन को सहना पड़ेगा।" अगर वह अपने दोस्त की सलाह को नज़रअंदाज़ कर दे और खजाने की चाबी के समान टिकट खरीदने के बजाय अपना बचा हुआ एक सिक्का मौज-मस्ती पर खर्च कर दे, तो कोई भी समझ सकता है कि वह कितना मूर्ख और नासमझ है।

अब, तुममें से जो लोग प्रार्थना नहीं करते, और तुम भी, मेरी आत्मा जो प्रार्थना की ओर उन्मुख नहीं है। शासक हमारा प्रभु, हमारा निर्माता है। एक सेवक

एक धार्मिक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो उत्साह के साथ प्रार्थना करते हैं; दूसरा उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रार्थना करना पसंद नहीं करते। चौबीस सिक्के दिन के चौबीस घंटे हैं। खेत स्वर्ग है, पारगमन स्टेशन कब्र है, और यात्रा मानव जीवन है जो जन्म से कब्र तक और वहाँ से अनन्त जीवन तक जाती है। लोग अपने कर्मों और ईश्वर के प्रति श्रद्धा और आज्ञाकारिता के अनुसार कब्र से स्वर्ग तक की यात्रा का हिस्सा अलग-अलग समय में तय करते हैं।

कुछ सच्चे धर्मपरायण लोगों के दिन बिजली की तरह एक हजार साल गुजर जाते हैं, जबकि कुछ लोग कल्पना की तरह पचास हजार साल गुजार देते हैं। कुरान 22:47 और 70:4.1 में इस सत्य का संकेत देता है।

टिकट है निर्धारित नमाज़ें, जो एक घंटे में पूरी पढ़ी जा सकती हैं। जो व्यक्ति इस संक्षिप्त सांसारिक जीवन में प्रतिदिन तेईस घंटे बिताता है और शेष घंटे निर्धारित नमाज़ों के लिए नहीं रखता, उसे कितना बड़ा नुकसान होता है और वह अपने आप को कितना नुकसान पहुँचाता है; वह कितना अनुचित व्यवहार करता है। जो व्यक्ति अपने आप को समझदार समझता है, क्या वह यह नहीं समझ सकता कि यह कितना तर्क और बुद्धि के विपरीत होगा और समझदारी से कितना दूर होगा, यदि वह अपने धन का आधा हिस्सा एक लॉटरी में लगाए, जिसमें एक हजार लोग खेलते हैं और जिसमें जीतने की संभावना एक हजार में एक है, लेकिन वह उसका 24वां हिस्सा एक शाश्वत, अक्षय खजाने पर खर्च नहीं करता, जिसमें जीतने की संभावना सौ में से निन्यानबे है?

प्रार्थना आत्मा, हृदय और मन को सुकून देती है, और शरीर के लिए बोझिल और कष्टकारी नहीं होती। इसके अलावा, अगर हम नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं, तो सही, पाप-निर्णय हमारे दैनिक, वैध कर्मों और आचरण को आराधना में बदल देता है।

इस प्रकार हमारा छोटा सा जीवनकाल दूसरी दुनिया में अनन्त जीवन के लिए व्यतीत हो जाता है, और हमारा क्षणभंगुर जीवन एक प्रकार का स्थायित्व प्राप्त कर लेता है।

---

1 ... तुम्हारे हिसाब से तुम्हारे रब के यहाँ एक दिन हज़ार वर्षों के बराबर है (32:5), और ... फ़रिश्ते और रूह एक दिन में उसके पास जाते हैं, जिसकी लंबाई 50,000 साल है (तुम्हारे सामान्य सांसारिक वर्षों में से)

(70:4), क्रमशः. (ट्र.)

पांचवां शब्द

विश्वासियों के लिए सही प्रशिक्षण

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निस्संदेह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो उससे डरते हुए उसकी अवज्ञा से बचते हैं और अच्छे कर्म करते हैं (मानो उन्होंने उसे देखा हो)। (16:128)

यदि आप यह देखना चाहते हैं कि निर्धारित प्रार्थनाओं को करना और बड़े पापों से बचना वास्तव में कितना मानवीय कर्तव्य है और मानवता के निर्माण का कितना स्वाभाविक, उचित परिणाम है, तो निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: युद्ध के दौरान, दो निजी सैनिक स्वयं को एक रेजिमेंट में पाते हैं, एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और कर्तव्यनिष्ठ, और दूसरा एक रंगरूट और अपनी सांसारिक आत्मा का गुलाम। अच्छी तरह से प्रशिक्षित, कर्तव्यनिष्ठ सैनिक प्रशिक्षण अभ्यास में भाग लेता है और दुश्मन के खिलाफ संघर्ष करता है, राशन और भत्ते के बारे में कभी चिंता किए बिना, क्योंकि वह जानता है कि आवश्यक सैन्य उपकरण, भोजन और आवश्यक होने पर चिकित्सा देखभाल की आपूर्ति करना सरकार का कर्तव्य है। उसे केवल युद्ध के लिए प्रशिक्षण लेना है और देश के लिए लड़ना है। हालांकि, वह भोजन की आपूर्ति करके और रसोई में काम करके भी मदद करता है। जब उससे पूछा जाता है कि वह क्या कर रहा लेकिन दूसरा सैनिक न तो प्रशिक्षण लेता है और न ही लड़ता है, क्योंकि: “इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। यह सरकार का मामला है।” उसे केवल अपनी आजीविका की परवाह है, और इसलिए वह अपनी रेजिमेंट को छोड़कर खरीदारी करने के लिए बाज़ार चला जाता है।

उसका प्रशिक्षित मित्र उसे सलाह देता है: "भाई, तुम्हें देश के लिए लड़ने के लिए प्रशिक्षण लेना चाहिए। इसीलिए तुम यहाँ हो। सरकार तुम्हारी ज़रूरतें पूरी करेगी, क्योंकि यह उसका कर्तव्य है। तुम समय या स्थान की परवाह किए बिना अपनी सभी ज़रूरतें पूरी नहीं कर सकते। चूँकि हम युद्ध की स्थिति में हैं, इसलिए तुम पर भगोड़ापन या विद्रोह का आरोप लगाया जा सकता है और तुम्हें सज़ा दी जा सकती है। दो कर्तव्य हैं, एक सरकार का और दूसरा हमारा। सरकार हमारी ज़रूरतें पूरी करती है, जिसके लिए हम भी कुछ हद तक काम करते हैं। हमारा कर्तव्य है लड़ाई के लिए तैयार रहना।

और जब आवश्यक हो तो लड़ने के लिए, जिसमें सरकार हमारी बहुत मदद करती है।"
कल्पना कीजिए कि यदि दूसरा सैनिक अपने मित्र की बातों को नजरअंदाज कर दे तो उसे कितनी परेशानी होगी।

हे मेरी आलसी आत्मा! अशांत युद्ध क्षेत्र हमारे अशांत सांसारिक जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। रेजिमेंटों में विभाजित सेना राष्ट्रों में विभाजित मानवता का प्रतिनिधित्व करती है। वह विशेष रेजिमेंट इस शताब्दी में मुस्लिम समुदाय का प्रतिनिधित्व करती है। एक सैनिक एक धर्मनिष्ठ और पवित्र मुसलमान है जो जानता है कि उसे क्या करने के लिए कहा गया है और इसलिए अनिवार्य धार्मिक कर्तव्यों का पालन करता है और बड़े पापों से बचता है, और अन्य पापों को न करने के लिए अपनी शारीरिक, बुराई करने वाली आत्मा और शैतान के खिलाफ संघर्ष करता है। दूसरा सैनिक एक पापी हारे हुए व्यक्ति है जो अपनी आजीविका के लिए काम करने में इतना जुनूनी है कि वह सच्चे प्रावधानकर्ता पर आरोप लगाता है, और इसलिए अपने धार्मिक रूप से अनिवार्य कर्तव्यों का पालन नहीं करता है और अपने जीवन की खातिर कई पाप करता है। प्रशिक्षण पूजा के कर्तव्यों का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें विशेष रूप से निर्धारित प्रार्थनाएँ शामिल हैं। युद्ध का अर्थ है शारीरिक, दुष्ट आत्मा और उसकी वासनाओं के विरुद्ध संघर्ष करना, तथा जिन्न और मानवता के बीच शैतानों के विरुद्ध संघर्ष करना, ताकि पापों और घृणित नैतिकताओं से दूर रहा जा सके, तथा हृदय और आत्मा को अनंत विनाश से बचाया जा सके। कर्तव्यों के लिए: पहला है जीवन देना और उसे बनाए रखना; जबकि दूसरा है उस ईश्वर की आराधना और प्रार्थना करना जो जीवन देता है और उसे बनाए रखता है, तथा उस पर भरोसा रखना।

केवल वही जो जीवन देता है, जो कि शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले की कला का सबसे शानदार चमत्कार और भगवान की बुद्धि का एक चमत्कार है, वह जीवन को दूरदृष्टि से बनाए रखता है। क्या आपको समझाने की ज़रूरत है? सबसे कमज़ोर और सरल जानवरों को सबसे अच्छा खाना मिलता है; जैसे कि मछली और फलों में कीड़े। सबसे कम सक्षम और सबसे कमज़ोर जीव, जैसे कि बच्चे या नवजात जानवर, सबसे अच्छा खाना पाते हैं। यह समझने के लिए कि मौलिक, वैध भोजन की प्राप्ति शक्ति और इच्छाशक्ति के बजाय ज़रूरत और नपुंसकता पर निर्भर करती है, मछली की तुलना लोमड़ियों से, नवजात शिशु की तुलना जंगली जानवरों से और पेड़ों की तुलना जानवरों से करना पर्याप्त है।

इसलिए जो लोग अपनी आजीविका के लिए नमाज़ों को नज़रअंदाज़ करते हैं, वे उस सिपाही की तरह हैं जो अपनी कसरत को नज़रअंदाज़ कर देता है, भूख के डर से मोर्चे को छोड़ देता है और बाज़ार में घूमता रहता है। लेकिन नमाज़ पढ़ने के बाद रहमत वाले रहमत वाले की रसोई से अपना राशन माँगना और दूसरों पर बोझ न डालना अच्छा और उचित है। यह भी एक तरह की इबादत है।

इसके अलावा, हमारी प्रकृति और आध्यात्मिक अस्तित्व यह दर्शाता है कि हमें भगवान की पूजा करने के लिए बनाया गया है। क्योंकि हमारे सांसारिक जीवन के लिए आवश्यक हमारी शारीरिक शक्ति और क्षमता के संबंध में, हम गौरेयों से भी मुकाबला नहीं कर सकते। लेकिन हमारे आध्यात्मिक जीवन और परलोक के लिए आवश्यक हमारे ज्ञान के संबंध में, और

अपनी आवश्यकता, प्रार्थना और आराधना को समझते हुए, हम सभी सजीव प्राणियों के राजा और सेनापति हैं।

हे मेरी आत्मा! यदि तू इस संसार को अपना मुख्य लक्ष्य मानता है और इसके लिए काम करता है, तो तू केवल एक सिपाही बनकर रह जाएगा, जिसका अपने मामलों पर एक गौरैया से अधिक नियंत्रण नहीं होगा। लेकिन यदि तू परलोक के जीवन को अपना लक्ष्य बना ले, और इस संसार के जीवन को उसका साधन और उसके लिए बोई जाने वाली भूमि बना ले, और उसके अनुसार काम करे, तो तू पशु जगत का शासक, सर्वशक्तिमान ईश्वर का प्रिय, याचक सेवक और इस संसार में उसका प्रिय और सम्मानित अतिथि बन जाएगा। तू कोई भी विकल्प चुन सकता है। इसलिए परम दयालु रहमान से उसके मार्ग पर मार्गदर्शन और सफलता की प्रार्थना कर।

छठा शब्द

सर्वोच्च लेन-देन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अल्लाह ने ईमान वालों से उनकी जान और उनके माल दोनों को जन्नत के बदले में खरीद लिया है। (9:111)

यदि आप यह समझना चाहते हैं कि अपनी आत्मा और संपत्ति को ईश्वर को बेचना और उसका सेवक और सैनिक बनना कितना लाभदायक सौदा है, कितना सम्मानजनक पद है, तो निम्न दृष्टांत सुनें: एक बार एक राजा ने दो सेवकों को एक-एक जागीर सौंपी, जिसमें सभी आवश्यक कार्यशालाएँ, मशीनें, घोड़े, हथियार और अन्य उपकरण शामिल थे। लेकिन चूंकि युद्ध का समय था, जब सब कुछ अस्थिर था, इस दयालु और करुणामय राजा ने अपने सबसे महान अधिकारी को निम्नलिखित संदेश के साथ उनके पास भेजा:

मुझे सौंपी गई संपत्ति बेच दो ताकि मैं इसे तुम्हारे लिए रख सकूँ। इसे व्यर्थ नष्ट मत होने दो। युद्ध समाप्त होने के बाद, मैं इसे पहले से भी बेहतर स्थिति में तुम्हें लौटा दूँगा। इसके अलावा, मैं इसके लिए बहुत अधिक कीमत चुकाऊँगा जैसे कि यह तुम्हारी अपनी संपत्ति हो। मशीनरी और औजार मेरे नाम से मेरे कार्यक्षेत्र में उपयोग किए जाएँगे। उनके उपयोग के लिए कीमत और शुल्क दोनों में वृद्धि की जाएगी, शायद एक हजार गुना। मैं सारा लाभ तुम्हें दे दूँगा। तुम कमजोर और गरीब हो, और इन महान कार्यों के लिए भुगतान नहीं कर सकते। मुझे खर्च और उपकरणों का ध्यान रखने दो, और तुम्हें आय और लाभ दो। तुम इसे विमुद्रीकरण तक उपयोग कर सकते हो। इस लेन-देन के इन पाँच लाभों पर विचार करो।

अगर आप मुझे संपत्ति नहीं बेचते हैं, तो इस पर विचार करें। जैसा कि आप देख रहे हैं, कोई भी व्यक्ति अपने पास मौजूद चीज़ों को सुरक्षित नहीं रख सकता है। आप भी वह खो देंगे जो आपके पास अभी है। यह बेकार चला जाएगा, और आप उस उच्च मूल्य से चूक जाएँगे जो मैं आपको दे रहा हूँ। सभी नाजुक, कीमती उपकरण और बढ़िया तराजू जो उपयोग के लिए तैयार हैं, उनका मूल्य कम हो जाएगा, क्योंकि उनके उपयोग के लायक कोई धातु नहीं है। आपको उन्हें प्रबंधित करने और संरक्षित करने का कोई तरीका खोजना होगा। इसके अलावा, आपको अपने विश्वासघात के लिए दंडित किया जाएगा। तो उन पाँच तरीकों पर विचार करें जिनसे आप हार जाएँगे।

अपनी संपत्ति मुझे बेचकर, तुम मेरे सैनिक बन जाओगे और मेरे नाम पर काम करोगे। एक साधारण भर्ती या अनियमित होने से कहीं बढ़कर, तुम एक महान राजा के सम्मानित और स्वतंत्र अधिकारी बन जाओगे।

जब दोनों व्यक्तियों ने यह अनुग्रहपूर्ण आदेश सुना, तो उनमें से एक ने कहा: "मैं बेचकर सम्मानित और खुश हूँ। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।" दूसरा व्यक्ति भी फिरौन की तरह ही घमंडी, अहंकारी, स्वार्थी और विलासी था। मानो वह हमेशा के लिए उस संपत्ति पर ही रहेगा, उसने भूकंप और कोलाहल को अनदेखा किया और कहा: "नहीं! यह राजा कौन है? मैं अपनी संपत्ति नहीं बेचूँगा या अपने आराम को कम नहीं करूँगा।" थोड़ी देर बाद, पहला व्यक्ति इतने ऊँचे पद पर पहुँच गया कि हर कोई उसके पद से ईर्ष्या करने लगा। उसे राजा का अनुग्रह प्राप्त था और वह राजा के महल में खुशी-खुशी रहता था। दूसरा व्यक्ति इतना नीचे गिर गया कि हर किसी को उस पर दया आ गई लेकिन उसे एहसास हुआ कि वह अपने पद का हकदार था। अपनी गलती के परिणामस्वरूप, उसने अपनी खुशी और संपत्ति खो दी, और उसे दंड और पीड़ा सहनी पड़ी।

अब, हे मनमौजी आत्मा, यहाँ प्रदर्शित सत्य पर विचार करो। राजा सम्राट है, अनंत काल से पहले और बाद में शाश्वत, तुम्हारा भगवान और निर्माता।

जो कुछ उसने तुम्हें सौंपा है, वह तुम्हारे शरीर, आत्मा और हृदय आदि का प्रतिनिधित्व करता है, साथ ही तुम्हारी बाहरी और आंतरिक इंद्रियाँ जैसे कि दृष्टि, स्वाद, बुद्धि, कल्पना। सबसे महानतम अधिकारी रसूल है; दयालु आदेश कुरान है, जिसमें कहा गया है: ईश्वर ने ईमान वालों से उनकी आत्मा और उनकी संपत्ति को स्वर्ग के बदले में खरीद लिया है (9:111)। उफनता हुआ युद्ध का मैदान परिवर्तनशील दुनिया की तूफानी सतह है, और हर किसी को सोचने पर मजबूर करता है:

"सब कुछ हमारे हाथ से छूट जाएगा, नष्ट हो जाएगा, और खो जाएगा। क्या इसे शाश्वत बनाने, इसे सुरक्षित रखने का कोई तरीका नहीं है?" ऐसे विचारों में मग्न रहते हुए, कुरान की स्वर्गीय आवाज़ सुनाई देती है:

"एक सुंदर और आसान तरीका है जो पाँच लाभ या लाभ प्रदान करता है-
इसका।"

ये कौन सा रास्ता है?

ट्रस्ट को उसके असली मालिक को बेचना। इसके परिणामस्वरूप पाँच लाभ होंगे:

पहला लाभ: क्षणभंगुर संपत्ति चिरस्थायी हो जाती है। यह क्षीण जीवन, जब महामहिम की शाश्वत और आत्मनिर्भर सत्ता को दिया जाता है और उसके लिए खर्च किया जाता है, तो स्थायित्व में परिवर्तित हो जाता है और चिरस्थायी फल देता है। व्यक्ति के वर्तमान जीवन के क्षण स्पष्ट रूप से गायब हो जाते हैं और सड़ जाते हैं, जैसे कि गुठली और बीज। लेकिन फिर अनंत काल के क्षेत्र में खुशी के फूल खिलते हैं और प्रत्येक कब्र के मध्यवर्ती क्षेत्र में एक चमकदार, सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है।

दूसरा लाभ: इसकी कीमत स्वर्ग है।

तीसरा लाभ: प्रत्येक शारीरिक अंग और इन्द्रिय का मूल्य हजार गुना बढ़ जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आप अपनी बुद्धि का उपयोग अपनी शारीरिक आत्मा के लिए करते हैं, तो यह एक ऐसा अशुभ, विनाशकारी और दुर्बल करने वाला साधन बन जाता है जो आपको अतीत के दु:खों और भविष्य के भयावह भय से भर देता है। यही कारण है कि पापी लोग अक्सर नशे या अन्य तुच्छ सुखों का सहारा लेते हैं। लेकिन यदि आप अपनी बुद्धि को उसके सच्चे स्वामी को बेच देते हैं और उसका उपयोग उसके लिए करते हैं, तो यह एक रहस्यमय कुंजी की तरह बन जाती है जो करुणा और ज्ञान से भरे अनंत खजाने को खोलती है और आपको एक पवित्र और धर्मी मार्गदर्शक के पद पर पहुंचा देती है जो शाश्वत सुख का हकदार है।

आँख एक खिड़की है जिसके माध्यम से आत्मा इस दुनिया को देखती है। यदि आप इसे अपनी शारीरिक आत्मा की ओर से, सर्वशक्तिमान ईश्वर को बेचे बिना, क्षणभंगुर, अस्थाई सुंदरता और तमाशे को देखकर इस्तेमाल करते हैं, तो यह वासना और अन्य शारीरिक इच्छाओं को बढ़ावा देती है। लेकिन यदि आप इसे इसके सर्वज्ञ निर्माता को बेचते हैं और उसकी ओर से और उसकी सीमाओं के भीतर इसका उपयोग करते हैं, तो यह ब्रह्मांड की महान पुस्तक के पाठक के पद तक पहुँच जाता है, उसकी रचना के चमत्कारों का साक्षी बन जाता है, इस दुनिया के बगीचे में दया के फूलों को चूसने वाली धन्य मधुमक्खी बन जाता है।

स्वाद भी इंद्रियों में से एक है। यदि आप इसे अपने सर्वज्ञ सृजक को नहीं बेचते, बल्कि इसे अपनी शारीरिक आत्मा की खातिर और अपनी जीभ या पेट की खातिर इस्तेमाल करते हैं, तो यह डूब जाता है और पेट के अस्तबल के द्वारपाल और उसके कारखाने के चौकीदार के स्तर तक गिर जाता है। लेकिन यदि आप इसे सर्व-उदार प्रदाता को बेचते हैं, तो स्वाद की इंद्रिय दिव्य करुणा के भण्डारों में एक कुशल पर्यवेक्षक, शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले व्यक्ति की शक्ति के रसोईघरों में एक आभारी निरीक्षक के स्तर तक बढ़ जाती है।

हे बुद्धि, सावधान हो जाओ! सोचो कि विनाश का साधन क्या है और सभी अस्तित्व की कुंजी क्या है। हे आँख! एक घृणित दलाल और दिव्य पुस्तकालय के विद्वान पर्यवेक्षक के बीच अंतर देखो! हे जीभ!

एक अस्तबल के द्वारपाल या एक कारखाने के चौकीदार और परमेश्वर की दया के भण्डार के ट्रस्टी के बीच के अन्तर को अच्छी तरह से चखें!

---

2 ब्रह्माण्ड, मनुष्य और कुरान ये तीन पुस्तकें हैं जो हमें सृष्टिकर्ता से परिचित कराती हैं।
ब्रह्माण्ड और मनुष्य सृजित पुस्तकें हैं जो ईश्वर की शक्ति के गुणों से उत्पन्न हुई हैं
और इच्छा और ईश्वर के नामों की अभिव्यक्तियों का संग्रह हैं, जबकि कुरान उनका प्रकट प्रतिरूप है। ये तीनों पुस्तकें एक दूसरे की व्याख्या करती हैं। कुरान की तरह, ब्रह्मांड और मनुष्य या खुद का अध्ययन करके, मनुष्य ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करता है और उसके करीब आता है। (अनुवाद)

जब आप अन्य सभी साधनों, क्षमताओं और अंगों की तुलना इनसे करते हैं, तो आप समझते हैं कि ईमान वाले जन्नत के योग्य स्वभाव प्राप्त करते हैं और अविश्वासी जहन्नम के योग्य स्वभाव प्राप्त करते हैं। प्रत्येक को अपना-अपना मूल्य प्राप्त होता है। अपने विश्वास के कारण, विश्वासी उस चीज़ का उपयोग करते हैं जो निर्माता ने उन्हें अपनी ओर से और अपनी सीमाओं के भीतर सौंपी है। अविश्वासी लोग विश्वासघात करते हैं और इसका उपयोग शारीरिक आत्मा की खातिर करते हैं।

चौथा लाभ: मनुष्य असहाय है, लेकिन दुर्भाग्य से घिरा हुआ है; वह निर्धन है, लेकिन उसकी ज़रूरतें अनगिनत हैं; और वह नपुंसक है, लेकिन जीवन का बोझ बहुत भारी है। अगर वह सर्वशक्तिमान ईश्वर पर भरोसा नहीं करता, उस पर भरोसा नहीं करता और पूरे भरोसे के साथ उसके सामने समर्पण नहीं करता, तो उसका विवेक हमेशा परेशान रहेगा। वह खुद को व्यर्थ की पीड़ा, दर्द और पछतावे में फंसा हुआ पाता है, जो सब उसका दम घोंट देते हैं। ये या तो उसे नशे में डाल देते हैं या उसे जानवर बना देते हैं।

पांचवां लाभ: जो लोग वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को उजागर करते हैं और सत्य का अनुभव करते हैं, वे इस बात से सहमत हैं कि आपके अंगों, इंद्रियों और क्षमताओं द्वारा की गई ईश्वर की पूजा और महिमा का पुरस्कार, सबसे बड़ी जरूरत के समय, स्वर्ग के फलों के रूप में दिया जाएगा।

यदि आप इस लेन-देन को इसके पांच गुना लाभ के साथ अस्वीकार करते हैं, इसके अतिरिक्त-
इसके लाभ से वंचित होने पर, आपको निम्नलिखित पाँच गुना हानि होती है:

पहली हानि: आपकी प्रिय सम्पत्ति और संतान, आपकी प्रिय शारीरिक आत्मा और उसकी इच्छाएं, तथा आपकी मूर्खतापूर्ण रूप से प्रिय युवावस्था और जीवन, सभी लुप्त हो जाएंगे, तथा उनके पापों और पीड़ाओं का बोझ आप पर डाल देंगे।

दूसरी हानि: विश्वासघात के लिए आपको दण्डित किया जाएगा, क्योंकि आपने सबसे मूल्यवान औजारों का उपयोग सबसे बेकार वस्तुओं पर करके स्वयं के साथ अन्याय किया है।

तीसरा नुकसान: अपनी बहुमूल्य क्षमताओं को बहुत निम्न स्तर तक गिराने से
जानवरों के प्रति तुमने परमेश्वर की बुद्धि का अपमान और उल्लंघन किया है।

चौथी हानि: अपनी लाचारी और गरीबी में, आप जीवन का भारी बोझ अपने कंधों पर उठाएंगे और निरन्तर क्षणभंगुरता और अलगाव की मार से कराहते रहेंगे।
वायु-संचार.

पाँचवी हानि: तुम दयालु की सुन्दर देन जैसे बुद्धि, हृदय, आँख, जीभ को, जो परलोक में अनन्त जीवन और सुख की नींव रखने के लिए प्रयोग में लायी गयी थीं, एक कुरूप रूप में परिवर्तित कर देते हो, जो तुम्हारे लिए नरक के द्वार खोलने के लिए उपयुक्त है।

हमें यह सौदा करना चाहिए। बहुत से लोग इसे क्यों नहीं करना चाहते? क्या यह इतना मुश्किल है? बिलकुल नहीं! इसके परिणामस्वरूप होने वाले बोझ कठिन नहीं हैं। धार्मिक रूप से स्वीकार्य आनंद की सीमाएँ व्यापक और पर्याप्त हैं।

अपनी इच्छा पूरी करो, और इसलिए तुम्हें निषिद्ध काम करने की ज़रूरत नहीं है। ईश्वर द्वारा निर्धारित कर्तव्य हल्के और सीमित हैं। उनका सेवक और सैनिक होना एक ऐसा सम्मान है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

आपका कर्तव्य है कि आप ईश्वर के नाम पर सभी काम करें और आगे बढ़ें, एक सैनिक की तरह ईश्वर की ओर से प्राप्त करें और दें, और उनकी अनुमति और कानून का पालन करें। यदि आप पाप करते हैं, तो यह कहकर उनकी क्षमा मांगें: "हे प्रभु, हमारे पापों को क्षमा करें और हमें अपने सेवकों के रूप में स्वीकार करें। हमें आपके भरोसे पर तब तक वफादार रहने में सक्षम करें जब तक कि प्रतिपूर्ति का समय न आ जाए। आमीन।" और उनसे प्रार्थना करें।

सातवाँ शब्द

मानवीय खुशियों का द्वार

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

I यदि आप यह समझना चाहते हैं कि सच्चाई को उजागर करने की कुंजी कितनी मूल्यवान है, तो कृपया हमें यह बताएं कि क्या आप इसे जानना चाहते हैं?

ब्रह्मांड की रहस्यमय पहेली को सुलझाने और मानव आत्मा के लिए खुशी का द्वार खोलने के लिए ईश्वर और परलोक में विश्वास करना है; और यह समझना है कि सभी रोगों के लिए वे कितनी अमूल्य दवा हैं, अपने निर्माता पर धैर्यपूर्वक भरोसा करना और अपने प्रदाता से कृतज्ञतापूर्वक प्रार्थना करना और उसकी शरण लेना; और यह भी समझना है कि अनंत काल की यात्रा के लिए वे कितने महत्वपूर्ण, मूल्यवान और शानदार टिकट हैं, कब्र के लिए एक रोशनी और अगले जीवन के लिए प्रावधान हैं, कुरान पर ध्यान देना, इसके कानूनों का पालन करना, निर्धारित प्रार्थनाएं करना और प्रमुख पापों से बचना है3 - यदि आप यह सब समझना चाहते हैं, तो निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें: एक बार एक सैनिक युद्ध के मैदान और परीक्षण के बीच, लाभ या हानि के क्षेत्र में, खुद को भयावह परिस्थितियों में पाया। वह अपने दाहिने और बाएं हिस्से पर घायल हो गया था। यह उसका भी इंतजार कर रहा था। उसके सामने एक लंबी सड़क थी, जिस पर उसे यात्रा करनी थी। जब दुर्भाग्यपूर्ण सैनिक निराशा में सोच रहा था, एक बुद्धिमान, धर्मपरायण व्यक्ति उसके दाईं ओर प्रकट हुआ और बोला: "निराश मत हो। मैं तुम्हें दो ताबीज दूंगा और तुम्हें उन्हें सिखाऊंगा। यदि आप उनका सही उपयोग करते हैं, तो शेर तुम्हारे लिए एक आज्ञाकारी घोड़ा बन जाएगा, और फांसी तुम्हारे आनंद के लिए झूले की तरह बन जाएगी। मैं तुम्हें दो दवाइयाँ भी दूँगा जो तुम्हारे घावों को ठीक कर देंगी और उन्हें गुलाब की तरह महका देंगी। इसके अलावा, मैं तुम्हें एक टिकट भी दूंगा जो अनुमति देता है

---

3 मुख्य पापों में शामिल हैं ईश्वर के साथ साझी बनाना; माता-पिता का अनादर करना; दूसरों की संपत्ति, विशेषकर अनाथों की संपत्ति हड़पना; सूदखोरी में लिप्त होना; सेना के आगे बढ़ने पर पीछे हट जाना; पतिव्रता स्त्रियों की निन्दा करना; निर्धारित दण्ड वाले अपराध करना (जैसे, हत्या, व्यभिचार, व्यभिचार, चोरी); कुरान या परम्पराओं में अगले जन्म में ऐसा करने पर कठोर दण्ड की धमकी के बावजूद निषिद्ध कार्य करना; तथा पैगम्बर द्वारा शापित कार्य करना। (ट्र.)

आप एक दिन में वर्षों की दूरी तय कर सकते हैं। उन्हें आज़माएँ और देखें कि क्या मेरी बातें सच हैं।" सिपाही ने ऐसा ही थोड़ा किया, और पाया कि उसकी बातें सच हैं। मैं, यह बदकिस्मत सैद, भी इसकी पुष्टि करता हूँ। क्योंकि मैंने भी उन्हें थोड़ा आज़माया और पाया कि वे बिल्कुल सच थे।

अचानक, एक शैतानी, चालाक आदमी उसके बाईं ओर दिखाई दिया, जिसके पास अलंकृत आभूषण, चित्र, कल्पनाएँ और मादक पदार्थ थे, और उसने कहा: “अरे, चलो, दोस्त! चलो मौज-मस्ती करते हैं, संगीत सुनते हैं, सुंदर महिलाओं की इन तस्वीरों को देखते हैं, और ये स्वादिष्ट चीजें खाते-पीते हैं।” उसने सैनिक से पूछा कि वह क्या बड़बड़ा रहा था। सैनिक ने उत्तर दिया: “एक पवित्र प्रार्थना,” जिस पर आदमी ने कहा: “इन जटिल मुद्दों को छोड़ो। चलो अपना आराम बर्बाद न करें। तुम्हारे हाथ में क्या है?” सैनिक ने उत्तर दिया: “दवा।” आदमी ने नाक भौं सिकोड़ी: “इसे फेंक दो। तुम्हें कुछ भी नहीं है। उस कागज पर पाँच मुहरें क्यों लगी हैं?” जब सैनिक ने कहा कि यह एक टिकट और राशन कार्ड है, तो आदमी ने कहा: “इन्हें फाड़ दो! तुम इतने सुंदर वसंत के दिन कहीं जाने के बारे में कैसे सोच सकते हो?” इस तरह से उस शैतानी आदमी ने सैनिक को गुमराह करने की कोशिश की। सैनिक आखिरकार थोड़ा बहक गया, क्योंकि वह इंसान है और इसलिए धोखे का शिकार हो सकता है।

अपने दाहिनी ओर, सैनिक को अचानक गरजने जैसी आवाज़ सुनाई देती है: “उठो!
धोखा मत खाओ। उस शैतान से कहो: 'अगर तुम शेर को मार सकते हो, तो ऐसा करो। अगर तुम फाँसी हटा सकते हो, तो ऐसा करो। अगर तुम मेरे घावों को भर सकते हो, तो ऐसा करो। अगर तुम ऐसा कर सकते हो कि मैं इस रास्ते पर आगे न चलूँ, तो ऐसा करो। ये काम करो, और फिर हम मौज-मस्ती कर सकते हैं। अगर तुम नहीं कर सकते, तो चुप रहो!'"

इस प्रकार, हे मेरी आत्मा, जो अपनी युवावस्था में हँसी थी और अब अपनी हँसी पर रोती है! सैनिक तुम्हारा और हर दूसरे इंसान का प्रतिनिधित्व करता है। शेर हमारी मृत्यु की नियत घड़ी है, जबकि फाँसी हमारे मित्रों से निरंतर अलगाव का प्रतीक है। दो घाव हमारी असीम और कष्टकारी नपुंसकता और हमारी घोर और असीम गरीबी हैं। यह यात्रा आत्माओं की दुनिया, भ्रूण के रूप में हमारे जीवन, हमारी युवावस्था, बुढ़ापे, कब्र, पुनरुत्थान और सर्वोच्च समागम के स्थान और सीरत (वह “पुल” जो नरक या स्वर्ग की ओर ले जाता है) से होकर गुजरने वाली लंबी परीक्षा यात्रा है। दो ताबीज ईश्वर और परलोक में विश्वास हैं।

समझो: ईश्वर और परलोक में विश्वास। इस पवित्र ताबीज़-पुरुष के माध्यम से मृत्यु (सिंह) आज्ञाकारी घोड़े की तरह आती है, ताकि विश्वासियों को दुनिया की काल कोठरी से निकालकर स्वर्ग के बाग़ों में, दयालु ईश्वर की उपस्थिति में ले जाए। इसी कारण से पवित्र और विद्वान, जिन्हें मृत्यु की सच्ची समझ है, वे मरने से नहीं डरते और वास्तव में अपने नियत समय से पहले ही मरना चाहते हैं। समय बीतने के साथ-साथ,

दोस्तों से अलगाव (मृत्यु के कारण, जिसका प्रतिनिधित्व फांसी द्वारा किया जाता है), विश्वास द्वारा ईश्वर के अद्भुत कार्यों, उनकी शक्ति के चमत्कारों और उनकी करुणा के प्रकटीकरणों की निरंतर नवीनीकृत और हमेशा रंगीन कढ़ाई को पूर्ण आनंद के साथ देखने के साधन में बदल जाता है। यह इस तरह है: चूंकि सूर्य के प्रकाश और फिल्म के दृश्यों में रंगों को प्रतिबिंबित करने वाले "दर्पण" विविध और प्रतिस्थापित होते हैं, इसलिए परिणामी दृश्य और भी सुंदर होते हैं।

जहाँ तक दवाइयों का सवाल है: सब्र करना और अल्लाह पर भरोसा करना, उसकी शक्ति पर भरोसा करना और उसकी बुद्धि पर भरोसा रखना। जब हम अपनी बेबसी को महसूस करते हैं और हुक्म देने वाले मालिक पर भरोसा करते हैं, तो डरने की क्या बात है, " हो जा" और वह हो जाता है (36:82)4? यहाँ तक कि जब वह किसी बहुत ही भयावह स्थिति और बड़ी मुसीबत का सामना करता है, तो वह कहता है: बेशक, हम अल्लाह के हैं और उसी की तरफ हमें लौटना है (2:156), और अपने दयालु रब पर पूरी शांति के साथ भरोसा करता है। जो लोग अल्लाह के बारे में सच्चा ज्ञान रखते हैं, वे अल्लाह के सामने अपनी बेबसी को महसूस करके संतुष्ट रहते हैं और उसके फैसले पर अपनी उम्मीद रखते हैं।

ईश्वर के भय में आनंद है। अगर एक साल के बच्चे से पूछा जाए कि उसे सबसे सुखद चीज़ क्या लगती है, तो उसका जवाब होगा: "अपनी कमज़ोरी और लाचारी के एहसास के साथ अपनी माँ की गर्म गोद में शरण लेना - उसकी सबसे प्यारी थपकी से।" चूँकि माँ की करुणा ईश्वर की करुणा की एक छोटी सी चिंगारी है, इसलिए पूर्णता वाले लोग अपनी लाचारी और ईश्वर के भय में बहुत आनंद लेते हैं। अपनी शक्ति में जो कुछ भी है, उसे त्यागकर वे ईश्वर की शरण लेते हैं और अपने भय और लाचारी को उनके सामने मध्यस्थता का माध्यम बनाते हैं।

दूसरी दवा है ईश्वर को धन्यवाद और संतोष के साथ निवेदन करना और उस उदार सर्वदाता की दया पर भरोसा करना। एक सर्वदाता के मेहमान, जिसने धरती की सतह को एक मेज़ और उस मेज़ पर फूलों की बहार बनाने के लिए बनाया है, ईश्वर के सामने अपनी गरीबी और लाचारी को असहनीय कैसे मान सकते हैं? उनकी गरीबी और ज़रूरत उनकी भूख बन जाती है, और इसलिए वे अपनी गरीबी को बढ़ाने की कोशिश करते हैं। यही कारण है कि आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण लोग अपनी गरीबी पर गर्व करते हैं। हालाँकि, इसे गलत न समझें! इसका मतलब है ईश्वर के सामने अपनी गरीबी के बारे में जागरूक होना और उससे विनती करना, लोगों के सामने गरीबी का दिखावा करना और भिखारी का रूप धारण करना नहीं।

अनंत काल के लिए टिकट में निर्धारित प्रार्थनाएँ, अन्य दायित्वों का पालन करना और प्रमुख पापों से बचना शामिल है। सभी समझदार और विद्वान लोग इस बात पर सहमत हैं कि प्रकाश पाने का एकमात्र तरीका, कुछ प्रावधान और

---

4 जब वह किसी चीज़ को होना चाहता है तो बस उससे कहता है, “हो जा!” और वह हो जाती है। (36:82)

अनंत काल की ओर लंबी यात्रा के लिए एक वाहन कुरान के आदेशों और निषेधों का पालन करना है। अकेले विज्ञान, दर्शन और शिल्पकला का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि वे केवल कब्र तक का रास्ता रोशन करते हैं।

हे मेरे आलसी आत्मा! पाँचों नमाज़ें अदा करना और सात बड़े पापों का त्याग करना कितना आसान और हल्का है, और उनके परिणाम कितने महत्वपूर्ण और महान हैं। यदि आप यहाँ सत्य को समझ गए, तो आप उस शैतान से कहेंगे जो आपको दुराचार और अपव्यय में बहकाने की कोशिश करता है: "यदि आपके पास मृत्यु, नपुंसकता और गरीबी को खत्म करने और कब्र का दरवाजा बंद करने का साधन है, तो हमें बताएं और हम उस पर ध्यान दें। अन्यथा, चुप रहें! ब्रह्मांड की सबसे बड़ी मस्जिद में, कुरान ब्रह्मांड को पढ़ता है, इसलिए आइए इसे सुनें।

आइए हम इसके प्रकाश से भर जाएं और इसके मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करें। आइए हम इसे नियमित रूप से पढ़ें! बोलना इसका अधिकार है और यह जो कहता है वह सत्य है। कुरान सत्य है, जो परम सत्य से आता है। यह सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है, अपना प्रकाश हर जगह फैलाता है।”

> हे ईश्वर, हमारे दिलों को ईमान और कुरान की रौशनी से रोशन कर।
> हमें अपनी दरिद्रता की अनुभूति और आपके समक्ष समर्पण से समृद्ध कीजिए।
> हमको अपने प्रति उदासीनता से दरिद्र मत बना। हमने तेरे लिए अपनी शक्ति और सामर्थ्य त्याग दी है और तेरी शक्ति और पराक्रम में शरण ली है, अतः हमें भी तुझ पर भरोसा करने वालों में शामिल कर।
>
> हमें अपने हाल पर न छोड़। अपनी रक्षा से हमारी रक्षा कर। हम पर और सभी ईमानवाले मर्दों और औरतों पर रहम कर।
>
> हमारे स्वामी मुहम्मद, आपके सेवक और पैगंबर, आपके चुने हुए और अंतरंग मित्र - आपके राज्य की सुंदरता, आपकी रचना में सबसे प्रमुख, आपके स्नेह का केंद्र और आपके मार्गदर्शन का सूर्य; आपकी प्रमाणों की जीभ, आपकी दया का मूर्त रूप, आपकी रचना का प्रकाश और आपकी रचनाओं की महिमा; आपकी रचनाओं की बहुलता के बीच आपकी एकता का दीपक; आपकी रचना के रहस्य को प्रकट करने वाला; आपके प्रभुत्व के राज्य का संदेशवाहक; जो आपको प्रसन्न करता है उसका उपदेशक; आपके नामों के खजाने का उद्घोषक; आपके सेवकों का शिक्षक; आपकी निशानियों का व्याख्याता; आपके प्रभुत्व की सुंदरता का दर्पण; आपको देखने और आपकी गवाही देने का माध्यम; आपके प्रिय और रसूल जिन्हें आपने संसारों के लिए दया बनाकर भेजा - और उनके परिवार और साथियों, उनके साथी नबियों और रसूलों, आपके निकट लाए गए आपके फ़रिश्तों और आपके नेक सेवकों पर। आमीन।

आठवाँ शब्द

धर्म की आवश्यकता

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह सर्वज्ञ, स्वयंभू है (जिससे सब कुछ जीवित है)। (2:255)

अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम है। (3:19)

यदि आप दुनिया की वास्तविक प्रकृति को समझना चाहते हैं और यदि आप यह समझना चाहते हैं कि सच्चे धर्म का अभाव इस संसार को सबसे अंधकारमय कालकोठरी और अविश्वासियों को सबसे दुर्भाग्यपूर्ण प्राणी बना देता है, और ईश्वर के अस्तित्व और एकता में विश्वास, साथ ही उस पर भरोसा, ब्रह्मांड के गुप्त संकेत को खोलता है और हमारी आत्माओं को अंधकार से बचाता है - यदि आप यह सब समझना चाहते हैं, तो निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें:

दो भाई साथ-साथ यात्रा करते हैं। सड़क पर एक दोराहे पर पहुँचकर वे एक बुद्धिमान बूढ़े व्यक्ति को देखते हैं और उससे पूछते हैं कि उन्हें किस रास्ते से जाना चाहिए। वह उनसे कहता है: "दाहिनी ओर जाने वाले रास्ते पर कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है, लेकिन इस पालन से एक निश्चित सुरक्षा और खुशी मिलती है, जबकि बाईं ओर जाने वाला रास्ता एक निश्चित प्रकार की स्वतंत्रता का वादा करता है, लेकिन इस स्वतंत्रता के भीतर कुछ खतरे और संकट छिपे होते हैं। अब, चुनाव आपका है!"

अनुशासित, शिष्ट भाई, परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए, सही मार्ग अपनाता है और कानून और व्यवस्था पर निर्भरता स्वीकार करता है।

दूसरा भाई, जो अनैतिक और आवारा है, स्वतंत्रता की खातिर बाएं रास्ते पर चलता है। वह सहज लगता है, लेकिन वास्तव में उसे कोई आंतरिक शांति महसूस नहीं होती। एक रेगिस्तान में पहुँचकर, उसे अचानक एक जानवर की भयानक आवाज़ सुनाई देती है जो उस पर हमला करने वाला है। वह भागता है और 60 मीटर गहरे एक जलहीन कुएँ को देखकर उसमें कूद जाता है। आधे रास्ते में, वह दीवार से उगने वाले एक पेड़ को पकड़ लेता है ताकि वह गिरना रोक सके। पेड़ की दो जड़ें हैं, जो दोनों ही उग रही हैं।

दो चूहों ने उसे कुतर दिया, एक सफेद और दूसरा काला। ऊपर देखते हुए, वह जानवर को अपने लिए इंतज़ार करते हुए देखता है। नीचे देखते हुए, वह अपने पैरों के पास एक भयानक अजगर को देखता है, जिसका बड़ा मुंह उसे प्राप्त करने के लिए खुला है। दीवार को देखते हुए, वह नोटिस करता है कि यह संप्रदायों में काम करने वालों से भरा हुआ है। पेड़ को फिर से देखते हुए, वह देखता है कि हालांकि यह केवल एक अंजीर का पेड़ है, लेकिन चमत्कारिक रूप से इस पर अखरोट और अनार जैसे कई अलग-अलग फल उग रहे हैं।

कुएं में लटके हुए उसे समझ में नहीं आ रहा कि क्या हुआ है।
तर्क करने में असमर्थ होने के कारण वह यह कल्पना नहीं कर पाता कि ये सारी चीज़ें संयोग से नहीं हुई हैं, और इनका कोई महत्वपूर्ण अर्थ अवश्य होगा। वह यह नहीं समझ पाता कि कोई तो होगा जो इन सारी चीज़ों को इस तरह से घटित होने का कारण बनता है।

हालाँकि अंदर से परेशान है, और उसकी आत्मा और दिल की शिकायतों के बावजूद, उसकी शारीरिक, दुष्ट आत्मा दिखावा करती है कि सब कुछ ठीक है और इसलिए उनके रोने को अनदेखा करती है। यह दिखावा करते हुए कि वह बगीचे में मौज-मस्ती कर रहा है, वह सभी तरह के फल खाने लगता है - मुफ़्त में। लेकिन उनमें से कुछ ज़हरीले हैं और उसे नुकसान पहुँचाएँगे।

हदीस कुदसी5 में ईश्वर कहते हैं: "मैं अपने बंदों के साथ वैसा ही व्यवहार करूंगा जैसा वे मेरे बारे में सोचते हैं।"6 यह व्यक्ति अपने साथ होने वाली हर चीज को बिना किसी अर्थ के देखता है, और इसलिए उसके लिए यह वैसा ही है। इसलिए उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाएगा जैसा वह सोचता और देखता है। वह न तो मरता है और न ही अच्छी तरह जीता है, बल्कि केवल सस्पेंस की पीड़ा में रहता है।

दूसरे, अनुशासित, बुद्धिमान भाई को याद करते हुए, आइए हम उसकी स्थिति देखें। चूँकि वह अच्छे व्यवहार वाला और अच्छा चरित्र वाला है, इसलिए वह हमेशा अच्छाई के बारे में सोचता है, कानून का पालन करता है और उसे मानता है, और खुद को सुरक्षित और स्वतंत्र महसूस करता है। बगीचे में सुंदर फूल और फल के साथ-साथ कुछ बर्बाद और बदसूरत चीजें देखकर, वह अच्छाई और सुंदरता पर ध्यान केंद्रित करता है। उसका भाई ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि वह खुद को बर्बाद और बदसूरत चीजों से चिंतित करता है और ऐसे बगीचे में उसे कोई आराम नहीं मिलता। बुद्धिमान भाई इस हिसाब से जीता है: "हर चीज के अच्छे पक्ष को देखो," और इसलिए आम तौर पर हर चीज से खुश रहता है।

अपने रास्ते में वह भी अपने भाई की तरह रेगिस्तान में पहुँचता है, और वहाँ एक जानवर दिखाई देता है। वह भी डरता है लेकिन अपने भाई जितना नहीं, क्योंकि वह सोचता है कि रेगिस्तान का कोई मालिक और शासक होना चाहिए और जानवर उसकी सेवा में और उसके आदेश के अधीन होना चाहिए। वह भी एक कुएँ में कूद जाता है और आधे रास्ते में कुछ पेड़ की शाखाएँ पकड़ लेता है। दो शाखाओं को देखकर वह डर जाता है।

---

5 हदीस कुदसी: यह पैगंबर की कही गई बातों की एक खास श्रेणी है। शब्द इस प्रकार हैं:
पैगम्बर का, लेकिन इसका अर्थ सीधे ईश्वर से संबंधित है। (ट्र.)

6 साहिह अल-बुखारी, "तौहीद" 15, 35; सहीह मुस्लिम, "धिक्र" 2, 19, सुनान एट-तिर्मिज़ी, "ज़ुहद" 51।

पेड़ की दो जड़ों को कुतरते चूहों, साथ ही नीचे ड्रैगन और ऊपर जानवर को देखकर वह खुद को एक अजीब स्थिति में पाता है। लेकिन अपने भाई के विपरीत, चूँकि उसका चरित्र अच्छा है, जो उसे सकारात्मक रूप से सोचने और हर चीज़ के अच्छे पक्ष को देखने के लिए प्रेरित करता है, वह अनुमान लगाता है कि हर चीज़ को किसी ने व्यवस्थित किया होगा और एक संकेत का निर्माण किया होगा। यह सोचकर कि उसे देखा और परखा जा रहा है, वह समझता है कि उसे एक परीक्षण के रूप में और एक उद्देश्य के लिए निर्देशित और निर्देशित किया जा रहा है। उसकी जिज्ञासा जागृत हुई, उसने पूछा: "कौन मुझे उसके बारे में बताना चाहता है और मुझे इस तरह के अजीब रास्ते पर एक निश्चित बिंदु तक ले जाना चाहता है?" यह जिज्ञासा उसके अंदर संकेत के मालिक के लिए प्यार जगाती है, जो उसे संकेत को समझने, घटनाओं का क्या मतलब है, और उसके मालिक को खुश करने के लिए अच्छे गुण प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है।

उसे एहसास होता है कि यह पेड़ एक अंजीर का पेड़ है, हालाँकि इस पर कई तरह के फल लगते हैं। अब उसे डर नहीं लगता, क्योंकि उसे एहसास होता है कि यह अदृश्य मालिक के फलों की एक नमूना सूची है जिसे उसने अपने मेहमानों के लिए अपने बगीचे में तैयार किया है।

अन्यथा, एक पेड़ इतने सारे अलग-अलग फल नहीं देगा। वह ईमानदारी से प्रार्थना करना शुरू कर देता है और परिणामस्वरूप, रहस्य की कुंजी उसके अंदर जागृत हो जाती है। वह घोषणा करता है: "हे इस दृश्य और घटनाओं के स्वामी, मैं आपके हाथों में हूँ। मैं आपकी शरण में हूँ और आपकी सेवा में हूँ। मैं आपकी स्वीकृति और आपके बारे में ज्ञान चाहता हूँ।"

दीवार खुलती है, और एक दरवाज़ा (ड्रैगन का मुँह) दिखाई देता है जो एक अद्भुत, सुखद बगीचे की ओर जाता है। ड्रैगन और जानवर दोनों ही दो सेवक बन जाते हैं जो उसे अंदर आने का निमंत्रण देते हैं। जानवर एक घोड़े में बदल जाता है जिस पर वह सवारी करता है।

और इसलिए, मेरी आलसी आत्मा और काल्पनिक मित्र! आइए उनकी स्थितियों की तुलना करें और देखें कि कैसे अच्छाई अच्छाई लाती है और बुराई बुराई लाती है। वह भाई जिसने आत्म-विश्वास और स्व-इच्छाधारी स्वतंत्र राज्य का बायाँ रास्ता अपनाया, वह डर से काँपते हुए अजगर के मुँह में गिरने वाला है। वह हमेशा चिंतित, अकेला और निराश रहता है, और खुद को जंगली जानवरों के हमलों का सामना करने वाला कैदी मानता है।

वह अपने दुख को और भी बढ़ा देता है, क्योंकि वह दिखने में स्वादिष्ट लगता है, लेकिन वास्तव में वह ज़हरीला होता है, जो केवल नमूने होते हैं; उन्हें सिर्फ़ अपने लिए नहीं खाया जाता, बल्कि लोगों को असली फल खोजने और उनके ग्राहक बनने के लिए प्रेरित किया जाता है। वह अपने दिन को अंधकार में बदल देता है। वह खुद के साथ अन्याय करता है, अपनी स्थिति को नरक जैसी बना देता है, ताकि वह न तो दया का पात्र हो और न ही शिकायत करने का अधिकार रखता हो।

इसके विपरीत, जो भाई सही रास्ते पर चला, वह एक फलदार बगीचे में है और नौकरों से घिरा हुआ है। वह हर अलग और सुंदर घटना का अध्ययन विस्मय, सुखद भय और ज्ञान की एक प्यारी खोज के साथ करता है। आशा और लालसा के साथ, वह खुद को एक सम्मानित अतिथि के रूप में देखता है जो अपने उदार मेजबान के अजीब और सुंदर नौकरों के साथ आनंद ले रहा है। वह खाना नहीं खाता

अंजीर के पेड़ के फलों को देखकर, वह उनका स्वाद लेता है और वास्तविकता को समझते हुए, अपने आनंद को स्थगित कर देता है और प्रत्याशा का आनंद लेता है।

पहला भाई उस व्यक्ति के समान है जो गर्मियों में दोस्तों से घिरे बगीचे में दावत में अपनी पसंदीदा स्थिति को नकारता है, और इसके बजाय नशे में धुत होकर खुद को सर्दियों में जंगली जानवरों के बीच कल्पना करता है और इसकी शिकायत करता है। खुद के साथ अन्याय करना और अपने दोस्तों का अपमान करना, वह किसी दया का पात्र नहीं है। दूसरा भाई, जो दिया गया भरोसा करके स्वीकार करता है और कानून का पालन करता है, वह वास्तविकता को देखता है और स्वीकार करता है, जो उसके लिए सुंदर है। वास्तविकता की सुंदरता को समझने के बाद, वह वास्तविकता के मालिक की पूर्णता का सम्मान करता है, और इसलिए उसकी दया का पात्र है। इस प्रकार हम आंशिक रूप से समझ सकते हैं: जो कुछ भी तुम्हारे साथ होता है वह ईश्वर की ओर से है, और जो कुछ भी तुम्हारे साथ होता है वह तुम्हारे स्वयं की ओर से है (4:79)।

भाइयों पर विचार करते हुए, हम देखते हैं कि एक की शारीरिक, बुरी आज्ञा देने वाली आत्मा ने उसके लिए नरक जैसी स्थिति तैयार की, जो उसकी वास्तविकता के प्रति दृष्टिकोण के अनुरूप थी, जबकि दूसरे की संभावित अच्छाई, सकारात्मक इरादे और अच्छे स्वभाव ने उसे बहुत ही अनुकूल और खुशहाल स्थिति में पहुँचाया। अब, मैं अपनी आत्मा से और साथ ही उस व्यक्ति से भी कहता हूँ जो मेरी आत्मा के साथ इस कहानी को सुन रहा है: यदि आप दृष्टांत में भाग्यशाली भाई बनना चाहते हैं, न कि बदकिस्मत, तो कुरान को सुनें, इसके आदेशों का पालन करें, इसके मार्गदर्शन का पालन करें।

दृष्टान्त का सार इस प्रकार है: एक भाई तो विश्वासी आत्मा है, और उसका हृदय धर्मी है; और दूसरा भाई अविश्वासी आत्मा है, और उसका हृदय दुष्ट है।
सही रास्ता कुरान और ईमान का है; बायाँ रास्ता अविश्वास और विद्रोह का है। बगीचा क्षणभंगुर मानवीय सामाजिक जीवन है, जिसमें अच्छाई और बुराई, स्वच्छ और प्रदूषित दोनों पहलू हैं। एक समझदार व्यक्ति "जो साफ और सुखद है उसे लेता है, जो मैला और परेशान करने वाला है उसे छोड़ देता है," और शांत मन से आगे बढ़ता है। रेगिस्तान धरती है, जानवर मौत है, कुआँ हमारा जीवन है, और 60 मीटर हमारी औसत आयु 60 वर्ष है।

कुएँ में पेड़ जीवन है, इसकी जड़ों को कुतरने वाले दो चूहे दिन-रात हैं, और अजगर कब्र का द्वार है। एक आस्तिक के लिए, यह बगीचे की ओर खुलने वाले एक दरवाजे से अधिक कुछ नहीं है। कीड़े वे परेशानियाँ हैं जिनका हम सामना करते हैं, और वास्तव में ईश्वर की कोमल चेतावनियाँ हैं जो विश्वासियों को असावधान होने से रोकती हैं। फल इस दुनिया के उपहार हैं जो परलोक की नेमतों के नमूने के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं, जो ग्राहकों को स्वर्ग के फलों की ओर आमंत्रित करते हैं। विभिन्न फलों वाला पेड़ ईश्वरीय शक्ति की अनूठी मुहर, ईश्वरीय आधिपत्य की अनोखी मुहर और ईश्वरीय संप्रभुता के अद्वितीय हस्ताक्षर को दर्शाता है, जिसका अनूठा गुण "एक चीज़ से सब कुछ बनाना" और "हर चीज़ को एक चीज़ में बदलना" है; विभिन्न बनाना

एक ही मिट्टी से पौधे और फल बनाना; पानी की एक बूंद से सभी जीवित चीजों को बनाना; और सभी जीवित चीजों को एक ही तरीके से लेकिन अलग-अलग खाद्य पदार्थों के माध्यम से पोषित और बनाए रखना। एक चीज से सब कुछ बनाना और सब कुछ को एक चीज में बदलना एक संकेत है, एक निशान है, जो हर चीज के निर्माता के लिए विशिष्ट है, जिसके पास हर चीज पर शक्ति है। यह संकेत सृजन में ईश्वर की गुप्त इच्छा को दर्शाता है। इसे विश्वास के साथ खोला जाता है, और इसकी कुंजी है: "हे ईश्वर, ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है; ईश्वर, उसके अलावा कोई देवता नहीं है, वह सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर है।"

एक भाई के लिए, कुरान और ईमान वालों के लिए, अजगर का मुंह (कब्र) दुनिया की काल कोठरी और परीक्षा के मैदान से स्वर्ग में अनंत काल के बागों की ओर खुलने वाले दरवाजे में बदल जाता है, सांसारिक जीवन की परेशानियों से दयालु की दया की ओर। दूसरे के लिए, गुमराह और विद्रोही सभी लोगों के लिए, यह यातना की एक संकीर्ण, दम घुटने वाली जगह का दरवाजा है। जानवर एक आज्ञाकारी सेवक, एक अनुशासित और प्रशिक्षित घोड़े में बदल जाता है जिसका मतलब है कि अविश्वासियों के लिए मृत्यु प्रियजनों से एक दर्दनाक अलगाव है, उनके धोखे, सांसारिक स्वर्ग को छोड़ने के बाद एक कैद है। विश्वासियों के लिए, यह मृत मित्रों और साथियों के साथ पुनर्मिलन का एक साधन है। यह उनके सुख के शाश्वत घर में जाने के समान है, शाश्वत उद्यानों में जाने के लिए एक औपचारिक निमंत्रण है, सर्व-दयालु और कृपालु भगवान की उदारता से उन्हें दी गई सेवाओं के लिए मिलने वाला पारिश्रमिक प्राप्त करने का एक अवसर है, तथा जीवन के बोझ से एक प्रकार की निवृत्ति है।

संक्षेप में, जो लोग इस क्षणभंगुर जीवन का पीछा करते हैं, वे खुद को नरक में डालते हैं, भले ही वे उस जगह पर रहते हैं जो उन्हें धरती पर स्वर्ग जैसा लगता है। जो लोग अनंत जीवन की तलाश करते हैं, वे दोनों दुनिया में शांति और खुशी पाते हैं। दुनिया में चाहे उन्हें कितनी भी परेशानियाँ क्यों न झेलनी पड़ें, वे धैर्य दिखाते हैं और भगवान का शुक्रिया अदा करते हैं, क्योंकि वे दुनिया को स्वर्ग के लिए प्रतीक्षा कक्ष के रूप में देखते हैं।

हे ईश्वर, हमें खुशी, मुक्ति, कुरान और ईमान वाले लोगों में शामिल कर! आमीन। हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें, कुरान में निहित सभी अक्षरों की संख्या के अनुसार, जो कि कुरान के पाठकों द्वारा इसके पहले अवतरण से लेकर समय के अंत तक दोहराए गए प्रत्येक शब्द की ध्वनि तरंगों में दयालु की अनुमति से परिलक्षित होती है।

हम पर, हमारे माता-पिता पर और सभी ईमान वालों पर अपनी दया के द्वारा इन शब्दों की संख्या तक दया कर। आमीन। सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जो सारे संसारों का पालनहार है।

बारहवाँ वचन

कुरान की बुद्धिमत्ता के बीच एक संक्षिप्त तुलना और मानव दर्शन और वैज्ञानिकता

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

जिसे बुद्धि प्रदान की गई, उसे बहुत-सी भलाई प्रदान की गई। (2:269)

[नोट: इस वचन में चार मूल सिद्धांतों में से चुने गए दो मूल सिद्धांत कुरान की पवित्र बुद्धि और मानव दर्शन के बीच एक संक्षिप्त तुलना प्रस्तुत करते हैं, तथा मानवता के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए कुरान की शिक्षा और प्रशिक्षण का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करते हैं।]

दूसरा मौलिक सिद्धांत

A कुरान की नैतिक शिक्षा और मनुष्य के नैतिक मूल्यों के बीच तुलना व्यक्तिगत जीवन और दर्शनशास्त्र का: दर्शनशास्त्र का एक ईमानदार छात्र एक फिरौन जैसा अत्याचारी होता है; वह एक घृणित अत्याचारी होता है जो सबसे नीच चीज़ के सामने भी झुक जाता है, अगर वह समझता है कि वह उसके हित में है। वह अधार्मिक छात्र जिद्दी और विद्रोही होता है; लेकिन वह इतना दुखी होता है कि एक सुख के लिए अंतहीन अपमान को स्वीकार कर लेता है। वह अडिग होता है लेकिन इतना नीच होता है कि नीच लाभ के लिए शैतानी लोगों के पैर चूमता है। वह अभिमानी और दबंग भी होता है, लेकिन अपने दिल में किसी तरह का समर्थन न पाकर वह पूरी तरह से नपुंसक और घमंडी अत्याचारी होता है। वह छात्र एक आत्म-केंद्रित अहंकारी होता है जो केवल अपनी भौतिक और शारीरिक इच्छाओं को संतुष्ट करने का प्रयास करता है; एक धूर्त अहंकारी जो कुछ राष्ट्रीय हितों में अपने व्यक्तिगत हितों की प्राप्ति का प्रयास करता है।

---

7 फिरौन प्राचीन मिस्र के राजाओं को दी जाने वाली उपाधि है, और इसका अर्थ है कोई भी अत्याचारी। (अनुवाद)

लेकिन क़ुरआन का सच्चा विद्यार्थी ईश्वर का उपासक है, लेकिन वह सृष्टि में सबसे महान के सामने भी सिर झुकाकर अपने आपको नीचा नहीं करता। वह एक प्रतिष्ठित सेवक है जो जन्नत जैसे सर्वोच्च लाभ को भी अपनी उपासना का लक्ष्य नहीं बनाता। वह विनम्र, सौम्य और कोमल है, फिर भी वह अपने सृजक के अलावा किसी और के सामने स्वेच्छा से अपने आपको नीचा नहीं करता, जब तक कि वह उसे ऐसा करने की अनुमति न दे। वह अपनी जन्मजात कमज़ोरियों और ज़रूरतों से भी वाकिफ़ है, लेकिन वह अपने उदार स्वामी द्वारा उसके भीतर जमा किए गए पारलौकिक धन के कारण स्वतंत्र है; और वह शक्तिशाली है क्योंकि वह अपने स्वामी की असीम शक्ति पर निर्भर है। वह केवल ईश्वर के लिए और प्रसन्नता के लिए और सद्गुणों से सुसज्जित होने के लिए कार्य करता है और प्रयास करता है। क़ुरआन और दर्शन द्वारा दी गई शिक्षा को उपरोक्त तुलना के माध्यम से समझा जा सकता है।

तीसरा मूलभूत सिद्धांत

कुरान की नैतिक शिक्षा और मानव सामाजिक जीवन में दर्शन: दर्शनशास्त्र बल या शक्ति को सामाजिक जीवन में आधार मानता है, और स्वार्थ की प्राप्ति इसका लक्ष्य है। यह मानता है कि जीवन का सिद्धांत संघर्ष है। एक समुदाय और समुदायों के सदस्यों के बीच एकजुटता का बंधन नस्ल और आक्रामक राष्ट्रवाद है; और दर्शनशास्त्र द्वारा दिए जाने वाले फल शारीरिक इच्छाओं की संतुष्टि और मानवीय आवश्यकताओं की निरंतर वृद्धि हैं। हालाँकि, बल आक्रामकता को बुलाता है, स्वार्थ की तलाश भौतिक संसाधनों पर लड़ाई का कारण बनती है, और संघर्ष कलह लाता है। नस्लवाद दूसरों को निगलकर पोषण करता है, जिससे आक्रामकता का मार्ग प्रशस्त होता है। यही कारण है कि मानवता ने खुशी खो दी है।

जहाँ तक कुरान की बुद्धि का सवाल है, वह सामाजिक जीवन में शक्ति को नहीं, बल्कि अधिकार को आधार मानता है। इसका लक्ष्य सद्गुण और ईश्वर की स्वीकृति है, न कि स्वार्थ की पूर्ति। इसका जीवन सिद्धांत संघर्ष नहीं, बल्कि आपसी सहयोग है।

यह केवल धर्म, पेशे और देश के सामुदायिक बंधनों को स्वीकार करता है। इसका अंतिम उद्देश्य शारीरिक इच्छाओं को नियंत्रित करना और आत्मा को उत्कृष्ट मामलों के लिए प्रेरित करना है, हमारी उच्च भावनाओं को संतुष्ट करना ताकि हम मानव-मानव पूर्णता और सच्ची मानवता के लिए प्रयास करें। धर्म एकता की मांग करता है, सद्गुण एकजुटता लाते हैं, और पारस्परिक सहायता का अर्थ है एक-दूसरे की मदद करने के लिए तत्पर होना। धर्म भाईचारा, बहनचारा और सामंजस्य सुनिश्चित करता है। अपनी शारीरिक आत्मा और इच्छाओं को नियंत्रित करना और आत्मा को पूर्णता के लिए प्रेरित करना इस दुनिया और अगले में खुशी लाता है।

तेरहवाँ वचन

युवाओं और कैदियों के साथ बातचीत

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

[नोट: प्रलोभन से घिरे युवा लोगों के साथ की गई बातचीत, लेकिन फिर भी यह समझने में सक्षम कि उनके आसपास क्या हो रहा है।]

कुछ युवा लोग, आधुनिक मनोरंजन का मुकाबला करना चाहते हैं और कल्पनाएँ और इस तरह खुद को आख़िरत में सज़ा से बचाने के लिए, रिसाले-ए-नूर से मदद माँगी। इसके नाम पर, मैंने उन्हें निम्नलिखित बातें बताईं:

कब्र तो है ही, कोई इनकार नहीं कर सकता। चाहे न चाहे, हर कोई-कोई इसमें प्रवेश करेगा। इसे तीन तरीकों से दर्शाया जाता है, चौथा नहीं है:

विश्वासियों के लिए, यह एक अधिक सुंदर दुनिया का द्वार है। जो लोग अगले जीवन को स्वीकार करते हैं लेकिन एक गुमराह, अपव्ययी जीवन जीते हैं, उनके लिए यह एकांत कारावास का द्वार है जो उन्हें उनके प्रियजनों से अलग कर देगा। चूँकि वे विश्वास करते हैं और पुष्टि करते हैं लेकिन अपने विश्वास के अनुसार नहीं जीते हैं, इसलिए उन्हें ठीक इसी तरह दंडित किया जाएगा। अविश्वासियों और गुमराह लोगों के लिए जो परलोक में विश्वास नहीं करते हैं, यह अनन्त मृत्युदंड का द्वार है। चूँकि वे मृत्यु को पुनरुत्थान के बिना एक मृत्युदंड मानते हैं, इसलिए उन्हें अनंत काल तक दंडित किया जाएगा।

मृत्यु कभी भी आ सकती है, युवा और वृद्ध में कोई अंतर नहीं; इसका नियत समय अज्ञात है। ऐसी भयावह रूप से खतरनाक वास्तविकता हमारे लिए सबसे बड़ी, सबसे जरूरी बात है कि हम अनंत दंड और कारावास से बचने का तरीका खोजें, कब्र को प्रकाश और अनंत खुशी की स्थायी दुनिया में खुलने वाले दरवाजे में बदलने का तरीका खोजें।

इन तीन तरीकों से मृत्यु का अनुभव किया जाएगा, जैसा कि 124,000 सच्चे पत्रकारों - पैगंबरों द्वारा बताया गया है, जिनके हाथों में मृत्यु के संकेत हैं।

सत्यनिष्ठा (चमत्कार)। उनकी रिपोर्ट की पुष्टि लाखों संतों ने अपनी समझ, दूरदर्शिता और अंतर्ज्ञान पर भरोसा करके की है। साथ ही, असंख्य सत्य-खोजी विद्वानों ने इसे "ज्ञान पर आधारित निश्चितता" के स्तर पर अपने निर्णायक प्रमाणों के साथ तर्कसंगत रूप से साबित किया है। सभी समूह इस बात पर सहमत हैं कि केवल ईश्वर में विश्वास और उसकी आज्ञाकारिता ही किसी को अनन्त दंड और कारावास से बचा सकती है, और कब्र को अनन्त सुख का मार्ग बना सकती है।

यदि केवल एक विश्वसनीय रिपोर्टर चेतावनी देता है कि किसी विशेष तरीके से मृत्यु का एक प्रतिशत जोखिम है, तो लोग इतने डर जाएंगे कि वे इससे बचेंगे। लेकिन अनगिनत सत्यनिष्ठ, आधिकारिक रिपोर्टर-पैगंबर, संत और सत्य की खोज करने वाले विद्वान-ने अपनी सच्चाई का सबूत दिया है और हमें चेतावनी दी है कि गलत मार्गदर्शन और अपव्यय से मृत्यु और उसके बाद अनंत दंड का सौ प्रतिशत जोखिम होता है। इसके विपरीत, विश्वास और पूजा कब्र को एक ऐसे दरवाजे में बदल देती है जो अनंत खजाने, स्थायी खुशी के महल की ओर खुलता है। यदि हम, विशेष रूप से हममें से जो मुस्लिम होने का दावा करते हैं, ऐसी शक्तिशाली चेतावनी के सामने वास्तव में विश्वास और पूजा नहीं करते हैं, तो हम मरने की प्रतीक्षा करते समय अपनी चिंताओं पर कैसे काबू पाएँगे, भले ही हमें पूरी दुनिया का शासन दिया गया हो और हम इसके सभी सुखों का आनंद लें?

हर जगह बुढ़ापा, बीमारी, दुर्भाग्य और मृत्यु के असंख्य उदाहरण देखने से हमारा दर्द फिर से उभर आता है और हमें मृत्यु की याद आ जाती है। भले ही गुमराह और भ्रष्ट लोग सभी तरह के सुख और आनंद का आनंद लेते दिखें, लेकिन वे निश्चित रूप से आध्यात्मिक पीड़ा की नारकीय स्थिति में हैं। हालाँकि, असावधानी की गहरी मूर्च्छा उन्हें अस्थायी रूप से इसके प्रति असंवेदनशील बना देती है।

आज्ञाकारी विश्वासी कब्र को अनन्त खजाने और अनंत खुशी के द्वार के रूप में अनुभव करते हैं। चूँकि उनके पास जो "विश्वास कूपन" है, वह उन्हें अनन्त दिव्य नियति के आवंटन से एक अमूल्य टिकट देता है, इसलिए वे गहन आनंद और आध्यात्मिक आनंद के साथ "आओ और अपना टिकट ले लो" के आह्वान की अपेक्षा करते हैं। यदि यह आनंद बीज का भौतिक रूप धारण कर सकता है, तो यह एक निजी स्वर्ग में विकसित होगा। लेकिन जो लोग युवावस्था की इच्छाओं को पूरा करने के लिए इस महान आनंद और आनंद को त्याग देते हैं, जो अस्थायी और अवैध सुखों को चुनते हैं, जो जहरीले शहद की तरह असीम दर्द देते हैं, वे जानवरों की स्थिति से बहुत नीचे हैं।

वे पश्चिमी काफ़िरों की तरह नहीं हैं, जो अपने पैग़म्बर को नकारने के बावजूद दूसरे पैग़म्बर को पहचान सकते हैं; जो सभी पैग़म्बरों को नकारने के बावजूद भी ईश्वर को पहचान सकते हैं; या जिनके पास कुछ अच्छे गुण हो सकते हैं, जो कुछ पूर्णता के साधन हैं, भले ही वे ईश्वर को न पहचानें। हालाँकि, मुसलमान पैग़म्बरों, ईश्वर और सभी पूर्णता को पैग़म्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की वजह से जानते हैं, और इसलिए वे मुसलमान जो पैग़म्बरों, ईश्वर और सभी पूर्णता को जानते हैं।

पैगंबर की शिक्षा को त्याग दें और उनकी वंशावली से नाता तोड़ लें, वे किसी दूसरे पैगंबर को नहीं पहचान सकते या अपनी आत्मा में किसी मानवीय पूर्णता को बनाए रखने के लिए सहारा नहीं पा सकते। क्योंकि पैगंबर मुहम्मद आखिरी और सबसे महान पैगंबर हैं; अपने मिशन, चमत्कारों और उपलब्धियों के संबंध में सभी से श्रेष्ठ; और सभी समय और लोगों के लिए एक सार्वभौमिक धर्म और संदेश लेकर आए। जो मुसलमान मानवता के प्रशिक्षण के इस गौरव के सिद्धांतों और अपने धर्म के नियमों को त्याग देते हैं, वे निश्चित रूप से कोई प्रकाश नहीं पा सकेंगे या कोई पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकेंगे। वे पूर्ण नुकसान और पतन की निंदा करेंगे।

तो, आपमें से जो लोग सांसारिक सुखों के आदी हैं, और भविष्य की चिंता में हैं, उसे और अपने जीवन को सुरक्षित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, अगर आप इस दुनिया में सुख और आनंद, खुशी और आराम चाहते हैं, तो धार्मिक रूप से वैध चीज़ों से संतुष्ट रहें। यह आपके आनंद के लिए पर्याप्त है। अब तक आप समझ गए होंगे कि प्रत्येक निषिद्ध सुख में कई दर्द होते हैं। अगर उन लम्पटों को उनका भविष्य - पचास साल बाद की उनकी स्थिति - उसी तरह दिखाया जाए जैसे पिछली घटनाओं को सिनेमाघर में दिखाया जाता है, तो वे भयभीत हो जाएँगे और खुद से घृणा करेंगे। जो लोग दोनों दुनियाओं में हमेशा खुश रहना चाहते हैं, उन्हें विश्वास की दृढ़ जमीन पर पैगंबर के निर्देशों का पालन करना चाहिए।

नाखुश युवा लोगों के एक समूह के लिए चेतावनी और सबक

एक दिन कई होनहार युवा मेरे पास आए। वे आधुनिक सांसारिक जीवन, युवावस्था और पाशविक इच्छाओं से उत्पन्न होने वाले खतरों से निपटने के लिए एक प्रभावी निवारक की तलाश कर रहे थे। मैंने उनसे उसी तरह बात की जैसे मैंने उन युवाओं के एक समूह से बात की थी जिन्होंने पहले रिसाले-ए-नूर से मदद मांगी थी:

तुम्हारी जवानी अवश्य ही समाप्त हो जाएगी। यदि तुम धार्मिक रूप से वैधानिक सीमाओं के भीतर नहीं रहोगे, तो वह नष्ट हो जाएगी और सुख के बजाय, वह तुम्हें यहाँ, कब्र में और परलोक में कष्ट और विपत्तियाँ ही पहुँचाएगी। लेकिन यदि तुम इस्लामी अनुशासन का पालन करोगे और उसे पवित्रता, ईमानदारी और जवानी के आशीर्वाद के प्रति कृतज्ञतापूर्वक इबादत में बिताओगे, तो वास्तव में तुम्हारी जवानी सदैव बनी रहेगी और शाश्वत जवानी प्राप्त करने का कारण बनेगी।

विश्वास के बिना या विद्रोहीपन के कारण अप्रभावी हो चुके विश्वास के साथ जीवन केवल दर्द, दुख और शोक ही पैदा करता है जो सतही, क्षणभंगुर आनंद और परिणामी सुख से कहीं अधिक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मानवता में बुद्धि है और जानवरों के विपरीत, यह अतीत, वर्तमान और भविष्य से जुड़ा हुआ है, और उनसे दर्द और सुख दोनों प्राप्त करता है। जबकि जानवरों के पास कोई बुद्धि नहीं है और इसलिए न तो अतीत से दुख उत्पन्न होते हैं और न ही भविष्य के बारे में भय और चिंताएँ उनके वर्तमान सुख को खराब करती हैं। लेकिन

ऐसे दु:ख और चिंताएँ गुमराह और असावधान लोगों को परेशान करती हैं, उनके आनंद को नष्ट कर देती हैं और उसे पीड़ा से भर देती हैं। अगर यह आनंद अवैध है, तो यह ज़हरीले शहद के समान हो जाता है।

इस प्रकार, जीवन के आनंद के मामले में हम जानवरों से भी कहीं नीचे हैं। वास्तव में, गुमराह, असावधान लोगों का जीवन केवल उस दिन तक ही सीमित होता है जिसमें वे खुद को पाते हैं, जैसा कि उनके पूरे अस्तित्व और दुनिया के साथ होता है। उनके गुमराह विश्वास के अनुसार, जो बीत गया वह अब अस्तित्व में नहीं है। लेकिन उनकी बुद्धि, जो उन्हें अतीत और भविष्य से जोड़ती है, केवल अंधकार पैदा करती है, और शाश्वत जीवन में उनका विश्वास न होना उनके लिए भविष्य को अस्तित्वहीन बना देता है। यह अस्तित्वहीनता ही अलगाव को शाश्वत बनाती है और उनके जीवन को निरंतर अंधकारमय बनाती है। इसके विपरीत, विश्वास पर आधारित जीवन के परिणामस्वरूप अतीत और भविष्य प्रकाशित होते हैं और विश्वास के प्रकाश के माध्यम से अस्तित्व प्राप्त करते हैं। ऐसा जीवन उनकी आत्माओं और दिलों के लिए उच्च आध्यात्मिक सुख और अस्तित्व की रोशनी भी प्रदान करता है।

यही जीवन की सच्चाई है। अगर आप जीवन का आनंद लेना चाहते हैं, तो इसे आस्था से जीवंत बनाइए, धार्मिक दायित्वों से सजाइए और पापों से बचकर इसे बनाए रखिए।

मृत्यु की भयावह वास्तविकता के लिए, जो हर जगह और हमेशा मृत्यु द्वारा प्रदर्शित होती है, निम्नलिखित दृष्टांत पर्याप्त होगा: कल्पना करें कि हम एक फाँसी के सामने हैं। इसके बगल में एक लॉटरी कार्यालय है जो वास्तव में उच्च पुरस्कारों के लिए टिकट बेचता है। हममें से प्रत्येक को, स्वेच्छा से या अनिच्छा से, वहाँ आमंत्रित किया जाएगा। चूँकि हमारा नियत समय अज्ञात है, वे हमें किसी भी समय बुलाएँगे, और कहेंगे: “फाँसी के लिए फाँसी पर आओ!” या “तुमने एक बहुत बड़ा पुरस्कार जीता है! आओ और इसे ले लो!”

हम प्रतीक्षा कर रहे थे, तभी एक महिला और एक पुरुष हमारे पास आए। महिला ने कम कपड़े पहने थे, वह सुंदर और आकर्षक थी। उसने अपने हाथ में कुछ बहुत स्वादिष्ट, लेकिन वास्तव में जहरीली मिठाई पकड़ी और हमें दी। वह व्यक्ति, जो ईमानदार और गंभीर था, उसके पीछे आया और बोला: "मैं तुम्हारे लिए एक ताबीज, एक सबक लाया हूं। यदि तुम इसका अध्ययन करोगे और मिठाई नहीं खाओगे, तो तुम फांसी से बच जाओगे, और इस ताबीज के साथ तुम्हें जीतने वाला टिकट मिलेगा। तुम देखते हो कि जो लोग मिठाई खाते हैं, वे अनिवार्य रूप से फांसी पर चढ़ जाते हैं, और आगे, जब तक वे उस पर चढ़ नहीं जाते, तब तक उन्हें मिठाई के जहर से भयानक पेट दर्द होता है। जो लोग टिकट प्राप्त करते हैं, वे भी फांसी पर चढ़ जाते हैं, लेकिन लाखों गवाह इस बात की गवाही देते हैं कि फांसी पर चढ़ने के बजाय, वे आसानी से पुरस्कार क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए फांसी का उपयोग करते हैं। तो, खिड़कियों से देखो! सर्वोच्च अधिकारी, इस व्यवसाय से जुड़े उच्च पदस्थ व्यक्ति घोषणा करते हैं: "जैसा कि आप स्पष्ट रूप से उन लोगों को चढ़ते हुए देख रहे हैं

फांसी, इसलिए निश्चिंत रहें कि जिनके पास ताबीज है उन्हें पुरस्कार का टिकट मिलेगा।”

इस प्रकार, युवावस्था के अनैतिक, धार्मिक रूप से निषिद्ध सुख जहरीली मिठाइयों की तरह हैं। चूँकि वे लोगों को अपना विश्वास, अनन्त खजाने के लिए उनका टिकट और अनन्त खुशी का दस्तावेज़ खोने का कारण बनते हैं, इसलिए जो लोग उनका अनुसरण करते हैं, उन्हें फाँसी पर लटकाया जाता है और कब्र के कष्टों को सहना पड़ता है, जो उनके लिए अनन्त अंधकार का द्वार है।

मृत्यु का समय अज्ञात होने के कारण जल्लाद कभी भी आ सकता है, बिना युवा और वृद्ध में भेद किए। लेकिन यदि आप धार्मिक रूप से निषिद्ध सुखों को त्याग दें और कुरान के ताबीज (ईमान और धार्मिक कर्तव्यों का पालन) को प्राप्त करें, तो 124,000 पैगंबर और असंख्य संत एकमत होकर हमें सूचित करते हैं कि आपको भाग्य की असाधारण लॉटरी से अनन्त सुख के खजाने का टिकट मिलेगा। वे इसके संकेत और प्रमाण भी दिखाते हैं।

संक्षेप में, युवावस्था बीत जाती है। इसे बर्बाद करने से दोनों दुनिया में अनंत दुर्भाग्य और पीड़ा होती है। यदि आप यह समझना चाहते हैं कि ऐसे कितने युवा मानसिक और शारीरिक बीमारियों के साथ अस्पतालों में पहुँचते हैं, मुख्य रूप से उनके साथ दुर्व्यवहार के कारण, जेलों या निराश्रितों के लिए छात्रावासों में उनके ज्यादतियों के कारण, और सलाखों में उनके आध्यात्मिक बेचैनी के कारण, तो उन जगहों पर जाकर पूछें। जैसे आप अस्पतालों की मूक वाणी से उन लोगों की कराह और विलाप सुनेंगे जो युवावस्था की इच्छाओं का पीछा करते हैं, वैसे ही आप जेलों से उन दुखी लोगों की खेदजनक आहें सुनेंगे जो मुख्य रूप से अपनी "युवावस्था की ज्यादतियों" के कारण अवैध कार्यों के लिए कैद हैं। आप यह भी समझेंगे कि कब्र की अधिकांश पीड़ाएँ गलत तरीके से बिताई गई युवावस्था के कारण होती हैं, जैसा कि संतों द्वारा बताया गया है जो कब्र के जीवन (मध्यवर्ती क्षेत्र) को समझ सकते हैं, और सत्य के सभी विद्वानों द्वारा इसकी पुष्टि की गई है।

इसके अलावा, बुज़ुर्गों और बीमारों से सलाह लें। उनमें से ज़्यादातर आपको दुख और पछतावे के साथ जवाब देंगे: "हाय! हमने अपनी जवानी को बेकार की हरकतों में बरबाद कर दिया। सावधान रहो, तुम भी वैसा न करो जैसा हमने किया!" जो लोग पाँच से दस साल की जवानी के नाजायज़ जुनून पर काबू नहीं पाते, वे इस दुनिया में अपने लिए दुख और तकलीफ़ लाते हैं, बीच की दुनिया में यातना और नुकसान और आख़िरत में नर्क की सज़ा पाते हैं। हालाँकि वे बहुत दयनीय स्थिति में हो सकते हैं, क्योंकि उन्होंने इस तरह का रास्ता चुना है, वे दया के लायक नहीं हैं। क्योंकि जो व्यक्ति नुकसान के लिए स्वतंत्र है, वह दया के लायक नहीं है। सर्वशक्तिमान ईश्वर हम सभी को इस युग के आकर्षक प्रलोभनों से बचाए और उनसे हमारी रक्षा करे। आमीन।

कैदियों से बातचीत

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

कैदियों को रिसाले-ए-नूर की सांत्वना की बहुत ज़रूरत होती है ; ख़ास तौर पर वे लोग जो युवावस्था में आघात झेलते हैं और अपने जीवन के सबसे अच्छे पल जेल में बिताते हैं, उन्हें रिसाले-ए-नूर की उतनी ही ज़रूरत होती है जितनी उन्हें रोटी की होती है। युवा तर्क के बजाय भावनाओं से प्रेरित होते हैं। भावनाएँ और इच्छाएँ अंधी होती हैं; वे परिणाम नहीं देख सकते और भविष्य के ढेरों सुखों की तुलना में एक औंस तात्कालिक सुख को प्राथमिकता देते हैं। वे बदला लेने की एक मिनट की संतुष्टि के लिए हत्या करते हैं और फिर अनगिनत घंटों तक दर्दनाक कारावास में रहते हैं। बलात्कार करने में बिताया गया एक घंटा, जेल और दुश्मनों के डर से जीवन भर की संतुष्टि को नष्ट कर सकता है।

युवा लोग कई तरह की मुसीबतों का सामना करते हैं, जिसकी वजह से वे जीवन की मिठास को सबसे कड़वे और पश्चाताप से भरे जीवन में बदल देते हैं। खास तौर पर, उत्तर में एक विशाल और शक्तिशाली राज्य अपने युवाओं के जुनून का दुरुपयोग कर रहा है और इस सदी को अपने तूफानों से हिला रहा है। क्योंकि इसने अपने अंधे-भावना से प्रेरित युवाओं के लिए ईमानदार, मासूम लोगों की खूबसूरत बेटियों और पत्नियों को वैध बना दिया है। पुरुषों और महिलाओं को सार्वजनिक स्नानघरों में एक साथ जाने की अनुमति देकर, यह अनैतिकता को बढ़ावा देता है। यह आवारा और गरीबों को अमीरों की संपत्ति का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने, यहां तक कि लूटने की भी अनुमति देता है। इस आपदा के सामने हर कोई कांपता है।

इस उम्र में, मुस्लिम युवाओं को वीरतापूर्वक कार्य करना चाहिए और इस दोतरफा हमले का जवाब रिसाले-ए-नूर के "फल (विश्वास के)" और "युवाओं के लिए एक गाइड" जैसी "तेज तलवारों" से देना चाहिए। अन्यथा, वे बदकिस्मत युवा अपना भविष्य, दोनों दुनिया में अपनी खुशियाँ, अपने अनंत जीवन को नष्ट कर देंगे और दोनों को दुख में बदल देंगे। वे अपनी ऊर्जा के दुरुपयोग और अपव्यय के कारण अस्पतालों में पहुँच जाएँगे, अपनी ज्यादतियों के कारण जेलों में चले जाएँगे और बुढ़ापे में पछतावे से भरे रहेंगे। लेकिन अगर वे कुरान की शिक्षा और इस्लामी सच्चाइयों से खुद को सुरक्षित रखते हैं, जिनमें से कुछ को रिसाले-ए-नूर में समझाया गया है, तो वे वास्तव में वीर युवा, परिपूर्ण मनुष्य, समृद्ध मुसलमान और कुछ मायनों में बाकी सभी सजीव प्राणियों पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे।

अगर जेलों में बंद युवा लोग पाँच निर्धारित प्रार्थनाओं पर प्रतिदिन सिर्फ़ एक घंटा बिताएँ, और कारावास के दौरान कई पापों को होने से रोकें, अन्य दर्दनाक पापों से बचें और उस अपराध के लिए ईश्वर से क्षमा माँगें जिसके कारण वे इस स्थिति में पहुँचे हैं, तो उनका अपना भविष्य और उनके रिश्तेदार, राष्ट्र और देश दोनों लाभान्वित होंगे। इसके अलावा, चमत्कारी व्याख्या वाला कुरान और अन्य सभी प्रकट शास्त्र निश्चित, सुखद समाचार देते हैं-

युवा लोग यह मानते हैं कि उनके दस से पंद्रह साल की युवावस्था उन्हें एक अमर, चमकदार युवा अवस्था प्रदान करेगी। यदि युवा लोग ईश्वर की आज्ञाकारिता में सीधे मार्ग पर चलकर युवावस्था के सुखद आशीर्वाद के लिए कृतज्ञता से कार्य करते हैं, तो आशीर्वाद बढ़ता है और शाश्वत और और भी अधिक आनंददायक हो जाता है। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो वे विपत्ति, दर्द और दुःख का सामना करते हैं। उनका जीवन दुःस्वप्न बन जाता है और फिर गायब हो जाता है। वे लक्ष्यहीन जीवन जीते हैं, और इस तरह अपने रिश्तेदारों और अपने राष्ट्र और देश दोनों को नुकसान पहुँचाते हैं।

यदि वे लोग, जिन्हें अन्यायपूर्वक कैद किया गया है, निर्धारित नमाज़ अदा करें, तो वे पाएंगे कि सलाखों के पीछे बिताया गया प्रत्येक घंटा, इबादत के एक दिन के बराबर है।
उनकी कोठरियाँ उनके लिए एकांतवास की जगह बन जाएँगी, और वे खुद भी पुराने समय के उन धार्मिक लोगों में गिने जा सकते हैं जो पूजा-अर्चना करने के लिए गुफाओं में चले जाते थे। अगर वे गरीब या बूढ़े या बीमार हैं और आस्था के सत्य को सीखना चाहते हैं, तो वे पाएँगे कि जेल में बिताया गया हर घंटा पूजा के बीस घंटों के बराबर होगा, बशर्ते वे अपने किए गए अपराध के लिए ईश्वर से क्षमा माँगें और धार्मिक दायित्वों का पालन करें। जेल एक विश्राम गृह, एक ऐसा स्थान होगा जहाँ उन लोगों के लिए मित्रता होगी जो उनकी दया से देखभाल करते हैं, और प्रशिक्षण और शिक्षा का स्थान होगा। जेल में रहना उन्हें बाहर की तुलना में अधिक खुशी भी दे सकता है, क्योंकि वहाँ वे पाप से परेशान और पीड़ित होंगे। अगर उन्हें जेल में रहते हुए उचित शिक्षा मिलती है, तो पूर्व हत्यारे या बदला लेने वाले लोग पश्चातापी, परिपक्व और अच्छे व्यवहार वाले लोगों के रूप में रिहा होंगे जो अपने देश को लाभ पहुँचा सकते हैं।

जिन लोगों ने डेनिज़ली कैदियों को रिसाले-ए-नूर की नैतिक शिक्षा के माध्यम से शीघ्रता से यह पद प्राप्त करते देखा, उन्होंने टिप्पणी की: यदि पंद्रह वर्ष के कारावास के स्थान पर, उन्हें रिसाले -ए-नूर से पंद्रह सप्ताह का निर्देश मिले, तो इससे उनका सुधार बहुत बेहतर होगा।

चूंकि मृत्यु कभी नहीं मरती और उसका नियत समय अज्ञात है, इसलिए वह कभी भी आ सकती है; चूंकि कब्र को बंद नहीं किया जा सकता, और लोग क्रमिक काफिलों में उसमें प्रवेश करते हैं; और चूंकि कुरान घोषित करता है कि विश्वासी लोग मृत्यु को सांसारिक कर्तव्यों से मुक्ति के रूप में अनुभव करते हैं और विश्वास उन्हें अनन्त दण्ड से बचाता है, जबकि अविश्वासी लोग मृत्यु को एक ऐसी फांसी के रूप में अनुभव करते हैं जो अनन्त यातना और अपने प्रियजनों तथा अन्य सभी प्राणियों से कभी न समाप्त होने वाले अलगाव की ओर ले जाती है, इसलिए निस्संदेह, सबसे अधिक सुखी लोग वे हैं जो धैर्य के साथ ईश्वर का धन्यवाद करते हैं और कारावास में बिताए गए समय का लाभ उठाते हुए, कुरान की सेवा करने तथा सीधे मार्ग पर विश्वास करने के लिए आवश्यक नैतिक और धार्मिक शिक्षा ग्रहण करते हैं।

हे भोग विलास के व्यसनियों! मैं अब पचहत्तर वर्ष का हो गया हूँ।
हजारों अनुभवों से मुझे पूर्ण निश्चयता के साथ पता चला है

और इस बात के प्रमाण हैं कि सच्चा आनंद, शुद्ध सुख, दुःख-मुक्त आनंद और खुशी केवल विश्वास और उसके सत्य के दायरे में ही मिलती है। एक सांसारिक सुख कई दुखों को जन्म देता है, जैसे कि एक अंगूर के लिए दस थप्पड़ मारना, और इस तरह जीवन के आनंद को बिगाड़ देता है।

ऐ कैद में भोग रहे बदकिस्मत लोगों! चूँकि तुम यहाँ शोक मना रहे हो और तुम्हारा जीवन कष्टमय है, इसलिए जेल में बिताए अपने समय का लाभ उठाओ ताकि तुम परलोक में शोक न करो और ताकि तुम्हारा अनंत जीवन मधुर हो सके। जिस तरह भीषण युद्ध की परिस्थितियों में एक घंटे की निगरानी कभी-कभी उपासना के एक वर्ष के बराबर होती है, उसी तरह जेल में बिताई गई प्रत्येक घंटे की कठिनाई कई गुना बढ़ जाती है और कठिनाई को दया में बदल देती है।

कैदियों के लिए एक प्रभावी सांत्वना

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

आप पर शांति और ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो!

मेरे प्यारे, सत्यनिष्ठ भाइयो!

मैं कैदियों और उनकी मदद करने वाले तथा बाहर से आने वाले उनके भोजन की देखरेख करने वाले लोगों को प्रभावी सांत्वना प्रदान करूंगा।

पहला बिन्दु: जेल में बिताया गया प्रत्येक दिन दस दिन की पूजा के बराबर फल प्रदान कर सकता है, तथा उसके फल के संबंध में, ये क्षणिक घड़ियाँ स्थायी घंटों में परिवर्तित हो सकती हैं, तथा कुछ वर्षों की सज़ा लाखों वर्षों की अनन्त कारावास से मुक्ति का साधन बन सकती है।

जेल में बंद विश्वासी दिन में पाँच बार प्रार्थना करके, अपने पापों के लिए ईश्वर से क्षमा माँगकर, और धैर्यपूर्वक ईश्वर को धन्यवाद देकर यह सबसे महत्वपूर्ण और मूल्यवान लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जेल कुछ पापों के लिए एक बाधा है; यह उन्हें रोकता है।

दूसरी बात: जिस तरह सुख के चले जाने पर दुख आता है, उसी तरह दुख के चले जाने पर सुख आता है। बीते हुए सुखद और आनंदमय दिनों के बारे में सोचते ही हर किसी को अफसोस और लालसा होती है और वह दुख की आह भरता है।

जब अतीत के विपत्तिपूर्ण और दर्दनाक दिनों को याद करते हैं, तो हर कोई खुशी महसूस करता है क्योंकि वे चले गए हैं, भगवान का शुक्रिया अदा करता है कि ऐसे दिन बीत गए हैं और उनका इनाम खत्म हो गया है, और राहत की सांस लेता है। इसका मतलब है, एक घंटे का अस्थायी दर्द आत्मा में एक अमूर्त आनंद छोड़ जाता है, जबकि एक घंटे का आनंद दर्द छोड़ जाता है।

यही सच्चाई है। दुर्भाग्य के बीते घंटे और उनका दर्द गायब हो चुका है, जबकि भविष्य में कल्पना की गई परेशानी के दिन अभी तक नहीं आए हैं। दर्द

कुछ भी नहीं से या जो मौजूद नहीं है उससे नहीं आता है। इसलिए, आज लगातार खाना-पीना इस डर से कि भविष्य में हमें भूख और प्यास लगेगी, पूरी तरह से पागलपन है। इसी तरह, इस समय अतीत और भविष्य के दर्द के बारे में सोचना मूर्खता है - ऐसे दर्द जो मौजूद नहीं हैं - और, परिणामस्वरूप, अधीर हो जाना, अपनी दोषपूर्ण आत्मा को अनदेखा करना और ऐसा व्यवहार करना जैसे कि हम ईश्वर के बारे में शिकायत कर रहे हैं। यदि हम अतीत और भविष्य के बारे में चिंता करने में अपने धैर्य के बहुमूल्य भंडार को बर्बाद नहीं करते हैं, जिनमें से कोई भी मौजूद नहीं है, तो यह हमारे मौजूदा दर्द को दस गुना कम कर देगा।

यह कोई शिकायत नहीं है: "जोसेफ के स्कूल" में मेरे प्रवास की इस तीसरी अवधि के दौरान, कुछ दिनों तक शारीरिक और आध्यात्मिक कष्ट और बीमारी ने मुझे कुचलना शुरू कर दिया, जो मुख्य रूप से कुरान की सेवा न कर पाने की निराशा से उत्पन्न हुई थी और इस तरह की अन्य चीजें जो मैंने पहले कभी अनुभव नहीं की थीं। हालाँकि, जब ईश्वरीय कृपा ने मुझे यह सच्चाई दिखाई, तो मैंने अपनी कष्टदायक बीमारी और कारावास को स्वीकार कर लिया। चूँकि कब्र के दरवाजे पर प्रतीक्षा करने वाले मेरे जैसे गरीब आदमी के लिए यह बहुत लाभदायक है कि वह संभावित असावधानी के एक घंटे को दस घंटे की इबादत में बदल दे, इसलिए मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया।

तीसरी बात: कैदियों की ज़रूरतों को दयापूर्वक पूरा करने, उनके भोजन का प्रबंध करने और उनके आध्यात्मिक घावों को शांत करने से बहुत बड़ा सवाब मिलता है। उन्हें बाहर से भेजा गया भोजन परोसने से भी वही आध्यात्मिक सवाब मिलता है जो उस भोजन को दान में देने से मिलता है। यह सवाब जेल के पहरेदारों और जेल के अंदर और बाहर से इसमें योगदान देने वालों के अच्छे कामों के रिकॉर्ड में जुड़ जाता है। अगर कैदी बूढ़े, बीमार, गरीब या बिना सहारे या सुरक्षा के हैं, तो ऐसी दान-पुण्य का सवाब कई गुना बढ़ जाता है। हालाँकि, इस बहुमूल्य लाभ को पाने के लिए, व्यक्ति को प्रतिदिन विहित प्रार्थनाएँ करनी चाहिए ताकि उनकी सेवा केवल ईश्वर के लिए हो। इसके अलावा, व्यक्ति को ईमानदारी, करुणा और प्रसन्नता के साथ कैदियों की मदद करने में तत्पर रहना चाहिए, और इस तरह से कि वे खुद को आपके प्रति बाध्य महसूस न करें।

कैदियों को सलाह

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करती हो।

आप पर शांति और उसकी दया और आशीर्वाद सदा बना रहे!

जेल में मेरे मित्र और धर्म में मेरे भाईयों और बहनों!

मैं एक ऐसी सच्चाई बताऊँगा जो तुम्हें इस दुनिया और आख़िरत में होने वाली यातनाओं से बचाएगी। कल्पना करो कि किसी ने तुम्हारे भाई-बहन या रिश्तेदार को मार दिया। एक मिनट

बदला लेने से मिलने वाली संतुष्टि अनगिनत मिनटों तक परेशानी और कारावास का कारण बनेगी, और प्रतिशोध का डर और हमेशा पीछा किए जाने की चिंता जीवन से सभी सुख और आनंद को खत्म कर देगी। इस प्रकार आप भय और झुंझलाहट दोनों से पीड़ित होंगे। एकमात्र समाधान कुरान और सत्य, मानवता और मुसलमान होने के द्वारा प्रोत्साहित किया गया मेल-मिलाप है।

न्याय, सत्य और आपसी लाभ के लिए सामंजस्य की आवश्यकता होती है। चूंकि हर किसी की मृत्यु अपने तय समय पर होती है, इसलिए पीड़ित व्यक्ति वैसे भी अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकता। ईश्वर का आदेश हत्यारे के माध्यम से निष्पादित किया गया था। जब तक वे मेल-मिलाप नहीं करते, तब तक दोनों पक्ष भय और प्रतिशोध से पीड़ित रहेंगे। यही कारण है कि इस्लाम कहता है कि एक आस्तिक को तीन दिनों से अधिक समय तक किसी अन्य आस्तिक के प्रति क्रोधित या द्वेष नहीं रखना चाहिए।

अगर हत्या किसी दुश्मनी या दुश्मनी का नतीजा नहीं थी, और किसी पाखंडी ने इसे उकसाया था, तो दोनों पक्षों को बिना देर किए शांति स्थापित कर लेनी चाहिए ताकि यह छोटी-सी मुसीबत न बढ़े और न ही बनी रहे। अगर वे ऐसा करते हैं, और हत्यारा पश्चाताप करता है और पीड़ित के लिए लगातार प्रार्थना करता है, तो दोनों पक्षों को लाभ होता है और वे भाई-बहन की तरह हो जाते हैं। खोए हुए परिवार के सदस्य की भरपाई में, उन्हें कई नए सदस्य मिलते हैं। ईश्वरीय नियति और आदेश के आगे झुकते हुए, वे दुश्मनी का त्याग करते हैं। खासकर अगर उन्होंने रिसाले-ए-नूर की शिक्षाओं में हिस्सा लिया है, तो रिसाले-ए-नूर के घेरे में व्यक्तिगत और सामूहिक शांति और भाईचारे की ज़रूरत है कि वे सभी दुश्मनी को एक तरफ़ रख दें।

डेनिज़ली जेल में, सभी कैदी जो दुश्मन थे, रिसाले-ए-नूर के ज़रिए भाई बन गए। यह हमारे बरी होने का एक कारण था। यहाँ तक कि अधार्मिक अपराधियों ने भी हमारे बारे में कहा: "कितना बढ़िया! वे कितने धन्य हैं!"

सभी कैदी ताजी हवा के लिए बाहर जाने लगे। हालाँकि, मैंने यहाँ देखा है कि एक आदमी की वजह से सौ आदमी तकलीफ़ में हैं, और एक साथ ताजी हवा का आनंद लेने के लिए बाहर नहीं जाते। स्वस्थ विवेक वाले विश्वासी किसी तुच्छ और छोटी सी गलती या लाभ के कारण दूसरे विश्वासियों को नुकसान नहीं पहुँचाते। अगर वे कोई गलती करते हैं और नुकसान पहुँचाते हैं, तो उन्हें तुरंत पश्चाताप करना चाहिए।

कैदियों के बीच भाईचारे की आवश्यकता

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करती हो।

आप पर शांति और ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो।

मेरे प्यारे नये भाइयों और पुराने कैदियों!

मुझे पूरा विश्वास है कि ईश्वर ने हमें आपके बीच एक विशेष उद्देश्य के लिए भेजा है: रिसाले-ए-नूर, जिसमें सांत्वना और सच्चाईयां शामिल हैं।

ईमान का मतलब है कि आपको कैद की तकलीफ़ों से और उससे होने वाली सांसारिक हानियों से बचाना। इसका मतलब है कि आपकी ज़िंदगी को बचाना, जो अन्यथा दुख और पीड़ा में बर्बाद हो जाती, ताकि आपको दोनों दुनियाओं में कराहने से बचाया जा सके।

अगर ऐसा है, तो जाहिर है कि आपको डेनिज़ली कैदियों और रिसाले-ए-नूर के छात्रों के उदाहरण के अनुसार एक दूसरे का भाई होना चाहिए। आप देखते हैं कि अभिभावक हर उस चीज़ की तलाशी लेते हैं - भोजन, रोटी, इत्यादि - जो बाहर से आपके पास आती है, ताकि आप एक दूसरे पर हमला करने के लिए फिसले हुए चाकू का इस्तेमाल न कर सकें। इसके अलावा, जो पहरेदार आपकी ईमानदारी से सेवा करते हैं, उन्हें बहुत परेशानी होती है।

आपको ताजी हवा के लिए एक साथ बाहर जाने की अनुमति नहीं है क्योंकि उन्हें लगता है कि आप जंगली जानवरों की तरह एक-दूसरे पर हमला कर सकते हैं।

अब, आप नए दोस्त जो स्वभाव से वीर और साहसी हैं, आपको आध्यात्मिक वीरता का उदाहरण पेश करना चाहिए और जेल के प्रशासनिक बोर्ड से कहना चाहिए: "भले ही हमें चाकू के बजाय बंदूकें और रिवॉल्वर दिए जाएं और उनका इस्तेमाल करने का आदेश दिया जाए, हम अपने दुर्भाग्यपूर्ण दोस्तों को चोट नहीं पहुँचाएँगे जो हमारी तरह पीड़ित हैं। हम उन्हें माफ करने और उन्हें अपमानित न करने के लिए दृढ़ हैं, चाहे हमारी शत्रुता के पिछले कारण कुछ भी हों, क्योंकि ये हमारे हित में विश्वास और इस्लामी भाईचारे की आवश्यकताएं हैं, और कुरान द्वारा आदेशित हैं।

इस माध्यम और दृष्टिकोण से आप इस जेल को अध्ययन के एक धन्य स्थान में बदल सकते हैं।

एक महत्वपूर्ण मामला

मैं संक्षेप में एक व्यापक सत्य की व्याख्या करूँगा जो लैलातुल-कद्र (शक्ति और भाग्य की रात) पर मेरे दिल में आया।[8] द्वितीय विश्व युद्ध अत्यधिक अत्याचार और अन्याय का प्रदर्शन था जिसमें निर्मम विनाश शामिल था। एक अपराधी के कारण अनगिनत निर्दोष लोग बर्बाद हो गए। पराजित लोग भयानक निराशा में चले गए, जबकि विजेता अपने वर्चस्व को बनाए रखने के बारे में चिंतित थे। कई लोग अंतरात्मा की भयानक पीड़ा से पीड़ित हैं क्योंकि वे अपने द्वारा किए गए विनाश की मरम्मत नहीं कर सकते। युद्ध ने दिखाया कि सांसारिक जीवन कितना क्षणभंगुर है, आधुनिक सभ्यता की तुच्छताएँ कितनी धोखेबाज हैं। युद्ध ने गंभीर रूप से

---

8 लैलातुल-क़द्र, जिसका उल्लेख कुरान 97:1-5 में किया गया है, वर्ष की सबसे पवित्र रात है। अधिकांश विद्वानों के अनुसार यह रमज़ान की 27वीं रात है। इसके बारे में क़ुरआन में कहा गया है: लैलातुल-क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फ़रिश्ते और रूह अपने रब की इजाज़त से हर काम के लिए अपने हुक्म के साथ इसमें उतरते हैं - यह एक शुद्ध दया और सुरक्षा है, जो सुबह होने तक बनी रहती है। (97:3-5) (त्र.)

और मानव स्वभाव के सार और उच्च क्षमता को व्यापक रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया है। कुछ स्थानों पर, असावधानी, गुमराही और घोर प्रकृतिवाद को कुरान की हीरे की तलवार ने चकनाचूर कर दिया है, जबकि इसने विश्व राजनीति के असली चेहरे की चरम कुरूपता और क्रूरता को उजागर किया है, जो असावधानी और गुमराही का सबसे व्यापक, दमघोंटू और धोखा देने वाला प्रतिबिंब है।

यह सब साबित करता है कि चूँकि सांसारिक जीवन, जिसके प्रति मानवता आसक्त है, कुरूप और क्षणभंगुर है, इसलिए मनुष्य का सच्चा, सचेत स्वभाव अपनी पूरी ताकत से शाश्वत जीवन की खोज करेगा, जिसके लिए वह वास्तव में तरसता है और प्यार करता है। उत्तर, पश्चिम और संयुक्त राज्य अमेरिका में संकेत पहले ही दिखाई दे चुके हैं। चमत्कारी व्याख्या की कुरान, जिसके तेरह शताब्दियों से अनगिनत छात्र हैं, जिसके प्रत्येक सत्य की पुष्टि असंख्य सत्यनिष्ठ विद्वानों द्वारा की गई है, और जो अपनी पूरी पवित्रता के साथ अपने लाखों याद करने वालों के मन में जीवित है, अपनी कई शक्तिशाली, प्रभावशाली और दोहराई गई आयतों में स्पष्ट रूप से या निहित रूप से शाश्वत जीवन की शिक्षा और घोषणा करती है। यह लोगों को अपनी विशेष भाषाओं में निर्देश देती है और किसी भी अन्य पुस्तक से बेजोड़ तरीके से, शाश्वत जीवन और शाश्वत सुख की खुशखबरी सुनाती है, हमारे सभी घावों को भर देती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, और बशर्ते कि मानवता अपनी तर्क करने की क्षमता न खोए या पूर्ण शारीरिक या आध्यात्मिक विनाश न झेले, विशाल जनसमूह और बड़े राज्य कुरान की चमत्कारी व्याख्या की खोज करेंगे। इसकी सच्चाई को समझने के बाद, वे इसके प्रति दिल और आत्मा से समर्पित हो जाएंगे, जैसे स्वीडन, नॉर्वे, फिनलैंड और इंग्लैंड के कुछ प्रसिद्ध प्रचारकों और सच्चे धर्म की खोज में संयुक्त राज्य अमेरिका के एक महत्वपूर्ण समुदाय ने इसे स्वीकार करने की इच्छा दिखाई है। ऐसा इसलिए होगा क्योंकि कुरान की कोई बराबरी नहीं है, और कोई भी चीज इस महान चमत्कार की जगह नहीं ले सकती।

हम यह भी कह सकते हैं कि अन्य अनेक उपयोगी पुस्तकों और संकलनों के बीच, रिसाले-ए-नूर ने इस महानतम चमत्कार के हाथ में हीरे की तलवार के समान कार्य किया है, तथा यह अपने सबसे जिद्दी शत्रुओं को भी चुप करा देता है।

कुरान से उत्पन्न होने के कारण, रिसाले-ए-नूर कुरान की सच्चाइयों को इस तरह से समझाता और प्रस्तुत करता है कि यह मन, आत्मा और भावनाओं को प्रबुद्ध करता है। यह आधुनिक प्रवृत्तियों से घायल लोगों को ठीक करता है, और विधर्मियों और उनके कुरान-विरोधी प्रचार को परास्त करता है। इसके कई ग्रंथ, जैसे "प्रकृति का ग्रंथ", "मूसा का कर्मचारी" और "विश्वास के फल", ने प्रकृतिवाद और वैज्ञानिक भौतिकवाद को ध्वस्त कर दिया है, जो गुमराह करने का सबसे दुर्जेय किला है। उन्होंने अपने सबसे घने, दमघोंटू और व्यापक आयामों में असावधानी को खत्म कर दिया है, जो सभी वैज्ञानिकता के व्यापक आवरण के नीचे विकसित हुए हैं, सबसे उज्ज्वल तरीके से दिव्य एकता के प्रकाश का प्रदर्शन करके।

चौदहवाँ शब्द

मेरी असावधान आत्मा के लिए एक चेतावनी सबक

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

सांसारिक जीवन तो बस भ्रम का क्षणिक आनंद है। (3:185)

M तुम्हारी अभागी आत्मा, असावधानी में डूबी हुई, जो इस जीवन को व्यर्थ देखती है मीठा और, आख़िरत से बेखबर, सिर्फ़ उसी की तलाश में! तुम एक शुतुरमुर्ग की तरह हो जो शिकारी को देखकर भाग नहीं पाता और अपना सिर रेत में दबा लेता है ताकि शिकारी उसे न देख सके। हालाँकि, उसका विशाल शरीर खुला रहता है, इसलिए बेशक शिकारी उसे देख सकता है। रेत में सिर्फ़ शुतुरमुर्ग की आँखें बंद होती हैं, इसलिए वह शिकारी को नहीं देख सकता।

हे मेरे मन! निम्नलिखित तुलना पर विचार करो और समझो कि कैसे
केवल इस संसार पर ध्यान केन्द्रित करने से महान सुख भयंकर पीड़ा में बदल जाता है:

कल्पना कीजिए कि इस गाँव (बरला) में दो व्यक्ति हैं। उसके सौ में से निन्यानबे मित्र इस्तांबुल चले गए हैं, जहाँ वे खुशी-खुशी रह रहे हैं। वह शीघ्र ही उनके साथ मिल जाएगा, और इसलिए वह इस्तांबुल के बारे में सोचता और चाहता है। जब उसे बताया जाता है कि वह वहाँ जा सकता है, तो वह बहुत खुश होगा और खुशी-खुशी जाएगा। दूसरा व्यक्ति, जो उसी स्थिति का सामना कर रहा है, सोचता है कि उसके कुछ मित्र मर गए हैं और अन्य वहाँ चले गए हैं जहाँ वे नहीं देख सकते और जिन्हें देखा नहीं जा सकता। यह कल्पना करते हुए कि वे अत्यधिक दुख में चले गए हैं, वह अपने एकमात्र बचे हुए मित्र से सांत्वना ढूँढ़ता है, जो तैयार होने वाला है। वह उस मित्र के माध्यम से वियोग की तीव्र पीड़ा की भरपाई करना चाहता है।

हे मेरी आत्मा! ईश्वर के प्रियतम, पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और तुम्हारे सभी दोस्त कब्र के दूसरी तरफ हैं। एक या दो यहाँ रह गए हैं, लेकिन वे भी वहाँ चले जाएँगे। इसलिए मौत या कब्र से मत डरो, या मौत से अपना ध्यान मत हटाओ। उसे बहादुरी से देखो और सुनो कि वह क्या चाहती है। उसके चेहरे पर हँसो और देखो कि वह क्या चाहती है। और सुनिश्चित करो कि तुम दूसरे व्यक्ति की तरह न हो।

हे मेरी आत्मा! यह मत कहो: "समय बदल गया है। यह युग अलग है, क्योंकि हर कोई इस दुनिया में डूबा हुआ है और इस जीवन को प्यार करता है। हर कोई आजीविका के संघर्ष के लिए खुले तौर पर प्रतिबद्ध है।" क्योंकि मृत्यु नहीं बदलती।
वियोग समाप्त होकर शाश्वत मिलन या साहचर्य नहीं बन जाता। हमारी अंतर्निहित नपुंसकता और दरिद्रता बदलती नहीं, बल्कि बढ़ती जाती है। हमारी यात्रा (इस संसार में) कटती नहीं, बल्कि तेज होती जाती है।

यह मत कहो: "मैं भी बाकी सब लोगों जैसा ही हूँ।" हर कोई तुमसे सिर्फ़ कब्र तक ही दोस्ती करता है। हर किसी के एक ही दुर्भाग्य से पीड़ित होने की सांत्वना तुम्हें दूसरी तरफ़ मदद नहीं कर सकती। न ही यह कल्पना करो कि तुम स्वतंत्र और स्वतंत्र हो। इस अस्थायी दुनिया को ज्ञान की नज़र से देखो। देखो कि हर चीज़ का एक क्रम और उद्देश्य है। तुम अपने आप पर कैसे छोड़े जा सकते हो, क्योंकि यह तुम्हें क्रम से बाहर कर देगा और तुम्हें उद्देश्यहीन बना देगा।

भूकंप जैसी सभी घटनाएँ संयोग की बातें नहीं हैं।

आप पृथ्वी के अत्यंत सुन्दर ढंग से डिजाइन किए गए और बारीक कढ़ाई किए गए वस्त्रों को देखते हैं, जिन्हें यह एक के ऊपर एक और दूसरे के अंदर पहने हुए है, और सभी पौधे और पशु प्रजातियाँ ऊपर से नीचे तक महत्वपूर्ण उद्देश्यों और ज्ञान के उदाहरणों के साथ सजी हुई और सुसज्जित हैं। यह एक परमानंद मेवलेवी दरवेश की तरह पूर्ण क्रम में और महान उद्देश्यों के लिए बदली हुई है। तो आप इसकी महत्वपूर्ण, मृत्यु-लाने वाली घटनाओं को, जैसे कि हाल ही में आए भूकंप को, जिसे पृथ्वी द्वारा कुछ प्रकार की मानवीय असावधानी के भार को हटाने के रूप में समझा जा सकता है, जिसे यह स्वीकार नहीं करती है - विशेष रूप से विश्वासियों में - उद्देश्यहीन और संयोग का परिणाम कैसे मान सकते हैं? आप ऐसी घटनाओं से प्रभावित लोगों के गंभीर नुकसान को अप्रतिपूरित और व्यर्थ के रूप में दिखाकर उन्हें भयानक निराशा में कैसे डाल सकते हैं?

जो लोग ऐसा करते हैं वे बहुत बड़ी भूल और बहुत बड़ा अन्याय कर रहे हैं।

ऐसी घटनाएँ एक सर्वशक्तिमान और दयालु ईश्वर के आदेश पर होती हैं, ताकि ऐसी घटनाओं के माध्यम से जो कुछ भी ईमान वाले खो देते हैं, वह दान के समान ही सवाब के योग्य हो जाए और इस तरह से स्थायित्व प्राप्त करे। यह नुकसान ईश्वरीय कृपा के प्रति कृतघ्नता से उत्पन्न पापों का प्रायश्चित भी है।

एक दिन आएगा जब यह वशीभूत धरती हमारे कामों को देखेगी, जो इसके चेहरे की शोभा हैं, ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ने और आवश्यक कृतज्ञता के बिना। यह उन्हें अस्वीकार कर देगा और जब सृष्टिकर्ता आदेश देगा, तो उन्हें अपने चेहरे से मिटा देगा और खुद को साफ कर लेगा। ईश्वर के आदेश पर, यह ईश्वर के साथ साझीदारों को नरक में डाल देगा और आभारी लोगों से कहेगा: "आओ और स्वर्ग में प्रवेश करो।"

---

9 यह 1935 में तुर्की के इज़मिर में आए भूकंप को संदर्भित करता है। (ट्र.)

सत्रहवाँ वचन

सांसारिक जीवन का अर्थ और उपाय

सांसारिक दुर्भाग्य के लिए

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हमने धरती पर जो कुछ है उसे उसके लिए आभूषण बनाया है, ताकि हम उनकी परीक्षा लें कि उनमें से कौन सबसे अच्छा आचरण करता है। फिर भी, हम उस पर जो कुछ है उसे बंजर धूल का ढेर बना देते हैं। (18:7-8)

वर्तमान सांसारिक जीवन तो एक खेल और मनोरंजन मात्र है। (6:32)

[नोट: इस शब्द में दो उच्च पद और संकेत महत्व का एक ऐड-डेन्डम शामिल है।]

पहला स्टेशन

वह सर्व-करुणामय रचयिता, सर्व-दयालु प्रदाता, सर्व-बुद्धिमान रचयिता इस संसार को एक उत्सव, आत्माओं और आत्मिक प्राणियों के लिए उत्सव का स्थान बनाता है। उसने इसे अपने नामों के सबसे अद्भुत शिलालेखों से सजाया है, और प्रत्येक आत्मा को उपयुक्त और उचित इंद्रियों से सुसज्जित शरीर पहनाया है ताकि वह उसमें मौजूद असंख्य अच्छी चीजों और उपहारों से लाभ उठा सके। वह प्रत्येक आत्मा को एक भौतिक शरीर देता है और उसे एक बार इस तमाशे में भेजता है।

वह त्यौहार को, जो समय और स्थान के संदर्भ में बहुत विस्तृत है, शताब्दियों, वर्षों, ऋतुओं और दिनों में तथा कुछ निश्चित भागों में विभाजित करता है। प्रत्येक एक महान त्यौहार है जिसके दौरान सभी सजीव प्राणी और पौधे परेड करते हैं।

खास तौर पर वसंत और गर्मियों में, पृथ्वी की सतह छोटे जीवों के लिए उत्सवों की एक विशाल श्रृंखला होती है, एक ऐसा क्षेत्र जो इतना चमकीला और आकर्षक होता है कि यह स्वर्गदूतों और स्वर्ग के अन्य निवासियों और उच्च निवासों में रहने वाले आत्मिक प्राणियों की निगाहों को अपनी ओर खींचता है। जो लोग सोचते और चिंतन करते हैं, उनके लिए यह चिंतन का इतना अद्भुत क्षेत्र है कि हम इसका उचित वर्णन नहीं कर सकते।

हालाँकि, इस दिव्य त्यौहार में ईश्वरीय नामों का प्रदर्शन सर्व-दयालु और जीवन देने वाले के नाम से संतुलित है, जो सर्व-प्रधान और सर्व-कुचलने वाले हैं, और जो मृत्यु और अलगाव के माध्यम से मृत्यु का कारण बनते हैं। यह सर्वव्यापी दया के अनुरूप नहीं लगता है जो इस प्रकार व्यक्त किया गया है: मेरी दया सभी चीजों को शामिल करती है (7:156)।

फिर भी यह कई मायनों में ऐसा है, जिनमें से एक इस प्रकार है:

जब प्रत्येक समूह अपनी बारी पूरी कर लेता है और वांछित परिणाम प्राप्त कर लेता है, तो सर्व-उदार निर्माता, सर्व-दयालु निर्माता अपनी करुणा से उनमें से अधिकांश को दुनिया के प्रति थकान और अरुचि का अनुभव कराता है। वह उन्हें आराम की इच्छा और दूसरी दुनिया में प्रवास करने की लालसा प्रदान करता है। इस प्रकार, जब उन्हें जीवन के कर्तव्यों से मुक्त होना होता है, तो वह उनमें अपने मूल घर लौटने के लिए उत्साही झुकाव जगाता है।

दयालु परमेश्वर उन सैनिकों को शहादत प्रदान करता है जो अपने कर्तव्य (पवित्र मूल्यों की रक्षा) के दौरान मरते हैं, तथा अपने लिए बलिदान किए गए पशुओं को परलोक में शाश्वत भौतिक अस्तित्व प्रदान करता है, तथा उन्हें पुल पर अपने स्वामी के लिए सवारी का पद प्रदान करता है - बुराक की तरह।

इसलिए यह उसकी असीम दया से दूर नहीं है कि अन्य सजीव प्राणी जो अपने स्वभाव और ईश्वरीय आदेशों के अनुसार ईश्वर द्वारा दिए गए कर्तव्यों का पालन करते हुए मरते हैं और कष्ट भोगते हैं, उन्हें उनकी दया के अक्षय भण्डार से उनकी क्षमता के अनुसार आध्यात्मिक पुरस्कार और पारिश्रमिक मिलना चाहिए। इसलिए उन्हें इस दुनिया से चले जाने पर नाराज नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें प्रसन्न होना चाहिए। केवल ईश्वर ही अदृश्य को जानता है।

मानवता, जो सजीव प्राणियों में सबसे सम्मानित है, इन त्योहारों का सबसे बड़ा लाभार्थी है और दुनिया से सबसे अधिक मोहित और डूबा हुआ है। इसलिए, जब मृत्यु निकट आती है, तो ईश्वर अपनी दया से प्रत्येक व्यक्ति को एक ऐसी मनोदशा देता है जिससे वह इस दुनिया से विरक्ति महसूस करता है और शाश्वत दुनिया में जाने की लालसा करता है। जो कोई भी गुमराही में नहीं खोया है, वह इस मनोदशा से लाभान्वित होता है और शांत मन से मरता है। मैं इस मनोदशा के लिए कई कारणों में से पाँच कारण बताऊँगा: एक: वृद्धावस्था के कारण, दयालु ईश्वर इस दुनिया में जो कुछ भी सुंदर और आकर्षक है, उस पर अकर्मण्यता और पतन की छाप दिखाता है, जैसा कि

---

10 विज्ञापन-दयालमी, अल-मुस्नद, 1:85 देखें। (ट्र.)

11 वह स्वर्गीय पर्वत जिस पर सवार होकर पैगम्बर अपने स्वर्गारोहण के समय स्वर्ग गये थे। (ट्र.)

साथ ही उनके कड़वे अर्थ भी। हमें संसार से असंतुष्ट करके, वह हमें एक स्थायी प्रिय की तलाश करने के लिए प्रेरित करता है।

दो: हमारे 99 प्रतिशत मित्र मरकर दूसरी दुनिया में चले गए हैं। उस हृदय-स्नेही लगाव के माध्यम से हमारे भीतर उसी स्थान की लालसा पैदा करके, वह हमें मृत्यु का सामना खुशी से करने में सक्षम बनाता है।

तीन: हमें अपनी अंतर्निहित असीम दुर्बलता और शक्तिहीनता का एहसास कराकर तथा इस प्रकार हमारे जीवन के बोझ और जिम्मेदारियों के महान भार को समझाकर, वह हमारे भीतर विश्राम की एक महान इच्छा और दूसरे संसार में जाने की सच्ची लालसा का बीजारोपण करता है।

चार: वह ईमान वालों को ईमान की रोशनी से दिखाता है कि मौत एक निवास-स्थान का परिवर्तन है, न कि एक शाश्वत मृत्यु-संहार; कि कब्र रोशन दुनियाओं का द्वार है, न कि एक अँधेरे कुएँ का मुँह; और कि अपनी सारी चमक-दमक के बावजूद यह दुनिया आख़िरत की तुलना में एक कालकोठरी की तरह है। इसलिए, इस कालकोठरी को छोड़कर जन्नत के बाग़ों में जाना, और शारीरिक जीवन की परेशानी भरी उथल-पुथल से निकलकर आराम की दुनिया और उस क्षेत्र में जाना जहाँ आत्माएँ उड़ान भरती हैं, और प्राणियों के कष्टदायक शोर से मुक्त होकर दयालु की उपस्थिति में जाना एक यात्रा और एक ऐसी खुशी है जिसकी सबसे ज़्यादा इच्छा की जानी चाहिए।

पाँचवाँ: कुरान को सुनने वालों को उसमें निहित सत्य का ज्ञान, तथा सत्य के प्रकाश के माध्यम से संसार की वास्तविक प्रकृति का ज्ञान प्रदान करना।

वह बताते हैं कि इस संसार के प्रति प्रेम और आसक्ति निरर्थक है, क्योंकि:

• दुनिया एक किताब है, जो हमेशा से ही मांगी जाती रही है। इसके अक्षर और शब्द दूसरे के सार, नाम और गुणों की ओर इशारा करते हैं। इसलिए इसके अर्थ को जानें और अपनाएँ, इसकी सजावट को त्यागें और आगे बढ़ें। • दुनिया एक खेती है; इसे बोएँ, अपनी फसल काटें और इसे सुरक्षित रखें।

भूसी को फेंक दो और उसे महत्व मत दो। • संसार दर्पणों का एक संग्रह है जो

लगातार एक के बाद एक गुजरते रहते हैं। उनमें जो प्रकट है उसे जानो, उसकी रोशनी देखो, उनमें प्रकट होने वाले नामों की अभिव्यक्तियों को समझो और उनसे प्रेम करो जिसका वे प्रतीक हैं। कांच के उन टुकड़ों के प्रति अपनी आसक्ति समाप्त करो, जो टूटने और नष्ट होने के लिए अभिशप्त हैं।

• दुनिया व्यापार का एक गतिशील स्थान है। अपना काम करो और चले जाओ। जो कारवां आपको पीछे छोड़ देते हैं, उनका बेकार में पीछा करके स्वयं को थकाएँ नहीं।

• संसार मनोरंजन का एक अस्थायी स्थान है। जो आपको जानना चाहिए उसे जानने के लिए इसका अध्ययन करें। इसके स्पष्ट, बदसूरत चेहरे को अनदेखा करें, लेकिन इसके छिपे हुए, सुंदर चेहरे पर ध्यान दें, जो शाश्वत सर्व-दयालु की ओर देखता है

एक. एक सुखद और लाभदायक यात्रा पर जाएं और फिर वापस आ जाएं।

जब वे सुन्दर दृश्य और सुन्दर वस्तुएँ लुप्त हो जाएँ, तो बच्चों की तरह रोना-धोना न करो और न ही घबराओ। • संसार एक अतिथिगृह है। उस दयालु मेजबान की सीमा के भीतर खाओ-पीओ, जिसने इसे बनाया है और शुक्र अदा करो। उसके कानून के अनुसार काम करो और व्यवहार करो। फिर पीछे देखे बिना चले जाओ। उसमें हस्तक्षेप न करो और न ही उन चीजों में व्यर्थ उलझो जो तुमसे दूर हैं और जिनसे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है।

वह ऐसी स्पष्ट सच्चाइयों के माध्यम से दुनिया के वास्तविक चरित्र को दिखाता है, और मृत्यु को कम दर्दनाक बनाता है। वास्तव में, वह सत्य के प्रति जागरूक लोगों के लिए मृत्यु को वांछनीय बनाता है, और दिखाता है कि वह जो कुछ भी करता है उसमें उसकी दया का एक निशान होता है। कुरान की आयतें अन्य विशेष कारणों की ओर भी इशारा करती हैं।

धिक्कार है उस पर जिसे इन पाँच कारणों या वास्तविकताओं में से कोई हिस्सा नहीं मिलता!

दूसरा स्टेशन

एक प्रार्थना

हे प्रभु! आप पर भरोसा न करके, अपनी शक्ति और इच्छाशक्ति पर भरोसा करते हुए, मैंने अपने दर्द के इलाज के लिए सभी छह दिशाओं में देखा। मुझे कोई इलाज नहीं मिला।
हालाँकि, मेरे मन में यह विचार आया: "क्या यह आपके लिए पर्याप्त नहीं है कि आपके पास इलाज के रूप में दर्द है?"

मैं बेखबर होकर अपने दाहिनी ओर अतीत की ओर देखने लगा ताकि मुझे सांत्वना मिल सके। लेकिन कल मेरे पिता की कब्र के रूप में और अतीत मेरे पूर्वजों की विशाल कब्र के रूप में सामने आया। सांत्वना के बजाय, इसने मुझे भय से भर दिया।*

*विश्वास है कि वह विशाल, भयावह मकबरा मित्रों के एकत्र होने के लिए एक परिचित और प्रकाशित बैठक स्थल था।

मैंने बाईं ओर भविष्य की ओर देखा, लेकिन कोई इलाज नहीं मिला। इसके बजाय, कल मेरी कब्र के रूप में दिखाई दिया, और भविष्य मेरे समकालीनों और आने वाली पीढ़ियों की बड़ी कब्र के रूप में। मुझे राहत देने के बजाय, इसने मुझे डरा दिया।*

*विश्वास और उससे प्राप्त शांति उस भयावह विशाल कब्र को आनन्द के रमणीय महलों में दयालु ईश्वर का भोज बताती है।

चूंकि बाईं ओर से भी कोई अच्छाई नहीं दिख रही थी, इसलिए मैंने वर्तमान की ओर देखा।
मैंने इसे एक ताबूत की तरह देखा जिसमें मेरी हताश संघर्षरत लाश ले जाई जा रही थी।*

*विश्वास है कि ताबूत एक व्यापार स्थल और एक चमचमाता अतिथिगृह है।

उस दिशा में भी कोई उपाय न पाकर मैंने अपना सिर उठाया और अपने जीवन के वृक्ष के शीर्ष की ओर देखा। मैंने देखा कि उसका एकमात्र फल मेरी लाश थी, जो मेरी ओर देख रही थी।*

*विश्वास से पता चलता है कि यह फल कोई लाश नहीं है। वास्तव में, यह दर्शाता है कि आत्मा, जिसे अनंत जीवन में अनंत सुख का वरदान मिलना है, अपने जीर्ण-शीर्ण घर को छोड़कर सितारों के बीच यात्रा करने के लिए निकल पड़ी है।

उस दिशा से भी निराश होकर मैंने अपना सिर नीचे किया और देखा कि मेरी हड्डियों की धूल मेरी पहली रचना की धूल में मिल गई है। इससे मेरी पीड़ा और बढ़ गई।*

*विश्वास बताता है कि धूल दया का द्वार है और जीत पर पर्दा है।
स्वर्ग के हॉल के डॉव.

पीछे मुड़कर मैंने देखा कि एक अस्थायी दुनिया है जिसका कोई आधार नहीं है और जो शून्यता की घाटियों और अस्तित्वहीनता के अंधेरे में घूम रही है। कोई इलाज न होने के कारण, इसने मेरे दर्द में और भी अधिक उदासी और भय जोड़ दिया।*

*विश्वास से पता चलता है कि यह संसार शाश्वत रूप से चाहने वाले के संदेश और दिव्य शिलालेखों की चादरें हैं। अपने कर्तव्यों को पूरा करने और अपने अर्थों को व्यक्त करने के बाद, वे एक नए अस्तित्व के लिए अपने परिणामों को पीछे छोड़ देते हैं।

चूँकि मुझे उस दिशा से भी कोई अच्छाई नज़र नहीं आ रही थी, इसलिए मैंने सामने देखा और देखा कि मेरी कब्र का दरवाज़ा अंत में खुला हुआ था। उसके पीछे अनंत काल की ओर जाने वाला राजमार्ग था, जिसने दूर से ही मेरी आँखों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया।*

*विश्वास कब्र को प्रकाश की दुनिया का द्वार बताता है। क्योंकि वह रास्ता हमें प्रकाश की दुनिया की ओर ले जाता है।
अनन्त खुशी के लिए, यह मेरे दर्द को ठीक करता है।

इन छह दिशाओं में देखते हुए मुझे केवल भय और निराशा ही महसूस हुई। एक तुच्छ स्वतंत्र इच्छा के अलावा, मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके द्वारा मैं उनका प्रतिरोध या विरोध कर सकूँ।*

*विश्वास हमारी इच्छा शक्ति के स्थान पर एक अनंत शक्ति पर भरोसा करने का एक दस्तावेज देता है, जो पदार्थ के सबसे छोटे अविभाज्य भाग की तरह है। वास्तव में, विश्वास स्वयं एक ऐसा ही दस्तावेज है।

मानव की स्वतंत्र इच्छा में शक्ति का अभाव है, और इसकी सीमा छोटी है और यह स्वयं भी गलत है। मानवीय कर्मों [जिसे ईश्वर बनाता है] को प्राप्त करने के लिए एक उपकरण के रूप में काम करने के अलावा, यह कुछ भी नहीं कर सकता या बना नहीं सकता।*

*विश्वास इच्छाशक्ति को ईश्वर के नाम पर इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करता है और इसे किसी भी चुनौती के खिलाफ पर्याप्त बनाता है। यह एक सैनिक की तरह है जो अपनी तुच्छ शक्ति का उपयोग राज्य के लिए करता है और अपने बल पर जितना कर सकता है, उससे कहीं अधिक महान कार्य करने में सक्षम होता है।
अपना।

यह न तो अतीत को भेद सकता है, न ही भविष्य को समझ सकता है, और इसका कोई महत्व नहीं है।
मेरी महत्वाकांक्षाओं के संबंध में लाभ और उनके संबंध में कष्ट।*

*चूँकि विश्वास अपनी बागडोर पशु शरीर के हाथ से लेकर हृदय और आत्मा को दे देता है, इसलिए यह अतीत और भविष्य में प्रवेश कर सकता है, क्योंकि हृदय और आत्मा का जीवन क्षेत्र व्यापक है।

मनुष्य की इच्छाशक्ति केवल वर्तमान समय और वर्तमान क्षण में ही सक्रिय होती है। मेरी अनंत आवश्यकताएं हैं और एक जन्मजात कमजोरी है। मैं बेसहारा और असहाय हूं। मैं छह दिशाओं से आने वाले आतंक और अकेलेपन के कारण दयनीय स्थिति में हूं। और फिर भी शक्ति की कलम द्वारा मेरे अस्तित्व के पृष्ठ पर अंकित अनंत इच्छा और महत्वाकांक्षा मेरे स्वभाव में समाहित है। वास्तव में, ब्रह्मांड की हर चीज के नमूने मेरे अस्तित्व में समाहित हैं। मैं उन सभी से जुड़ा हुआ हूं, और उनके लिए काम करता हूं।

ज़रूरत का दायरा नज़र जितना ही व्यापक है, और कल्पना तक फैला हुआ है। मुझे वह चाहिए जो मेरे पास नहीं है, और इसलिए मेरी ज़रूरतें असीम हैं।
फिर भी मेरी शक्ति केवल वहीं तक फैली है जहाँ तक मैं पहुँच सकता हूँ। इस प्रकार मेरी इच्छाएँ और ज़रूरतें अनंत हैं, जबकि मेरी पूंजी नगण्य और महत्वहीन है। तो, ऐसी ज़रूरत का सामना करने पर वह नगण्य इच्छाशक्ति क्या दर्शाती है? मुझे कोई दूसरा उपाय खोजना होगा।

इसका समाधान अपनी इच्छाशक्ति पर निर्भर रहना नहीं है, बल्कि ईश्वरीय इच्छा के आगे झुकना है और उस पर भरोसा करके उसकी शक्ति में शरण लेना है। "हे प्रभु!
चूँकि यह मोक्ष का मार्ग है, इसलिए मैं अपनी स्वतंत्र इच्छा को आपके मार्ग पर छोड़ता हूँ और अपना अहंकार त्यागता हूँ।

मैं ऐसा इसलिए करता हूँ कि आपकी कृपा मेरी शक्तिहीनता और कमजोरी के प्रति दया करके मेरी सहायता और समर्थन करे, आपकी दया मेरी आवश्यकता और अभाव के कारण मुझ पर दया करे, और वह मेरे लिए एक सहारा बने और मेरे लिए अपने द्वार खोले।

जो व्यक्ति दया के असीम सागर को पा लेता है, वह अपनी स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर नहीं रहता, जो मृगतृष्णा में दिख रही पानी की एक बूँद से अधिक कुछ नहीं है। वह दया को त्यागकर अपनी इच्छा पर निर्भर नहीं रहता।

अफ़सोस! हम धोखा खा गए। हमने सोचा कि यह सांसारिक जीवन निरंतर है, और इस तरह हमने इसे पूरी तरह खो दिया। वास्तव में, यह गुज़रता हुआ जीवन एक नींद के समान है जो एक सपने की तरह बीत गया। यह जीवन, जिसका कोई आधार नहीं है, हवा की तरह उड़ता है।
जो लोग खुद पर भरोसा करते हैं और सोचते हैं कि वे हमेशा जीवित रहेंगे, वे निश्चित रूप से मर जाएंगे। वे मौत की ओर दौड़ते हैं, और यह दुनिया, मानवता का घर, विनाश के अंधेरे में गिर जाता है। महत्वाकांक्षाएँ समय-सीमित होती हैं, लेकिन आत्मा में दर्द बना रहता है।

चूंकि यह वास्तविकता है, तो आओ, मेरी दुखी आत्मा जो जीने की शौकीन है और लंबी उम्र चाहती है, जो दुनिया से प्यार करती है और जिसकी असीम महत्वाकांक्षा है और

दर्द। जागो और अपने होश में आओ। विचार करें कि जुगनू अपनी मंद रोशनी पर निर्भर रहता है और हमेशा रात के असीम अंधेरे में रहता है, जबकि मधुमक्खी दिन के सूरज को खोजती है और अपने दोस्तों (फूलों) को सूरज की रोशनी से सराबोर देखती है क्योंकि वह खुद पर निर्भर नहीं रहती। उसी तरह, अगर आप खुद पर, अपने अस्तित्व और आत्मविश्वास पर भरोसा करते हैं, तो आप जुगनू की तरह होंगे। लेकिन अगर आप खुद को, अपने क्षणभंगुर अस्तित्व और शरीर को उस निर्माता के मार्ग पर समर्पित करते हैं जिसने आपको यह दिया है, तो आप मधुमक्खी की तरह, अस्तित्व का एक अंतहीन जीवन पाएंगे। इसे समर्पित करें, क्योंकि आपका अस्तित्व और आपका शरीर आपके लिए एक दिव्य विश्वास से अधिक कुछ नहीं है।

और यह तो पैदा करने वाले की सम्पत्ति है, उसी ने तुम्हें दी है। इसलिए इसे बेहिचक और बिना उस पर कोई दायित्व डाले उसके लिए इस्तेमाल करो, ताकि यह स्थायी हो जाए। क्योंकि निषेध का निषेध ही पुष्टि है। इस तरह अगर हमारा न होना अस्वीकार हो जाए (अस्तित्व के पक्ष में), तो हमारा होना सच्चा अस्तित्व पा लेता है। सर्व-दयालु पैदा करने वाला तुमसे अपनी सम्पत्ति खरीदता है। बदले में वह तुम्हें जन्नत जैसी ऊँची कीमत देता है, तुम्हारी खातिर इसकी देखभाल करता है, इसकी कीमत बढ़ाता है। वह इसे तुम्हें एक परिपूर्ण और स्थायी रूप में लौटा देगा। इसलिए हे मेरे आत्मा, देर मत करो। यह काम करो, जो पाँच तरह से लाभदायक है। पाँच नुकसानों से बचने के साथ-साथ एक ही सौदे में पाँच गुना लाभ कमाओ।

“मैं उनसे प्रेम नहीं करता जो अस्त हो जाते हैं।”

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा, "मैं डूबनेवालों से प्रेम नहीं करता।" (6:76)

पैगम्बर अब्राहम (उन पर शांति हो) द्वारा ब्रह्मांड के क्षय पर कही गई यह आयत सुनकर मैं रो पड़ा।

मेरे दिल की आँखें इसके लिए कड़वे आँसू रो रही थीं। हर आँसू इतना दुखद था कि उसने दूसरों को भी गिरने पर मजबूर कर दिया, मानो आँसू खुद रो रहे हों। वे आँसू आगे की पंक्तियाँ बनाते हैं। वे ईश्वर के वचन - कुरान में निहित एक बुद्धिमान पैगंबर के शब्दों पर एक टिप्पणी की तरह हैं।

जो प्रेमी गायब हो जाता है, वह सुंदर नहीं होता, क्योंकि जिसका पतन निश्चित है, वह वास्तव में सुंदर नहीं हो सकता। उसे हृदय से प्रेम नहीं करना चाहिए, क्योंकि हृदय शाश्वत प्रेम के लिए बनाया गया है और वह शाश्वत रूप से चाहने वाले का दर्पण है।

---

12 पाँच लाभ या फायदों और पाँच नुकसानों के लिए छठे वचन का संदर्भ लें। (ट्र.)

54 विश्वास और अविश्वास

जो चीज़ मनचाही है और जो बस गायब हो जाती है, वह दिल की आसक्ति या मन की व्याकुलता के योग्य नहीं है। वह चाहत की वस्तु नहीं हो सकती और उसे दुख से खो देने के योग्य नहीं है। तो फिर दिल को उसकी पूजा क्यों करनी चाहिए और उससे क्यों जुड़ना चाहिए?

जो क्षय और मृत्यु में खोया हुआ है, उसे मैं नहीं चाहता।
क्योंकि मैं नश्वर हूँ और इसलिए नश्वर वस्तु की चाहत या इच्छा नहीं करता।

जो पूज्य है और जिसकी मृत्यु हो चुकी है - मैं ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं पुकारता या उसकी शरण नहीं लेता। क्योंकि मैं असीम रूप से जरूरतमंद और शक्तिहीन हूँ। जो शक्तिहीन है, वह मेरे अंतहीन दर्द को ठीक नहीं कर सकता या मेरे असीम गहरे घावों को ठीक नहीं कर सकता।
जो वस्तु क्षयशील है, वह पूजा की वस्तु कैसे हो सकती है?

दिखावे से ग्रस्त मन, संसार में जिसे वह चाहता है, उसे क्षय होते और मरते देखकर विलाप करता है, जबकि आत्मा, जो शाश्वत प्रियतम की खोज करती है, भी विलाप करती है, कहती है: "मैं उनसे प्रेम नहीं करती, जो अस्त हो जाते हैं।"

मैं अलगाव नहीं चाहता या चाहता हूं, क्योंकि मैं इसे सहन नहीं कर सकता।

मिलन के तुरंत बाद कटु वियोग होना विचार या लालसा के योग्य नहीं है। क्योंकि जिस तरह सुख का लुप्त होना दुख है, उसी तरह उसकी कल्पना करना भी दुख है। प्रेमियों की रचनाएँ, यानी रूपक प्रेम (विपरीत लिंग के प्रति प्रेम) पर कविताएँ, इस लुप्त होने की कल्पना से उत्पन्न होने वाले दर्द के कारण विलाप हैं। यदि आप उनकी भावना को संघनित करें, तो यह विलाप प्रत्येक से बहेगा।

इस प्रकार, ऐसी मुलाकातों और दर्दनाक रूपक प्रेम से आने वाले दर्द के कारण ही मेरा हृदय अब्राहम की तरह चिल्लाता है:
“मैं उनसे प्रेम नहीं करता जो अस्त हो जाते हैं।”

यदि आप इस क्षणभंगुर संसार में स्थायित्व चाहते हैं, तो स्थायित्व क्षणभंगुरता और विनाश से ही उत्पन्न होता है। अपनी दुष्ट आत्मा का विनाश करें ताकि आप स्थायित्व प्राप्त कर सकें।

सांसारिक पूजा-अर्चना के आधार पर अपने आपको बुरे नैतिक मूल्यों से मुक्त करें और आत्म-विनाश का एहसास करें। अपने पास मौजूद और अपने नियंत्रण में मौजूद धन को सच्चे प्रियतम के लिए त्याग दें। प्राणियों का अंत देखें, जो विलुप्ति का प्रतीक है।

क्योंकि इस संसार से स्थायित्व की ओर जाने वाला मार्ग आत्म-विनाश से होकर गुजरता है।

कारण-कार्य में लीन मानव मन, संसार के क्षय के कारण होने वाली उथल-पुथल पर विलाप करता है। सच्चे अस्तित्व की चाहत रखने वाला विवेक, अब्राहम की तरह विलाप करता है: "मैं उनसे प्रेम नहीं करता जो अस्त हो जाते हैं।" यह रूपकात्मक प्रियजनों और क्षय होते प्राणियों से अपना संबंध तोड़ लेता है, और स्वयं को वास्तव में विद्यमान, शाश्वत प्रियतम से जोड़ लेता है।

हे मेरे अधम आत्मा। यह संसार और सभी प्राणी नश्वर हैं। हालाँकि, तुम प्रत्येक नश्वर वस्तु में सर्व-स्थायी सत्ता तक पहुँचने के दो रास्ते खोज सकते हो, और अमर प्रियतम की कृपा की अभिव्यक्तियों के दो रहस्य या झलकियाँ पहचान सकते हो - यदि तुम अपने नश्वर अस्तित्व का त्याग कर दो।

देने का कार्य पहचाना जाता है और प्रत्येक उपहार में दयालु की कृपा देखी जाती है। यदि आप दिए गए उपहार के माध्यम से इस कार्य को समझते हैं, तो आप सर्व-प्रदान करने वाले को पा लेंगे। शाश्वत रूप से प्रार्थित व्यक्ति का प्रत्येक कार्य एक संदेश की तरह सर्व-महान निर्माता के नामों को इंगित करता है। यदि आप शिलालेख के माध्यम से अर्थ समझते हैं, तो नाम आपको उन नामों से पुकारे जाने वाले व्यक्ति तक ले जाएंगे।13 चूँकि इन क्षणभंगुर चीजों का मूल, सार, खोजना संभव है, इसलिए इसे प्राप्त करें। उनके अर्थहीन खोल को नश्वरता की बाढ़ में फेंक दें।

हर वस्तु जो अस्तित्व में है, वह एक शब्द है जिसका अर्थ निहित है और जो सर्वशक्तिमान निर्माता के कई नामों को दर्शाता है। चूँकि सभी प्राणी ईश्वरीय शक्ति के शब्द हैं, इसलिए उनके अर्थों को समझें और उन्हें अपने हृदय में स्थान दें। निर्भयतापूर्वक अर्थहीन अक्षरों को क्षणभंगुर हवा में फेंक दें और उन्हें भूल जाएँ।

सांसारिक मन, दिखावे में उलझा रहता है और जिसकी पूंजी केवल भौतिक दुनिया के ज्ञान पर आधारित होती है, वह घबराहट और हताशा में चिल्लाता है, क्योंकि उसके विचारों की श्रृंखला शून्यता और अस्तित्वहीनता में समाप्त हो जाती है। यह सत्य की ओर ले जाने वाला सच्चा मार्ग खोजता है। चूँकि आत्मा ने जो कुछ भी निर्धारित है और जो नश्वर है, उससे खुद को अलग कर लिया है और हृदय ने धोखा देने वाले प्रियजनों को त्याग दिया है, और चूँकि विवेक क्षणभंगुर प्राणियों से दूर हो गया है, इसलिए तुम्हें, मेरी दुखी आत्मा को, इस सहायता की तलाश करनी चाहिए: "मैं उन लोगों से प्यार नहीं करता जो निर्धारित करते हैं," और बच जाओ।

देखिये मौलाना जामी14, जो प्रेम की “मदिरा” से इस तरह मदहोश थे मानो प्रेम से ही निर्मित हुए हों, उन्होंने इसे कितनी अच्छी तरह से व्यक्त किया ताकि चेहरों को बहुलता से एकता की ओर मोड़ा जा सके - कोष्ठकीय जोड़ मेरे हैं:

---

13 उदाहरण के लिए, अपने अस्तित्व, सौंदर्य, आकार, अनुपात, रंग और अपने कार्य के माध्यम से एक फूल क्रमशः ईश्वरीय नामों को प्रदर्शित करता है - निर्माता, सर्वसुंदर, सर्वआकार देने वाला, सर्वन्यायी, सर्वरंग देने वाला और सर्वज्ञानी; और ये नाम उस एक की ओर संकेत करते हैं जिसके पास ये नाम हैं। (अनुवाद)

14 मौलाना नूरूद्दीन अब्दुर्रहमान इब्न अहमद अल-जामी (1414-1492 ई.), जिन्हें आम तौर पर मुल्ला जामी कहा जाता है, को फारस का अंतिम महान शास्त्रीय कवि और एक संत माना जाता है। उनकी सला-मान और अबशाल अपवित्र और पवित्र प्रेम का एक रूपक है। उनकी कुछ अन्य कृतियों में हफ़्त अवरंग, तुहफ़तुल-अहरार, लैला वु मजनूं, फ़तिहात अश-शबाब और लवा'इह शामिल हैं । (अनुवाद)

केवल एक ही चाहो (बाकी चाहने लायक नहीं हैं)।
एक को बुलाओ (अन्य आपकी सहायता के लिए नहीं आएंगे)।
एक को खोजो (अन्य खोजने योग्य नहीं हैं)।
एक को देखो और उसका अनुसरण करो (अन्य सभी हर समय दिखाई नहीं देते; वे नश्वरता के पर्दे के
पीछे अदृश्य हो जाते हैं)।
एक को जानो (उस ज्ञान के अलावा जो किसी और ज्ञान में वृद्धि नहीं करता)
तुम्हारा उसके विषय में ज्ञान व्यर्थ है।
एक का उल्लेख करें (उससे संबंधित नहीं शब्द बेकार माने जा सकते हैं)।

हे जामी! मैं मानता हूँ कि तुमने सच कहा। सच्चा प्रिय, सच्चा चाहने वाला, सच्चा चाहने वाला और सच्चा पूजनीय वही है।

भगवान के नामों को याद करने और सुनाने के शक्तिशाली चक्र में, यह ब्रह्मांड और इसके निवासी विभिन्न भाषाओं और स्वरों में घोषणा करते हैं: "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है," और दिव्य एकता की गवाही देते हैं। यह उन लोगों द्वारा दिए गए घाव को भरता है जो डूबते हैं, और अमर प्रियतम की ओर इशारा करते हैं।

सही मार्ग पर चलने वालों और असावधान लोगों की दुनिया का चित्रण

(नोट: लगभग 25 वर्ष पहले, इस्तांबुल के बेकोज़ में युथा टेपेसी में, जब मैंने संसार को त्यागने का निर्णय लिया था, तो कई महत्वपूर्ण मित्र मुझे संसार में और मेरी पूर्व स्थिति में वापस बुलाने आए। मैंने उनसे कहा कि वे मुझे अगली सुबह तक छोड़ दें ताकि मैं ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त कर सकूं।

उस सुबह मुझे निम्नलिखित दो “तालिकाएँ” याद आईं। वे कविता जैसी लगती हैं, लेकिन वे हैं नहीं। मैंने उस धन्य स्मृति के लिए उनमें कोई बदलाव नहीं किया है। उन्हें यहाँ शामिल किया गया है क्योंकि वे उपयुक्त हैं।)

प्रथम तालिका

(लापरवाह लोगों की दुनिया की सच्ची भावना का चित्रण।)

मुझे दुनिया में मत बुलाओ,
मैं आया और पाया कि यह दुष्ट और नश्वर है।

असावधानी एक परदा थी;
मैंने सत्य का प्रकाश छिपा हुआ देखा।

सारी चीज़ें, सारी सृष्टि—
मैंने देखा कि वे नश्वर और हानि से भरे हुए थे।

अस्तित्व, वास्तव में मैंने इसे धारण किया है।
अफ़सोस! यह अस्तित्वहीनता थी; मुझे बहुत कष्ट सहना पड़ा।

जहाँ तक जीवन की बात है, मैंने इसका अनुभव किया है;
मैंने देखा कि यह पीड़ा के भीतर पीड़ा थी।

बुद्धि शुद्ध प्रतिशोध बन गई;
मैंने स्थायित्व को क्लेश के रूप में देखा।

ज़िन्दगी हवा सी थी, सनक में गुज़र जाती थी;
मैंने पूर्णता को शुद्ध हानि के रूप में देखा।

कार्य केवल दिखावे के लिए थे;
मैंने महत्वाकांक्षा को शुद्ध पीड़ा के रूप में देखा।

मिलन वस्तुतः अलगाव था;
मैंने देखा कि इलाज ही बीमारी है।

ये रोशनियाँ अंधकार बन गईं;
मैंने देखा कि ये दोस्त अनाथ हो गये हैं।

ये आवाजें मौत की घोषणाएं थीं;
मैंने जीवितों को मृत देखा।

ज्ञान सनक में बदल गया;
मैंने विज्ञान में हजारों बीमारियाँ देखीं।

सुख अमिश्रित दुःख बन गया;
मैंने अस्तित्व को अनस्तित्व का मिश्रित रूप देखा।

मुझे सच्चा प्रियतम मिल गया है;
आह, मुझे वियोग के कारण बहुत पीड़ा हुई।

दूसरी तालिका

(यह तालिका मार्गदर्शन और शांति के लोगों की दुनिया की सच्ची भावना का वर्णन करती है।)

असावधानी लुप्त हो गई है;
मैंने सत्य के प्रकाश को प्रकट होते देखा है।

अस्तित्व ईश्वरीय सत्ता का प्रमाण है।
देखो, जीवन सत्य को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है।

बुद्धि खजाने की कुंजी बन गई है।
देखो, नश्वरता ही शाश्वतता का द्वार है।

आत्म-प्राप्ति की चिंगारी मर चुकी है।
लेकिन देखो, वहाँ अनुग्रह और सौंदर्य का सूर्य है।

वियोग सच्चा मिलन बन गया है;
देखो, दर्द शुद्ध सुख है।

जीवन शुद्ध कर्म बन गया है।
देखो, अनंत काल शुद्ध जीवन है।

अंधकार प्रकाश को घेरने वाली एक पतली झिल्ली है।
देखो, मृत्यु में ही सच्चा जीवन है।

सभी चीजें परिचित हो गई हैं।
देखो, सभी ध्वनियाँ ईश्वर का स्मरण हैं।

सृष्टि के सभी कण:
देखो, हर कोई परमेश्वर की महिमा करता है और उसे उसके नाम से पुकारता है।

मैंने गरीबी को धन का खजाना पाया है।
देखो, नपुंसकता में ही सम्पूर्ण शक्ति छिपी है।

यदि तुम्हें ईश्वर मिल गया है,
देखो, सब कुछ तुम्हारा है।

यदि तुम सब वस्तुओं के स्वामी के दास हो,
देखो, उसकी सम्पत्ति तुम्हारी है।

यदि आप अहंकारी हैं और स्वयं पर स्वामित्व का दावा करते हैं,
देखिये, यह अंतहीन परीक्षण और क्लेश है।

यह अनंत पीड़ा है, इसका स्वाद लो,
देखिये, यह एक असहनीय आपदा है।

यदि आप सचमुच परमेश्वर के दास हैं, उसके प्रति समर्पित हैं,
देखो, यह असीम आनन्द है।

इसके अनगिनत पुरस्कारों का स्वाद चखो,
असीम आनन्द को देखो, उसका अनुभव करो।

हे मेरी आत्मा! मेरे हृदय की तरह रो, चिल्ला और कह:

मैं नश्वर हूं, इसलिए मुझे नश्वरता नहीं चाहिए।
मैं नपुंसक हूं, इसलिए मैं नपुंसक की इच्छा नहीं करता।
मैंने अपनी आत्मा को दयालु भगवान को सौंप दिया है, अतः अब मुझे किसी अन्य की इच्छा नहीं है।
मैं केवल उसी को चाहता हूं जो सदैव मेरा मित्र बना रहे।
मैं तो एक तुच्छ कण हूँ, परन्तु मैं एक चिरस्थायी सूर्य की कामना करता हूँ।
मैं सारतः कुछ भी नहीं हूं, लेकिन मैं संपूर्ण सृष्टि की कामना करता हूं।

तेईसवाँ वचन

विश्वास के गुण और हमारी टिप्पणियाँ
दुख और खुशी

(इस श्लोक में दो अध्याय हैं।)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हमने मनुष्यों को उत्तम आकार में पैदा किया, ताकि वे सृष्टि के आदर्श स्वरूप में हों, फिर हमने उन्हें सबसे निम्न स्तर पर पहुँचा दिया, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए। (95:4-5)

पहला अध्याय

निम्नलिखित पाँच बिंदुओं में से हम पाँच को स्पष्ट करेंगे
विश्वास के हजारों गुण.

पहला बिन्दु: हम विश्वास के प्रकाश के माध्यम से पूर्णता के उच्चतम स्तर तक पहुँचते हैं और स्वर्ग के योग्य बनते हैं। अविश्वास का अंधकार हमें निम्नतम स्तर पर ले जाता है, जिससे हम नरक के योग्य बनते हैं।

क्योंकि विश्वास हमें हमारे सर्वशक्तिमान निर्माता से जोड़ता है, इसलिए विश्वास एक संबंध और जुड़ाव है। इस प्रकार हमारा मूल्य ईश्वरीय कला और ईश्वरीय नामों से प्राप्त होता है जो विश्वास के माध्यम से हमारे भीतर प्रकट होते हैं। अविश्वास इस संबंध को तोड़ता है, जिससे ईश्वरीय कला पर पर्दा पड़ जाता है और हमारा मूल्य मात्र एक भौतिक इकाई के बराबर रह जाता है। चूँकि पदार्थ नाशवान है और भौतिक जीवन एक क्षणभंगुर पशु जीवन से अधिक कुछ नहीं है, इसलिए एक भौतिक इकाई के रूप में हमारा मूल्य वस्तुतः कुछ भी नहीं है।

हम इसे एक दृष्टांत के माध्यम से समझाएंगे।

लोहे (या किसी अन्य सामग्री) का मूल्य जिससे कलाकृति बनाई जाती है, उसमें व्यक्त कला के मूल्य से भिन्न होता है। कभी-कभी उनका मूल्य समान हो सकता है, या कला का मूल्य उसकी सामग्री से कहीं अधिक हो सकता है, या इसके विपरीत। एक प्राचीन वस्तु एक मिलियन डॉलर में बिक सकती है, जबकि उसकी सामग्री कुछ सेंट के बराबर भी नहीं होती। अगर उसे प्राचीन वस्तुओं के बाज़ार में ले जाया जाए, तो उसे बेचा जा सकता है

इसकी असली कीमत इसकी कला और शानदार कलाकार के नाम की वजह से है। अगर इसे लोहार के पास ले जाया जाए, तो इसे सिर्फ़ इसके लोहे के मूल्य पर बेचा जाएगा।

इसी तरह, प्रत्येक व्यक्ति सर्वशक्तिमान ईश्वर की कला का एक अनूठा, अमूल्य कार्य है। हम उनकी शक्ति के सबसे नाजुक और सुंदर चमत्कार हैं, जो ब्रह्मांड के एक छोटे से नमूने के रूप में उनके सभी नामों और शिलालेखों को प्रकट करने के लिए बनाए गए प्राणी हैं। यदि हम विश्वास से प्रकाशित होते हैं, तो ये सार्थक शिलालेख दिखाई देते हैं, और विश्वासी उन्हें सचेत रूप से पढ़ते हैं। वे अपने निर्माता के साथ अपने संबंध के माध्यम से इन शिलालेखों को प्रकट करते हैं; अर्थात्, प्रत्येक व्यक्ति में निहित दिव्य कला इस तरह की पुष्टि के माध्यम से प्रकट होती है: "मैं सर्व-महान निर्माता का कार्य हूँ, उनकी दया और उदारता का प्राणी और वस्तु हूँ।" परिणामस्वरूप, और क्योंकि हम इस कला को कितनी अच्छी तरह से प्रतिबिंबित करते हैं, उसके अनुपात में हम मूल्य प्राप्त करते हैं, हम महत्वहीनता (भौतिक शब्दों में) से सभी प्राणियों से ऊपर रैंक किए गए प्राणियों में चले जाते हैं। हम ईश्वर से संवाद करते हैं, पृथ्वी पर उनके मेहमान हैं, और स्वर्ग के लिए योग्य हैं।

हालाँकि, अगर अविश्वास, जिसका अर्थ है इस संबंध का विच्छेद, हमारे अंदर समाहित हो जाए, तो दिव्य नामों की सभी अभिव्यक्तियाँ अंधकार से ढक जाती हैं और इस प्रकार अव्यक्त हो जाती हैं। क्योंकि अगर कलाकार अज्ञात है, तो उसकी कला के मूल्य को व्यक्त करने वाले पहलुओं की पहचान कैसे की जा सकती है? इस प्रकार उस उत्कृष्ट कला और श्रेष्ठ शिलालेखों के सबसे सार्थक उदाहरण छिपे हुए हैं। हमारे अस्तित्व के भौतिक पहलुओं के संबंध में, अविश्वासी उन्हें भौतिक कारणों, प्रकृति और संयोग के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, जिससे वे चमकते हीरे के बजाय सादे कांच में बदल जाते हैं। वे किसी भी अन्य भौतिक इकाई से अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं, जो एक क्षणभंगुर और घुटन भरे जीवन के लिए खुद को दोषी ठहराते हैं, और एक सबसे नपुंसक, जरूरतमंद और पीड़ित जानवर से बेहतर नहीं हैं जो अंततः धूल में मिल जाएगा। इस प्रकार अविश्वास हमारे हीरे को कोयले में बदलकर हमारी प्रकृति को खराब कर देता है।

दूसरा बिंदु: विश्वास एक प्रकाश है। जिस तरह यह मनुष्यों को प्रकाशित करता है और उनके अस्तित्व में हमेशा से प्रतीक्षित परमेश्वर द्वारा लिखे गए सभी संदेशों को प्रकट करता है, उसी तरह यह ब्रह्मांड को भी प्रकाशित करता है और अतीत और भविष्य से अंधकार को भी दूर करता है। हम इस सत्य को इस अर्थ के बारे में जो मैंने अनुभव किया है उसके माध्यम से समझाएँगे: ईश्वर उन लोगों का संरक्षक है जो विश्वास करते हैं।

वह उन्हें अंधकार की परतों से निकालकर प्रकाश में लाता है (2:257)।

मैंने खुद को दो पहाड़ों के बीच एक गहरी घाटी पर बने एक विस्मयकारी पुल पर खड़ा देखा। दुनिया पूरी तरह से अंधेरी थी। अपने दाहिने तरफ देखते हुए, मैंने कल्पना की कि मैंने अंधेरे में एक विशाल मकबरा देखा है। अपने बाएं तरफ देखते हुए, मुझे लगा जैसे मैं अंधेरे की जबरदस्त लहरों के बीच हिंसक तूफान और आपदाओं को तैयार होते देख रहा हूँ। नीचे देखते हुए, मैंने कल्पना की कि मैंने एक बहुत ही भयानक दृश्य देखा है।

गहरी खाई। इस भयानक अंधेरे के सामने मेरे पास एक मशाल थी। मैंने इसका इस्तेमाल किया और इसकी रोशनी से थोड़ा-बहुत देख पाया। इसकी धुंधली रोशनी में मुझे एक भयानक दृश्य दिखाई दिया। पुल पर हर तरफ इतने भयानक ड्रेगन, शेर और राक्षस थे कि मैं चाहता था कि मेरे पास मशाल न हो। जिस भी दिशा में मैंने इसे निर्देशित किया, मुझे वही डर लगा। "यह मशाल मेरे लिए केवल परेशानी लाती है," मैंने गुस्से में इसे फेंक दिया और इसे तोड़ दिया। अचानक अंधेरे की जगह रोशनी ने ले ली, जैसे कि मैंने अपनी मशाल तोड़कर एक बहुत बड़ी रोशनी जला दी हो। मैंने सब कुछ देखा

अपने वास्तविक स्वरूप में.

मैंने पाया कि पुल एक समतल मैदान पर बना राजमार्ग था। विशाल मकबरा एक हरा-भरा, सुंदर बगीचा था जिसमें प्रतिष्ठित व्यक्ति पूजा, प्रार्थना, महिमामंडन और प्रवचन की सभाओं का नेतृत्व कर रहे थे। मेरे बाईं ओर की अशांत, तूफानी, भयावह चट्टानें एक भोज कक्ष, एक छायादार सैरगाह, सुंदर पहाड़ों के पीछे एक सुंदर विश्राम स्थल के रूप में दिखाई दीं। भयानक राक्षस और ड्रेगन वास्तव में ऊँट, बैल, भेड़ और बकरियाँ थे। "विश्वास के प्रकाश के लिए ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद हो," मैंने कहा, और फिर यह कहते हुए जागा: ईश्वर उन लोगों का संरक्षक है जो विश्वास करते हैं। वह उन्हें अंधकार की परतों से प्रकाश में लाता है।

इस प्रकार, दो पहाड़ इस जीवन की शुरुआत और अंत हैं, यानी यह दुनिया और कब्र की दुनिया (मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच)। पुल जीवन काल है, अतीत (दाईं ओर) और भविष्य (बाईं ओर) के दो चरणों के बीच। मशाल हमारा अभिमानी अहंकार है, जो अपनी उपलब्धियों पर भरोसा करते हुए, ईश्वरीय रहस्योद्घाटन की उपेक्षा करता है। राक्षस दुनिया की घटनाएँ और जीव थे।

जो लोग अपने अहंकार के कारण गुमराही और असावधानी के अंधकार में गिर गए हैं, वे मेरे जैसे ही हैं, जो पहले की स्थिति में थे - एक मशाल की धुंधली रोशनी में। अपने अपर्याप्त और गुमराह ज्ञान के साथ, वे अतीत को विलुप्त होने के अंधेरे में एक विशाल कब्र के रूप में देखते हैं और भविष्य को संयोग या संयोग से नियंत्रित आतंक के तूफानी दृश्य के रूप में देखते हैं। मशाल उन्हें घटनाओं और प्राणियों को भी दिखाती है, जो वास्तव में सर्वज्ञ और दयालु के कर्तव्यनिष्ठ सेवक या अधिकारी हैं जो विशिष्ट कार्यों को पूरा करते हैं और अच्छे उद्देश्यों की सेवा करते हैं, हानिकारक राक्षसों के रूप में। ये वे लोग हैं जिनका उल्लेख इस प्रकार है: जो लोग विश्वास नहीं करते, उनके संरक्षक बुरी शक्तियां हैं जो विश्वास के पैटर्न स्थापित करती हैं और ईश्वर की अवज्ञा में शासन करती हैं। वे उन्हें प्रकाश से निकालकर अंधकार की परतों में ले जाते हैं (2:257)।

तथापि, यदि लोगों को ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त हो, जिससे उनके हृदय में विश्वास उत्पन्न हो और उनका फिरौन जैसा अहंकार टूट जाए, जिससे वे ईश्वर की पुस्तक को सुनने में सक्षम हो जाएं, तो वे मेरी भावी अवस्था में मेरे समान हो जाएंगे।

अचानक ब्रह्मांड दिव्य प्रकाश से भर जाएगा, जो इस बात का अर्थ प्रदर्शित करेगा: ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है (24:35)। विश्वासी इस विश्वास या सही मार्गदर्शन के प्रकाश में देखते हैं कि अतीत कोई विशाल कब्र नहीं है; बल्कि, प्रत्येक पिछली शताब्दी एक पैगंबर या संतों के अधिकार का क्षेत्र है, जहां शुद्ध आत्माएं, अपने जीवन के कर्तव्यों (पूजा) को पूरा करने के बाद: "ईश्वर सर्व-महान है," भविष्य की ओर उच्च निवासों के लिए उड़ान भरती हैं।

अपनी बाईं ओर देखते हुए और विश्वास के प्रकाश के माध्यम से, वे मध्यवर्ती दुनिया (कब्र की दुनिया) और अगले जीवन के पर्वत जैसे क्रांतियों के पीछे, स्वर्ग के बगीचों में आनंद के महलों में दयालु द्वारा स्थापित एक भोज स्थल को पहचानते हैं। वे समझते हैं कि तूफान, भूकंप, महामारी और इसी तरह की घटनाएँ एक विशिष्ट कार्य करती हैं, ठीक उसी तरह जैसे वसंत की बारिश और हवाएँ, अपनी स्पष्ट हिंसा के बावजूद, कई सुखद उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। वे मृत्यु को भी शाश्वत जीवन की शुरुआत के रूप में देखते हैं, और कब्र को शाश्वत सुख के प्रवेश द्वार के रूप में। आप तुलना के प्रकाश में अन्य वास्तविकताओं का अनुमान लगा सकते हैं।

तीसरा बिंदु: विश्वास प्रकाश और शक्ति दोनों है। जो लोग सच्चा विश्वास प्राप्त करते हैं, वे ब्रह्मांड को चुनौती दे सकते हैं और अपने विश्वास की ताकत के अनुपात में घटनाओं के दबाव से मुक्त हो सकते हैं। ईश्वर पर भरोसा करते हुए, वे जीवन के जहाज में घटनाओं की पहाड़ी लहरों के बीच सुरक्षित यात्रा करते हैं। अपने बोझ को परम शक्तिशाली के हाथ में सौंपकर, वे अपने अंतिम दिन तक दुनिया में आराम से यात्रा करते हैं। कब्र एक विश्राम स्थल होगी, जिसके बाद वे शाश्वत आनंद प्राप्त करने के लिए स्वर्ग की ओर उड़ेंगे। लेकिन, अगर वे ईश्वर पर भरोसा नहीं करते हैं, तो उनका सांसारिक जीवन उन्हें सबसे निचले स्तर पर धकेल देगा। इसका मतलब है, विश्वास के लिए ईश्वरीय एकता की पुष्टि की आवश्यकता है; ईश्वरीय एकता की पुष्टि के लिए ईश्वर के प्रति समर्पण की आवश्यकता है; ईश्वर के प्रति समर्पण की आवश्यकता है; और ईश्वर पर भरोसा करने से दोनों दुनिया में खुशी मिलती है। लेकिन ईश्वर पर भरोसा करने को गलत न समझें; इसका मतलब कारण और प्रभाव की अनदेखी करना और लक्ष्य प्राप्त करने के साधनों की पूरी उपेक्षा करना नहीं है। बल्कि, इसका मतलब यह है कि हमें कारणों या साधनों को शक्ति के हाथ के सामने एक परदे के रूप में सोचना चाहिए। हम उन्हें ईश्वरीय इच्छा का पालन करने की कोशिश करके देखते हैं, जो क्रिया में एक तरह की प्रार्थना है। हालाँकि, ऐसी इच्छा और खोज किसी विशेष प्रभाव को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। हमें यह समझना चाहिए कि, सही विश्वास के अनुसार, परिणाम की उम्मीद केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर से की जानी चाहिए। चूँकि वे ही प्रभावों के एकमात्र निर्माता हैं, इसलिए हमें हमेशा उनके प्रति आभारी होना चाहिए।

जो परमेश्वर पर भरोसा करता है और जो नहीं करता, वे दो व्यक्तियों के समान हैं
निम्नलिखित दृष्टांत में:

एक बार दो लोग भारी बोझ लेकर एक शाही जहाज़ पर चढ़े। एक ने जहाज़ पर चढ़ते ही अपना बोझ डेक पर रख दिया और उसे सुरक्षित रखने के लिए उस पर बैठ गया। दूसरे ने, जब उसे अपना बोझ नीचे रखने के लिए कहा गया, तब भी उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया और कहा: "मैं इसे नीचे नहीं रखूँगा, क्योंकि यह खो सकता है। इसके अलावा, मैं इसे उठाने के लिए पर्याप्त मज़बूत हूँ।" उसे बताया गया:

> यह विश्वसनीय शाही जहाज, जो हमें ले जाता है, अधिक मजबूत है और इसे बेहतर तरीके से संभाल सकता है। आप शायद थक जाएँगे, चक्कर खाएँगे, और अपने बोझ के साथ समुद्र में गिर जाएँगे। आपकी ताकत खत्म हो जाएगी, और फिर आप इस बोझ को कैसे उठाएँगे जो हर पल भारी होता जा रहा है? अगर कप्तान आपको इस हालत में देखता है, तो वह आपको पागल कह सकता है और आपको जहाज से निकाल सकता है। या शायद वह सोचेगा कि आप उन पर भरोसा नहीं करते और उनका मज़ाक उड़ाते हैं, और वह आपको कैद करने का आदेश दे सकता है। इसके अलावा, आपको चिन्हित किया जाएगा और मज़ाक का पात्र बनाया जाएगा। आपका घमंड आपकी कमज़ोरी को प्रकट करता है, आपका अहंकार आपकी नपुंसकता को प्रकट करता है, और आपका पूर्व-तनाव आपके अपमान को प्रकट करता है। और इसलिए आप हंसी का पात्र बन गए हैं - देखें कि हर कोई आप पर कैसे हंस रहा है।

इन शब्दों ने उसे अपने साथी के उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। उसने उससे कहा: "ईश्वर तुमसे प्रसन्न हो। मुझे राहत मिली है और अब मैं कारावास या हंसी का पात्र नहीं बनूंगा।" इसलिए ईश्वर पर भरोसा रखें और अपने होश में आएं, जैसा कि दृष्टांत में वर्णित व्यक्ति ने किया था। ईश्वर पर भरोसा रखें और सृष्टि से भीख मांगने और प्रत्येक घटना से डरकर कांपने से मुक्त हो जाएं। ऐसा करने से आप आत्म-दंभ, हास्यास्पद होने, इस जीवन के दबावों और परलोक की पीड़ाओं से मुक्त हो जाएंगे।

चौथा बिंदु: विश्वास हमें सच्ची मानवता प्राप्त करने, अन्य सभी प्राणियों से ऊपर स्थान प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। इस प्रकार, विश्वास और प्रार्थना हमारे सबसे मौलिक और महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं। इसके विपरीत, अविश्वास हमें एक क्रूर लेकिन बहुत ही नपुंसक जानवर की स्थिति में पहुंचा देता है।

इस सत्य का निर्णायक प्रमाण यह है कि मनुष्य और जानवर किस तरह अस्तित्व में आते हैं। जन्म के लगभग उसी क्षण से, ऐसा लगता है कि जानवर को कहीं और प्रशिक्षित किया गया है और उसकी क्षमताओं को पूर्ण किया गया है। कुछ घंटों या दिनों या महीनों के भीतर, वह अपने जीवन को अपने विशेष नियमों और शर्तों के अनुसार जी सकता है। उदाहरण के लिए, एक गौरैया या मधुमक्खी बीस दिनों के भीतर अपने पर्यावरण में एकीकृत होने का कौशल और क्षमता प्राप्त कर लेती है या उससे प्रेरित होती है, जबकि एक व्यक्ति को ऐसा करने में बीस साल लगेंगे। इसका मतलब यह है कि एक जानवर के मूल दायित्व और आवश्यक भूमिका में सीखने के माध्यम से पूर्णता की तलाश, वैज्ञानिक ज्ञान के माध्यम से प्रगति, या प्रार्थना और मदद के लिए याचिका करना शामिल नहीं है।

अपनी नपुंसकता का प्रदर्शन करके। बल्कि, उनका एकमात्र उद्देश्य अपनी जन्मजात क्षमताओं की सीमाओं के भीतर कार्य करना है, जो उनके लिए निर्दिष्ट पूजा पद्धति है।

हालाँकि, लोग जीवन और अपने पर्यावरण के बारे में कुछ भी नहीं जानते हुए पैदा होते हैं और इसलिए उन्हें सब कुछ सीखना चाहिए। चूँकि हम बीस साल में भी ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए हमें मरते दम तक सीखना जारी रखना चाहिए। हमें इतनी कमज़ोरी और अक्षमता के साथ यहाँ भेजा गया है कि हमें चलना सीखने में दो साल लग सकते हैं। पंद्रह साल के बाद ही हम अच्छे और बुरे में अंतर कर पाते हैं। समाज में रहकर ही हम इतने समझदार बन सकते हैं कि हम यह चुन सकें कि क्या फायदेमंद है और क्या हानिकारक।

इस प्रकार हमारे अस्तित्व का अनिवार्य और आंतरिक कर्तव्य है कि हम शिक्षा के माध्यम से पूर्णता की खोज करें और प्रार्थना और विनती के माध्यम से ईश्वर की पूजा और सेवा की घोषणा करें। यह ऐसे आवश्यक प्रश्नों के उत्तर खोजना है जैसे: "किसकी करुणा से मेरा जीवन इतनी बुद्धिमानी से संचालित हो रहा है? किसकी उदारता से मुझे इतना स्नेहपूर्वक प्रशिक्षित किया जा रहा है? किसके अनुग्रह और परोपकार से मुझे इतनी तत्परता से पोषित किया जा रहा है?" यह हमारी आवश्यकताओं के प्रति विनम्र जागरूकता में आवश्यकताओं के प्रदाता से प्रार्थना और निवेदन करना है, जिसका एक हजारवां हिस्सा भी हम अपने आप पूरा नहीं कर सकते। संक्षेप में, यह हमारी जन्मजात नपुंसकता और गरीबी की चेतना के पंखों पर ईश्वर के पूजनीय सेवक होने के उच्चतम पद पर उड़ना है।

और इसलिए यहाँ हमारा उद्देश्य ज्ञान और प्रार्थना के माध्यम से पूर्णता की तलाश करना है। हर चीज़, अपने स्वभाव से, अनिवार्य रूप से ज्ञान पर निर्भर है।
और सभी सच्चे ज्ञान का आधार, स्रोत, प्रकाश और आत्मा ईश्वर का ज्ञान है, जिसका आधार विश्वास है। विश्वास के बाद, प्रार्थना हमारा अनिवार्य कर्तव्य और पूजा का आधार है, क्योंकि हमारी असीम नपुंसकता के बावजूद, हम अंतहीन दुर्भाग्य और असंख्य शत्रुओं के संपर्क में हैं, और हमारी असीम गरीबी के बावजूद, हम असीमित ज़रूरतों और मांगों से पीड़ित हैं।

बच्चे अपनी ज़रूरत किसी ऐसी चीज़ के लिए व्यक्त करते हैं जिसे वे शब्दों या आंसुओं से प्राप्त नहीं कर सकते। दोनों ही एक तरह की दलील या प्रार्थना हैं, शब्दों या कर्मों में, कमज़ोरी की जीभ से। आख़िरकार उन्हें वह मिल ही जाता है जो वे चाहते हैं। इसी तरह, हम जीवों की दुनिया में एक प्यारे बच्चे की तरह हैं, जिसे या तो अपनी कमज़ोरी और नपुंसकता के ज़रिए सर्व-दयालु और दयालु के दरबार में रोना चाहिए, या अपनी ग़रीबी और ज़रूरत के ज़रिए प्रार्थना करनी चाहिए, ताकि हमारी ज़रूरत पूरी हो सके। बदले में, हमें इस प्रावधान के लिए कृतज्ञता और धन्यवाद का अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। अन्यथा, उन लोगों की कृतघ्नता जो इतनी बुद्धि और हर चीज़ पर इतनी शक्ति होने का दावा करते हैं कि

वे अपनी ज़रूरतें खुद ही पूरी कर सकते हैं, लेकिन आखिरकार वे इस हद तक पहुँच जाएँगे कि वे शरारती, आलसी बच्चों की तरह दिखने लगेंगे जो परेशान करने वाली मक्खियों के बारे में शिकायत करते हैं। ऐसी कृतघ्नता हमारे मूल स्वभाव के विरुद्ध है और हमें कड़ी सज़ा का पात्र बनाती है।

पाँचवाँ बिंदु: ईमान को सिद्धि और पूर्णता के लिए प्रार्थना की आवश्यकता होती है, और हमारे सार को इसकी आवश्यकता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर कहते हैं: कहो (हे मुहम्मद): "मेरा रब तुम्हारी प्रार्थना के अलावा तुम्हारी परवाह नहीं करता" (25:77), और: मुझसे प्रार्थना करो और मैं तुम्हारी प्रार्थना सुनूँगा (40:60)।

प्रश्न: यदि आप कहते हैं कि आप कई बार प्रार्थना करते हैं लेकिन उपरोक्त श्लोक में दिए गए आश्वासन के बावजूद आपकी प्रार्थनाएं अनुत्तरित रहती हैं, तो इसका उत्तर इस प्रकार होगा:

उत्तर: प्रार्थना का उत्तर मिलने का अर्थ यह नहीं है कि उसे स्वीकार कर लिया गया है। हर प्रार्थना का उत्तर होता है। हालाँकि, प्रार्थना को स्वीकार करना और जो माँगा गया है उसे देना सर्वशक्तिमान की बुद्धि पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, एक बीमार बच्चा डॉक्टर से एक खास दवा माँगता है।

डॉक्टर या तो वही देगा जो माँगा गया है या उससे बेहतर, या वह कुछ भी नहीं देगा। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि दवा बच्चे पर कैसा असर करेगी। इसी तरह सर्वशक्तिमान, जो सर्व-न्यायी और सर्वव्यापी है, अपने सेवकों की प्रार्थना का उत्तर देता है और उनके अकेलेपन को अपनी संगति के आनंद में बदल देता है। लेकिन उसका उत्तर व्यक्ति की कल्पनाओं पर निर्भर नहीं करता; बल्कि, अपनी बुद्धि के अनुसार, वह जो माँगा गया है, जो बेहतर है, या कुछ भी नहीं देता है।

इसके अलावा, प्रार्थना एक तरह की पूजा है और पूजा का फल मुख्य रूप से परलोक में मिलता है। सांसारिक ज़रूरतें और उद्देश्य प्रार्थना के लिए केवल कारण या अवसर हैं। उदाहरण के लिए, बारिश के लिए प्रार्थना करना बारिश की कमी के कारण की जाने वाली पूजा है। अगर प्रार्थना का एकमात्र उद्देश्य बारिश है, तो प्रार्थना अस्वीकार्य है, क्योंकि यह ईमानदारी से नहीं की जाती है या इसका उद्देश्य ईश्वर को प्रसन्न करना और उनकी स्वीकृति प्राप्त करना नहीं है।

सूर्यास्त शाम की प्रार्थना का समय निर्धारित करता है, जबकि सूर्य और चंद्र ग्रहण दो विशेष प्रकार की पूजा के अवसर होते हैं। चूँकि ऐसे ग्रहण - दिन और रात के दो चमकदार चिह्नों का पर्दा पड़ना - दिव्य महिमा को प्रकट करने के दो साधन हैं, सर्वशक्तिमान अपने सेवकों को इन अवसरों के लिए विशेष रूप से पूजा का एक रूप - ग्रहण की प्रार्थना - करने के लिए कहते हैं। इस प्रार्थना का ग्रहण समाप्त करने से कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि यह खगोलीय गणनाओं के माध्यम से पहले से ही ज्ञात है। इसी तरह, सूखा और अन्य आपदाएँ कुछ विशेष प्रकार की प्रार्थना के अवसर हैं। ऐसे समय में, हम अपनी नपुंसकता को सबसे अच्छी तरह से महसूस करते हैं और इसलिए प्रार्थना और विनती के माध्यम से परम शक्तिशाली की उच्च उपस्थिति में शरण लेने की आवश्यकता महसूस करते हैं।

अगर बहुत प्रार्थना करने के बाद भी कोई विपत्ति दूर नहीं होती तो हमें यह नहीं कहना चाहिए कि प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई। बल्कि हमें यह कहना चाहिए कि प्रार्थना का समय अभी समाप्त नहीं हुआ है। अगर ईश्वर अपनी असीम कृपा और उदारता के कारण विपत्ति दूर कर देता है तो यह प्रकाश पर प्रकाश, लाभ पर लाभ है और प्रार्थना के लिए विशेष अवसर का अंत है।

प्रार्थना करना आराधना के माध्यम से ईश्वर की सेवा का रहस्य है। आराधना केवल ईश्वर को प्रसन्न करने और उसके लिए की जाती है। हमें अपनी गरीबी और कमज़ोरी की पुष्टि करनी चाहिए और उसे प्रदर्शित करना चाहिए, तथा प्रार्थना के माध्यम से उसके पास शरण लेनी चाहिए। हमें उसके आधिपत्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, बल्कि ईश्वर को उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करने देना चाहिए। हमें उसकी बुद्धि पर भरोसा करना चाहिए और उसकी दया पर आरोप नहीं लगाना चाहिए।

प्रत्येक प्राणी ईश्वर को अपनी-अपनी स्तुति और पूजा अर्पित करता है। ब्रह्माण्ड से जो ईश्वर के दरबार तक पहुँचता है, वह है प्रार्थना।

- एक तरह की प्रार्थना वह होती है जो क्षमता की जीभ के माध्यम से की जाती है। पौधे अपनी क्षमता की जीभ के माध्यम से प्रार्थना करते हैं ताकि वे पूर्ण रूप प्राप्त कर सकें और कुछ दिव्य नामों को प्रकट कर सकें।

- एक अन्य प्रकार की प्रार्थना प्राकृतिक आवश्यकताओं की भाषा में व्यक्त की जाती है। सभी जीवित प्राणी परम उदार परमेश्वर से अपनी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रार्थना करते हैं, क्योंकि वे ऐसा स्वयं नहीं कर सकते।

- एक और तरह की प्रार्थना है जो पूरी तरह से असहाय होने की भाषा में की जाती है। संकट में पड़ा हुआ प्राणी सच्ची प्रार्थना के साथ अपने अदृश्य रक्षक की शरण लेता है और अपने दयालु प्रभु की ओर मुड़ता है। ये तीनों तरह की प्रार्थनाएँ हमेशा स्वीकार करने योग्य होती हैं, जब तक कि किसी तरह से बाधा न आए।

- चौथे प्रकार की प्रार्थना मानवता द्वारा की जाने वाली प्रार्थना है। यह प्रकार दो श्रेणियों में आता है: सक्रिय और स्वभाव से, और मौखिक और हृदय से। उदाहरण के लिए, कारणों के अनुसार कार्य करना या पूर्वापेक्षाओं को पूरा करना एक सक्रिय प्रार्थना है। हम कारणों का अनुपालन करके या पूर्वापेक्षाओं को पूरा करके ईश्वर की स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, क्योंकि केवल कारण या पूर्वापेक्षाओं की पूर्ति से परिणाम नहीं मिल सकता है - केवल ईश्वर ही ऐसा कर सकता है। उदाहरण के लिए, मिट्टी जोतना एक सक्रिय प्रार्थना है, क्योंकि इसका अर्थ है ईश्वर की दया के खजाने के द्वार पर दस्तक देना। ऐसी प्रार्थना आमतौर पर स्वीकार्य होती है, क्योंकि यह सर्व-उदार ईश्वरीय नाम के लिए एक आवेदन है।

मानवता की दूसरी तरह की प्रार्थना, जो जीभ और दिल से की जाती है, वह साधारण प्रार्थना है। इसका मतलब है कि हम दिल से भगवान से कुछ मांगते हैं जो हमें नहीं मिल सकता। इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलू और बेहतरीन पहलू

और सबसे मधुर फल यह है कि हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारी सुनता है, हमारे हृदय की बात जानता है, उसकी शक्ति सर्वत्र फैली हुई है, वह हमारी हर इच्छा को पूरा कर सकता है, और वह हमारी दुर्बलता और अपर्याप्तता पर दया करके हमारी सहायता के लिए आता है।

और इसलिए, हे असहाय और गरीब व्यक्ति। प्रार्थना को कभी मत छोड़ो, क्योंकि यह दया के खजाने की कुंजी है और अनंत शक्ति तक पहुँचने का साधन है। इसे थामे रहो। मानवता के सर्वोच्च पद पर चढ़ो और सृष्टि के सबसे पसंदीदा और श्रेष्ठ सदस्य के रूप में, अपनी प्रार्थना में पूरे ब्रह्मांड की प्रार्थना को शामिल करो। सभी प्राणियों की ओर से कहो: केवल तुमसे ही हम सहायता माँगते हैं (1:5), और सृष्टि के लिए एक सुंदर आदर्श बनो।

दूसरा अध्याय

(मानव सुख और दुख पर पाँच टिप्पणियाँ)

[मनुष्य को सृष्टि के आदर्श प्रतिरूप के रूप में सर्वश्रेष्ठ कद का बनाया गया है, तथा उसे व्यापक क्षमता प्रदान की गई है। उन्हें शक्ति के चमत्कार, सृष्टि के सर्वोच्च शिखर तथा कला के चमत्कार के रूप में दुनिया में भेजा गया है। उनके लिए, यह दुनिया परीक्षा का क्षेत्र है, जहाँ उनके सामने दो रास्ते खुले हैं, एक अनंत उत्थान की ओर ले जाता है, दूसरा अनंत पतन की ओर। इसलिए, इनमें से किसी भी मार्ग का अनुसरण करके, वे या तो सर्वोच्च से सर्वोच्च तक पहुँचेंगे या निम्न से निम्नतम तक उतरेंगे। मैं पाँच टिप्पणियों में मानवता के उत्थान और पतन के रहस्य को स्पष्ट करूँगा।]

पहली टिप्पणी: हमारा अधिकांश प्रजातियों के साथ कुछ संबंध है और हमें उनकी आवश्यकता है। हमारी आवश्यकताएँ ब्रह्मांड के सभी भागों में फैली हुई हैं, और हमारी इच्छाएँ अनंत काल तक फैली हुई हैं। हम एक फूल के साथ-साथ पूरे वसंत, एक बगीचे के साथ-साथ एक शाश्वत स्वर्ग की भी इच्छा करते हैं। हम अपने मित्र के साथ-साथ सर्व-सुंदर, दयालु महामहिम को देखने के लिए तरसते हैं। जिस तरह हमें अपने प्रिय मित्र से मिलने के लिए उसके दरवाजे पर दस्तक देनी होती है, उसी तरह अपने उन नब्बे-नौ प्रतिशत मित्रों से फिर से मिलने के लिए, जो मध्यवर्ती दुनिया में चले गए हैं, और शाश्वत अलगाव से बचने के लिए, हमें भी उस परम शक्तिशाली के दरबार में शरण लेने की आवश्यकता है, जो इस विशाल दुनिया के दरवाजे को बंद कर देगा और परलोक, आश्चर्यों की दुनिया का दरवाजा खोल देगा, और इस दुनिया को अगले एक से बदल देगा।

इसे देखते हुए, हमारी पूजा का सच्चा उद्देश्य केवल एक सर्वशक्तिमान, महिमावान, सौंदर्य और अनुग्रह से भरा, सर्व-ज्ञानी ही हो सकता है।
पूर्णता, जिसके हाथ में सभी चीजों की लगाम है, जिसके अधिकार में

वह हर अस्तित्व का प्रावधान है, जो सब कुछ देखता है और सर्वव्यापी है, अंतरिक्ष से असीम है, और किसी भी बाधा, दोष, दोष और कमी से मुक्त है। क्योंकि केवल एक ही जिसके पास अनंत शक्ति और सर्वव्यापी ज्ञान है, वह हमारी असीमित आवश्यकता को पूरा कर सकता है और इसलिए केवल वही पूजा के योग्य है।

इसलिए, हे मानवता! यदि तुम केवल उसकी पूजा करोगे, तो तुम अन्य सभी प्राणियों से ऊपर उठ जाओगे। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो तुम नपुंसक सृष्टि के अपमानित दास बन जाओगे। यदि तुम प्रार्थना और ईश्वर पर भरोसा करने के बजाय अपने आत्म-सम्मान और शक्ति पर भरोसा करते हो, और अहंकारी श्रेष्ठता का दावा करते हो, तो तुम सकारात्मक कार्यों और रचनात्मक आविष्कार के संबंध में मधुमक्खी या चींटी से भी कमतर और मक्खी या मकड़ी से भी कमज़ोर हो जाओगे। लेकिन तुम्हारी बुराई और विनाश एक पहाड़ से भी भारी होगा और एक महामारी से भी अधिक हानिकारक होगा।

तो, हे मानवता! तुम्हारे अस्तित्व के दो पहलू हैं। एक सकारात्मक और सक्रिय है, और इसका संबंध रचनात्मक आविष्कार, अस्तित्व और अच्छाई से है। दूसरा नकारात्मक और निष्क्रिय है, और विनाश, अस्तित्वहीनता और बुराई से संबंधित है। जहाँ तक तुम्हारे अस्तित्व के पहले पहलू की बात है, तुम मधुमक्खी या गौरैया से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते, तुम मक्खी या मकड़ी से कमज़ोर हो, और वह हासिल नहीं कर सकते जो वे कर सकते हैं। हालाँकि, तुम्हारे अस्तित्व के दूसरे पहलू की बात करें तो तुम पहाड़ों, धरती और आसमान से आगे निकल सकते हो, क्योंकि तुम एक ऐसा बोझ उठा सकते हो जो वे नहीं उठा सकते। इस प्रकार तुम्हारे कार्यों का उनके कार्यों की तुलना में व्यापक प्रभाव पड़ता है।

जब आप कुछ अच्छा करते हैं या कुछ बनाते हैं, तो यह केवल आपके हाथ और ताकत तक ही पहुँचता है। लेकिन आपके बुरे और विनाशकारी कार्य आक्रामक और विस्तारशील होते हैं।

उदाहरण के लिए, अविश्वास एक बुराई है, विनाश का कार्य है, पुष्टि का अभाव है। यह एक पाप की तरह लग सकता है, लेकिन यह सृष्टि का अपमान, सभी दिव्य नामों का अपमान और पूरी मानवता का पतन दर्शाता है। क्योंकि सृष्टि का एक उत्कृष्ट पद और महत्वपूर्ण कार्य है, क्योंकि इसका प्रत्येक भाग भगवान का संदेश है, उनकी महिमा का दर्पण है, और उनकी दिव्यता का कर्तव्यनिष्ठ सेवक है। अविश्वास उन्हें इन कार्यों के आधार पर दिए गए इस पद से वंचित करता है और उन्हें संयोग की वस्तुएँ, और महत्वहीन, बेकार और बेकार वस्तुएँ बना देता है जो क्षय और विघटन के लिए अभिशप्त हैं।

अविश्वास ईश्वरीय नामों का भी अपमान है, जिनके सुंदर अंकन और अभिव्यक्तियाँ ब्रह्मांड में सभी सृजित रूपों के दर्पणों में दिखाई देती हैं। इसके अलावा, यह मानवता को सबसे नीच जानवर से भी अधिक दयनीय, कमजोर, असहाय और निराश्रित बना देता है।

यह हमें एक साधारण, नाशवान साइन-बोर्ड में बदल देता है, जिसका कोई अर्थ नहीं है, जो भ्रमित है और तेजी से क्षय हो रहा है। और यह तब है जब मानवता, वास्तव में, एक काव्यात्मक है

बुद्धि का कार्य जो सभी दिव्य नामों को प्रकट करता है; शक्ति का एक महान चमत्कार जो बीज की तरह सृष्टि के वृक्ष को धारण करता है; और पृथ्वी का ईश्वर द्वारा नियुक्त शासक, जो स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है और हमारे द्वारा स्वीकार किए गए सर्वोच्च विश्वास के कारण पहाड़ों, पृथ्वी और स्वर्ग से भी ऊंचा है।

संक्षेप में: बुराई और विनाश के संबंध में, शारीरिक, बुराई का आदेश देने वाली आत्मा अनगिनत अपराध कर सकती है और असीमित विनाश कर सकती है, जबकि अच्छा करने की उसकी क्षमता बहुत सीमित है। यह एक दिन में एक घर को नष्ट कर सकता है लेकिन सौ दिनों में इसे फिर से नहीं बना सकता। लेकिन अगर यह आत्म-निर्भरता और घमंड को त्याग देता है और अच्छे और रचनात्मक काम करने के लिए ईश्वरीय सहायता पर निर्भर करता है, अगर यह बुराई और विनाश को त्याग देता है और ईश्वरीय क्षमा मांगता है और इस तरह ईश्वर का एक आदर्श सेवक बन जाता है, तो यह इस बात का संदर्भ बन जाता है: ईश्वर उनके बुरे कामों को अच्छे कामों में बदल देगा (25:70)। यानी, बुराई के लिए हमारी अनंत क्षमता अच्छाई के लिए अनंत क्षमता में बदल जाती है। हम "सृजन के आदर्श नमूने" के मूल्य को प्राप्त करते हैं और "सबसे ऊंचे" तक बढ़ते हैं।

तो ऐ ग़ाफ़िल, अल्लाह की रहमत और रहमत पर ग़ौर करो। हक़ीकत में एक गुनाह को हज़ार गुनाहों के तौर पर दर्ज करना और एक नेकी को सिर्फ़ एक गुनाह के तौर पर दर्ज करना ही मुकम्मल इंसाफ़ है। लेकिन अल्लाह इसके उलट करता है: वह एक गुनाह को एक गुनाह के तौर पर दर्ज करता है और नेकी के काम को दस, सत्तर, सात सौ या कभी-कभी सात हज़ार के तौर पर दर्ज करता है। इससे हम समझ सकते हैं कि जहन्नुम में जाना इंसान के कर्मों और शुद्ध इंसाफ़ का नतीजा है, जबकि जन्नत में जाना उसकी मुकम्मल रहमत का नतीजा है।

दूसरी टिप्पणी: मनुष्य के दो चेहरे होते हैं। पहला चेहरा हमारी आत्म-प्रकृति के कारण इस सांसारिक जीवन की ओर देखता है। यहाँ हमारी पूंजी में एक बाल जितनी कमज़ोर स्वतंत्र इच्छा, सकारात्मक, रचनात्मक कार्यों के संबंध में सबसे सीमित प्रतिभा तक सीमित शक्ति, एक प्रकाश की चमक जितनी छोटी ज़िंदगी और एक भौतिक अस्तित्व शामिल है जो तेज़ी से विघटित होने के लिए बाध्य है। इस अवस्था में, हम पूरे ब्रह्मांड में फैली असंख्य अन्य प्रजातियों में से एक प्रजाति के कमज़ोर सदस्य से ज़्यादा कुछ नहीं हैं।

दूसरा चेहरा अनन्त जीवन की ओर देखता है क्योंकि हमारा स्वभाव परमेश्वर का है

सेवक जो उसकी पूजा करने के लिए जिम्मेदार हैं और जिन्हें उसकी पूजा करने की आवश्यकता है। ईश्वर के सेवकों के रूप में असहायता और अपर्याप्तता की हमारी धारणा हमें अत्यंत महत्वपूर्ण और समावेशी प्राणी बनाती है। क्योंकि सर्वज्ञ सृजक ने हमारे स्वभाव में एक असीम नपुंसकता और दरिद्रता स्थापित की है ताकि हममें से प्रत्येक एक व्यापक दर्पण बन सके जो अनंत शक्ति वाले सर्व-दयालु, अनंत समृद्धि वाले सर्व-उदार की असीम अभिव्यक्तियों को दर्शाता हो।

हम बीज की तरह हैं। एक बीज को ईश्वरीय शक्ति द्वारा महान क्षमता और ईश्वरीय नियति द्वारा एक सूक्ष्म कार्यक्रम प्रदान किया जाता है, ताकि वह भूमिगत अंकुरित हो सके, उस संकीर्ण दुनिया से निकलकर हवा की विशाल दुनिया में प्रवेश कर सके। अपने निर्माता से पेड़ बनने की अपनी क्षमता के बारे में पूछते हुए, वह अपने लिए एक विशेष पूर्णता प्राप्त कर सकता है। यदि, अपने घातक स्वभाव के कारण, बीज हानिकारक पदार्थों को आकर्षित करने के लिए अपनी क्षमता का दुरुपयोग करता है, तो वह जल्द ही अपने संकीर्ण स्थान में सड़ जाएगा। हालाँकि, यदि वह अपनी क्षमता का सही तरीके से उपयोग करता है, और अनाज और फल-पत्थर को अलग करने वाले (6:95) के सृजनात्मक आदेशों का अनुपालन करता है, तो वह अपने संकीर्ण स्थान से निकलकर एक विस्मयकारी, फलदार वृक्ष बन जाएगा। इसके अलावा, इसका छोटा और विशिष्ट स्वभाव एक महान और सार्वभौमिक सत्य का प्रतिनिधित्व करेगा।

ठीक उसी तरह, हमारा सार शक्ति द्वारा महान क्षमता से सुसज्जित है और नियति द्वारा महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के साथ अंकित है। यदि हम सांसारिक जीवन की मिट्टी के नीचे इस संकीर्ण दुनिया में अपनी क्षमता और क्षमताओं का उपयोग अपनी शारीरिक, दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा की कल्पनाओं को संतुष्ट करने के लिए करते हैं, तो हम एक सड़े हुए बीज की तरह, कठिनाइयों और परेशानियों के बीच एक छोटे से जीवन में एक तुच्छ सुख के लिए सड़ जाएंगे और सड़ जाएंगे। इस प्रकार हम अपनी दुर्भाग्यपूर्ण आत्माओं पर एक भारी आध्यात्मिक बोझ लेकर इस दुनिया से चले जाएंगे।

लेकिन अगर हम अपनी क्षमता के बीज को “उपासना की धरती” के नीचे “इस्लाम के पानी” और कुरान के आदेशों के अनुसार “विश्वास की रोशनी” के साथ अंकुरित करते हैं, और अपनी क्षमताओं का सही उद्देश्यों के लिए उपयोग करते हैं, तो हम अनंत, राजसी वृक्ष बन जाएंगे जिनकी शाखाएं मध्यवर्ती दुनिया और प्रतिनिधित्व या अमूर्त रूपों की दुनिया तक फैली होंगी, और जो अनगिनत उपहारों से नवाजे जाएंगे और अगली दुनिया और स्वर्ग में पूर्णता के असंख्य फल देंगे। हम, वास्तव में, सृष्टि के वृक्ष के धन्य, चमकदार फल बन जाएंगे।

सच्ची प्रगति तभी संभव है जब हम अपनी क्षमताओं (जैसे, बुद्धि, हृदय, आत्मा और यहाँ तक कि कल्पना) को शाश्वत जीवन की ओर मोड़ें और उन्हें उसी तरह की उपासना में व्यस्त रखें। जिसे गुमराह लोग प्रगति मानते हैं-

इस संसार के जीवन में डूबे रहना और अपनी सारी शक्तियों को सांसारिक सुखों का स्वाद लेने के लिए शारीरिक, दुष्टतापूर्ण स्वार्थ के अधीन कर देना - पतन और पतन के अलावा कुछ नहीं है। मैंने एक बार एक दर्शन में इस सत्य को देखा था, जो इस प्रकार है:

मैं बड़े महलों से भरे एक विशाल शहर में पहुँच गया। उनमें से कुछ के बाहर, मैंने देखा कि मनोरंजन और मनोरंजन के लिए तमाशे और शो चल रहे थे। जब मैं उनमें से एक के पास पहुँचा, तो मैंने देखा कि उसका मालिक दरवाजे पर एक कुत्ते के साथ खेल रहा था। महिलाएँ युवा अजनबियों से बातें कर रही थीं, और युवा लड़कियाँ

बच्चों के खेल का आयोजन। दरबान ऐसे व्यवहार कर रहा था जैसे वह उनका मालिक हो। मुझे एहसास हुआ कि महल खाली था, सभी महत्वपूर्ण कार्य अधूरे पड़े थे, क्योंकि इसके भ्रष्ट निवासी बेकार के कामों में लगे हुए थे।

फिर मैं एक और महल में पहुँचा। दरवाज़े पर एक वफ़ादार कुत्ता लेटा हुआ था और उसके बगल में एक दरबान बैठा था, जिसका चेहरा सख्त, गंभीर और शांत था। महल इतना शांत लग रहा था कि मैं आश्चर्य और विस्मय में अंदर गया।

अंदर बहुत चहल-पहल थी: एक के ऊपर एक, निवासी अलग-अलग, महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त थे। पहली मंजिल पर लोग महल का प्रबंधन कर रहे थे। दूसरी मंजिल पर, लड़कियाँ और लड़के पढ़ रहे थे। तीसरी मंजिल पर महिलाएँ सुंदर कलाकृतियाँ और नाजुक कढ़ाई बना रही थीं। सबसे ऊपर की मंजिल पर, मालिक अपने घर की भलाई को सुरक्षित रखने और अपनी प्रगति और पूर्णता के लिए महान कर्तव्यों का पालन करने के लिए राजा के साथ लगातार संवाद में था। चूँकि उन्होंने मुझे नहीं देखा था, इसलिए मैं बिना किसी बाधा के घूम रहा था।

फिर मैं बाहर आया और चारों ओर देखा। मैंने देखा कि शहर में ऐसे ही महल भरे पड़े हैं। मैंने पूछा और मुझे बताया गया कि पहले वाले महल सबसे बड़े नास्तिकों और गुमराह लोगों के हैं, जबकि दूसरे वाले महल ईमानदार मुस्लिम लोगों के हैं। एक कोने में मुझे एक महल दिखा जिस पर मेरा नाम लिखा था: "सैद।" जब मैंने उसे ध्यान से देखा तो मुझे लगा जैसे मैंने उस पर अपनी छवि देखी है। घबराहट में रोते हुए, मैं अपने होश में आया और जाग गया।

शहर हमारा सामाजिक जीवन और मानव सभ्यता का भूभाग है। प्रत्येक महल एक इंसान है, और उसके निवासी मानवीय इंद्रियाँ और क्षमताएँ हैं (जैसे, आँखें, कान, बुद्धि, हृदय और आत्मा, और क्रोध और वासना की शक्तियाँ)।

प्रत्येक इंद्रिय और क्षमता का पूजा का एक विशेष कर्तव्य है, साथ ही विशेष सुख और दुख भी। शारीरिक आत्मा और कल्पनाएँ, साथ ही क्रोध और वासना की शक्तियाँ, कुत्ते और दरबान के अनुरूप हैं। इस प्रकार, उत्कृष्ट इंद्रियों और क्षमताओं को शारीरिक इच्छाओं और कल्पनाओं के अधीन करना ताकि वे अपने आवश्यक कर्तव्यों को भूल जाएँ, पतन और भ्रष्टाचार है। यह निश्चित रूप से प्रगति नहीं है। आप अन्य विवरणों की व्याख्या स्वयं कर सकते हैं।

तीसरी टिप्पणी: हमारे रचनात्मक कार्यों और शारीरिक प्रयासों के संबंध में, हम कमजोर जानवरों और असहाय प्राणियों की तरह हैं। हमारे पास जो क्षेत्र है वह इतना सीमित है कि हमारी उंगलियाँ उसकी परिधि को छू सकती हैं। हमारी कमजोरी, नपुंसकता और आलस्य इतना अधिक है कि पालतू जानवर भी उनसे प्रभावित होते हैं। यदि एक पालतू जानवर की तुलना उसके गैर-पालतू जानवर से की जाए, तो बहुत अंतर देखा जा सकता है।

लेकिन प्रार्थना और याचिका करने की हमारी ज़रूरत के प्रति सचेत प्राप्तकर्ता के रूप में, हम सम्मानित, योग्य यात्री हैं जिन्हें इस दुनिया के अतिथि-गृह में कुछ समय के लिए रहने की अनुमति दी गई है। हम ऐसे उदार व्यक्ति के मेहमान हैं जिसने अपनी दया के अनंत खजाने को हमारे लिए समर्पित कर दिया है और अपनी रचनात्मक शक्ति और विशेष सेवकों के अद्वितीय कार्यों को हमारे अधीन कर दिया है। साथ ही, उसने हमारे उपयोग, आनंद और मनोरंजन के लिए इतना विशाल क्षेत्र तैयार किया है कि इसकी परिधि दृष्टि या यहाँ तक कि कल्पना तक पहुँच सकती है।

अगर हम अपनी शारीरिक और जन्मजात क्षमताओं पर भरोसा करते हैं, सांसारिक जीवन को अपना लक्ष्य मानते हैं और अपनी आजीविका की तलाश में इसके सुखों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम एक बहुत ही संकीर्ण दायरे में घुट जाएंगे। इसके अलावा, हमारे शरीर के अंग, इंद्रियाँ और क्षमताएँ परलोक में हमारे खिलाफ मुकदमा और गवाही देंगी। लेकिन अगर हम जानते हैं कि हम मेहमान हैं और इसलिए अपने जीवन को हमारे सर्व-दयालु मेजबान द्वारा स्थापित और अनुमोदित सीमाओं के भीतर बिताते हैं, तो हम एक व्यापक क्षेत्र में एक खुशहाल और शांतिपूर्ण जीवन जीएंगे और एक लंबा, शाश्वत जीवन प्राप्त करेंगे। हम सबसे ऊँचे स्तर तक पहुँच सकते हैं, और हमारे सभी शारीरिक अंग और क्षमताएँ परलोक में हमारे पक्ष में गवाही देंगी।

हमारी अद्भुत क्षमताएँ इस तुच्छ सांसारिक जीवन के लिए नहीं हैं; बल्कि, वे हमारे महान महत्व के शाश्वत जीवन के लिए हैं। क्योंकि जब जानवरों से तुलना की जाती है, तो हम देखते हैं कि हम क्षमताओं और इंद्रियों के मामले में जानवरों से कहीं अधिक समृद्ध हैं, जबकि सांसारिक सुखों और पशु जीवन के मामले में हम सौ गुना नीचे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम जो भी सांसारिक सुख चखते हैं, उसमें बहुत सारे दर्द होते हैं। अतीत के दर्द, भविष्य के डर और हर सुख के खत्म होने पर होने वाले दर्द हमारे आनंद को खराब कर देते हैं। हालाँकि, जानवर बिना दर्द के सुख का अनुभव करते हैं, बिना चिंता के आनंद लेते हैं, और न तो अतीत के दर्द से आहत होते हैं और न ही भविष्य के डर से परेशान होते हैं। वे आरामदायक जीवन का आनंद लेते हैं और अपने निर्माता की स्तुति करते हैं।

इसका अर्थ यह है कि यदि मानवता, जो सृष्टि के आदर्श नमूने के रूप में सर्वोत्तम कद की है, इस सांसारिक जीवन पर ध्यान केन्द्रित करती है, तो हम गौरैया से भी कहीं अधिक निम्न स्तर पर हैं, यद्यपि हमारे पास किसी भी पशु की तुलना में कहीं अधिक विकसित क्षमताएं हैं।
इस वास्तविकता को समझाने के लिए मैं एक दृष्टान्त दोहराऊंगा जो मैंने एक अन्य ग्रंथ में लिखा था।

एक आदमी अपने नौकर को दस सोने के सिक्के देता है और उसे एक खास कपड़े से बना सूट बनवाने के लिए कहता है। वह दूसरे नौकर को एक हजार सोने के सिक्के देता है और उसे खरीदारी की सूची के साथ बाजार भेजता है। पहला नौकर बेहतरीन कपड़े का एक बढ़िया सूट खरीदता है। दूसरा नौकर मूर्खतापूर्ण काम करता है, क्योंकि वह न तो यह देखता है कि उसे कितने पैसे दिए गए हैं और न ही खरीदारी की सूची पढ़ता है।

यह सोचते हुए कि उसे अपने दोस्त की नकल करनी चाहिए, वह एक दुकान पर जाता है और एक उपहार मांगता है।

सूट। बेईमान दुकानदार उसे सबसे घटिया कपड़े का सूट देता है। बदकिस्मत नौकर अपने मालिक के पास लौटता है और उसे कड़ी फटकार और भयानक सजा मिलती है। कोई भी देख सकता है कि हज़ार सोने के सिक्के सूट के लिए नहीं, बल्कि एक बहुत ही महत्वपूर्ण लेन-देन के लिए दिए गए थे।

इसी तरह, हमारी आध्यात्मिक क्षमताएँ, भावनाएँ और इंद्रियाँ जानवरों की तुलना में कहीं ज़्यादा विकसित हैं। उदाहरण के लिए, हम सुंदरता की सभी डिग्री देख सकते हैं, खाद्य पदार्थों के विशेष स्वाद की सभी किस्मों को पहचान सकते हैं, वास्तविकताओं के कई विवरणों को समझ सकते हैं, पूर्णता के सभी स्तरों की लालसा कर सकते हैं, इत्यादि। लेकिन जानवर, एक विशेष क्षमता को छोड़कर जो अपने विशेष कर्तव्य के अनुसार विकास की उच्च अवस्था तक पहुँचती है, केवल मामूली विकास ही महसूस कर सकते हैं, यदि कोई हो।

हम क्षमताओं में समृद्ध हैं क्योंकि हमारे मन और बुद्धि के कारण हमारी इंद्रियाँ और भावनाएँ बहुत विकसित हुई हैं। हमारी कई ज़रूरतों ने हमें अलग-अलग तरह की भावनाएँ विकसित करने और कई चीज़ों के प्रति बहुत संवेदनशील बनने के लिए प्रेरित किया है। साथ ही, हमारी व्यापक प्रकृति के कारण हमें कई लक्ष्य और उद्देश्य दिए गए हैं। हमारे आवश्यक कर्तव्यों की विविधता के कारण हमारी इंद्रियाँ और क्षमताएँ बहुत विस्तारित हुई हैं।

इसके अलावा, चूँकि हम आराधना करने में इच्छुक और सक्षम हैं, इसलिए हमारे पास सभी प्रकार की पूर्णता प्राप्त करने की क्षमता है।

ऐसी समृद्ध क्षमताएँ और प्रचुर संभावनाएँ हमें एक तुच्छ, अस्थायी, सांसारिक जीवन के लिए नहीं दी जा सकतीं। वास्तव में, वे हमें इसलिए दी गई हैं क्योंकि हमारा आवश्यक कर्तव्य है कि हम अपने दायित्वों को समझें, जो अनंत लक्ष्यों की ओर निर्देशित हैं; पूजा के रूप में अपनी नपुंसकता, दरिद्रता और अपर्याप्तता की पुष्टि करें; अपनी दूरगामी दृष्टि और तीक्ष्ण समझ से सृष्टि द्वारा ईश्वर की महिमा का अध्ययन करें और उनका साक्ष्य दें; दयालु ईश्वर द्वारा उपहारों के रूप में भेजी गई सहायता को समझें और उसके लिए कृतज्ञ हों; और सृष्टि में प्रकट उनकी शक्ति के चमत्कारों को देखें, उन पर विचार करें और उनसे चेतावनी लें।

हे संसार-प्रेमी, जो सांसारिक जीवन से मोहित हैं और सृष्टि के आदर्श स्वरूप के रूप में अपने स्वरूप के अर्थ से अनभिज्ञ हैं! एक बार मैंने एक दर्शन में इस सांसारिक जीवन का वास्तविक स्वरूप देखा, जो इस प्रकार है:

मैंने खुद को एक यात्री के रूप में पाया जो एक लंबी यात्रा पर जा रहा था। मेरे स्वामी ने मुझे इस यात्रा पर भेजा था और धीरे-धीरे मुझे साठ सोने के सिक्कों में से कुछ दिए जो उन्होंने मुझे आवंटित किए थे। यह कुछ समय तक चलता रहा और कुछ समय बाद मैं एक सराय में पहुंचा जहाँ कुछ मनोरंजन की व्यवस्था थी। एक रात में मैंने जुआ और मनोरंजन तथा प्रसिद्धि की खोज में दस सोने के सिक्के खर्च कर दिए। अगली सुबह, मेरे पास कोई पैसा नहीं बचा था। न ही मैं व्यापार कर सकता था और न ही खाद्य सामग्री खरीद सकता था।

मुझे अपने गंतव्य पर जो कुछ भी चाहिए होगा। मेरे पास केवल दर्द, दुख और पापों और अवैध सुखों से बचा हुआ पछतावा बचा था। जब मैं इस दयनीय स्थिति में था, तो एक आदमी प्रकट हुआ और मुझसे बोला: "तुमने अपना सब कुछ खो दिया है और तुम सज़ा के हकदार हो। इसके अलावा, तुम बिना पैसे के अपने गंतव्य पर जाओगे। लेकिन अगर तुम अपने दिमाग का इस्तेमाल करते हो, तो पश्चाताप का द्वार बंद नहीं होता है। जब तुम्हें धीरे-धीरे शेष पंद्रह सोने के सिक्के मिल जाएँ, तो आधे को बचाकर रख लो और इसका इस्तेमाल अपने गंतव्य पर ज़रूरत की चीज़ें खरीदने में करो।"

मेरी आत्मा सहमत नहीं थी, इसलिए उस आदमी ने कहा: "तो फिर उनमें से एक तिहाई बचा लो।"
फिर भी मेरी आत्मा ने मना कर दिया। उस आदमी ने जोर देकर कहा: "तो एक चौथाई।" मैंने देखा कि मेरी आत्मा अपनी लत को नहीं छोड़ सकती, इसलिए वह आदमी गुस्से से मुंह मोड़कर गायब हो गया। तुरंत, मैंने खुद को एक तेज़ रफ़्तार वाली ट्रेन में पाया जो एक सुरंग से गुज़र रही थी। मैं घबरा गया, लेकिन कोई रास्ता नहीं था। मुझे आश्चर्य हुआ, मैंने सुरंग के किनारे से लटकते हुए ट्रैक के किनारे बहुत ही आकर्षक फूल और स्वादिष्ट दिखने वाले फल देखे। मैंने मूर्खतापूर्वक उनमें से कुछ को तोड़ने की कोशिश की। लेकिन उनके चारों ओर कांटे थे, जो ट्रेन की गति के कारण मेरे हाथों को चीर रहे थे और उनसे खून बह रहा था। वे मुझे बहुत महंगे पड़े। अचानक एक अटेंडेंट आया और बोला: "मुझे पाँच सेंट दो और मैं तुम्हें जितने फूल और फल चाहिए उतने दे दूँगा। तुम्हारे सारे हाथ कटे हुए हैं, तुम पाँच सेंट के बजाय सौ सेंट खो रहे हो। इसके अलावा, बिना अनुमति के उन्हें तोड़ने पर सज़ा भी है।"

इस स्थिति से हताश होकर मैंने खिड़की से बाहर देखा कि सुरंग कब खत्म होगी। लेकिन कोई अंत नज़र नहीं आ रहा था। सुरंग की दीवारों में कई छेद थे जिनमें यात्रियों को फेंका जा रहा था। अचानक मेरी नज़र मेरे ठीक सामने एक छेद पर पड़ी जिसके दोनों तरफ़ एक कब्र का पत्थर था। जब मैंने बाहर झाँका तो मैंने देखा कि कब्र के पत्थर पर बड़े अक्षरों में मेरा नाम "सईद" लिखा हुआ था। मैं हैरानी और पश्चाताप से चीख पड़ा।

अप्रत्याशित रूप से, मैंने उस व्यक्ति की आवाज़ सुनी जिसने मुझे सराय में सलाह दी थी, पूछ रहा था: "क्या तुम अपने होश में आ गए हो?" मैंने जवाब दिया: "हाँ, लेकिन मैं शक्तिहीन हो गया हूँ, और मैं कुछ नहीं कर सकता।" उसने मुझे पश्चाताप करने और भगवान पर भरोसा करने के लिए कहा, जिस पर मैंने जवाब दिया कि मैं करूँगा। फिर मैं उठा और मैंने पाया कि मैं नए सैड में बदल गया हूँ; पुराना सैड चला गया था।

अब मैं इस दर्शन के कुछ पहलुओं की व्याख्या करूँगा: यह यात्रा हमारा जीवन है, आत्माओं की दुनिया से अनंत काल तक की यात्रा, माँ के गर्भ, युवावस्था, बुढ़ापे, कब्र, मध्यवर्ती दुनिया, पुनरुत्थान और पुल के चरणों से गुज़रते हुए। साठ सोने के सिक्के औसत जीवनकाल के साठ साल हैं। जब मुझे यह दर्शन हुआ तब मैं पैंतालीस साल का था। केवल ईश्वर ही जानता है कि मैं कब मरूँगा। कुरान के एक सच्चे छात्र ने मुझे सच्चा मार्ग दिखाया

ताकि मैं शेष बचे पंद्रह वर्षों में से आधे वर्ष परलोक के लिए बिता सकूँ।
मुझे समझ में आया कि सराय मेरे लिए इस्ताम्बुल थी। रेलगाड़ी समय थी और हर गाड़ी एक साल थी। सुरंग यह सांसारिक जीवन थी। काँटेदार फूल और फल अवैध सुख और निषिद्ध मनोरंजन थे, जिन्हें पाने के लिए हाथ बढ़ाते ही दिल में वियोग की भावना उमड़ पड़ती है। सुखों का लोप दुख को बढ़ाता है और इसके अलावा, अवैध होने के कारण व्यक्ति को दंड भुगतना पड़ता है। परिचारक ने कहा था: "मुझे पाँच सेंट दो, और मैं तुम्हें जितने फूल और फल चाहिए, दूँगा।" इसका मतलब यह है कि वैध तरीकों से प्राप्त जायज़ स्वाद और सुख हमें संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं और इसलिए अवैध तरीकों का पालन करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

चौथी टिप्पणी: सभी प्राणियों में मानवता एक कोमल बच्चे की तरह है। हमारी ताकत हमारी कमजोरी में है, और हमारी शक्ति हमारी नपुंसकता में है। शक्ति और शक्ति की इस कमी के कारण सृष्टि हमारे अधीन हो गई है। इसलिए अगर हम अपनी कमजोरी को पहचान लें और मौखिक और सक्रिय प्रार्थना के माध्यम से ईश्वर के विनम्र सेवक बन जाएं, और अगर हम अपनी नपुंसकता को पहचान लें और ईश्वर से मदद मांगें, तो हम प्रकृति के हमारे अधीन होने के लिए उनके प्रति अपना आभार प्रकट करेंगे। इसके अलावा, ईश्वर हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचने और अपने लक्ष्यों को हमारी अपनी क्षमता से कहीं अधिक तरीके से प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा।

कभी-कभी हम गलत तरीके से किसी इच्छा की पूर्ति को अपनी शक्ति और योग्यता के कारण मानते हैं, जबकि वास्तव में यह हमारे स्वभाव की जीभ द्वारा की गई प्रार्थना के माध्यम से हमारे लिए प्राप्त की गई है। विचार करें कि एक चूजे की कमजोरी शक्ति का कितना बड़ा स्रोत है, क्योंकि यह माँ मुर्गी को शेर पर भी हमला करने के लिए मजबूर करती है। एक शेर के बच्चे की कमजोरी एक बड़ी शेरनी को वश में कर लेती है, जो अपने बच्चे को खिलाने के लिए भूखी रह जाती है। कमजोरी में निहित शक्तिशाली अपील कितनी उल्लेखनीय है, और जिद्दी प्राणियों के लिए करुणा की कितनी शानदार अभिव्यक्ति है।

कोमल, प्यारे बच्चे रोते हुए, कामना करते हुए या उदास चेहरे बनाकर अपने लक्ष्य प्राप्त करते हैं, ये सभी चीजें शक्तिशाली लोगों को उनकी सेवा करने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। यदि बच्चे अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं, तो व्यावहारिक रूप से वे कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। उनकी कमजोरी और शक्तिहीनता, साथ ही स्नेह और सुरक्षा की भावनाएँ, उनके पक्ष में इतनी होती हैं कि एक ही इशारा उन्हें शक्तिशाली व्यक्तियों को अपने अधीन करने की अनुमति दे सकता है। अगर ऐसे बच्चे अहंकारी रूप से उन्हें दिखाए गए देखभाल और स्नेह से इनकार करते हैं और यह सब अपने दम पर करने का दावा करते हैं, तो उन्हें कड़वा चेहरा और नाराजगी मिलेगी। इसी तरह, अगर कोरह की तरह जिसने कहा: मुझे यह (मेरी संपत्ति) मेरे ज्ञान के कारण दी गई है (28:78), हम अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपनी शक्ति को देते हैं और

यदि हम अपनी योग्यता का इस प्रकार प्रयोग करते हैं कि वह कृतघ्नता प्रदर्शित करे, हमारे सृष्टिकर्ता की दया को नकारे और उसकी बुद्धि पर दोष लगाए, तो हम अवश्य दण्ड के पात्र होंगे।

इससे पता चलता है कि प्रकृति में हमारा प्रभुत्व, और सभ्यता और प्रौद्योगिकी में हमारी उन्नति और प्रगति, मुख्य रूप से हमारी अनिवार्य कमजोरी और असहायता के कारण है, जो ईश्वरीय सहायता को आकर्षित करती है। हमारी गरीबी ईश्वरीय प्रावधान का स्रोत है, हमारी अज्ञानता की भरपाई ईश्वरीय प्रेरणा से होती है, और हमारी ज़रूरतें ईश्वरीय अनुग्रह को आकर्षित करती हैं। ईश्वरीय दया, स्नेह और बुद्धि ने, न कि हमारी अपनी शक्ति और ज्ञान ने, हमें सृष्टि पर प्रभुत्व प्रदान किया है और चीज़ों को हमारे नियंत्रण में रखा है। यह ईश्वरीय अधिकार और दया ही है जो हमारी कमज़ोरी के कारण, हमें, जो इतने कमज़ोर प्राणी हैं कि हम एक अंधे बिच्छू और एक पैरहीन साँप से भी पराजित हो सकते हैं, एक कीड़े द्वारा उत्पादित रेशम पहनने और एक डंक मारने वाले कीट द्वारा उत्पादित शहद खाने में सक्षम बनाती है।

हे मनुष्यो, जब यही वास्तविकता है तो अहंकार और अहंकार त्याग दो। बल्कि अल्लाह के दरबार में अपनी शक्तिहीनता और दुर्बलता का परिचय दो, उससे सहायता मांगो, उससे प्रार्थना करो और उससे विनती करो। दिखाओ कि तुम उसके सच्चे बन्दे हो। फिर कहो कि अल्लाह हमारे लिए पर्याप्त है। वह कितना अच्छा संरक्षक है! (3:173) और उच्च पदों पर चढ़ो।

ऐसा मत कहो: “मैं कुछ भी नहीं हूँ। वह सर्वज्ञ परमेश्वर सृष्टि को मेरे अधीन क्यों करेगा और सार्वभौमिक कृतज्ञता की मांग क्यों करेगा?” भौतिक दृष्टि से और अपनी दुष्ट आत्मा के संबंध में आप लगभग कुछ भी नहीं हैं, लेकिन आपका कर्तव्य या पद आपको इस भव्य ब्रह्मांड का एक चौकस पर्यवेक्षक, ईश्वरीय ज्ञान की घोषणा करने वाले प्राणियों की एक वाक्पटु भाषा, सृष्टि की इस पुस्तक का एक समझदार छात्र, ईश्वर की स्तुति करने वाले प्राणियों का एक प्रशंसनीय पर्यवेक्षक, पूज्य प्राणियों का एक सम्मानित गुरु बनाता है।

हे मनुष्य! तुम अपने भौतिक अस्तित्व और आत्मा के संदर्भ में एक तुच्छ अणु, एक बेचारा प्राणी और कमज़ोर जानवर हो। और इसलिए तुम सृष्टि की विशाल तरंगों द्वारा बहाए जा रहे हो। लेकिन अगर तुम इस्लाम की शिक्षा के माध्यम से पूर्ण हो जाते हो, जो ईश्वरीय प्रेम की चमक वाले विश्वास के प्रकाश से प्रकाशित होती है, तो तुम अपने सेवक होने में एक राजापन, अपनी विशिष्टता में एक व्यापकता, अपने छोटे अस्तित्व में एक दुनिया और अपनी तुच्छता में एक बहुत बड़ा पद पाओगे। बाकी सृष्टि पर तुम्हारी निगरानी का क्षेत्र इतना व्यापक होगा कि तुम कह सकोगे: "मेरे दयालु प्रभु ने दुनिया को मेरे लिए एक घर बनाया है। उसने मुझे दीपक के रूप में सूर्य और चंद्रमा, गुलाब के गुच्छे के रूप में वसंत, एहसानों की दावत के रूप में गर्मियों और आज्ञाकारी सेवकों के रूप में जानवर दिए हैं। उसने मेरे घर की सजावट और भोजन के रूप में पौधे और वनस्पतियाँ मेरे लिए दी हैं।"

निष्कर्ष रूप में, यदि आप अपनी दुष्ट आत्मा और शैतान की आज्ञा मानेंगे, तो आप सबसे निचले स्तर पर गिर जायेंगे; लेकिन यदि आप सत्य और कुरान का अनुसरण करेंगे, तो आप सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच जायेंगे और सृष्टि का आदर्श उदाहरण बन जायेंगे।

पाँचवी टिप्पणी: हमें यहाँ एक विशेष जिम्मेदारी के साथ मेहमान के रूप में भेजा गया है। महत्वपूर्ण क्षमताओं से संपन्न, हमें महत्वपूर्ण कर्तव्य सौंपे गए हैं और उन्हें पूरा करने के लिए दृढ़ता से आग्रह किया गया है। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हमें दंडित किया जाएगा। "सृष्टि का आदर्श प्रतिरूप होने" को और अधिक समझने योग्य बनाने के लिए, मैं उपासना और कर्तव्यों के आवश्यक तत्वों को संक्षेप में प्रस्तुत करूँगा।

हमारी पूजा के दो पहलू हैं। पहला पहलू चिंतन और चेतना से संबंधित है, जिसमें सीधे उनसे बात किए बिना ही ध्यान केंद्रित किया जाता है। दूसरा पहलू पूजा और प्रार्थना है, जो सीधे उनसे बात करके उनकी उपस्थिति में की जाती है।

पहला पहलू यह है:

• सृष्टि पर उसकी प्रभुता की आज्ञाकारी पुष्टि करना तथा उसकी सुन्दरता और सम्पूर्णता को विस्मयपूर्वक देखना;

• सृष्टि में अद्वितीय कलाओं की ओर ध्यान आकर्षित करना और उनका उद्घोष करना, जिसमें पवित्र दिव्य नामों की कढ़ाई शामिल है; भगवान के नामों के रत्नों को, जिनमें से प्रत्येक एक छिपी हुई आध्यात्मिक निधि है, बोध और विवेक के तराजू पर तौलना और अपने हृदय की कृतज्ञतापूर्ण प्रशंसा के साथ उनका मूल्यांकन करना;

• सृष्टि के पन्नों और आकाश तथा पृथ्वी की परतों का अध्ययन करना, जिनमें से प्रत्येक ईश्वरीय शक्ति का संदेश है, तथा उन पर बड़ी प्रशंसा के साथ चिंतन करना; तथा

• सृष्टि में दिखाई देने वाले सूक्ष्म अलंकरण और परिष्कृत कौशल को देखकर विस्मय और प्रशंसा से देखना, तथा उनके सर्व-सुन्दर और दयालु सृजक को जानने की उत्कट इच्छा रखना और उनकी उपस्थिति में प्रवेश करने की लालसा रखना, जहाँ हम उनकी कृपा प्राप्त करने की आशा करते हैं।

हमारी आराधना का दूसरा पहलू उनकी उपस्थिति में उन्हें सम्बोधित करके किया जाता है
हम सीधे उनके निर्माता के पास जाते हैं और:

• हम देखते हैं कि एक सर्व-प्रतापी निर्माता अपनी कला के चमत्कारों के माध्यम से स्वयं को ज्ञात करना चाहता है, और प्रतिक्रिया में हम उस पर विश्वास करते हैं और उसे जानते हैं;

• हम देखते हैं कि एक सर्व-दयालु भगवान अपनी करुणा के सुंदर फलों के माध्यम से खुद को प्यार करने की इच्छा रखते हैं, और जवाब में हम प्यार करते हैं
हम उसे अपना प्रेम और आराधना समर्पित करके स्वयं को उसका प्रिय बनायें;

• हम देखते हैं कि एक सर्व-उदार प्रदाता हमें सर्वोत्तम और

हम उनके भौतिक और आध्यात्मिक उपकारों में से सबसे प्रिय हैं, और हम कृतज्ञता और प्रशंसा के साथ प्रतिक्रिया करते हैं, जो हमारे कार्यों, कर्मों, जीवन शैली और यदि संभव हो तो हमारी सभी इंद्रियों और क्षमताओं के माध्यम से व्यक्त होता है;

• हम देखते हैं कि एक सर्व-सुंदर और दयालु महात्म्य अपनी महानता और पूर्णता, महिमा और सौंदर्य को प्राणियों के दर्पणों में प्रकट करता है और उनकी ओर ध्यान आकर्षित करता है, और जवाब में घोषणा करता है, "ईश्वर सर्व-महान है! ईश्वर सर्व-महिमावान है!" हम आश्चर्य और आराधना में उसके सामने दंडवत करते हैं, और उसके सामने अपनी शून्यता की चेतना में;

• हम देखते हैं कि परम ऐश्वर्यवान परमेश्वर अपनी असीम सम्पदा और खजाने को असीम उदारता से प्रदर्शित करता है, और अपनी विपत्ति की घोषणा करते हुए, हम उसकी स्तुति और महिमा में उसके अनुग्रह की मांग करते हैं;

• हम देखते हैं कि महिमा के उस रचयिता ने अपने अद्वितीय कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए पृथ्वी को एक प्रदर्शनी की तरह व्यवस्थित किया है, और जवाब में हम यह कहकर उनकी सराहना करते हैं, “ईश्वर ने क्या-क्या अद्भुत कार्य किए हैं!”; यह कहकर उनकी सुंदरता की पुष्टि करते हैं, “ईश्वर उन्हें आशीर्वाद दें!”; “ईश्वर सर्व-महिमावान है!” के द्वारा अपना आश्चर्य दिखाते हैं और यह कहकर अपनी प्रशंसा व्यक्त करते हैं: “ईश्वर सर्व-महान है!”;

• हम देखते हैं कि एक सर्वथा अद्वितीय परमेश्वर अपने अद्वितीय चिह्नों और विशिष्ट आदेशों तथा प्रत्येक प्राणी पर लगाए गए अपने अद्वितीय मुहरों और मुहरों द्वारा सृष्टि में अपनी एकता को दर्शाता है; वह प्रत्येक वस्तु पर एकता के चिह्न अंकित करता है तथा अपनी प्रभुता की घोषणा करते हुए पूरे विश्व में अपनी एकता का ध्वज फहराता है। हम इस पर विश्वास, पुष्टि, स्वीकृति, तथा उसकी एकता की गवाही, तथा भक्ति और सच्ची आराधना के साथ प्रतिक्रिया करते हैं।

इस प्रकार की पूजा और चिंतन के माध्यम से हम सच्ची मानवता प्राप्त कर सकते हैं। हम दिखा सकते हैं कि हम सृष्टि के आदर्श नमूने के रूप में सर्वश्रेष्ठ कद के हैं और विश्वास की कृपा से, सर्वोच्च विश्वास को धारण करने के योग्य पृथ्वी के विश्वसनीय शासक बन सकते हैं।

अब, हे असावधान लोगों, जो अपनी इच्छा का दुरुपयोग करके सबसे नीची अवस्था की ओर बढ़ते हैं, यद्यपि तुम सृष्टि के उत्तम प्रतिरूप के रूप में श्रेष्ठतम आकार में निर्मित हुए हो, मेरी बात सुनो। तुम्हारी तरह, मैंने भी एक बार युवावस्था के नशे में असावधानी में संसार को सुन्दर और अच्छा समझा था। फिर जब मैं बुढ़ापे की सुबह उठा, तो मैंने देखा कि संसार का चेहरा कितना कुरूप है, जो परलोक की ओर नहीं मुड़ा है, जिसे मैं पहले सुन्दर समझता था। यह देखना और कितना असाधारण-

न केवल इसका दूसरा चेहरा सुन्दर है, जो परलोक की ओर मुड़ा हुआ है, आप सत्रहवें वचन के दूसरे चरण में दो "सत्य की तालिकाओं" का संदर्भ ले सकते हैं।

पहली तालिका में असावधान लोगों की दुनिया की वास्तविकता को दर्शाया गया है, जबकि दूसरी तालिका में मार्गदर्शित लोगों की दुनिया की वास्तविकता को दर्शाया गया है।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे मेरे प्रभु, मेरे लिए मेरा सीना चौड़ा कर दे, और मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे।
मेरी जीभ की गांठ खोल दो ताकि वे मेरी बात समझ सकें।

हे ईश्वर, मुहम्मद पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें, जो उनके शुद्ध, अद्वितीय सार हैं, जो रहस्यों के स्वर्ग के सूर्य हैं, प्रकाश की अभिव्यक्ति हैं, वह बिंदु है जिस पर ईश्वर की महिमा की अभिव्यक्तियाँ केंद्रित हैं, वह धुरी जिसके चारों ओर उनकी कृपा और सौंदर्य की दुनिया घूमती है।

हे ईश्वर, आपके साथ उसके रिश्ते में रहस्य के लिए, और आपकी ओर उसकी यात्रा के लिए, मुझे मेरे डर से बचाओ, मुझे गिरने से बचाओ, मेरे दोषों को कम करो, और मेरे दुख और लालच को दूर करो। मेरे साथ रहो, मुझे खुद से दूर अपने पास ले जाओ, और मुझे खुद से मिटाने का अनुग्रह करो। मुझे अपने आप से ग्रस्त मत छोड़ो, मेरी भावनाओं से घिरा हुआ। मेरे लिए हर रहस्य का पर्दाफाश करो।

हे सर्वजीवित एवं स्वयंभू, हे सर्वजीवित एवं स्वयंभू, हे सर्वजीवित एवं स्वयंभू! मुझ पर और मेरे साथियों पर दया करो। सभी ईमान वालों और कुरान के सभी लोगों पर दया करो। आमीन, हे दयालुओं में सबसे अधिक दयालु, हे सबसे अधिक दयालु!

उनके आह्वान का निष्कर्ष होगा: "सभी प्रशंसा और आभार
क्योंकि परमेश्वर, जो सारे जगत का स्वामी है।"

चौबीसवाँ वचन

प्रेम, आराधना और धन्यवाद

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

पांचवी शाखा

उसकी पांचवीं शाखा में पांच फल हैं:

पहला फल: हे मेरी स्वार्थी आत्मा! हे सांसारिक मित्र! प्रेम ही सब कुछ है ब्रह्मांड के अस्तित्व का कारण, सभी चीज़ों के बीच का बंधन, और ब्रह्मांड का प्रकाश और जीवन। चूँकि हम अस्तित्व का सबसे व्यापक फल हैं, इसलिए एक ऐसा प्रेम जो इतना उमड़ता है कि वह ब्रह्मांड पर आक्रमण कर सकता है, उस फल के हृदय (उसके बीज या मूल) में शामिल किया गया है। जो इस तरह के असीम प्रेम का हकदार है, वह केवल असीम पूर्णता वाला ही हो सकता है।

इसलिए हे आत्मा और मित्र, हमारे स्वभाव में दो क्षमताएँ हैं: भय के साधन और प्रेम के साधन। ऐसा प्रेम और भय या तो सृजित के प्रति होता है या सृजित के प्रति। सृजित का भय एक कष्टदायक पीड़ा है और सृजित का प्रेम एक कष्टदायक पीड़ा है, क्योंकि तुम ऐसी वस्तुओं या व्यक्तियों से डरते हो कि वे तुम पर दया न करें या तुम्हारी प्रार्थना को अस्वीकार न करें। यदि ऐसा है, तो सृजित का भय एक कष्टदायक पीड़ा है। जहाँ तक सृजित के प्रति प्रेम का प्रश्न है, जिनसे तुम प्रेम करते हो, वे या तो तुम्हारी परवाह नहीं करते और तुम्हारी युवावस्था और सम्पत्ति की तरह तुम्हें अलविदा कहे बिना ही छोड़ देते हैं। या वे तुम्हारे प्रेम के कारण तुम्हारा तिरस्कार करते हैं। निन्यानबे प्रतिशत प्रेमी अपने प्रियतम की शिकायत करते हैं, क्योंकि मूर्ति-समान सांसारिक प्रियतम के प्रति हृदय की गहराई से किया गया प्रेम, जो कि शाश्वत रूप से चाहने वाले का दर्पण है, प्रेमी के लिए असहनीय होता है। और इसलिए इसे अस्वीकार कर दिया जाता है, क्योंकि मानव स्वभाव अप्राकृतिक और अनावश्यक को अस्वीकार करता है और उससे घृणा करता है। (यहाँ पशु प्रेम का प्रश्न ही नहीं उठता।)

संक्षेप में, जिनसे आप प्यार करते हैं, वे या तो आपकी परवाह नहीं करते, या वे आपसे घृणा करते हैं, या वे आपका साथ नहीं देते। आपकी इच्छा के विपरीत, वे आपको छोड़ देते हैं। इसलिए अपने डर और प्यार को ऐसे व्यक्ति की ओर मोड़ें जो आपका डर मिटा दे।

सुखद विनम्रता और आपके प्यार से अपमान से मुक्त खुशी मिलती है। सर्व-महान निर्माता से डरने का मतलब है उसकी करुणा तक पहुँचने का रास्ता ढूँढ़ना और उसमें शरण लेना। वास्तव में, भय एक कोड़ा है; यह व्यक्ति को उसकी करुणा की गोद में ले जाता है। एक माँ अपने बच्चे को किसी चीज़ या व्यक्ति से डराकर उसे अपनी बाहों में खींच लेती है। वह डर बच्चों के लिए बहुत सुखद होता है, क्योंकि यह उन्हें देखभाल और करुणा की बाहों में खींच लेता है।

हालाँकि, सभी माताओं की देखभाल और करुणा उनकी करुणा की एक किरण मात्र है। इसका मतलब है कि ईश्वर के भय में बहुत आनंद है। इसे देखते हुए, आप समझ सकते हैं कि उनसे प्रेम करके कितना असीम आनंद पाया जा सकता है। इसके अलावा, जो लोग ईश्वर से डरते हैं, वे दूसरों की चिंता, परेशानी भरे डर से मुक्त हो जाते हैं, और ईश्वर के नाम पर सृजित प्राणियों के प्रति उनका प्रेम किसी भी तरह का दर्द या अलगाव नहीं पैदा करता है।

हम सबसे पहले अपने आप से प्यार करते हैं, फिर अपने परिवार और रिश्तेदारों से, फिर अपने देश से, फिर जीवित प्राणियों से, फिर दुनिया या ब्रह्मांड से। इन सभी क्षेत्रों से हमारा रिश्ता है, उनकी संतुष्टि और खुशी में हमें खुशी होती है और उनके दर्द में हमें दर्द होता है। लेकिन चूँकि इस उथल-पुथल और हमेशा बदलते रहने वाले संसार में सब कुछ नश्वर है, इसलिए हमारा दिल लगातार घायल होता रहता है। जिस चीज़ को हम पकड़ते हैं, वह हमारे हाथों से फिसल जाती है, रास्ते में उसे खरोंचती और काटती है। हम दर्द में रहते हैं या खुद को असावधानी के नशे में झोंक देते हैं।

चूँकि ऐसा है, हे आत्मा, यदि तुममें समझ है, तो तुम जो भी प्रेम प्राणियों में बाँटते हो, उसे उसी को दो जो उसका सच्चा हकदार है और इस तरह अपने आप को सभी दुखों और परेशानियों से बचाओ। केवल वही जो अनंत पूर्णता और सुंदरता का स्वामी है, अनंत प्रेम का हकदार है। जब तुम उस प्रेम को उसके वास्तविक स्वामी को सौंप सकोगे, तभी तुम उसके लिए और उसके प्रतिरूप होने के नाते सभी चीजों को बिना किसी दुख या परेशानी के प्रेम कर पाओगे। ऐसा प्रेम सीधे अस्तित्व के लिए अस्तित्व को नहीं सौंपा जाना चाहिए। अन्यथा, सबसे सुखद ईश्वरीय कृपा होते हुए भी, प्रेम सबसे दर्दनाक बीमारी बन जाता है।

मेरी आत्मा, इस मामले का एक और, अधिक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि तुम अपना प्यार अपने आप को देते हो। तुम अपने आप को पूजते हो और इसे पूजा के योग्य मानते हो। तुम अपने लिए सब कुछ त्याग देते हो और इसे भगवान की तरह पूजते हो। हालाँकि, किसी चीज़ को या तो उसकी पूर्णता के लिए प्यार किया जाता है (जिसे उसके अपने होने के कारण प्यार किया जाता है), या उसके द्वारा दिए जाने वाले लाभ या आनंद के लिए, जो अच्छाई वह लाती है, या किसी अन्य, समान कारण से। अब, हे आत्मा! मैंने कुछ शब्दों में ठोस तर्क प्रस्तुत किए हैं कि तुम्हारा स्वभाव दोष और कमी के साथ-साथ अभाव और

नपुंसकता। जैसे अंधकार प्रकाश की शक्ति को उसके घनत्व के अनुपात में दिखाता है, इसके विपरीत, आप अपने स्वभाव के उन आवश्यक तत्वों के माध्यम से सर्व-महान सृजक की पूर्णता, कृपा, सौंदर्य, शक्ति और दया के लिए एक दर्पण हैं।

अतः हे आत्मा! तू अपने प्रति शत्रुता रख या उस पर दया कर।
या फिर जब उसे विश्वास के सिद्धांतों की सच्चाई और उपासना में संतुष्टि का पूरा विश्वास हो जाए, तो आपको उसके साथ सावधानी और दया से पेश आना चाहिए।

यदि तुम अपने (शारीरिक) आत्म से प्रेम करते हो, जो भोग-विलास में आसक्त है और हमेशा अपने ही हित की चिंता करता है, तो तुम भोग-विलास और स्वार्थ के वशीभूत हो चुके हो। ऐसे तुच्छ भोग-विलास और स्वार्थ को असीम सच्चे सुख और लाभ के ऊपर तरजीह मत दो। जुगनू के समान मत बनो, जो अपने मित्रों और अपने प्रियतम को अंधकार के भय और एकांत में डुबो देता है और अपनी छोटी-सी चमक से ही संतुष्ट हो जाता है। उस शाश्वत प्रियतम से प्रेम करो, जिसके अनुग्रह में तुम्हारे पाशविक भोग-विलास के साथ-साथ उन सभी प्राणियों का हित निहित है, जिनसे तुम्हारा संबंध है, जिनसे तुम्हें लाभ मिलता है और जिनके सुख से तुम्हें खुशी मिलती है। इससे तुम उनके सुख में आनंदित हो सकोगे और वही असीम सुख पा सकोगे, जो तुम्हें परम सिद्ध से मिलता है।

तुम्हारा तीव्र आत्म-प्रेम वास्तव में कुछ और नहीं बल्कि उसके "सार" के प्रति तुम्हारा सहज प्रेम है, जिसे तुम अनजाने में अपने भीतर रखते हो और गलत तरीके से अपने लिए उपयुक्त बनाते हो। अपने भीतर के "मैं" को तोड़ दो और "वह" को दिखाओ। तुम जो भी प्रेम दूसरे प्राणियों में बांटते हो वह तुम्हारे अस्तित्व में उसके नाम और गुणों के प्रति निहित प्रेम के अलावा और कुछ नहीं है। लेकिन तुम उसका दुरुपयोग करते हो और इसलिए पीड़ा और परेशानी झेलते हो, क्योंकि जो लोग इसके योग्य नहीं हैं उनके प्रति पोषित अवैध प्रेम का प्रतिफल निर्दयी बीमारी है।

उस शाश्वत, प्यारे भगवान के लिए प्रेम का एक कण, जिसने अपने नामों के माध्यम से, जो अत्यंत दयालु और करुणामय है, आपकी सभी शारीरिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए हूरों से भरा एक स्वर्ग बनाया है, जिसने अपने अन्य नामों के माध्यम से आपकी अमूर्त क्षमताओं (जैसे, आपकी आत्मा, हृदय, बुद्धि और अंतरतम इंद्रियों) की सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए आपके लिए शाश्वत उपकार तैयार किए हैं, और जिनके प्रत्येक नाम में अनुग्रह और उदारता के असंख्य अमूर्त खजाने हैं, जो ब्रह्मांड की क्षतिपूर्ति कर सकते हैं। हालाँकि, ब्रह्मांड उनके प्रेम की एक विशेष अभिव्यक्ति की भी क्षतिपूर्ति नहीं कर सकता है। इसे देखते हुए, निम्नलिखित शाश्वत आदेश को सुनें और उसका पालन करें, जिसे शाश्वत प्यारे भगवान ने अपने प्रिय, अपने रसूल को घोषित किया: यदि आप वास्तव में भगवान से प्रेम करते हैं, तो मेरे पीछे आओ [ताकि] भगवान आपसे प्रेम करें (3:31)।

दूसरा फल: हे आत्मा! ईश्वर की आराधना भविष्य में ईश्वरीय पुरस्कार की मांग करने का कार्य नहीं है, बल्कि यह तो ईश्वर के पिछले अनुग्रह का आवश्यक परिणाम है। हमें अपना पारिश्रमिक मिल चुका है और बदले में हमें उनकी सेवा और पूजा करने का दायित्व सौंपा गया है। क्योंकि हे आत्मा, जिस सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ने तुम्हें पूर्णतः अच्छा जीवन दिया है, उसने तुम्हें भूखा पेट दिया है और अपने सर्वदाता नाम से तुम्हारे सामने सभी खाद्य पदार्थों को अनुग्रहों की मेज के रूप में रख दिया है। साथ ही, उसने तुम्हें इंद्रियों से सुसज्जित जीवन दिया है। यह भी पेट की तरह अपने लिए विशेष पोषण की मांग करता है। तुम्हारी सभी इंद्रियां जैसे आंखें और कान हाथ के समान हैं, जिनके सामने उसने पृथ्वी जितनी विशाल अनुग्रहों की विशेष मेज रखी है। इसके अतिरिक्त, जिस प्रकार उसने तुम्हें मनुष्य बनाया है, जो अनेक अमूर्त अनुग्रहों की मांग करता है, उसी प्रकार उसने तुम्हारे सामने तर्क की पहुंच के भीतर और भौतिक और अमूर्त दुनिया जितनी बहुआयामी अनुग्रहों की मेज रखी है।

तुम्हें ईमान और इस्लाम प्रदान किया है, जो सबसे बड़ी मानवता है और इस प्रकार अनंत उपकार की मांग करता है और अनंत दया के फलों से पोषित होता है, उसने तुम्हारे लिए उपकारों, सुखों और आनंदों की एक मेज खोल दी है, जिसमें आकस्मिकताओं के क्षेत्र के साथ-साथ उसके सुंदर नामों और पवित्र गुणों का क्षेत्र भी शामिल है। इसके अलावा, तुम्हें प्रेम प्रदान करके, जो ईमान का प्रकाश है, उसने तुम्हें उपकारों, आनंद और आनंदों की एक और मेज प्रदान की है।

भौतिक दृष्टि से तुम एक छोटे, तुच्छ, शक्तिहीन, दयनीय और सीमित प्राणी हो। लेकिन उसकी कृपा और अनुग्रह से तुम एक सार्वभौमिक, प्रबुद्ध और ज्ञानवर्धक प्राणी बन गए हो। उसने तुम्हें जीवन प्रदान किया है और इस प्रकार तुम्हें एक विशेष प्रकार की सार्वभौमिकता के स्तर पर पहुंचा दिया है। तुम्हें मानवता प्रदान करके उसने तुम्हें सच्ची सार्वभौमिकता के स्तर पर पहुंचा दिया है और तुम्हें इस्लाम प्रदान करके एक उत्कृष्ट और प्रकाशमान सार्वभौमिकता के स्तर पर पहुंचा दिया है और तुम्हें ईश्वर का प्रेम और ज्ञान प्रदान करके उसने तुम्हें एक सर्वव्यापी प्रकाश प्राप्त करा दिया है।

हे आत्मा! चूँकि तुम्हें ये मज़दूरी पहले ही मिल चुकी है, इसलिए तुम्हें उपासना का काम सौंपा गया है, जो एक आसान, सुखद और पुरस्कृत करने वाला ईश्वरीय उपहार है। लेकिन जब इसे करने की बात आती है तो तुम आलसी हो जाते हो। जब तुम इसे दोषपूर्ण तरीके से करते हो, मानो तुम्हें अग्रिम मज़दूरी अपर्याप्त लगती है, तो तुम अहंकार में और अधिक की माँग करते हो। तुम दिखावा भी करते हो और शिकायत भी करते हो कि तुम्हारी प्रार्थनाएँ स्वीकार नहीं की जाती हैं।
तुम्हारा हक शिकायत करना नहीं बल्कि खुदा से दुआ और प्रार्थना करना है। वह अपनी कृपा और दया से ही जन्नत और हमेशा की खुशियाँ देता है। इसलिए हमेशा उसकी दया और कृपा की शरण में रहो, उस पर भरोसा रखो और निम्नलिखित ईश्वरीय घोषणा पर ध्यान दो: कहो: "बाहर आओ और हमेशा के लिए खुश रहो।"

और वे इस पर प्रसन्न हो जाएं। यह उससे बेहतर है जो कुछ वे इकट्ठा करते रहे हैं (10:58)

यदि आप पूछें: “मैं अपनी सीमित, विशेष कृतज्ञता के माध्यम से उन सार्वभौमिक, अनंत उपकारों का जवाब कैसे दे सकता हूँ?”, तो उत्तर इस प्रकार होगा: एक सार्वभौमिक इरादे और असीम रूप से गहन विश्वास और भक्ति के माध्यम से। मान लीजिए कि एक गरीब आदमी राजा के सामने एक सस्ता (भौतिकवादी शब्दों में) उपहार लेकर आता है। वहाँ वह राजा के पसंदीदा लोगों द्वारा भेजे गए महंगे उपहार देखता है। वह सोचता है: “मेरे उपहार का कोई मतलब नहीं है, लेकिन यह वही है जो मैं खरीद सकता हूँ।” फिर अचानक वह राजा को संबोधित करते हुए कहता है: “मेरे स्वामी! मैं ये सभी कीमती उपहार अपने नाम पर अर्पित करता हूँ, क्योंकि आप इनके हकदार हैं। अगर मैं कर सकता, तो मैं इनका दोगुना चढ़ाता।”

राजा, जिसे किसी चीज की आवश्यकता नहीं होती, वह अपनी प्रजा के उपहारों को सम्मान और वफादारी के प्रतीक के रूप में स्वीकार करता है, वह गरीब आदमी की सार्वभौमिक मंशा, इच्छा और भक्ति की गहरी भावनाओं को ऐसे स्वीकार करता है मानो वे सबसे बड़ा उपहार हों।
इसी तरह, एक गरीब सेवक अपनी दैनिक निर्धारित प्रार्थनाओं में कहता है: "सभी पूजा और श्रद्धा भगवान के लिए है," जिसका अर्थ है: "मेरे नाम पर, मैं आपको पूजा के सभी उपहार अर्पित करता हूं जो सभी प्राणी अपने जीवन के माध्यम से आपको देते हैं। आप उन सभी के हकदार हैं, और वास्तव में उनसे कहीं ज़्यादा।" यह विश्वास और इरादा सबसे व्यापक और सार्वभौमिक आभार है।

पौधों के बीज और पत्थर उनके इरादे हैं कि वे बड़े-बड़े पौधे बनें। उदाहरण के लिए, अपने सैकड़ों बीजों के साथ, एक तरबूज इरादा करता है: "हे मेरे निर्माता! मैं पृथ्वी के कई स्थानों पर आपके सभी सुंदर नामों के शिलालेखों को प्रदर्शित करना चाहता हूं।" भविष्य के बारे में पूरी जानकारी होने के कारण, सर्वशक्तिमान ईश्वर इसके इरादों को कर्मों में पूजा के रूप में स्वीकार करता है। पैगंबर का कथन: "एक आस्तिक का इरादा उसके कार्य से बेहतर है,"[15] इस वास्तविकता को व्यक्त करता है। यही कारण है कि हम अनंतता को व्यक्त करने वाले वाक्यांशों के साथ उसकी महिमा और प्रशंसा करते हैं, जैसे: "आपकी महिमा हो, और आपकी रचनाओं की संख्या, आपको प्रसन्न करने वाली चीजें, आपके सर्वोच्च सिंहासन की सजावट, आपके शब्दों की स्याही की मात्रा तक आपकी प्रशंसा हो। हम आपके पैगंबरों, संतों और स्वर्गदूतों की सभी महिमाओं के योग के साथ आपकी महिमा करते हैं।"

जिस प्रकार एक सेनापति राजा को, उसके नाम पर, उसके सभी सैनिकों की सेवाएँ अर्पित करता है, उसी प्रकार मानवता, जो सभी सांसारिक प्राणियों (पौधों और जानवरों सहित) की सेनापति है और अपने निजी संसार में प्रत्येक के नाम पर कार्य करती है, कहती है: केवल आपकी ही हम आराधना करते हैं और केवल आपसे ही सहायता माँगते हैं (1:5), और मानवता के नाम पर सर्व-पूज्य महामहिम को अपनी सारी सेवाएँ अर्पित करती है।

---

[15] अल-मुनावी, फ़यदु'ल-कादिर, 6:291.

सृष्टि की आराधना और मदद के लिए विनती। यह कहते हुए: “तेरी महिमा हो, तेरे सभी प्राणियों की महिमा के योग से और तेरी बनाई हुई सभी चीज़ों की भाषाओं से,” मानवता सभी प्राणियों से बोलवाती है

अपने नाम पर.

साथ ही, मानवता कहती है: "हे ईश्वर! ब्रह्मांड में जितने परमाणु और यौगिक हैं, उतने ही मुहम्मद पर कृपा करें।" वह हर चीज के नाम पर पैगंबर मुहम्मद पर ईश्वर की कृपा की दुहाई देता है, क्योंकि हर चीज मुहम्मद के प्रकाश से जुड़ी हुई है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

इन सब बातों से ईश्वर की महिमा का बखान करने तथा मुहम्मद पर उसकी असीम कृपा बरसाने में निहित बुद्धिमत्ता को समझें।

तीसरा फल: हे आत्मा! यदि तुम इस छोटी सी जिंदगी में अपने परलोक के लिए अनंत उपलब्धियां चाहते हो, यदि तुम अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को संपूर्ण जीवन के समान फलदायी देखना चाहते हो, तथा यदि तुम अपने साधारण कर्मों को उपासना में बदलना चाहते हो और अपनी असावधानी को ईश्वर की उपस्थिति के निरंतर बोध में बदलना चाहते हो, तो पैगम्बर की पवित्र सुन्नत का पालन करो। क्योंकि शरीयत के नियमों का पालन करने से ईश्वर की उपस्थिति का एक प्रकार का बोध होता है, तथा यह एक प्रकार की उपासना बन जाती है, जो परलोक के लिए अनेक फल प्रदान करती है।

उदाहरण के लिए, जब आप खरीद-बिक्री के लेन-देन में शरीयत के सिद्धांतों का पालन करते हैं, तो यह सामान्य लेन-देन इबादत का काम बन जाता है, क्योंकि शरीयत को याद करने से आपको ईश्वरीय रहस्योद्घाटन की याद आती है, जो आपको शरीयत के प्रकटकर्ता के बारे में सोचने और अपना ध्यान उसकी ओर मोड़ने के लिए प्रेरित करता है। इससे उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता पैदा होती है। इसका मतलब है कि सुन्नत का पालन करने से व्यक्ति के क्षणिक जीवन में अनंत जीवन के साधन के रूप में अनंत फल पैदा हो सकते हैं। इसलिए, निम्नलिखित ईश्वरीय आदेश पर ध्यान दें: इसलिए ईश्वर और उसके रसूल पर, उस अनपढ़ नबी पर जो ईश्वर और उसके शब्दों पर विश्वास करता है, ईमान लाओ और उसका अनुसरण करो ताकि तुम मार्ग पा सको (7:158)। शरीयत और उच्च सुन्नत के नियमों में प्रकट प्रत्येक दिव्य सुंदर नाम से प्रबुद्ध होने के लिए एक व्यापक वस्तु बनने की कोशिश करें।

चौथा फल: हे आत्मा! सांसारिक लोगों, खासकर जो एक भ्रष्ट जीवन जी रहे हैं और खासकर अविश्वासियों की दिखावटी चमक-दमक और अवैध सुख-सुविधाओं से भ्रमित मत हो। क्योंकि तुम उनकी नकल करके उनके जैसे नहीं बन पाओगे। तुम बहुत नीचे गिर जाओगे। तुम जानवरों की तरह भी नहीं बन सकते, क्योंकि तुम्हारी बुद्धि एक अशुभ "उपकरण" होगी जो तुम्हें अंतहीन परेशानी देगी।

मान लीजिए कि एक महल है जिसके केंद्रीय कमरे में एक बड़ी बिजली की रोशनी है। बाकी सभी कमरों में उससे जुड़ी छोटी-छोटी लाइटें हैं। अगर कोई उस बड़ी लाइट को बंद कर दे, तो महल में अंधेरा छा जाता है। दूसरे महल में हर कमरे में छोटी-छोटी बिजली की लाइटें हैं जो उसके केंद्रीय प्रकाश से जुड़ी नहीं हैं। अगर महल का मालिक केंद्रीय लाइट बंद कर दे, तो बाकी कमरे रोशन रहते हैं। इससे महल के निवासी अपना काम कर पाते हैं और चोर भी नहीं आते।

हे आत्मा! पहला महल मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करता है। हमारे पैगम्बर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मुसलमानों के दिल में एक बड़ा केंद्रीय प्रकाश है। अगर वे उन्हें भूल जाते हैं या उन्हें अपने दिल से निकाल देते हैं, तो वे किसी अन्य पैगम्बर पर विश्वास करने में असमर्थ होंगे। इसके अलावा, उनकी आत्मा में किसी भी तरह की पूर्णता के लिए कोई जगह नहीं होगी। वे अपने प्रभु को नहीं पहचान पाएंगे, उनकी सभी आंतरिक इंद्रियाँ और क्षमताएँ अंधकार में रह जाएँगी, और उनके दिल बर्बाद हो जाएँगे और निराशा और उदासी से घिर जाएँगे। परिणामी शून्यता को भरने और सांत्वना पाने के लिए क्या मिल पाएगा?

ईसाई और यहूदी दूसरे महल की तरह हैं। भले ही वे पैगंबर की रोशनी से रोशन न हों, लेकिन वे उस "रोशनी" से काम चला सकते हैं जो उन्हें लगता है कि उनके पास है। सृष्टिकर्ता और मूसा या यीशु (उन पर शांति हो) में उनका विश्वास अभी भी किसी तरह की नैतिक पूर्णता का साधन हो सकता है।

ऐ दुष्ट आत्मा! तू कभी पशु जैसा नहीं हो सकता, क्योंकि तेरी बुद्धि तुझे भूतकाल के दुखों और भविष्य की चिंताओं से लगातार परेशान करती रहती है। यह एक सुख को हज़ार दुखों में मिला देती है। लेकिन पशु बिना किसी कष्ट के आनंद लेता है। इसलिए अगर तू पशु जैसा जीवन जीना चाहता है, तो पहले अपनी बुद्धि को त्याग दे और फिर पशु बन जा। और ईश्वर की इस चेतावनी पर भी ध्यान दे: वे मवेशियों की तरह हैं, बल्कि और भी भटके हुए (और मार्गदर्शन की ज़रूरत वाले) हैं (7:179)।

पाँचवाँ फल: हे आत्मा! चूँकि हम सृष्टि के वृक्ष के फल हैं, इसलिए हम सबसे व्यापक प्राणी हैं और सभी सृष्टि से जुड़े हुए हैं। हमारे भीतर एक हृदय है जो फल के बीज की तरह ही वह केंद्र है जिसमें सभी भाग समाप्त होते हैं और एक साथ जुड़ते हैं। हम नश्वर हैं और बहुलता की दुनिया की ओर झुके हुए हैं। लेकिन ईश्वर की आराधना एक ऐसी एकता की रेखा है जो हमें नश्वरता से स्थायित्व की ओर, सृजित से सृष्टिकर्ता की ओर और बहुलता से एकता की ओर ले जाती है। यह शुरुआत और अंत के बीच एक संधि बिंदु भी है।

यदि बीज वाला फल पेड़ के नीचे बैठे लोगों को देखता है और अपनी सुंदरता पर गर्व करते हुए उनके हाथों में गिर जाता है या लापरवाही से पेड़ से कूद जाता है, तो वह जल्दी ही नष्ट हो जाता है। हालाँकि, यदि वह अपने आधार के बारे में लापरवाह नहीं है,

इसका बीज (जिसमें पेड़ का पूरा जीवन समाहित है) पेड़ को उसके अर्थ और जीवन को बनाए रखने में सक्षम बनाएगा। यह उसे शाश्वत जीवन में एक व्यापक वास्तविकता प्राप्त करने में भी सक्षम बनाता है।

इसी तरह, अगर आप चीज़ों की बहुलता में डूबे हुए हैं और दुनिया के प्यार में मदहोश होकर नश्वर लोगों की मुस्कुराहटों से भ्रमित होकर खुद को उनकी बाहों में छोड़ देते हैं, तो आप निश्चित रूप से बहुत नुकसान उठाएँगे और एक क्षणिक जीवन के बाद खुद को अनंत काल के अंधेरे में पाएँगे। यह आपकी आध्यात्मिक मृत्यु भी लाएगा। लेकिन अगर आप अपने दिल के कान से कुरान से ईमान की शिक्षाओं को सुनते हैं और अपने होश में आकर एकता की ओर मुड़ते हैं, तो आप ईश्वर की उपासना और सेवा के माध्यम से पूर्णता के शिखर तक पहुँच पाएंगे और शाश्वत अस्तित्व प्राप्त कर पाएंगे।

हे आत्मा! चूँकि यह वास्तविकता है और चूँकि तुम इब्राहीम की जाति से हो, इसलिए जैसा उसने कहा था वैसा ही कहो: “मैं उन लोगों से प्रेम नहीं करता जो अस्त होते हैं।” अपना मुख अनन्त प्रियतम की ओर मोड़ो, और निम्नलिखित पंक्तियाँ कहते हुए रोओ।

(यहां शामिल की जाने वाली आयतें दूसरे अध्याय में शामिल की गई हैं)
सत्रहवें शब्द का स्टेशन, और यहां दोहराया नहीं गया है।)

पच्चीसवाँ शब्द

कुरान की चमत्कारिकता या अद्वितीयता

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

तीसरी किरण की दूसरी चमक:
कुरान की सदैव ताज़गी

यह क़ुरान की ताज़गी से संबंधित है , जिसे बनाए रखा गया है यदि इसे हर युग में नए सिरे से प्रकट किया जाए। समय या स्थान और समझ के स्तर की परवाह किए बिना सभी मनुष्यों को संबोधित करने वाले एक शाश्वत प्रवचन के रूप में, इसमें कभी न मिटने वाली ताज़गी होनी चाहिए - और है भी।

कुरान प्रत्येक नई पीढ़ी को यह एहसास दिलाता है कि हर कोई इसे अपने ऊपर प्रकट हुआ हुआ मानता है और उसी से निर्देश प्राप्त करता है। मानवीय शब्द और कानून पुराने हो जाते हैं और इसलिए उन्हें संशोधित या बदलने की आवश्यकता होती है। लेकिन कुरान के कानून और सिद्धांत इतने स्थापित और स्थिर हैं, मानव स्वभाव और सृष्टि के अपरिवर्तनीय नियमों के साथ इतने सुसंगत हैं कि समय के बीतने का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके बजाय, यह कुरान की सच्चाई, वैधता और शक्ति को और भी स्पष्ट रूप से दर्शाता है! खास तौर पर इस बीसवीं सदी के लोग, जिनमें खास तौर पर इसके किताब वाले लोग शामिल हैं,16 जो किसी भी पूर्ववर्ती लोगों की आत्मनिर्भरता से अधिक खुद पर भरोसा करते हैं और कुरान की पुकार पर अपने कान बंद कर लेते हैं, उन्हें कुरान की मार्गदर्शन की पुकार की सबसे अधिक आवश्यकता है, जो इस प्रकार शुरू होती है: ऐ किताब वाले लोग! चूँकि इस वाक्यांश का अर्थ "ऐ शिक्षा और शिक्षा के लोगों" भी है, ऐसा लगता है कि वे संदेश विशेष रूप से इसी सदी के लिए निर्देशित किए गए थे। अपनी पूरी ताकत और ताजगी के साथ, क़ुरआन पूरी दुनिया को अपने आह्वान से गुंजायमान कर देता है: कह दो: “ऐ किताब वालों! हमारे और तुम्हारे बीच एक समान बात पर आओ कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करें और न किसी को उसका साझी ठहराएँ और न हममें से कोई अल्लाह के अतिरिक्त किसी को अपना रब बनाए।” (3:64)

---

[16] यहूदी और ईसाई (ट्र.)

आधुनिक सभ्यता, जो मानवीय विचारों और शायद जिन्न की उपज है, ने कुरान से संघर्ष करना चुना है, जो आज तक कोई नहीं कर पाया। यह अपने आकर्षण और "जादू" के माध्यम से इसकी चमत्कारिकता का खंडन करने की कोशिश करता है। इस नए, भयानक प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ कुरान की चमत्कारिकता या अद्वितीयता को साबित करने के लिए, और इसकी चुनौती की पुष्टि करने के लिए: कहो: "अगर इंसान और जिन्न इस कुरान के समान कुछ बनाने के लिए एक साथ आ जाएं, तो वे कभी भी इसके समान कुछ नहीं बना पाएंगे, भले ही वे एक दूसरे का समर्थन करते हों" (17:88), मैं आधुनिक सभ्यता के बुनियादी सिद्धांतों और नींव की तुलना कुरान के साथ करूंगा।

प्रथम, प्रथम वचन से लेकर इस पच्चीसवें वचन तक प्रस्तुत सभी तुलनाएं और मानदंड, तथा उनमें निहित सत्य और आयतें जिन पर वे आधारित हैं, वे कुरान की चमत्कारिकता और आधुनिक सभ्यता पर उसकी निर्विवाद श्रेष्ठता को सिद्ध करते हैं।

दूसरा, जैसा कि द ट्वेल्थ वर्ड में दृढ़तापूर्वक तर्क दिया गया है: अपने दर्शन के कारण, आधुनिक सभ्यता सामाजिक जीवन में बल या शक्ति को आधार मानती है, और स्वार्थ की प्राप्ति उसका लक्ष्य है। यह मानती है कि जीवन का सिद्धांत संघर्ष है। एक समुदाय और समुदायों के सदस्यों के बीच एकजुटता का बंधन जाति और आक्रामक राष्ट्रवाद है; और इसका अंतिम लक्ष्य शारीरिक इच्छाओं की संतुष्टि और मानवीय आवश्यकताओं की निरंतर वृद्धि है। हालाँकि, बल आक्रामकता को बुलाता है, स्वार्थ की तलाश भौतिक संसाधनों के लिए लड़ाई का कारण बनती है, जो सभी इच्छाओं की संतुष्टि के लिए पर्याप्त नहीं है; और संघर्ष कलह लाता है। नस्लवाद दूसरों को निगलकर पोषण करता है, जिससे आक्रामकता का मार्ग प्रशस्त होता है। आधुनिक सभ्यता के इन सिद्धांतों के कारण ही अपने सभी सकारात्मक पहलुओं के बावजूद, यह मानवता के केवल बीस प्रतिशत लोगों को किसी प्रकार की सतही खुशी प्रदान करने में सक्षम है और अस्सी प्रतिशत को संकट और गरीबी में डाल दिया है।

जहाँ तक कुरान की बुद्धि का सवाल है, वह सामाजिक जीवन में शक्ति को नहीं, बल्कि अधिकार को आधार मानता है। इसका लक्ष्य सद्गुण और ईश्वर की स्वीकृति है, न कि स्वार्थ की पूर्ति। इसका जीवन सिद्धांत संघर्ष नहीं, बल्कि आपसी सहयोग है।

यह केवल धर्म, पेशे और देश के सामुदायिक बंधनों को स्वीकार करता है। इसका अंतिम उद्देश्य शारीरिक इच्छाओं को नियंत्रित करना और आत्मा को उत्कृष्ट मामलों के लिए प्रेरित करना है, हमारी उच्च भावनाओं को संतुष्ट करना ताकि हम मानवीय पूर्णता और सच्ची मानवता के लिए प्रयास करें। सही एकता की मांग करता है, गुण एकजुटता लाते हैं, और पारस्परिक सहायता का मतलब है एक दूसरे की मदद करने के लिए तत्पर होना।

धर्म भाईचारा, बहनचारा और सामंजस्य सुनिश्चित करता है। अपनी शारीरिक आत्मा और इच्छाओं को नियंत्रित करना और आत्मा को पूर्णता की ओर प्रेरित करना इस दुनिया और अगली दुनिया में खुशी लाता है।

इस प्रकार, पूर्ववर्ती ईश्वरीय धर्मों और विशेष रूप से कुरान से उधार लिए गए वचनों के बावजूद, जो इसके सुखद पहलुओं के लिए उत्तरदायी हैं, आधुनिक सभ्यता कुरान का कोई व्यवहार्य विकल्प प्रस्तुत नहीं कर सकती है।

तीसरा, मैं कुरान के कई विषयों और आदेशों के कुछ उदाहरण दूंगा। चूंकि इसके नियम और सिद्धांत समय और स्थान से परे हैं, इसलिए वे अप्रचलित नहीं होते; वे हमेशा नए और मजबूत होते हैं। उदाहरण के लिए, अपनी सभी धर्मार्थ नींव, बौद्धिक और नैतिक प्रशिक्षण के संस्थानों और कठोर अनुशासन और कानूनों और विनियमों के बावजूद, आधुनिक सभ्यता निम्नलिखित दो मामलों में भी बुद्धिमान कुरान का मुकाबला करने में असमर्थ रही है और इससे पराजित हुई है:

पहली तुलना: नमाज़ का फर्ज अदा करो और ज़कात अदा करो (2:43); और: ईश्वर ने व्यापार को वैध और ब्याज और सूद को अवैध ठहराया है (2:275)। जैसा कि मेरे इशारतुल-एजाज़ (कुरान के चमत्कारों के संकेत) में बताया गया है, जैसे सभी क्रांतियों और भ्रष्टाचार की उत्पत्ति एक ही मुहावरा है, वैसे ही सभी बुराइयों और नैतिक असफलताओं का कारण और स्रोत भी एक ही मुहावरा है: पहला है: “मैं भरा हुआ हूँ, इसलिए अगर दूसरे लोग भूख से मर जाएँ तो मुझे क्या फ़र्क पड़ता है?” और दूसरा: “तुम काम करते हो ताकि मैं खा सकूँ।”

शांतिपूर्ण सामाजिक जीवन अभिजात वर्ग (अमीर) और आम (गरीब) लोगों के बीच संतुलन पर निर्भर करता है। यह संतुलन पूर्व की देखभाल और करुणा और बाद के सम्मान और अनुपालन पर आधारित है। पहले दृष्टिकोण की अनदेखी करने से अमीर गलत काम, हड़पने, अनैतिकता और निर्दयता की ओर बढ़ते हैं; दूसरे दृष्टिकोण की अनदेखी करने से गरीब नफरत, द्वेष, ईर्ष्या और अमीरों के साथ संघर्ष की ओर बढ़ते हैं। चूंकि इस संघर्ष ने पिछली दो या तीन शताब्दियों से सामाजिक शांति को नष्ट कर दिया है, इसलिए इसने श्रम और पूंजी के बीच संघर्ष के कारण यूरोप में सामाजिक उथल-पुथल भी पैदा की है।

अपनी सभी धर्मार्थ संस्थाओं, नैतिक प्रशिक्षण संस्थाओं, तथा कठोर कानूनों और नियमों के बावजूद, आधुनिक सभ्यता न तो इन दो सामाजिक वर्गों में सामंजस्य स्थापित कर पाई है, न ही मानव जीवन के इन दो गंभीर घावों को भर पाई है।

कुरान, हालांकि, पहले दृष्टिकोण को मिटा देता है और ज़कात के माध्यम से इसके घावों को भर देता है, और ब्याज और सूदखोरी को अवैध घोषित करके दूसरे को मिटा देता है। ऊपर वर्णित कुरान की आयत दुनिया के दरवाजे पर खड़ी है और ब्याज और सूदखोरी से कहती है: "तुम्हारा प्रवेश वर्जित है!" यह मानवता को आदेश देता है, "यदि तुम झगड़े का दरवाजा बंद करना चाहते हो, तो ब्याज और सूदखोरी का दरवाजा बंद करो," और अपने छात्रों को आदेश देता है कि वे इससे प्रवेश न करें।

दूसरी तुलना: आधुनिक सभ्यता बहुविवाह को नासमझी और सामाजिक जीवन के लिए नुकसानदेह मानती है। वास्तव में, भले ही विवाह का उद्देश्य यौन संतुष्टि हो, लेकिन बहुविवाह इसे प्राप्त करने का एक वैध तरीका होगा। लेकिन

जैसा कि जानवरों और पौधों में भी देखा गया है, यौन संबंधों का मूल उद्देश्य और बुद्धिमत्ता प्रजनन है। परिणामी आनंद इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए ईश्वरीय दया द्वारा निर्धारित एक छोटा सा भुगतान है। इस प्रकार, चूंकि विवाह प्रजनन और प्रजाति के स्थायित्व के लिए है, इसलिए साल में अधिकतम एक बार बच्चे को जन्म देने में सक्षम होना, केवल आधे महीने के दौरान गर्भवती होना और पचास के आसपास रजोनिवृत्ति में प्रवेश करना, एक महिला आमतौर पर एक पुरुष के लिए अपर्याप्त होती है, जो कभी-कभी सौ साल की उम्र तक भी गर्भवती हो सकती है। यही कारण है कि, ज्यादातर मामलों में, आधुनिक सभ्यता वेश्यावृत्ति के कई घरों को बर्दाश्त करने के लिए मजबूर हुई है।

तीसरी तुलना: आधुनिक सभ्यता कुरान की इस बात की आलोचना करती है कि औरत को विरासत का एक तिहाई हिस्सा (भाई के हिस्से का आधा) दिया जाता है जबकि मर्द को दो तिहाई दिया जाता है। हालांकि, सामान्य नियम और कानून बनाते समय सामान्य परिस्थितियों पर विचार किया जाता है। इस मामले में, औरत को आम तौर पर अपना भरण-पोषण करने के लिए एक मर्द मिल जाता है, जबकि मर्द को आम तौर पर ऐसे मर्द के साथ रहना पड़ता है जिसकी उसे देखभाल करनी होती है। इसे देखते हुए, औरत के पति को विरासत में उसके और उसके भाई के हिस्से के बीच का अंतर पूरा करना होता है। उसका

दूसरी ओर, भाई अपनी विरासत का आधा हिस्सा अपनी पत्नी [और बच्चों] पर खर्च करेगा, जो उसकी बहन के हिस्से के बराबर होगा। यही सच्चा न्याय है।

चौथी तुलना: कुरान मूर्तिपूजा को सख्ती से प्रतिबंधित करता है और चित्रों की पूजा की निंदा करता है, जो मूर्तिपूजा की नकल हो सकती है।

हालाँकि, आधुनिक सभ्यता मूर्तिकला और जीवित प्राणियों के चित्रण को, जिसकी कुरान निंदा करता है, अपने गुणों में से एक मानती है। छाया के साथ या बिना छाया के रूप (जीवित प्राणियों की मूर्तियाँ और चित्र) या तो एक पालतू जानवर की तरह अत्याचार (पत्थर में दर्शाया गया अत्याचार), मूर्त दिखावा या ठोस जुनून है, जो सभी वासना को उत्तेजित करते हैं और लोगों को अत्याचार, दिखावा और मनमानी करने के लिए प्रेरित करते हैं।

करुणा के कारण, कुरान महिलाओं को शालीनता का पर्दा पहनने का आदेश देता है ताकि उनके प्रति सम्मान बना रहे और उन्हें कम इच्छा की वस्तु में बदलने या वासना को उत्तेजित करने के लिए इस्तेमाल होने से रोका जा सके। हालाँकि, आधुनिक सभ्यता ने महिलाओं को उनके घरों से बाहर निकाल दिया है, उनके पर्दों को फाड़ दिया है और मानवता को भ्रष्टाचार की ओर ले गया है। पारिवारिक जीवन पुरुषों और महिलाओं के बीच आपसी प्रेम और सम्मान पर आधारित है, लेकिन अभद्र पोशाक ने सच्चे प्रेम और सम्मान को नष्ट कर दिया है और पारिवारिक जीवन को विषाक्त कर दिया है। मूर्तियाँ और चित्र, विशेष रूप से अश्लील, इस नैतिक भ्रष्टाचार और आध्यात्मिक पतन में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। जिस तरह एक सुंदर महिला की लाश को वासना और इच्छा के साथ देखना नैतिकता को नष्ट कर देता है, जिस पर दया की आवश्यकता होती है, उसी तरह कामुक-

जीवित स्त्रियों के चित्रों को, जो छोटी-छोटी लाशों के समान हैं, देखकर मनुष्य की उत्कृष्ट भावनाओं को परेशानी, भटकाव, झकझोरना और नष्ट कर देता है।

निष्कर्ष के तौर पर, इस दुनिया में सभी लोगों के लिए खुशी सुनिश्चित करने के अलावा, कुरान की आज्ञाएँ उनकी शाश्वत खुशी की सेवा करती हैं। आप अन्य मामलों की तुलना उल्लिखित मामलों से कर सकते हैं।

जिस तरह आधुनिक सभ्यता सामाजिक जीवन और मानवता के लिए कुरान के नियमों और सिद्धांतों के सामने पराजित हो गई है, और कुरान की चमत्कारी सामग्री के सामने दिवालिया हो गई है, उसी तरह अब तक लिखे गए शब्द, मुख्य रूप से ग्यारहवें और बारहवें, यह दर्शाते हैं कि यूरोपीय दर्शन और वैज्ञानिकता, उस सभ्यता की आत्मा, कुरान की बुद्धिमत्ता के सामने असहाय हैं। इसके अलावा, जब कुरान की साहित्यिक खूबियों की तुलना की जाती है - जिसकी तुलना अस्थायी अलगाव से उत्पन्न एक प्रेमी के उत्थान के गीतों या अपने दर्शकों को जीत और महान बलिदानों के लिए प्रोत्साहित करने वाले वीर महाकाव्यों से की जा सकती है - आधुनिक सभ्यता का साहित्य और बयानबाजी एक अनाथ की हताश, शोकग्रस्त चीख या शराबी की आवाज के रूप में दिखाई देती है।

साहित्य और बयानबाजी की शैलियाँ दुख या खुशी को जन्म देती हैं। दुख दो तरह का होता है: यह या तो अकेलेपन की भावना और किसी भी सुरक्षा और सहारे की कमी से या प्रिय से अलग होने से होता है। पहला निराशा है और आधुनिक गुमराह प्रकृतिवादी और लापरवाह सभ्यता द्वारा उत्पन्न होता है।

दूसरा उदात्त और उत्साहवर्धक है, तथा पुनर्मिलन की आशा और उत्सुकता जगाता है। यह वह आशा है जो मार्गदर्शक, प्रकाश फैलाने वाले कुरान द्वारा दी गई है।

आनंद भी दो प्रकार का होता है। पहला आत्मा को पशुवत इच्छाओं (तथाकथित "ललित" कला, नाटक और सिनेमा आदि) के लिए उकसाता है। दूसरा शारीरिक आत्मा को नियंत्रित करता है और (शिष्ट, मासूम तरीके से) मानव हृदय, आत्मा, बुद्धि और सभी आंतरिक इंद्रियों और क्षमताओं को उच्च चीजों और मूल, शाश्वत निवास और पहले से ही चले गए दोस्तों के साथ पुनर्मिलन के लिए प्रेरित करता है।

कुरान की चमत्कारिक व्याख्या स्वर्ग, शाश्वत खुशी और सर्वशक्तिमान ईश्वर के दर्शन तक पहुंचने की उत्सुकता जगाकर इस खुशी को प्रोत्साहित करती है।

इस प्रकार इस आयत में निहित गहन अर्थ और महान सत्य: कहो: "यदि मनुष्य और जिन्न इस कुरान के समान कुछ बनाने के लिए एक साथ आ जाएं, तो वे कभी भी इसके समान कुछ नहीं बना पाएंगे, भले ही वे एक दूसरे का समर्थन करें" (17:88), जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं, यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। यह शुद्ध सत्य और वास्तविकता है, जिसे इस्लाम के लंबे इतिहास ने साबित किया है। यहाँ निहित चुनौती के दो मुख्य पहलू हैं। एक यह कि कोई भी मानव या जिन्न का काम कुरान की शैली, वाक्पटुता, बयानबाजी, शब्द-चयन, व्यापकता, संक्षिप्तता के समान या बराबर नहीं हो सकता है।

न ही उनके सबसे सुंदर और वाक्पटु शब्द, जो उनके सबसे योग्य प्रतिनिधियों द्वारा एक खंड में व्यवस्थित किए गए हैं, कुरान के बराबर हो सकते हैं। दूसरा पहलू यह है कि सभी मानव और जिन्न सभ्यताएं, दर्शन, साहित्य और कानून, जो मानवता और जिन्न और यहां तक कि शैतानों के विचारों और प्रयासों के उत्पाद हैं, कुरान की आज्ञाओं, ज्ञान और वाक्पटुता के सामने मंद और असहाय हैं।

ग्यारहवीं किरण

विश्वास के कुछ फल

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

दसवें प्रकरण का परिशिष्ट:
विश्वास सारी उदासी और अकेलेपन को खुशी में बदल देता है

डेनिज़ली जेल से रिहा होने के बाद , मैं सबसे ऊपर बैठा था प्रसिद्ध होटल शेहिर के फ़्लोर पर। मेरे सामने के सुंदर बगीचों में चिनार के पेड़ों की पत्तियों, शाखाओं और तनों का सुंदर नृत्य, जिनमें से प्रत्येक हवा से छूए गए दरवेशों के घेरे की तरह एक उल्लासपूर्ण गति से नाच रहा था, मेरे दिल को पीड़ा पहुँचा रहा था, जो पहले से ही अपने भाइयों से अलग होने और खुद को अकेला पाकर दुखी था। अचानक मुझे पतझड़ और सर्दियों का ख्याल आया, और एक तरह की असावधानी ने मुझे जकड़ लिया। मुझे उन सुंदर, झूमते चिनार और खुश रहने वाले जीवों पर इतना दया आ गई कि मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। चूँकि वे मुझे उन मौतों और अलगावों की याद दिलाते थे जो ब्रह्मांडीय मुखौटे के अलंकृत पर्दे के नीचे छिपे हुए हैं, मृत्यु और अलगाव से भरी दुनिया का दुःख मुझे अपनी गिरफ़्त में ले गया और मुझे निचोड़ने लगा। लेकिन फिर मुहम्मद के सत्य का प्रकाश आया और उस दुःख को खुशी में बदल दिया। वास्तव में, मैं मुहम्मद साहब के व्यक्तित्व के प्रति हमेशा आभारी हूँ, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उस समय मुझे जो सहायता और सांत्वना मिली, उस प्रकाश की असीम कृपा का केवल एक उदाहरण मेरे लिए, सभी विश्वासियों और सभी के लिए था। यह इस प्रकार था: जिस असावधानी ने मुझे जकड़ लिया था, उसने मुझे दिखा दिया था कि ये

धन्य और नाजुक जीव केवल गर्मी के मौसम में ही उद्देश्यहीन और निष्फल जीवन में दिखाई देते हैं। उनकी हरकतें खुशी के कारण नहीं थीं; बल्कि वे मृत्यु, अलगाव और अस्तित्वहीनता की यात्रा के विचार से कांप रहे थे। यह दृष्टिकोण स्थायित्व के लिए मेरी भावुक इच्छा, सुंदरता के प्रति मेरे प्रेम और सभी प्राणियों और जीवित चीजों के प्रति मेरी करुणा के लिए बहुत हानिकारक था। इस तरह की सोच ने दुनिया को एक तरह के नर्क में बदल दिया और

मेरी बुद्धि को यातना के साधन में बदल दिया। लेकिन ठीक उसी समय, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मानवता के लिए एक उपहार के रूप में लाए गए प्रकाश ने पर्दा उठा दिया और दिखाया कि विलुप्त होने, गैर-अस्तित्व, शून्यता, व्यर्थता या अलगाव के बजाय, इन चिनार के पेड़ों के अस्तित्व में उनके पत्तों की संख्या जितनी ही अर्थ और उद्देश्य थे। इसके अलावा, यह पता चला कि उनके पास कई कर्तव्य थे और उनके जीवन ने कई परिणाम दिए, जैसे:

एक प्रकार का नाम सर्व-महान निर्माता के नाम से संबंधित है। उदाहरण के लिए, हर कोई एक इंजीनियर की सराहना करता है और उसे बधाई देता है जो एक असाधारण मशीन बनाता है। अपने कार्यों को ठीक से करने से, मशीन को बदले में अपने इंजीनियर को बधाई और सराहना करते हुए कहा जा सकता है। ब्रह्मांड में हर सृजित प्राणी एक ऐसी मशीन है और अपने निर्माता को बधाई और सराहना करता है।

चिनार के पेड़ों जैसी चीज़ों में ज्ञान का एक और उदाहरण यह है कि उनमें से प्रत्येक एक पाठ जैसा दिखता है, जिसका अध्ययन करने पर, सचेत जीवों को ईश्वर का ज्ञान मिलता है। इन जैसे प्राणियों के मन में अपने अर्थों को छोड़कर, और इन प्राणियों की यादों में अपने रूपों को छोड़कर, साथ ही साथ प्रतिनिधित्व की दुनिया या "आदर्श रूपों" और अदृश्य दुनिया के अभिलेखों की पट्टियों पर, वे भौतिक दुनिया को अदृश्य दुनिया के लिए छोड़ देते हैं। दूसरे शब्दों में, वे स्पष्ट अस्तित्व से वंचित हो जाते हैं और कई अस्तित्व प्राप्त करते हैं जो अर्थों, उनके पीछे छिपे ज्ञान और सचेत प्राणियों के ज्ञान और अदृश्य क्षेत्र से संबंधित होते हैं।

चूँकि ईश्वर का अस्तित्व है और उसका ज्ञान सभी चीज़ों को समाहित करता है, इसलिए निश्चित रूप से वास्तविकता में या किसी आस्तिक की दुनिया में गैर-अस्तित्व, शाश्वत विनाश या शून्यता जैसी कोई चीज़ नहीं हो सकती। हालाँकि, एक अविश्वासी की दुनिया गैर-अस्तित्व, अलगाव और विलुप्ति जैसी धारणाओं से भरी हुई है।
जैसा कि प्रसिद्ध कहावत है: "जिसके लिए ईश्वर है उसके लिए सब कुछ मौजूद है; जिसके लिए ईश्वर नहीं है उसके लिए कुछ भी मौजूद नहीं है।"

संक्षेप में, तो जिस तरह से विश्वास हमें मरने पर अनन्त दंड से बचाता है, उसी तरह यह हर किसी की विशेष दुनिया को अनन्त विलुप्ति और शून्यता के अंधकार से बचाता है। अविश्वास, विशेष रूप से ईश्वर का इनकार, व्यक्ति को और उसकी विशेष दुनिया को मृत्यु के भय से नष्ट कर देता है, उन्हें अंधेरे, नारकीय गड्ढों में डाल देता है और उनके जीवन के सुखों को दर्द में बदल देता है। जो लोग इस दुनिया को परलोक से ज़्यादा पसंद करते हैं, उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए।

उन्हें या तो इस दुष्कर समस्या का समाधान ढूंढना चाहिए या फिर विश्वास को स्वीकार कर लेना चाहिए, जिससे वे स्वयं को एक भयंकर शाश्वत हानि से बचा सकें।

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

छब्बीसवाँ शब्द

दैवीय भाग्य में विश्वास और
जिद्दी, अहंकारी आत्मा को चुप कराना

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

प्रश्न: यदि हम कुछ हद तक ईश्वरीय भाग्य से बंधे हैं यद्यपि यह हमारी स्वतंत्र इच्छा पर भी विचार करता है, क्या भाग्य में विश्वास हृदय और आत्मा के लिए बोझ नहीं है, जो स्वतंत्र गतिविधि और आत्म-पूर्णता के लिए बहुत इच्छुक हैं?

उत्तर: बिलकुल नहीं! बल्कि, यह आत्मा को राहत, सुरक्षा और आराम प्रदान करता है। यदि हम भाग्य में विश्वास नहीं करते हैं, तो आत्मा को एक भ्रामक, अस्थायी और बहुत सीमित स्वतंत्रता के लिए पृथ्वी जितना भारी बोझ सहना पड़ता है। क्योंकि हम पूरे ब्रह्मांड से जुड़े हुए हैं, और असीमित इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को पालते हैं, जिनमें से किसी को भी हम अपने दम पर पूरा नहीं कर सकते। आखिरकार, हम असहनीय परेशानी और पीड़ा के साथ अकेले रह जाएंगे। भाग्य में विश्वास भाग्य के जहाज पर यह बोझ डालता है, और हृदय और आत्मा को पूर्ण सहजता और स्वतंत्रता के साथ अपनी पूर्णता के लिए काम करने देता है। यह केवल शारीरिक आत्मा की भ्रामक स्वतंत्रता को छीन लेता है और हम पर उसके अत्याचारी नियंत्रण को तोड़ देता है। भाग्य में विश्वास हमें वर्णन से परे आनंद और खुशी देता है।

इस तुलना पर विचार करें: दो लोग एक शानदार महल में प्रवेश करते हैं। उनमें से एक राजा को नहीं पहचानता और चोरी और हड़प-हड़प कर वहाँ रहने की कोशिश करता है।
हालाँकि, उसे महल और उसके निवासियों को नियंत्रित करना, बगीचे की देखभाल करना, राजा के मामलों को आवश्यक गणना और प्रबंधन के साथ पूरा करना, मशीनों को चलाना और जानवरों को खिलाना मुश्किल लगता है। नतीजतन, यह "स्वर्ग" उसके लिए "नरक" में बदल जाता है। अंत में, उसे अपने दोषपूर्ण प्रबंधन और भ्रष्टाचार के कारण कैद कर लिया जाता है। दूसरा व्यक्ति राजा को पहचानता है और उसका मेहमान होने के बारे में जानता है। वह समझता है और मानता है कि महल और बगीचे के मामले राजा के शासन में चलते हैं और

अधिकार। यह समझते हुए कि राजा महल के शासन की पूरी जिम्मेदारी लेता है, वह वहाँ रहने के सुखों का आनंद लेता है और हस्तक्षेप नहीं करता। वह कुछ ऐसी चीज़ों को अनदेखा कर देता है जो अप्रिय लगती हैं, राजा की करुणा और उसके प्रशासन के न्याय और बुद्धि पर भरोसा करता है। परिणामस्वरूप, वह एक संतुष्ट और सुखद जीवन जीता है। इस तुलना पर विचार करें और कहावत को समझें: जो कोई भी भाग्य में विश्वास करता है वह चिंता से मुक्त है।

चौथा विषय

प्रश्न: पहला विषय यह साबित करता है कि जो कुछ भी भाग्य द्वारा निर्धारित होता है वह अच्छा होता है, कि दिखने में बुरे कर्म भी वास्तव में अच्छे होते हैं, और कि बदसूरत चीजें अनिवार्य रूप से सुंदर होती हैं। लेकिन क्या इस दुनिया में झेली गई विपत्तियाँ और क्लेश इसका खंडन नहीं करते हैं?

उत्तर: हे मेरी सांसारिक आत्मा और मेरे मित्र, तुम अस्तित्व के साथ अपने मजबूत संबंधों और प्राणियों के प्रति स्नेह के कारण पीड़ा महसूस करते हो।

अस्तित्व पूरी तरह से अच्छा है, क्योंकि यह हर सौंदर्य और पूर्णता उत्पन्न करता है; अस्तित्वहीनता [जो ब्लैक होल की तरह हर अच्छाई को अवशोषित करती है] पूरी तरह से बुराई है, क्योंकि सभी पाप और दुर्भाग्य उसी से उत्पन्न होते हैं। इसे देखते हुए, जिस चीज में अस्तित्वहीनता का संकेत है, उसमें बुराई का तत्व शामिल है। इसलिए, जीवन, अस्तित्व का सबसे शानदार प्रकाश, विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने पर मजबूत हो जाता है। यह विरोधाभासी घटनाओं और घटनाओं के माध्यम से शुद्ध और परिपूर्ण होता है, और विभिन्न गुणों को ग्रहण करके वांछित परिणाम उत्पन्न करता है।

इस प्रकार यह जीवनदाता के नामों के प्रभाव की गवाही देता है। यह इस सूक्ष्म वास्तविकता के कारण है कि जीवित प्राणी कई अवस्थाओं से गुजरते हैं और दर्द, क्लेश और कठिनाई का अनुभव करते हैं, जिसके माध्यम से उनके जीवन में अस्तित्व की रोशनी लगातार नवीनीकृत होती है, और अस्तित्वहीनता का अंधेरा दूर होता है और उनका जीवन शुद्ध होता है। गुणवत्ता और स्थितियों के रूप में, आलस्य, जड़ता और एकरसता गैर-अस्तित्व के पहलू हैं। एकरसता सबसे बड़े आनंद को भी शून्य कर देती है।

संक्षेप में, चूँकि जीवन ईश्वर के सर्व-सुंदर नामों के प्रभाव को प्रदर्शित करता है, इसलिए इसमें होने वाली हर चीज़ सुंदर है। इस पर विचार करें: एक बहुत अमीर और असीम रूप से कुशल कपड़े डिजाइनर मजदूरी के बदले में अपनी कलाकृतियों को प्रदर्शित करने के लिए एक साधारण मॉडल का उपयोग करता है। वह मॉडल से एक गहनों से जड़ा हुआ और कलात्मक ढंग से तैयार किया गया परिधान पहनने की मांग करता है जो उसके काम की कला और उसकी अमूल्य संपत्ति को दर्शाता है। वह परिधान को तब तक संशोधित करता रहता है जब तक मॉडल इसे पहनती है। क्या मॉडल को यह कहने का कोई अधिकार है: "झुकने और खड़े होने के आपके आदेश मुझे परेशान कर रहे हैं। इस परिधान को काटना और छोटा करना, जो इसे और भी सुंदर बनाता है

मुझे और अधिक सुंदर दिखाने से मेरी सुंदरता खराब हो जाती है।" क्या मॉडल डिजाइनर पर उसके साथ निर्दयतापूर्वक और अनुचित व्यवहार करने का आरोप लगा सकता है?

इसी प्रकार, अपने सर्वसुंदर नामों के प्रभाव को प्रदर्शित करने के लिए, महिमा के निर्माता, अद्वितीय सर्व-उत्पत्तिकर्ता, कई परिस्थितियों में जीवों पर पहनाए गए अस्तित्व के वस्त्र को बदलते हैं, जो इंद्रियों, तर्क, बुद्धि और हृदय से सुसज्जित हैं। जो परिस्थितियाँ विपत्तिपूर्ण और दर्दनाक लगती हैं, वे वास्तव में ज्ञान की किरणों के भीतर दिव्य दया की किरणें हैं और सूक्ष्म सुंदरताएँ रखती हैं। वे दिव्य सर्वसुंदर नामों के कार्यों और प्रभावों को दर्शाती हैं।

निष्कर्ष

इसमें चार पैराग्राफ हैं, जिन्होंने ओल्ड सईद की जिद्दी, घमंडी और दंभी आत्मा को चुप करा दिया और उसे आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर दिया।

पहला पैराग्राफ: चूँकि चीज़ें मौजूद हैं और उन्हें कुशलता से बनाया गया है, इसलिए एक सर्वोच्च निर्माता का अस्तित्व होना चाहिए। अगर हर चीज़ का अस्तित्व एक ही सत्ता को नहीं दिया जाता, तो एक भी चीज़ का अस्तित्व उतना ही मुश्किल हो जाएगा जितना कि सभी चीज़ों का अस्तित्व। लेकिन अगर हर चीज़ को एक ही सत्ता को दिया जाता है, तो सभी चीज़ों का निर्माण एक चीज़ के निर्माण जितना ही आसान हो जाता है। चूँकि एक ही सत्ता ने धरती और आकाश को बनाया है, तो निश्चित रूप से वह सर्वज्ञ और कुशल निर्माता दूसरों को जीवित प्राणियों को बनाने और उनका प्रबंधन करने की अनुमति देकर अव्यवस्था पैदा नहीं होने देगा, जो स्वर्ग और धरती के फल और उद्देश्य हैं, और इसलिए वह सृष्टि के लिए अपने दिव्य उद्देश्य का मज़ाक नहीं उड़ाएगा। वह निश्चित रूप से दूसरों को उनकी पूजा और धन्यवाद नहीं देगा।

दूसरा पैराग्राफ: हे मेरे अभिमानी शारीरिक आत्मा! तुम अंगूर की बेल की तरह हो। अंगूर के गुच्छों को बेल ने नहीं जोड़ा है; किसी और ने जोड़ा है, इसलिए घमंड मत करो।

तीसरा पैराग्राफ: हे मेरी दिखावटी शारीरिक आत्मा! ईश्वर के धर्म के प्रति अपनी सेवाओं पर गर्व मत करो। जैसा कि एक पैगंबरी परंपरा में कहा गया है, ईश्वर एक भ्रष्ट व्यक्ति के माध्यम से इस धर्म को मजबूत कर सकता है। तुम पवित्र नहीं हो, इसलिए खुद को उस भ्रष्ट व्यक्ति के रूप में मानो। अपनी सेवा और पूजा को ईश्वर के पिछले उपकारों के लिए धन्यवाद के रूप में मानकर अपने आप को आत्म-प्रशंसा और गर्व से शुद्ध करो, जो तुम्हारी मानवता द्वारा अपेक्षित कर्तव्य है और ईश्वर की कलाकृति होने का परिणाम है।

चौथा परिच्छेद: यदि आप सत्य और सच्ची बुद्धि का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, तो ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करें। क्योंकि सृष्टि के सभी सत्य और वास्तविकताएँ परम सत्य और सदा-निरंतर दिव्य नाम की किरणों और उनके नामों और गुणों की अभिव्यक्तियों में निहित हैं।

प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक अस्तित्व की वास्तविकता, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक, वास्तविक हो या आकस्मिक, उसके एक नाम के प्रकाश में उत्पन्न होती है। अन्यथा वे बिना किसी ठोस वास्तविकता और सत्य के केवल रूप मात्र रह जाएंगे।

हे मेरे सांसारिक आत्मा! यदि तुम इस क्षणभंगुर सांसारिक जीवन से आसक्त हो और मृत्यु से भागने का प्रयास करते हो, तो जान लो कि जीवन वर्तमान क्षण है। अतीत और उसमें जो कुछ था, वह बीत चुका है, और भविष्य और उसमें जो कुछ होगा, वह अभी भी अस्तित्वहीन है। इस प्रकार जिस भौतिक जीवन पर तुम निर्भर हो, वह क्षणिक अवधि का है। कुछ सत्य-ज्ञानी विद्वान तो यहाँ तक कहते हैं कि जीवन एक क्षण का है। इसी कारण से, कुछ संत मानते हैं कि संसार अपने आप में अस्तित्वहीन है। चूँकि यह वास्तविकता है, इसलिए भौतिक, सांसारिक जीवन को त्याग दो और हृदय, आत्मा और अंतरतम क्षमताओं के जीवन के स्तर पर उठो। देखो कि उनके पास जीवन का कितना व्यापक क्षेत्र है। अतीत और भविष्य, जो तुम्हारे लिए मृत हैं, उनके लिए जीवित हैं; वे अस्तित्ववान और जीवन से भरे हुए हैं। यह देखते हुए, हे मेरे सांसारिक आत्मा, मेरे हृदय की तरह आँसू बहाओ, और चिल्लाओ और कहो:

मैं नश्वर हूं, इसलिए मुझे नश्वरता नहीं चाहिए।
मैं नपुंसक हूं, इसलिए मैं नपुंसक की इच्छा नहीं करता।
मैंने अपनी आत्मा को दयालु भगवान को सौंप दिया है, अतः अब मुझे किसी अन्य की इच्छा नहीं है।
मैं केवल उसी को चाहता हूं जो सदैव मेरा मित्र बना रहे।
मैं तो एक तुच्छ कण हूँ, परन्तु मैं एक चिरस्थायी सूर्य की कामना करता हूँ।
मैं सारतः कुछ भी नहीं हूं, लेकिन मैं संपूर्ण सृष्टि की कामना करता हूं।

तीसवाँ वचन

अहंकार या मानव स्वत्व का प्रदर्शन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हमने अमानत को आकाशों और धरती और पहाड़ों के समक्ष प्रस्तुत किया, किन्तु वे उसे उठाने से कतराने लगे और उससे डरने लगे, किन्तु मनुष्य ने उसे उठा लिया। निश्चय ही मनुष्य बहुत बड़ा अन्याय करने और अज्ञानता से काम करने में प्रवृत्त है। (33:72)

W इस विशाल खजाने से एक रत्न की ओर इशारा करें

मानव अस्तित्व उस विश्वास का एक पहलू है जिसे ग्रहण करने से आकाश, पृथ्वी और पर्वत भी कतराते हैं।

आदम के समय से लेकर आज तक, यह ज़क़्क़ुम के भयानक वृक्ष और तूबा के शानदार वृक्ष का बीज रहा है, जिसने मानव जाति की दुनिया भर में शाखाएँ फैलाई हैं। इस महान सत्य पर कुछ प्रकाश डालने से पहले, हम निम्नलिखित परिचयात्मक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

आत्म-तत्व ही दिव्य नामों की कुंजी है, जो गुप्त खजाने हैं।

रहस्य और अद्भुत ताबीज होने के कारण, यह सृष्टि के रहस्य की कुंजी भी है। जब इसका सार ज्ञात हो जाता है, तो इसका रहस्य सुलझ जाता है, और बदले में, सृष्टि के रहस्य और आवश्यक अस्तित्व के खजाने का खुलासा होता है। मैंने अपने अरबी ग्रंथ, कुरान के मार्गदर्शन की हवाओं से एक झोंका (अल-मथनवी अन-नूरी में शामिल) में इस पर चर्चा की है, इस प्रकार:

सृष्टि की कुंजी हमारे हाथ में है और हमारी स्वयं की पहचान से जुड़ी हुई है। सृष्टि के द्वार खुले हुए प्रतीत होते हैं, लेकिन वास्तव में बंद हैं। सर्वशक्तिमान ने हमें एक कुंजी (अहंकार या स्वयं की पहचान) सौंपी है जो सृष्टि के द्वार खोलेगी और ब्रह्मांड के निर्माता के छिपे हुए खजाने को उजागर करेगी। हालाँकि, स्वयं की पहचान अपने आप में एक कठिन रहस्य और पहेली है, लेकिन अगर इसकी वास्तविक प्रकृति और उद्देश्य को जान लिया जाए, तो स्वयं की पहचान और सृष्टि की पहचान दोनों ही रहस्य सुलझ जाएँगे।

सर्वज्ञ निर्माता ने प्रत्येक मनुष्य को आत्म-पहचान सौंपी है, जिसमें सुराग और नमूने हैं जो उसे अपने प्रभुत्व के गुणों और आवश्यक विशेषताओं के बारे में सच्चाई को पहचानने के लिए प्रेरित और सक्षम करते हैं। आत्म-पहचान तुलना का वह माप या साधन है जो प्रभुत्व के गुणों और दिव्यता की विशेषताओं को ज्ञात कराता है। तुलना के किसी माप या साधन का वास्तविक अस्तित्व होना आवश्यक नहीं है, क्योंकि इसका कल्पित या माना हुआ अस्तित्व एक माप के रूप में काम कर सकता है, ठीक वैसे ही जैसे ज्यामिति में काल्पनिक रेखाएँ।

प्रश्न: परमेश्वर ने हमारे स्वभाव को उसके गुणों और नामों को जानने का साधन क्यों बनाया?

उत्तर: एक निरपेक्ष और सर्वव्यापी इकाई की कोई सीमा या शर्तें नहीं होती हैं, और इसलिए इसे आकार नहीं दिया जा सकता है या बनाया नहीं जा सकता है; न ही इसे इस तरह से निर्धारित किया जा सकता है कि इसकी मूल प्रकृति को समझा जा सके। उदाहरण के लिए, अंधकार द्वारा अनिर्धारित एक अंतहीन प्रकाश को जाना या अनुभव नहीं किया जा सकता है। लेकिन जब भी अंधकार की एक वास्तविक या काल्पनिक सीमा रेखा खींची जाती है, तो वह निर्धारित और ज्ञात हो जाती है। उसी तरह, दिव्य गुण और नाम (जैसे, ज्ञान, शक्ति, बुद्धि और करुणा) निर्धारित नहीं किए जा सकते हैं, क्योंकि वे सर्वव्यापी हैं और उनकी कोई सीमा या समानता नहीं है। इसलिए वे जो अनिवार्य रूप से हैं उसे जाना या अनुभव नहीं किया जा सकता है। उन्हें ज्ञात होने के लिए एक काल्पनिक सीमा की आवश्यकता है।

हमारे मामले में, यह काल्पनिक सीमा हमारी आत्म-प्रकृति है। यह अपने भीतर एक काल्पनिक प्रभुत्व, शक्ति और ज्ञान की कल्पना करता है, और इसलिए एक सीमा रेखा निर्धारित करता है, सभी को शामिल करने वाले दिव्य गुणों की सीमा की परिकल्पना करता है, और कहता है: "यह मेरा है, और बाकी सब उसका है।" इस प्रकार आत्म-प्रकृति एक विभाजन बनाती है। इसमें निहित लघु मापों के माध्यम से, आत्म-प्रकृति धीरे-धीरे दिव्य गुणों और नामों की वास्तविक प्रकृति को समझने लगती है।

उदाहरण के लिए, अपने क्षेत्र में इस कल्पित आधिपत्य के माध्यम से, स्वत्व ब्रह्मांड में निर्माता के आधिपत्य को समझ सकता है। अपने स्वयं के स्पष्ट स्वामित्व के माध्यम से, यह अपने निर्माता के वास्तविक स्वामित्व को समझ सकता है, यह कहते हुए: "जैसा कि मैं इस घर का मालिक हूँ, निर्माता इस ब्रह्मांड का मालिक है।" अपने आंशिक ज्ञान के माध्यम से, स्वत्व उसके पूर्ण ज्ञान को समझने लगता है। अपनी दोषपूर्ण, अर्जित कला के माध्यम से, यह सर्व-महान निर्माता की अतुलनीय, मूल कला को समझ सकता है। यह कहता है: "मैंने इस घर का निर्माण और व्यवस्था की है, इसलिए इस ब्रह्मांड को बनाने और व्यवस्थित करने वाला कोई होना चाहिए।"

मानव अहं या आत्मत्व में हजारों अवस्थाएं, गुण और अनुभूतियां शामिल हैं, जो कुछ हद तक दिव्यता को प्रकट करती हैं और जानने योग्य बनाती हैं।

गुण और आवश्यक विशेषताएँ। दर्पण, माप, खोज के लिए एक उपकरण या एक अक्षर की तरह जिसका अपने आप में कोई अर्थ नहीं है लेकिन वह शब्द के अर्थ की सेवा करता है, आत्म-सम्मान मानव अस्तित्व की मोटी रस्सी से चेतना का एक धागा है, मानवता की आवश्यक प्रकृति की दिव्य बुनाई से एक महीन धागा है, मानव पहचान और चरित्र की पुस्तक से एक अलिफ17 है ।

उस अलिफ़ (मैं) के दो पहलू या चेहरे हैं। एक पहलू अच्छाई और अस्तित्व से संबंधित है और जो दिया जाता है उसे निष्क्रिय रूप से ग्रहण करता है; वह सृजन नहीं कर सकता। दूसरा पहलू या चेहरा बुराई से संबंधित है और अस्तित्वहीनता से उत्पन्न होता है। यहाँ आत्मत्व सक्रिय है। इसका वास्तविक स्वरूप संकेतात्मक है - एक अक्षर की तरह जिसका अपने आप में कोई अर्थ नहीं है - और यह अपने अलावा अन्य चीज़ों के अर्थ की ओर संकेत करता है। इसका आधिपत्य काल्पनिक और काल्पनिक है, और इसका अपना अस्तित्व इतना कमज़ोर और सारहीन है कि यह अपने आप में किसी चीज़ को सहन या सहारा नहीं दे सकता।

बल्कि, आत्मत्व एक तरह का पैमाना या माप है, जैसे थर्मामीटर या बैरोमीटर, जो चीज़ों की डिग्री और मात्रा को दर्शाता है। आवश्यक सत्ता के निरपेक्ष, सर्वव्यापी और असीम गुणों को इसके माध्यम से जाना जा सकता है।

जो लोग जानते हैं और महसूस करते हैं कि यह उनकी आवश्यक प्रकृति की वास्तविकता है और तदनुसार कार्य करते हैं, वे इसमें शामिल हैं: वह वास्तव में समृद्ध है जिसने इसे पवित्रता में विकसित किया है (भगवान के खिलाफ आत्म-उन्नति करने वाले विद्रोह से दूर) (91: 9)।

ऐसे लोग वास्तव में ट्रस्ट का पालन करते हैं और आत्म-तत्व की दूरबीन के माध्यम से देखते हैं कि ब्रह्मांड क्या है और यह क्या कर्तव्य करता है। जब ब्रह्मांड के बारे में कोई भी जानकारी उनकी आत्मा तक पहुँचती है, तो वे देखते हैं कि उनका आत्म-तत्व इसकी पुष्टि करता है, और यह जानकारी अंधकार और व्यर्थता में बदले बिना प्रकाश और ज्ञान के रूप में बनी रहती है। जब आत्म-तत्व इस तरह से अपना कर्तव्य पूरा कर लेता है, तो वह आधिपत्य और काल्पनिक स्वामित्व (मात्र माप के उपकरण) के अपने दावे को त्याग देता है और घोषणा करता है: "सभी प्राणियों की संप्रभुता और स्वामित्व उसी का है, और सभी प्रशंसा और कृतज्ञता उसी की है। निर्णय और शासन उसी का है, और उसी की ओर तुम लौट रहे हो।" इस प्रकार वह सच्ची पूजा और सेवकाई प्राप्त करता है और सृष्टि के सर्वोत्तम नमूने का पद प्राप्त करता है।

लेकिन यदि आत्मतत्व अपने सृजन के दिव्य उद्देश्य को भूल जाता है, सृजन के अपने कर्तव्य को त्याग देता है, और स्वयं को सृष्टिकर्ता से स्वतंत्र एक स्वयं-अस्तित्ववान प्राणी के रूप में देखता है, तो वह विश्वास के साथ विश्वासघात करता है और उन लोगों की श्रेणी में आता है जिनका उल्लेख नीचे किया गया है:

---

17 अलिफ़ एक छोटी, खड़ी रेखा है जो अरबी वर्णमाला के पहले अक्षर और दूसरे अक्षर को दर्शाती है।
शब्द आना (I). (ट्र.)

और जो इसे भ्रष्ट करता है वह वास्तव में नष्ट हो गया (91:10)। यह रवैया या स्वत्व का यह पहलू सभी प्रकार की बहुदेववादिता, बुराई और विचलन के लिए जिम्मेदार है, जिसके कारण आकाश, पृथ्वी और पहाड़ ट्रस्ट को स्वीकार करने से डरते हैं - कहीं ऐसा न हो कि वे ईश्वर के साथ काल्पनिक साझेदारों को जोड़ने के लिए प्रेरित हों।

अगर आत्म-तत्व, जो कि केवल एक अवास्तविक अलिफ़, एक धागा, एक काल्पनिक रेखा है, को उसके वास्तविक सार में नहीं देखा जाता है, तो यह अज्ञानता की मिट्टी के नीचे बढ़ता और फूलता रहता है जब तक कि यह धीरे-धीरे मनुष्य के सभी अंगों में व्याप्त न हो जाए। किसी विशाल राक्षस की तरह, यह ऐसे लोगों को पूरी तरह से निगल जाता है ताकि वे और उनकी क्षमताएँ आत्म-तत्व से ज़्यादा कुछ न हों। आखिरकार, जनजातीय या राष्ट्रीय कट्टरता और मानवीय नस्लवाद व्यक्तिगत आत्म-तत्व को मज़बूती देते हैं। यह इसे शैतान की तरह, सर्वशक्तिमान निर्माता के आदेशों का विरोध करने का कारण बनता है। अंत में खुद को एक पैमाना मानते हुए, यह हर किसी और हर चीज़ की तुलना खुद से करता है, उनके और अन्य कारणों के बीच ईश्वर की संप्रभुता को विभाजित करता है, और सबसे गंभीर तरीके से ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ना शुरू करता है। ऐसे लोगों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है: निश्चित रूप से ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ना वास्तव में बहुत बड़ा गलत है (31:13)। जिस प्रकार एक व्यक्ति सार्वजनिक खजाने से धन चुराकर यह कहकर अपने कृत्य को उचित ठहराने का प्रयास करता है कि उसने अपने प्रत्येक मित्र के लिए एक निश्चित राशि चुराई है, उसी प्रकार जो व्यक्ति स्वयं के स्वामित्व का दावा करता है, वह यह विश्वास करने लगता है और दावा करने लगता है कि प्रत्येक वस्तु स्वयं उसकी स्वामी है।

इस विश्वासघाती स्थिति में, आत्मतत्व पूर्ण अज्ञानता में है।
भले ही इसने विज्ञान की हज़ारों शाखाओं को आत्मसात कर लिया हो, लेकिन इसका अज्ञान इसके ज्ञान से और भी बढ़ जाता है। ईश्वर के ज्ञान की जो भी झलकें इसकी इंद्रियों और चिंतनशील शक्तियों ने ब्रह्मांड से लाई होंगी, वे बुझ चुकी हैं क्योंकि अब यह अपनी आत्मा के भीतर कुछ भी नहीं पा सकता है जिससे उन्हें पुष्ट, चमकाया और बनाए रखा जा सके। जो कुछ भी स्वत्व में आता है, वह उसके भीतर के रंगों से रंगा हुआ होता है। भले ही शुद्ध ज्ञान आ जाए, लेकिन नास्तिकता, बहुदेववाद या सर्वशक्तिमान को नकारने के अन्य रूपों से रंगे स्वत्व के भीतर यह बिल्कुल व्यर्थ हो जाता है। यदि पूरा ब्रह्मांड ईश्वर के चमकते संकेतों से भरा होता, तो उस स्वत्व में एक अंधेरा बिंदु उन्हें दृष्टि से छिपा देता, जैसे कि वे अदृश्य हों।

सच तो यह है कि मानव प्रकृति और उस प्रकृति के भीतर आत्म-तत्व के लिए उचित आवश्यक गुण यह है कि वह बताए कि उसके अलावा क्या है। जैसा कि ग्यारहवें वचन में चर्चा की गई है, उस प्रकृति के लिए, आत्म-तत्व एक सबसे संवेदनशील पैमाना और सटीक माप है, एक व्यापक सूचकांक और सही नक्शा, एक व्यापक दर्पण, और एक उपयुक्त कैलेंडर और डायरी है।

कविता.

अब हम इस विषय की सच्चाई पर कुछ प्रकाश डालते हैं। निम्नलिखित पर विचार करें: आदम के समय से लेकर आज तक, दो महान धाराएँ या विचारधाराएँ सभी दिशाओं में और मानवता के हर वर्ग में अपनी शाखाएँ फैला चुकी हैं, ठीक दो ऊँचे पेड़ों की तरह। एक है पैगम्बरियत और धर्म की धारा; दूसरी है दर्शन और मानवीय ज्ञान की धारा। जब भी वे सहमत होते हैं और एकजुट होते हैं, जब भी दर्शन धर्म के साथ आज्ञाकारिता और सेवा में शामिल होता है, मानवता ने शानदार खुशी और सामूहिक जीवन का अनुभव किया है।

लेकिन जब भी उन्होंने अलग-अलग रास्ते अपनाए हैं, सत्य और भलाई पैगम्बरियत और धर्म की तरफ़ जमा हुई है, जबकि ग़लतफ़हमी, बुराई और भटकाव दर्शनशास्त्र की तरफ़ खिंचे चले आए हैं। हम उन दो रास्तों की उत्पत्ति और आधार पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

दर्शनशास्त्र जब भी धर्म से अलग हुआ है, उसने ज़क़्क़ुम के पेड़ का रूप ले लिया है, जिसने ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ने और गलत दिशा-निर्देश देने के अपने काले आवरण फैलाए हैं। बुद्धि या तर्क की क्षमता की शाखा पर, इसने बुद्धि के उपभोग के लिए नास्तिकता, भौतिकवाद और प्रकृतिवाद के फल पैदा किए हैं। क्रोध और जुनून की क्षमता की शाखा पर, इसने लोगों पर अत्याचार करने के लिए निम्रोद, फिरौन और शद्दाद18 जैसे अत्याचारियों को पैदा किया है। वासनाओं और तृष्णाओं की क्षमता की शाखा पर, इसने देवी-देवताओं, मूर्तियों और उन लोगों के फल पैदा किए हैं जिन्होंने खुद को ईश्वरीय दर्जा दिया है।19

इसके विपरीत, नबूवत की धन्य वंशावली, जो पूजा के तौबा वृक्ष का रूप लेती है , ने धरती के बगीचे में और बुद्धि की शाखा पर पैगम्बरों, रसूलों, संतों और धर्मी लोगों के फल पैदा किए हैं। क्रोध और जुनून की शाखा पर, बुराई के खिलाफ़ बचाव और प्रतिकार की शाखा पर, इसने नेक और न्यायप्रिय शासकों के फल पैदा किए हैं। आकर्षण की शाखा पर, इसने पूरे इतिहास में अच्छे चरित्र और विनम्र व्यवहार वाले उदार, परोपकारी व्यक्तियों के फल पैदा किए हैं। नतीजतन, इस वंश ने प्रदर्शित किया है कि मानवता किस तरह सृष्टि का उत्तम फल है।

अब हम आत्म-तत्व के दो पहलुओं या चेहरों पर प्रकाश डालेंगे जो इन दो विचारधाराओं के मूल और मुख्य बीज हैं। एक चेहरा पैगम्बरों द्वारा और दूसरा दार्शनिकों द्वारा दर्शाया जाता है।

---

18 शद्दाद प्राचीन काल का एक अत्याचारी राजा था जो यमन पर शासन करता था। (ट्र.)

19 प्राचीन मिस्र और बेबीलोन के दर्शन, जो या तो जादू का अभ्यास करते थे या ऐसा इसलिए माना जाता था क्योंकि उनका प्रतिनिधित्व एक छोटे से कुलीन वर्ग द्वारा किया जाता था, ने निम्रोद और फिरौन को जन्म दिया और उनका पालन-पोषण किया। प्रकृतिवादी दर्शन की कीचड़ ने मूर्तिपूजा को जन्म दिया और प्राचीन यूनानी मन में देवताओं की कल्पना की। जब मानवता ईश्वरीय प्रकाश और खुद के बीच प्रकृति का पर्दा खींचती है, तो लोग हर चीज को ईश्वरत्व का दर्जा देते हैं और खुद को परेशानी में डालते हैं।

नबीत्व द्वारा दर्शाया गया चेहरा ईश्वर के प्रति शुद्ध उपासना और दासता का मूल है, क्योंकि हमारा स्वत्व जानता है कि वह उसका सेवक है। स्वत्व को पता चलता है कि वह स्वयं के अलावा किसी और की सेवा करता है और इसका आवश्यक स्वभाव केवल एक सांकेतिक कार्य है। यह समझता है कि यह स्वयं के अलावा किसी और का अर्थ रखता है और यह तभी सार्थक हो सकता है जब यह उस एक की ओर संकेत करे जिस पर इसका अस्तित्व निर्भर करता है। स्वत्व का मानना है कि इसका अस्तित्व और जीवन उस एक की रचनात्मकता और अस्तित्व पर निर्भर करता है। स्वामित्व की इसकी भावना भ्रामक है, क्योंकि स्वत्व जानता है कि यह वास्तविक स्वामी की अनुमति से केवल एक स्पष्ट, अस्थायी स्वामित्व का आनंद लेता है और यह कि इसकी वास्तविकता केवल एक छाया जैसी है। यह एक आकस्मिक इकाई है, एक तुच्छ छाया जो सच्ची और आवश्यक वास्तविकता को प्रकट करती है। इसका कर्तव्य सचेत रूप से अपने निर्माता के गुणों और आवश्यक विशेषताओं के लिए एक उपाय और संतुलन के रूप में सेवा करना है।

इस तरह से पैगम्बर, पवित्र और धार्मिक लोग और पैगम्बरों की परंपरा का पालन करने वाले संत आत्म-स्वरूप की प्रकृति को समझते हैं। परिणामस्वरूप, वे सर्व-महान प्रभु और सृष्टि के स्वामी को संप्रभुता सौंप देते हैं और मानते हैं कि उनकी संप्रभुता, आधिपत्य और दिव्यता में उनका कोई साझीदार या समान नहीं है।

उसे किसी सहायक या डिप्टी की जरूरत नहीं है। इसके अलावा, उसके पास सभी चीजों की कुंजी है और उन पर उसका पूर्ण अधिकार है। "प्राकृतिक" कारण केवल दिखावे का पर्दा हैं, और वह प्रकृति उसकी सृष्टि के नियमों का योग है, उसके नियमों का एक संयोजन है, कि वह अपनी शक्ति कैसे प्रदर्शित करता है।

आत्मतत्व का यह चमकीला, उजला, सुंदर चेहरा हमेशा से ही अर्थ से भरपूर एक जीवित बीज की तरह रहा है। इससे, सर्व-महान सृष्टिकर्ता ने पूजा का तूबा वृक्ष बनाया है, जिसकी धन्य शाखाओं ने हमारे संसार के सभी भागों को अपने शानदार फलों से सुशोभित किया है। इस चेहरे के माध्यम से, अतीत का अंधकार दूर हो जाता है और हम समझते हैं कि अतीत शाश्वत विलुप्ति का क्षेत्र या विशाल कब्रिस्तान नहीं है, जैसा कि दर्शनशास्त्र द्वारा कल्पना की गई है, बल्कि यह प्रकाश का स्रोत और कई सीढ़ियों वाली एक उज्ज्वल, चमकती हुई सीढ़ी है, जिससे सभी आत्माएँ भविष्य और शाश्वत सुख में छलांग लगा सकती हैं। यह उन आत्माओं के लिए एक उज्ज्वल निवास और उद्यान भी है, जिन्होंने इस दुनिया को छोड़ दिया है, अपने भारी बोझ को उतार दिया है, और मुक्त हो गए हैं।

दर्शन द्वारा प्रस्तुत दूसरा पहलू, आत्म-तत्व को अपने स्वयं के एक आवश्यक अर्थ के रूप में मानता है। यह कहता है कि आत्म-तत्व का एक स्वतंत्र अस्तित्व है, यह केवल अपने लिए एक संकेतक है, और पूरी तरह से अपने लिए काम करता है। यह आत्म-तत्व के अस्तित्व को आवश्यक और अनिवार्य मानता है, और गलत तरीके से यह मानता है कि आत्म-तत्व अपने अस्तित्व का मालिक है और अपने क्षेत्र का वास्तविक स्वामी और स्वामी है। दर्शन आत्म-तत्व को एक स्थायी वास्तविकता मानता है जिसका कर्तव्य, आत्म-सम्मान के लिए आत्म-पूर्णता की खोज करना है।

ऐसे गलत विचारों के परिणामस्वरूप, दार्शनिकों ने अपने विचारों के स्कूल को भ्रष्ट नींव पर खड़ा किया है। प्लेटो और अरस्तू, इब्न सिना (एविसेना) और अल-फ़राबी (अल्फ़राबियस) जैसे प्रख्यात दार्शनिकों ने भी माना कि लोगों का अंतिम लक्ष्य खुद को आवश्यक प्राणी जैसा बनाना है; दूसरे शब्दों में, वास्तव में उसके जैसा बनना। ऐसे विचारों ने स्वत्व को उकसाया और इसे बहुदेववाद की घाटियों में स्वतंत्र रूप से चलने दिया। इसने कारणों, मूर्तियों, प्राकृतिक शक्तियों और सितारों की पूजा जैसी प्रथाओं के माध्यम से ईश्वर के साथ भागीदारों को जोड़ने का रास्ता खोल दिया। उन्होंने लोगों की अपनी जन्मजात नपुंसकता और कमजोरी, अपर्याप्तता और आवश्यकता, कमी और अपूर्णता की धारणा और स्वीकारोक्ति के दरवाजे बंद कर दिए और इस तरह ईश्वर की पूजा और सेवा के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। प्रकृतिवाद में डूबे और ईश्वर को भागीदार बनाने से बचने में असमर्थ, वे कृतज्ञता के व्यापक खुले दरवाजों को नहीं खोज सके।

इसके विपरीत, पैगम्बरियत का मानना था कि मानवता का उद्देश्य और कर्तव्य ईश्वरीय मूल्यों से ढलना और अच्छा चरित्र प्राप्त करना है। पैगम्बरों का मानना था कि लोगों को अपनी नपुंसकता को समझना चाहिए और ईश्वरीय शक्ति की शरण लेनी चाहिए, अपनी कमज़ोरी को समझना चाहिए और ईश्वरीय शक्ति पर भरोसा करना चाहिए, अपनी अपर्याप्तता और अनिवार्य गरीबी को समझना चाहिए और ईश्वरीय दया पर भरोसा करना चाहिए, अपनी ज़रूरत को जानना चाहिए और ईश्वरीय धन से मदद माँगनी चाहिए, अपनी गलतियों को देखना चाहिए और ईश्वरीय क्षमा के ज़रिए माफ़ी माँगनी चाहिए, और अपनी अपर्याप्तता को समझना चाहिए और ईश्वरीय पूर्णता का महिमामंडन करना चाहिए।

धर्म की अवज्ञा करते हुए, दर्शनशास्त्र के सीधे मार्ग से भटक जाने के कारण, आत्मतत्व ने लगाम अपने हाथ में ले ली और वह भ्रम में तेजी से आगे बढ़ गया।
परिणामस्वरूप, ऐसे स्वार्थ से ज़क़्क़ुम का एक वृक्ष उग आया और आधी से ज़्यादा मानवता को निगल गया। वासनाओं और तृष्णाओं की शाखा पर इसने जो फल प्रस्तुत किए हैं, वे मूर्तियाँ और महिला देवता हैं, क्योंकि दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, शक्ति को स्वीकृति दी जाती है। "शक्ति ही अधिकार है" आदर्श है। इसके सूत्र हैं: "सबसे शक्तिशाली को सारी शक्ति"; "विजेता सब कुछ ले लेता है," और "शक्ति में अधिकार है।"[20] इसने अत्याचार को नैतिक समर्थन दिया है, तानाशाहों को प्रोत्साहित किया है, और उत्पीड़कों को देवत्व का दावा करने के लिए प्रेरित किया है। "कला के कार्यों" और जिन धागों से वे बने हैं, उनमें सुंदरता को स्वयं कार्यों और धागों को बताते हुए, न कि निर्माता और निर्माता की शुद्ध, पवित्र सुंदरता को, यह कहता है: "यह कितना सुंदर है", न कि: "यह कितनी खूबसूरती से बनाया गया है", और इस प्रकार प्रत्येक को पूजा के योग्य मूर्ति मानता है।

इसके अलावा, दर्शनशास्त्र एक सस्ते, आत्म-अभिमानी, दिखावटी, सतही, क्षणभंगुर, शारीरिक सौंदर्य की प्रशंसा करता है जिसे किसी को भी बेचा जा सकता है।

---

20 पैगम्बरियत का सिद्धांत कहता है: “शक्ति अधिकार में निहित है; अधिकार शक्ति में निहित नहीं है।” इस प्रकार यह अत्याचार को रोकता है और न्याय को सुरक्षित करता है।

लोगों को दिखावे में ले गया और इन नए "मूर्तियों" को अपने प्रशंसकों के सामने पाखंडी-आलोचनात्मक श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित किया।21 क्रोध और जुनून की शाखा पर, इसने दुर्भाग्यपूर्ण लोगों पर अत्याचार करने के लिए बड़े और छोटे निम्रोद, फिरौन और शद्दाद के फलों को पोषित किया है। बुद्धि या तर्क की शाखा पर, इसने नास्तिकता, भौतिकवाद और प्रकृतिवाद जैसे फल पैदा किए हैं, जिनमें से सभी को इसने मानव मन में समाहित कर दिया है और इस तरह लोगों को भ्रम में डाल दिया है। इस सत्य को स्पष्ट करने के लिए, हम कुछ उदाहरण देंगे और पैगंबर की मजबूत नींव से उत्पन्न परिणामों की तुलना दर्शन की सड़ी हुई नींव से उत्पन्न होने वाले परिणामों से करेंगे।

पहला उदाहरण: व्यक्तिगत जीवन से संबंधित पैगम्बरियत के सिद्धांतों में से एक के अनुसार, अर्थात्, नियम: "ईश्वरीय मूल्यों से ढल जाओ," यह निर्देश है: "ईश्वरीय मूल्यों के माध्यम से विशिष्टता की तलाश करो और अपनी शक्तिहीनता और अपर्याप्तता को पहचानते हुए विनम्रता के साथ सर्वशक्तिमान की ओर मुड़ो, और उसके दरबार में सेवक बनो।" लेकिन दर्शनशास्त्र, अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी की तरह होने में मानवीय पूर्णता की तलाश करने के अपने आत्म-उन्मुख सिद्धांत के कारण निर्देश देता है: "आवश्यक रूप से विद्यमान प्राणी की तरह बनने की कोशिश करो।" यह असंभव है, क्योंकि अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी असीम रूप से शक्तिशाली, सर्वशक्तिमान, आत्मनिर्भर और बिना किसी आवश्यकता के है, जबकि हमारा सार अनंत शक्तिहीनता, कमजोरी, गरीबी और आवश्यकता के साथ मिश्रित है।

दूसरा उदाहरण: पैगंबर के सामाजिक जीवन की बुनियादी स्थितियों के सिद्धांतों में पारस्परिक सहायता, उदारता और उदारता शामिल हैं। ये सभी चीजों के पारस्परिक सहयोग में काम करते हैं - सूर्य और चंद्रमा से लेकर कणों तक। उदाहरण के लिए, पौधे जानवरों की मदद करते हैं, जानवर लोगों की मदद करते हैं, और भोजन के कण शरीर की कोशिकाओं की मदद करते हैं। हालाँकि, दर्शनशास्त्र संघर्ष को सामाजिक जीवन की बुनियादी स्थिति मानता है। वास्तव में, संघर्ष अत्याचारियों, क्रूर और बर्बर लोगों और जंगली जानवरों द्वारा अपनी जन्मजात विकृतियों का दुरुपयोग करने से उत्पन्न होता है। दार्शनिकों के तर्क के लिए संघर्ष इतना मौलिक और सामान्य है कि वे बेतुके ढंग से दावा करते हैं कि "जीवन संघर्ष है।"

तीसरा उदाहरण: ईश्वरीय एकता के बारे में पैगंबरी का एक शानदार परिणाम और महान सिद्धांत है: "जिसमें एकता है वह केवल एक (एकता के) से ही आगे बढ़ सकती है।" यानी, अस्तित्व में एकता और सार्वभौमिक सामंजस्य या सामंजस्य निर्माता की एकता के कारण है। जबकि दर्शन कहता है कि "केवल एक से एक ही आगे बढ़ता है।" इस प्रकार, जैसा कि एक व्यक्ति से केवल एक ही चीज़ आगे बढ़ सकती है-

---

21 अपने प्रशंसकों को पसंद आने और उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए, ऐसे लोग पाखंडी दिखावा करके एक तरह का “उपासनापूर्ण” रवैया दिखाते हैं।

बेटा, सब कुछ उसी से मध्यस्थों के माध्यम से आता है। इस भ्रामक सिद्धांत ने सबसे भयंकर बहुदेववाद का मार्ग खोल दिया। सर्वशक्तिशाली और आत्मनिर्भर को शक्तिहीन मध्यस्थों की आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत करके, इसने सभी कारणों और मध्यस्थों को उसके प्रभुत्व में एक तरह की भागीदारी दे दी और सर्व-महान निर्माता को केवल "प्रथम बुद्धि" के निर्माण का अधिकार दिया। यदि दार्शनिकों में सबसे अग्रणी माने जाने वाले इलुमिनिस्ट (इशराकियुन) ने ऐसी बकवास के लिए खुद को खपाया, तो कल्पना कीजिए कि भौतिकवादियों और प्रकृतिवादियों जैसे निम्न दार्शनिकों के सिद्धांत कितने बेतुके हैं।

चौथा उदाहरण: नबी के एक बुद्धिमान सिद्धांत के अनुसार कि कोई भी चीज़ उसकी प्रशंसा के बिना नहीं है (17:44), सृष्टि में उद्देश्य और बुद्धि, विशेष रूप से जीवित प्राणियों में, एक पहलू हो सकता है जो कि स्वयं प्राणी से संबंधित हो लेकिन कई पहलू निर्माता से संबंधित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक फल में उतनी ही बुद्धि और उतने ही उद्देश्य होते हैं जितने कि एक पेड़ के सभी फलों में होते हैं। हालाँकि, दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, जिसमें सच्ची बुद्धि का अभाव है, प्रत्येक जीवित प्राणी का उद्देश्य स्वयं से संबंधित है या मानवता के लिए लाभ से जुड़ा है। इसका मतलब यह है कि सृष्टि इतनी निरर्थक है कि पहाड़ जैसे पेड़ का उद्देश्य केवल एक छोटा सा फल पैदा करना है। यह दर्शन के विनाशकारी परिणामों में से एक है कि इब्न सीना और अल-फ़राबी जैसे महान मुस्लिम दार्शनिक, दर्शन के स्पष्ट आकर्षण से मोहित हो गए और इसके अनुसरण में धोखा खा गए, केवल साधारण आस्तिक माने गए। हुज्जतुल-इस्लाम अल-गज़-ज़ाली ने उन्हें वह दर्जा भी नहीं दिया।

मुताज़िली स्कूल के नेता , जो इस्लामी धर्मशास्त्र के सबसे विद्वान विद्वानों में से थे, दर्शनशास्त्र की चमक से आकर्षित हुए और इसके साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ गए। सत्य को निर्धारित करने के लिए तर्क को एक आत्मनिर्भर और ठोस उपाय मानते हुए, वे विधर्मी या नौसिखिया विश्वास की श्रेणी से ऊपर नहीं उठ सके। इसके अलावा, चूँकि उन्हें अपने दुष्ट-आदेश देने वाली आत्माओं की दर्शनशास्त्र की चापलूसी में मज़ा आता था, इसलिए इस्लामी इतिहास में अबुल-अला अल-मारी जैसे प्रसिद्ध साहित्यिक व्यक्ति, जो अपने निराशावाद के लिए कुख्यात थे, और उमर खय्याम, जो अपने करुण रोने के लिए जाने जाते थे, दर्शनशास्त्र की प्रशंसा में डूब गए। हालाँकि, उन्होंने सत्य और पूर्णता के लोगों से तिरस्कार, निंदा और संयमित फटकार अर्जित की, जिन्होंने उनसे कहा: "आप अशिष्ट हो रहे हैं। आप विधर्म के करीब पहुँच रहे हैं और दूसरों को विधर्म की ओर ले जा रहे हैं।"

दर्शन के सड़े हुए आधार का एक और परिणाम यह है कि आत्मत्व को असार के रूप में देखने के बजाय, आत्म-सम्मानित और आत्म-निर्भर के रूप में देखा जाता है। इस दृष्टिकोण ने इसे "हल्के वाष्प" से "चिपचिपे तरल" में बदल दिया है। सृष्टि के चमत्कारी सत्यों के प्रति हमारी उदासीनता के कारण (जैसा कि

अब हम उनसे "बहुत परिचित" हो गए हैं) और इस दुनिया और प्राकृतिक विज्ञानों के साथ हमारी व्यस्तता के कारण, वह तरल कठोर हो जाता है। इसके बाद, हमारी उपेक्षा और इनकार के कारण, आत्मत्व "स्थिर" हो जाता है। यह अपनी परिष्कृतता खो देता है और अपनी विद्रोही प्रवृत्ति के कारण अपारदर्शी हो जाता है, धीरे-धीरे सघन होता जाता है और व्यक्ति को घेर लेता है। फिर यह सभी प्रकार की मानवीय कल्पनाओं के साथ फैलता है।

अंत में यह मानते हुए कि सभी लोग और यहाँ तक कि कारण भी उसके जैसे हैं - हालाँकि वे इससे इनकार करते हैं - यह हर एक को फिरौन मानता है। इस बिंदु पर, यह सर्व-महान निर्माता के आदेशों का विरोध करता है: जब ये हड्डियाँ सड़ जाएँगी तो उन्हें कौन पुनर्जीवित करेगा? (36:78) और, अवज्ञा में, सर्वशक्तिमान पर नपुंसकता का आरोप लगाता है। आत्म-प्रशंसा यहाँ तक कि सर्व-महान निर्माता के गुणों को अस्वीकार या विकृत करके उन्हें नीचा दिखाने की हद तक चली जाती है, जो इसे अपने हित के लिए अनुपयुक्त या फिरौन जैसी दुष्ट-आदेश देने वाली आत्मा के लिए अप्रिय लगता है।

उदाहरण के लिए, कुछ दार्शनिकों ने सर्वशक्तिमान को "स्व-बद्ध" (अर्थात, अपने स्वयं के आदेश से विवश) माना और इस प्रकार उसे विकल्प से वंचित कर दिया। उन्होंने सृष्टि की अंतहीन गवाही को अस्वीकार कर दिया जो साबित करती है कि उसके पास विकल्प है।
हालाँकि सभी जीव यह दर्शाते हैं कि सृष्टिकर्ता के पास विकल्प है, प्रत्येक का अपना व्यक्तित्व और व्यवस्था, बुद्धि और माप है, लेकिन यह अंधा दर्शन इसे देखने से इनकार करता है। अन्य दार्शनिकों ने दावा किया कि दिव्य ज्ञान में विवरण शामिल नहीं है, जिससे सर्वव्यापी ज्ञान की विशेषता को नकार दिया गया और सृष्टि की सच्ची गवाही को स्वीकार करने से इनकार कर दिया गया।

दर्शन ने भी कारणों को रचनात्मक प्रभाव का श्रेय दिया है और इस प्रकार प्रकृति को रचनात्मक शक्ति का श्रेय दिया है। चूँकि यह सभी चीज़ों के निर्माता को दर्शाने वाली हर चीज़ पर स्पष्ट मुहर नहीं देखता है, इसलिए दर्शन प्रकृति को ही मूल निर्माता मानता है। यह इस तथ्य को नज़रअंदाज़ करता है कि प्रकृति, जिसकी कथित शक्ति को अंधे संयोग और आवश्यकता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, नपुंसक, निर्जीव, अचेतन और अंधी है। यह प्रकृति को सृजन का एक हिस्सा मानता है, हालाँकि हर तत्व ईश्वर की ओर से एक संदेश है, जो हमेशा से ही प्रार्थित है, जो उच्च ज्ञान के हज़ारों उदाहरणों को प्रसारित करता है।

इसके अलावा, दार्शनिकों को पुनरुत्थान और परलोक का द्वार नहीं मिला, जिसे सर्वशक्तिमान (अपने सभी नामों के साथ), ब्रह्मांड (अपनी सभी सच्चाइयों के साथ), पैगंबरी की पंक्ति (अपनी सभी पुष्टियों के साथ), और प्रकट की गई किताबें (अपनी सभी आयतों के साथ) प्रदर्शित करती हैं। नतीजतन, उन्होंने शारीरिक पुनरुत्थान से इनकार किया और आत्माओं को पूर्व-अनंत काल का श्रेय दिया। इस तरह के अंधविश्वासों से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि दूसरे मामलों पर उनके विचार क्या होंगे। वास्तव में, दुष्ट शक्तियों ने अविश्वासी दार्शनिकों की बुद्धि या तर्क को अपने अहंकार या आत्म-पहचान की चोंच और पंजों से ऊपर उठाया (चापलूसी की) और उन्हें विचलन के रसातल में फेंक दिया। सूक्ष्म जगत में

(मानव) उन्होंने अहंकार या आत्म-स्वरूप को मूर्ति या मिथ्या देवता बना दिया है; स्थूल जगत में उन्होंने प्रकृति को पूजा की वस्तु बना दिया है। अतः जो व्यक्ति मिथ्या देवताओं (और दुष्ट शक्तियों जो ईश्वर के विरुद्ध विश्वास और शासन के प्रतिरूप स्थापित करते हैं) को अस्वीकार कर देता है और ईश्वर पर विश्वास करता है, उसने वास्तव में दृढ़, अटूट पकड़ पकड़ ली है; और ईश्वर सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है (2:256)।

यहाँ, ऊपर वर्णित सत्य को स्पष्ट करने के लिए, एक काल्पनिक घटना का अर्थ बताना उपयोगी होगा, जिसे मैंने सत्य की झलक में एक दूरदर्शी यात्रा के रूप में वर्णित किया है। इस ग्रंथ को लिखने से आठ साल पहले, इस्तांबुल में, रमज़ान के दौरान, ऐसे समय में जब पुराना कथन (दर्शन से संबंधित) नया कथन बनने वाला था, सूरतुल -फ़ातिहा के अंत में बताए गए तीन तरीकों पर विचार करते हुए - उन लोगों का मार्ग जिन पर आपने कृपा की है, न कि उन लोगों का जो आपके क्रोध के पात्र हैं, न ही उन लोगों का जो भटक गए हैं (1: 7) - मैंने निम्नलिखित देखा:

मैं एक विशाल रेगिस्तान में था। धरती का चेहरा धुंधले, उदास और दम घोंटने वाले बादलों की एक परत से ढका हुआ था। वहाँ कोई हवा, रोशनी या पानी नहीं था। मैंने कल्पना की कि खतरनाक और भयानक राक्षस हर जगह थे। मेरे मन में आया कि इस भूमि के दूसरी ओर एक रोशनी, हवा और थोड़ा पानी होना चाहिए, और मुझे वहाँ पहुँच जाना चाहिए। मैंने देखा कि मैं अनजाने में ही आगे बढ़ रहा था। एक भूमिगत सुरंग जैसी गुफा में घुसते हुए और धीरे-धीरे धरती से गुज़रते हुए, मैंने देखा कि मुझसे पहले कई लोग इस रास्ते से गुज़रे थे। वे सभी तरफ से डूबे हुए थे। कभी-कभी मुझे उनके पैरों के निशान दिखाई देते थे और उनकी आवाज़ें सुनाई देती थीं, जो बाद में बंद हो जाती थीं।

> हे मित्र जो इस काल्पनिक यात्रा में मेरे साथ है। वह भूमि प्रकृति है और प्रकृति-पूजा का दर्शन है। सुरंग सत्य तक पहुँचने के लिए दार्शनिक विचार द्वारा खोला गया मार्ग है। पदचिह्न प्लेटो और अरस्तू जैसे प्रसिद्ध दार्शनिकों के थे, और जो आवाज़ें मैंने सुनीं वे इब्न सीना और अल-फ़रा-बी जैसे प्रतिभाशाली लोगों की थीं।22 कभी-कभी मुझे इब्न सीना के कुछ विचार और सिद्धांत मिले, लेकिन कुछ समय बाद वे पूरी तरह से गायब हो गए।

---

22 अगर मुझसे पूछा जाए: “तुम कौन होते हो इन प्रसिद्ध दार्शनिकों को चुनौती देने वाले? जबकि तुम तो मक्खी की तरह हो, तुम चील की उड़ान को चुनौती देने की हिम्मत कैसे कर सकते हो?” मैं जवाब दूंगा: “मेरे पास कुरान जैसा शाश्वत शिक्षक है, और इसलिए, सत्य और ईश्वर के ज्ञान के मामलों में, मुझे ऐसे चील को मच्छर के पंख के बराबर भी महत्व देने की आवश्यकता नहीं है, जो गुमराह दर्शन और भ्रमित तर्क के छात्र थे। मैं उनसे कितना भी कमतर क्यों न होऊँ, उनका शिक्षक मुझसे कहीं अधिक कमतर है। मेरे “शिक्षक” - कुरान - की मदद से प्रकृति और भौतिकवादी प्रवृत्तियाँ जो उन्हें डूबने के लिए प्रेरित करती हैं, मेरे पैर की उंगलियाँ भी नहीं भिगो सकतीं। एक तुच्छ निजी व्यक्ति जो एक महान शासक के नियमों और आदेशों का पालन करता है, वह एक तुच्छ शासक के मुख्य सेनापति से अधिक प्राप्त कर सकता है।”

> आगे बढ़ने में असमर्थ, वह सत्य तक पहुंचने से पहले ही डूब गया।
> खैर, मैंने आपको चिंता से बचाने के लिए सच्चाई का एक छोटा सा हिस्सा दिखाया। अब मैं अपनी यात्रा पर लौटता हूँ।

जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, मैंने पाया कि मुझे दो चीज़ें दी गई थीं: अंधेरे को दूर भगाने के लिए एक मशाल और एक ऐसा उपकरण जो मेरे लिए विशाल चट्टानों और पत्थरों के बीच से रास्ता खोल रहा था, जो एक के बाद एक टूट रहे थे। मुझे बताया गया: "यह मशाल और उपकरण तुम्हें कुरान के खजाने से दिया गया है।"
लंबे समय तक चलते रहने के बाद, मुझे अचानक एहसास हुआ कि मैं दूसरी तरफ आ गया हूँ। मैंने एक ऐसी दुनिया देखी जहाँ सब कुछ आनंदित था, और जिसमें सबसे खूबसूरत वसंत में चमकदार धूप और एक जीवंत हवा और स्वादिष्ट जीवन देने वाला पानी था। मैंने भगवान का धन्यवाद किया और उनकी प्रशंसा की।

फिर मुझे एहसास हुआ कि खुद पर नियंत्रण रखने के बजाय, मैं किसी और के द्वारा परखा जा रहा था। मैंने फिर से खुद को उस विशाल रेगिस्तान में घुटन भरे बादल के नीचे पाया। हालाँकि अब मैं दूसरे रास्ते पर था, फिर भी मुझे एक अदृश्य मकसद से प्रेरित महसूस हुआ। इस बार मैं दूसरी तरफ पहुँचने के लिए धरती की सतह पर यात्रा कर रहा था। मैंने ऐसी अजीबोगरीब और अनोखी चीजें देखीं जिन्हें वर्णित नहीं किया जा सकता: उग्र समुद्र, ख़तरनाक तूफ़ान - हर चीज़ ने मेरे लिए मुश्किलें खड़ी कर दीं। पहले की तरह, मैंने कुरान से मुझे दिए गए उपकरणों की मदद से उनसे अपना रास्ता बनाया और इस तरह उन सभी पर विजय प्राप्त की। रास्ते में, मुझे अक्सर दूसरे यात्रियों की लाशें मिलीं।

हज़ारों में से बमुश्किल एक व्यक्ति ही यह यात्रा पूरी कर पाया था। हालाँकि, मैं उस दमघोंटू बादल से बच गया और चमकते सूरज के सामने खुशी-खुशी दूसरी तरफ़ निकल आया। मैंने उत्साहवर्धक हवा में साँस ली और कहा: “सबकी स्तुति भगवान की हो।”

फिर मैंने उस स्वर्ग जैसी दुनिया को देखना शुरू किया। लेकिन कोई मुझे वहाँ रुकने नहीं दे रहा था, क्योंकि तुरंत ही मैं उस भयानक रेगिस्तान में वापस आ गया था जैसे कि मुझे कोई दूसरा रास्ता देखना था। वहाँ मैंने अलग-अलग तरह के उपकरण देखे- कुछ हवाई जहाज़ जैसे, कुछ कार और होइस्ट जैसे- सभी लिफ्ट की तरह नीचे उतरे थे। जो लोग उन पर कूदे, उन्हें उनकी शक्ति और क्षमता के अनुसार ऊपर ले जाया गया। मैं उनमें से एक पर कूद गया, और, एक पल में, बादल से बहुत ऊपर उठ गया। मैं सबसे खूबसूरत, हरे और शानदार पहाड़ों की चोटियों के बीच से बाहर आया। बादलों की परत पहाड़ों के सिर्फ़ आधे हिस्से तक ही पहुँची थी, और हर जगह हल्की हवाएँ, स्वादिष्ट पानी और कोमल रोशनी थी, साथ ही वे लिफ्ट जैसे चमकदार वाहन भी थे।

हालाँकि मैंने अपनी यात्रा के पहले दो हिस्सों में और धरती के दूसरे छोर पर उन्हें देखा था, लेकिन मैं यह नहीं समझ पाया था कि वे क्या थे। अब मुझे एहसास हुआ कि वे सभी बुद्धिमान कुरान की आयतों के प्रकटीकरण थे।

पहला रास्ता, जो न तो उन लोगों का है जो भटक गए हैं, प्रकृति के दलदल में डूबे लोगों और प्रकृतिवाद के अनुयायियों का है। आपने देखा है कि इस रास्ते में कितनी कठिनाइयाँ हैं। दूसरा रास्ता, जो न उन लोगों का है जो आपके क्रोध को भड़का चुके हैं, उन लोगों द्वारा अनुसरण किया जाता है जो कारणों और मध्यस्थों को रचनात्मक शक्ति और रचनात्मक प्रभाव का श्रेय देते हैं, और वे (पेरिपेटेटिक दार्शनिकों की तरह) जो केवल तर्क और सोच के माध्यम से आवश्यक रूप से विद्यमान अस्तित्व के अंतिम सत्य और ज्ञान का रास्ता खोलना चाहते हैं। तीसरा रास्ता, जो उन लोगों द्वारा इंगित किया गया है जिन पर आपने अनुग्रह किया है, यह उन लोगों का उज्ज्वल राजमार्ग है जो कुरान का पालन करते हैं, सीधे मार्ग के लोग हैं। यह उज्ज्वल राजमार्ग ईश्वर, दयालु द्वारा प्रकट और प्रदान किया गया एक शानदार मार्ग है। यह सबसे छोटा, सबसे आसान और सबसे सुरक्षित मार्ग है, और सभी के लिए खुला है।

बाईसवाँ शब्द

विनाश का मार्ग और सुख का मार्ग

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

बिना किसी सहारे के ईएफटी, गुमराह लोगों का प्रतिनिधि
उसका वास्तविक इरादा प्रकट करता है: "चूँकि मुझे ईश्वर और परलोक को नकारने में, इस संसार से प्रेम करने में, तथा मानवीय स्वतंत्रता और आत्मविश्वास में सांसारिक सुख, खुशी और सभ्यता में उन्नति मिलती है, इसलिए मैं शैतान की मदद से दूसरों को भी इस मार्ग पर लाता हूँ, और ऐसा करना जारी रखूँगा।"

जवाब: मैं कुरान में कहता हूँ: ऐ बेबस बंदे, होश में आओ और गुमराह लोगों के प्रतिनिधि की बात मत सुनो। अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम्हें इतना नुकसान होगा कि तुम्हारी आत्मा, दिमाग और दिल उसकी कल्पना से भी काँप उठेंगे। तुम्हारे सामने दो रास्ते हैं: गुमराह लोगों के प्रतिनिधि द्वारा सुझाया गया दुख का रास्ता और कुरान में वर्णित खुशी का रास्ता। तुम पहले ही इन दोनों रास्तों के बीच कई तुलनाएँ देख चुके हो , खास तौर पर पहले नौ छोटे रास्तों में। अब हज़ारों में से सिर्फ़ एक पर ध्यान दो, जो मौके के मुताबिक हो:

ईश्वर के साथ साझेदार बनाने और अन्य प्रकार की गलतफहमियों, तथा अपराध और अपव्यय का मार्ग हमें पतन की अथाह गहराई में ले जाता है। यह हमारी कमज़ोर पीठ पर असहनीय बोझ डालता है और हमारे दिलों पर असीम दुख का बोझ डालता है। क्योंकि अगर हम सर्वशक्तिमान ईश्वर को नहीं पहचानते और उन पर भरोसा नहीं करते, तो हम बहुत कमज़ोर, नपुंसक, असीम रूप से गरीब और बेसहारा जानवरों या दर्द और दुःख से पीड़ित नश्वर प्राणियों की तरह बन जाते हैं, जो अनगिनत विपत्तियों के अधीन होते हैं। हम निरंतर पीड़ित होते हैं, क्योंकि हम उन सभी चीज़ों और लोगों से अलग रहते हैं जिन्हें हमने प्यार किया है और जिनसे हम जुड़े हुए हैं। अलगाव के दर्द के बीच सभी चीज़ों और लोगों को छोड़कर, हम कब्र की अंधेरी गहराई में अकेले प्रवेश करते हैं।

हम सीमित इच्छाशक्ति, कम शक्ति, कम जीवन-काल और सुस्त दिमाग के साथ अनंत दर्द और महत्वाकांक्षा के खिलाफ व्यर्थ संघर्ष करते हैं। हम साकार करने का प्रयास करते हैं

हमारी अनगिनत इच्छाएँ और लक्ष्य, लेकिन कोई उल्लेखनीय परिणाम नहीं। जबकि हम अपने अस्तित्व का बोझ भी नहीं उठा सकते, हम अपने मन और पीठ पर दुनिया का बोझ लाद देते हैं। हम नरक की यातनाएँ भुगतने से पहले ही

यह जा रहा है.

इस तरह की दर्दनाक आध्यात्मिक पीड़ा को महसूस करने से बचने के लिए, गलत दिशा में चलने वाले लोग एक तरह की बेहोशी की दवा के रूप में असावधानी की तलाश करते हैं। लेकिन जब वे कब्र के करीब पहुंचते हैं तो उन्हें यह दर्द सबसे ज़्यादा महसूस होने लगता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर के सच्चे सेवक न होने के कारण, वे मानते हैं कि वे खुद के मालिक हैं। हालाँकि, वास्तविकता में, अपनी सीमित स्वतंत्र इच्छा और तुच्छ शक्ति के साथ, वे इस अशांत दुनिया में अपने अस्तित्व को नियंत्रित नहीं कर सकते। उन्हें हानिकारक रोगाणुओं से लेकर भूकंप तक कई दुश्मनों का सामना करना पड़ता है जो उन पर हमला करने के लिए तैयार रहते हैं। वे कब्र को डर और आतंक से देखते हैं।

मनुष्य होने के नाते, वे मानवता और दुनिया से जुड़े हुए हैं। लेकिन चूँकि वे इस बात से इनकार करते हैं कि दुनिया और मानवता उस एक के अधीन है जो सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्व-दयालु और सर्व-दयालु है, इसलिए वे अपने अस्तित्व और जीवन को संयोग और प्रकृति का हिस्सा मानते हैं। और इसलिए दुनिया की भयावह घटनाएँ (जैसे, आक्षेप, भूकंप, महामारी, आपदा, मृत्यु और अकाल) और मानवता की परिस्थितियाँ और अनुभव हमेशा उन्हें परेशान करते हैं। इसके अलावा, उन्हें अपने दर्द और उन परेशानियों से जूझना पड़ता है जो दूसरे जीव उन्हें देते हैं।

चूँकि उनके अपने अविश्वास ने उन्हें इस दयनीय स्थिति में पहुँचा दिया है, तो वे दया और स्नेह के पात्र कैसे हो सकते हैं? यह हमें आठवें वचन के दो भाइयों के दृष्टांत की याद दिलाता है जो दो कुओं में गिर गए थे। यदि कोई व्यक्ति, एक सुंदर बगीचे में ईमानदार मित्रों के बीच एक बढ़िया भोज के सुखद और वैध आनंद और मनोरंजन से संतुष्ट न होकर, अवैध आनंद प्राप्त करने के लिए शराब पीता है और, सर्दियों के दिन गंदे स्थान पर जंगली जानवरों से घिरा हुआ खुद की कल्पना करता है, डर से काँपता है और चिल्लाता है, तो वह दया का पात्र नहीं होगा। क्योंकि वे अपने ईमानदार मित्रों को जंगली जानवर समझते हैं और उनका अपमान करते हैं। वे स्वादिष्ट भोजन को गंदा समझते हैं; साफ, बढ़िया प्लेट और कटोरे बेकार, गंदे पत्थर समझते हैं; और उन्हें तोड़ने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा, वे अमूल्य, सार्थक पुस्तकों को, जिन्हें उन्हें पढ़ना और अध्ययन करना है, साधारण, अर्थहीन कागज़ों का संग्रह समझते हैं, और उन्हें फाड़कर फेंक देते हैं। ऐसे लोग न केवल दया के पात्र हैं, बल्कि वे दण्ड के पात्र हैं।

इसी प्रकार, अविश्वास और गुमराही व्यक्ति की इच्छाशक्ति के दुरुपयोग से उत्पन्न होती है।
ऐसे लोग दावा करते हैं कि विश्वरूपी सर्वज्ञ निर्माता का अतिथिगृह संयोग और प्रकृति का खिलौना है और प्राणियों का उस ओर स्थानांतरण संयोग और प्रकृति का खेल है।

अदृश्य जगत, दिव्य नामों के प्रकटीकरण को ताज़ा करने का अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद, पूर्ण रूप से अस्तित्वहीन हो रहा है। साथ ही, वे प्राणियों के महिमामंडन और दिव्य नामों के पाठ को मृत्यु और शाश्वत वियोग की पुकार मानते हैं; प्राणियों की चादरें, जिनमें से प्रत्येक शाश्वत रूप से प्रार्थना किए जाने वाले का संदेश है, भ्रमित, अर्थहीन संग्रह हैं; कब्र का द्वार, जो दया की दुनिया में खुलता है, अस्तित्वहीनता की एक अंधेरी दुनिया में खुलता है; और मृत्यु को सभी मित्रों और प्रियजनों से अलग होना - उनके साथ पुनर्मिलन नहीं - मानते हैं। इस प्रकार, वे खुद को एक अत्यंत दर्दनाक दंड के लिए सौंप देते हैं। चूंकि वे सभी प्राणियों, दिव्य नामों और उनके शिलालेखों और संदेशों को भी अस्वीकार करते हैं, अस्वीकार करते हैं और उनका अपमान करते हैं, इसलिए वे दंड के पात्र हैं। वे किसी भी तरह से दया के पात्र नहीं हैं।

तो, गुमराह और अपव्यय के अभागे लोगों, क्या तुम्हारी कोई प्रगति, विकास, विज्ञान, तकनीक और सभ्यता ऐसी भयंकर हानि, पतन और विनाशकारी निराशा की भरपाई कर सकती है? तुम वह सच्चा सांत्वना कहाँ पा सकते हो जिसकी मानव आत्मा को सबसे अधिक आवश्यकता है? कौन सी प्रकृति या कारणता, कौन सी चीज़ जिस पर तुम भरोसा करते हो और जिसके लिए तुम उसके कार्यों, उपहारों और उपकारों को जिम्मेदार ठहराते हो, तुम्हारी कौन सी खोज, आविष्कार, मूर्तियाँ और बुतपरस्ती तुम्हें मृत्यु के अंधकार से बचा सकती है, जिसे तुम शाश्वत विलुप्ति मानते हो? कौन सी तुम्हें कब्र की मध्यवर्ती दुनिया, पुनरुत्थान और सर्वोच्च समागम के स्थान और पुल के पार शाश्वत सुख के निवास तक ले जा सकती है? चूँकि तुम कब्र का दरवाज़ा बंद नहीं कर सकते, इसलिए तुम्हें इस रास्ते पर यात्रा करने और चलने के लिए बाध्य होना पड़ता है (उल्लेखित स्टेशनों से गुज़रते हुए)। इसे सुरक्षित रूप से यात्रा करने के लिए, तुम्हें उस पर निर्भर होना चाहिए जो उन सभी दुनियाओं और निवासों को नियंत्रित करता है।

हे अभागे, गुमराह और लापरवाह लोगों। जो प्रेम किसी और के प्रति किया जाता है, वह दुख लाता है। इस दृष्टि से, ईश्वर और उसके गुणों और नामों को जानने और उनसे प्रेम करने के लिए आपको जो प्रेम करने और जानने की क्षमता दी गई है, उसका दुरुपयोग करके आप अपने आप से और दुनिया से प्रेम करते हैं। यह, साथ ही आपके शरीर और शक्तियों का दुरुपयोग जो आपको इसलिए दी गई थी ताकि आप उसकी पूजा और धन्यवाद कर सकें, आपको उचित दंड भुगतने का कारण बनता है।

सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति जो प्रेम होना चाहिए, उसे अपने आप में समाहित करके आप उसके परिणामस्वरूप होने वाली परेशानियों को झेलते हैं। आप अपने द्वारा पैदा की गई अंतहीन परेशानियों को झेल रहे हैं। आप जिसे पूजते हैं, यानी अपनी आत्मा या खुद को, उसे सच्ची शांति और खुशी नहीं देते। चूँकि आप उसे पूर्ण रूप से शक्तिशाली, सच्चे प्रियतम को समर्पित नहीं करते और उसे सौंपते नहीं हैं, इसलिए आप हमेशा दर्द झेलते हैं।

चूँकि आप सर्वशक्तिमान ईश्वर के नामों और गुणों से संबंधित प्रेम को संसार को सौंपते हैं और उनकी कला के कार्यों को कारण और प्रकृति के अधीन करते हैं, इसलिए आप इसके परिणामस्वरूप होने वाले दर्द को भुगत रहे हैं। जिसे आप प्यार करते हैं वह या तो आपको अलविदा कहे बिना छोड़ देता है या आपको पहचानता ही नहीं है। अगर वह आपको पहचान भी लेता है, तो भी वह आपसे प्यार नहीं करता। अगर वह आपसे प्यार भी करता है, तो भी वह आपको कोई लाभ नहीं देता।
आप हमेशा निरंतर अलगाव और मृत्यु से पीड़ित रहते हैं, पुनर्जीवन की कोई आशा नहीं होती।
संघ.

यही वास्तविकता है जिसे गुमराह लोग जीवन की खुशी और मानवीय पूर्णता, सभ्यता की सुंदरता और स्वतंत्रता का आनंद कहते हैं।
व्यभिचार और नशेबाजी अस्थायी रूप से उस दुख और पीड़ा को ढक लेते हैं जो अंततः उन पर आएगी।

जहाँ तक कुरान के प्रकाश-विसारक मार्ग का प्रश्न है, यह गुमराह लोगों के घावों को विश्वास की सच्चाइयों से भर देता है, उनको घेरे हुए अंधकार को दूर कर देता है, तथा गुमराही और विनाश के द्वार बंद कर देता है।

यह मार्ग हमारी कमजोरी, नपुंसकता, गरीबी और आवश्यकता को दूर करता है, क्योंकि यह हमें करुणामय सर्वशक्तिमान पर भरोसा करने में सक्षम बनाता है। अस्तित्व और जीवन के बोझ को उसकी शक्ति और दया के अधीन करके, हम उनके बोझ से बच जाते हैं; इसके बजाय, हम स्वयं और जीवन को अपने लिए एक बोझ में बदल देते हैं। हम सीखते हैं कि हम सच्चे इंसान हैं और दयालु भगवान के स्वागत योग्य अतिथि हैं, न कि "बोलने वाले जानवर"। दुनिया को दयालु भगवान के अतिथिगृह के रूप में और उसके प्राणियों को ईश्वरीय नामों के दर्पण और शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले ईश्वर की हमेशा भर्ती की गई गलतियों के रूप में दिखाते हुए, यह दुनिया की क्षणभंगुरता, चीजों के क्षय और नश्वर लोगों के प्रति प्रेम के कारण हमारे सभी घावों को पूरी तरह से ठीक करता है। यह हमें सनक और कल्पनाओं के अंधेरे से भी बचाता है। साथ ही, जीवन को मृतक मित्रों और प्रियजनों के साथ पुनर्मिलन की प्रस्तावना के रूप में दिखाते हुए, यह मृत्यु के घावों को ठीक करता है, जिसे गुमराह लोग शाश्वत अलगाव मानते हैं, और दिखाता है कि अलगाव वास्तव में पुनर्मिलन है।

क़ुरआन का मार्ग यह सिद्ध करके कि क़ब्र दया की दुनिया, सुख के निवास, स्वर्ग के बाग़ों और दयालु परमेश्वर के प्रकाशमान राज्य की ओर खुलने वाला द्वार है, हमारे सबसे बड़े भय को दूर करता है और दिखाता है कि मध्यवर्ती दुनिया में हमारी यात्रा, जो सबसे निराशाजनक और परेशानी भरी लगती है, वास्तव में सबसे सुखद और उत्साहपूर्ण है। यह दर्शाता है कि क़ब्र अजगर के मुँह की तरह नहीं है, बल्कि ईश्वरीय दया के बाग़ों की ओर खुलने वाला द्वार है। यह विश्वासियों को सूचित करता है:

> यदि आपकी इच्छाशक्ति बहुत सीमित है, तो अपने मामलों को अपने स्वामी की सार्वभौमिक इच्छा पर छोड़ दें। यदि आपकी शक्ति थोड़ी और महत्वहीन है, तो परम शक्तिशाली की शक्ति पर भरोसा करें। यदि आपका जीवन छोटा है, तो अनंत काल पर विचार करें-

> अंतिम जीवन। यदि आपका मन सुस्त है, तो कुरान के सूर्य में आएँ, और विश्वास की रोशनी से देखें, ताकि आपके मन के स्थान पर, जो जुगनू की तरह रोशनी देता है, प्रत्येक कुरान की आयत आपको सबसे चमकते हुए सितारे की तरह रोशनी दे। यदि आपके पास अंतहीन महत्वाकांक्षा और दर्द है, तो असीम पुरस्कार और असीम दया आपका इंतजार कर रही है। यदि आपके पास असीमित इच्छाएँ और लक्ष्य हैं, तो चिंतित न हों, क्योंकि आप उन सभी को यहाँ महसूस नहीं कर सकते।
>
> यह केवल दूसरे लोक में ही संभव है, और जो तुम्हें ये देता है, वह तुम स्वयं नहीं हो।

और:

> आप स्वयं के स्वामी नहीं हैं, बल्कि आप एक असीम रूप से शक्तिशाली और असीम रूप से दयालु महामहिम के स्वामी हैं। इसलिए, अपने अस्तित्व और जीवन को अपने कंधों पर रखकर खुद को परेशान न करें, क्योंकि जिसने आपको जीवन दिया है और उसे नियंत्रित करता है, वही है। इसके अलावा, दुनिया बिना मालिक के नहीं है। इसलिए इसकी स्थिति के बारे में सोचकर चिंतित न हों और अपने दिमाग पर इसका बोझ न डालें, क्योंकि दुनिया का मालिक सर्वज्ञ और सर्वज्ञ है। आप उनकी दुनिया में उनके मेहमान हैं, इसलिए जो आपकी शक्ति और जिम्मेदारी से परे है, उसमें हस्तक्षेप न करें। मानवता और जानवरों जैसे जीवित प्राणियों को उनके हाल पर नहीं छोड़ा जाता है। बल्कि, वे कुछ कर्तव्यों के साथ नियुक्त अधिकारी हैं और एक सर्वज्ञ, सर्वदयालु व्यक्ति द्वारा नियंत्रित और अनुग्रहित हैं। उनके लिए उनकी दया आपसे कहीं अधिक है। इसके अलावा, सूक्ष्म जीवों से लेकर महामारी, बाढ़, सूखा और भूकंप जैसी आपदाओं तक, जो दिखने में आपके लिए शत्रुतापूर्ण हैं, सभी चीजें और घटनाएं उस सर्वदयालु, सर्वज्ञ व्यक्ति द्वारा नियंत्रित और शासित होती हैं। वह अत्यन्त तत्वदर्शी है, अतः वह कोई भी काम व्यर्थ नहीं करता, तथा वह अत्यन्त दयावान है, जिसके प्रत्येक कार्य में कृपा निहित है।

इसमें आगे कहा गया है:

> यह क्षणभंगुर संसार परलोक की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह नष्ट हो जाता है, लेकिन शाश्वत फल देता है और एक सर्व-स्थायी व्यक्ति के शाश्वत नामों को प्रकट करता है। अपने थोड़े से सुखों के बदले में, यह व्यक्ति को कई दुख और पीड़ाएँ देता है। हालाँकि, सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय व्यक्ति के उपकार सच्चे और स्थायी सुख हैं, और इसके दुख व्यक्ति को कई आध्यात्मिक पुरस्कार प्राप्त कराते हैं। जो वैध है वह आत्मा के आनंद और सुखों के साथ-साथ हृदय और शारीरिक आत्मा के लिए भी पर्याप्त है, इसलिए जो अवैध है उसमें प्रवेश न करें। किसी भी अवैध सुख का परिणाम कई दुखों में होता है और व्यक्ति सर्व-दयालु व्यक्ति के अनुग्रहों को खो देता है, जो शुद्ध, स्थायी सुख हैं।

गुमराही मानवता को इतना गिरा देती है कि कोई भी दार्शनिक प्रवृत्ति, वैज्ञानिक विकास या मानव सभ्यता और प्रगति लोगों को अंधकार के उस गहरे गड्ढे से बाहर नहीं निकाल सकती। केवल बुद्धिमानीपूर्ण कुरान ही हमें अंधकार से बाहर निकाल सकता है।

यह हमें विश्वास और धार्मिक कर्मों के माध्यम से सबसे निचले गड्ढे से निकालता है और हमें सर्वोच्च पद पर पहुंचाता है। यह उस गहरे गड्ढे को आध्यात्मिक प्रगति के चरणों और आध्यात्मिक पूर्णता के साधनों से भर देता है।

कुरान अनंत काल की ओर हमारी लंबी, कष्टदायक और तूफानी यात्रा को भी सुगम बनाता है। यह हमें दिखाता है कि एक दिन में वह दूरी कैसे तय की जाए जिसे तय करने में सामान्यतः पचास हज़ार साल लगते हैं। हमें सर्व-महान सत्ता, अनंत काल के राजा को जानने में सक्षम बनाकर, यह हमें उनके कर्तव्यनिष्ठ सेवक और अतिथि होने का सम्मान देता है और हमारे लिए दुनिया और कब्र और परलोक की मध्यवर्ती दुनिया के महलों के माध्यम से एक आसान और आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करता है।

जिस प्रकार एक राजा का धर्मी, कर्तव्यपरायण अधिकारी सुरक्षित रूप से अपने क्षेत्र में परिवहन के सबसे तेज साधनों के माध्यम से यात्रा करता है, और आसानी से प्रांतीय सीमाओं को पार करता है, उसी प्रकार जो लोग विश्वास के माध्यम से शाश्वत राजा के साथ जुड़े हैं, साथ ही जो लोग धार्मिक कार्यों के माध्यम से उनके प्रति आज्ञाकारिता दिखाते हैं, वे स्टेशनों से होते हुए दुनिया और भगवान के क्षेत्रों की सीमाओं को पार करते हैं।

कब्र और आख़िरत को बिजली की रफ़्तार से या बुराक़, जन्नत की पहाड़ी से प्राप्त करते हैं। ऐसे लोग हमेशा की ख़ुशी पाते हैं। क़ुरआन इस बात की सच्चाई साबित करता है, और शुद्ध धार्मिक विद्वान और संत इसे स्पष्ट रूप से देखते हैं।

कुरान में भी कहा गया है:

> ऐ ईमान वालो, अपनी ईश्वर प्रदत्त प्रेम की असीम क्षमता को अपनी कुरूप, दोषपूर्ण, बुरी और हानिकारक शारीरिक आत्मा पर बर्बाद मत करो। इसकी पूजा मत करो या इसकी इच्छाओं और कल्पनाओं का अनुसरण मत करो मानो कि यह पूजा की वस्तु हो, बल्कि इसे उस एक की ओर निर्देशित करो जो असीम प्रेम का पात्र है, जो तुम्हारा असीम भला करता है और तुम्हें असीम सुखी बनाएगा; जो अपनी कृपा से उन लोगों को खुश करता है जिनके साथ तुम्हारे संबंध हैं और जिनकी खुशी से तुम प्रसन्न होते हो; वह असीम पूर्णता और असीम पवित्र, उत्कृष्ट, शुद्ध, पूर्ण और अविनाशी सौंदर्य वाला है; जिसका प्रत्येक नाम सुंदरता और अनुग्रह के असंख्य प्रकाश बिखेरता है; जिसकी दया की सुंदरता और जिसकी सुंदरता की दया जन्नत में प्रदर्शित होती है; और जिसकी सुंदरता और पूर्णता ब्रह्मांड की सभी सुंदरता, अनुग्रह और पूर्णता, जो प्रेम करने योग्य हैं, की ओर इशारा करती हैं और संकेत करती हैं।
>
> उससे प्रेम करो और उसे अपनी पूजा का एकमात्र उद्देश्य बनाओ।

इसके अलावा इसमें कहा गया है:

> हे मानवता, अपने प्रेम की असीम क्षमता का उपयोग, जो तुम्हें ईश्वर के नामों और गुणों से प्रेम करने के लिए दी गई है, नश्वर प्राणियों से प्रेम करने के लिए मत करो। ईश्वर के अलावा जो कुछ भी मौजूद है, वह सब क्षणभंगुर है, जबकि नश्वर प्राणियों पर प्रदर्शित दिव्य सर्व-सुंदर नाम स्थायी और निरंतर हैं। प्रत्येक नाम और गुण में हज़ारों डिग्री की क्षमता होती है।

अनुग्रह और पूर्णता और प्रेम के हजारों स्तर हैं। उदाहरण के लिए, दयालु नाम पर विचार करें: स्वर्ग इसकी अभिव्यक्तियों में से एक है, शाश्वत खुशी इसकी चमक में से एक है, और सांसारिक प्राणियों को दिए गए सभी प्रावधान और उपहार इसकी बूंदों में से एक हैं।

यह देखने के लिए कि कुरान इन दो तरीकों के बीच अंतर कैसे व्यक्त करता है, विचार करें: निस्संदेह हमने मानवता को सृष्टि के पूर्ण नमूने के रूप में सर्वोत्तम कद के साथ बनाया है; फिर हमने इसे सबसे निचले स्तर पर पहुंचा दिया, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे, नेक काम किए (95:4–6); और न तो आकाश और न ही पृथ्वी उनके विनाश पर रोए (44:29)। देखें कि वे किस उच्च और चमत्कारी शैली में अंतर व्यक्त करते हैं! पहली आयत का विस्तृत विवरण ग्यारहवें वचन में पाया जा सकता है। यहां हम दूसरी आयत में निहित महान सत्य पर कुछ टिप्पणियां प्रस्तुत करते हैं, जो स्पष्ट रूप से बताती है कि जब अविश्वासी मरते हैं तो आकाश और पृथ्वी रोते नहीं हैं। इसका तात्पर्य यह है कि जब विश्वासी मरते हैं तो आकाश और पृथ्वी रोते हैं।

अविश्वासी लोग आकाश और पृथ्वी का अर्थ नहीं जानते, अपने निर्माता को नहीं पहचानते, अपने कर्तव्यों से इनकार करते हैं और इस प्रकार अपना मूल्य कम कर देते हैं।
ऐसे अपमान और शत्रुता के कारण स्वर्ग और पृथ्वी ऐसे लोगों के मरने पर प्रसन्न होते हैं। लेकिन जब विश्वासी मरते हैं तो वे रोते हैं, क्योंकि विश्वासी स्वर्ग और पृथ्वी के कर्तव्यों को जानते हैं और वे जो वास्तविकता रखते हैं, उसे स्वीकार करते हैं। जैसे-जैसे उनका विश्वास उन्हें इन अर्थों के बारे में बताता है, वे कहते हैं: "उन्हें कितनी खूबसूरती से बनाया गया है। वे अपने कर्तव्यों को कितनी अच्छी तरह से निभाते हैं।" विश्वासी उनके मूल्य को स्वीकार करते हैं और तदनुसार उनका सम्मान करते हैं। वे उनसे और उनके नामों से भी प्यार करते हैं, जिनके वे सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम में प्रतिबिम्ब हैं। और इसलिए स्वर्ग और पृथ्वी उनके लिए शोक मनाते हैं।

पहली चमक

नबी योना की प्रार्थना के साथ परमेश्वर की शरण लेना

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

R कुरान की आयतों और प्रत्येक के नीचे दिए गए वाक्यांशों का उच्चारण करना 33 बार, खास तौर पर शाम की नमाज़ और रात की नमाज़ के बीच में, बहुत फ़ायदेमंद है। पहली बार पैगम्बर योना (उन पर शांति हो) के बारे में है।

अंततः उसने अंधकार के पर्दों (मछली के पेट, समुद्र और अंधेरी रात) में पुकारा, "तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू महिमावान है। निश्चय ही मैं अत्याचारियों में से हूँ।" (21:87)

उसने अपने रब को पुकारा कि, "निश्चय ही मुझपर मुसीबत आ पड़ी है, और तू अत्यन्त दयावान है।" (21:83)

फिर यदि वे तुमसे मुँह मोड़ लें तो कह दो, "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया है, और वही सिंहासन का स्वामी है।" (9:129)

अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है, वह कितना अच्छा रक्षक है! (3:173)

सर्वशक्तिमान और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अलावा किसी के पास शक्ति और सामर्थ्य नहीं है।

हे सनातन, आप सनातन हैं, हे सनातन, आप सनातन हैं!

जो लोग ईमान लाए, उनके लिए यह मार्गदर्शन और आरोग्य है। (41:44)

पैगम्बर योना (उन पर और हमारे पैगम्बर पर शांति और आशीर्वाद हो) की प्रार्थना सबसे शक्तिशाली प्रार्थना है, और ईश्वर से हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर पाने का सबसे प्रभावी साधन है। आगे पैगम्बर योना (उन पर शांति हो) के प्रसिद्ध अनुभव का सारांश दिया गया है।

उसे समुद्र में फेंक दिया गया और एक बड़ी मछली ने उसे निगल लिया। समुद्र में तूफान था और रात अशांत और अंधेरी थी; किसी भी दिशा से आशा का कोई संकेत नहीं दिख रहा था। उस स्थिति में, उसने प्रार्थना की:

तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है, निश्चय ही मैं अत्याचारियों में से हूँ।

यह प्रार्थना उसके लिए मुक्ति का त्वरित साधन थी। उसकी प्रार्थना की शक्ति निम्नलिखित बातों में निहित है:

उस स्थिति में ऐसा कोई स्पष्ट साधन या कारण नहीं था जिसके द्वारा योना उद्धार पा सकता था; उसे एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो व्हेल और समुद्र, तथा रात और आकाश को नियंत्रित कर सके, यदि उसे बचाना था। रात, समुद्र और व्हेल उसके विरुद्ध एकजुट थे। केवल वही व्यक्ति जो इन तीनों को अपने अधीन कर सके, योना को उद्धार के किनारे पर ला सकता था। यदि सारी सृष्टि योना की दास और सहायक बन जाती, तो भी यह कोई लाभ नहीं होता।

इसका मतलब यह है कि परिणामों के उत्पादन में स्पष्ट साधन और कारणों का अपना कोई हिस्सा नहीं होता। चूँकि योना ने निश्चितता की नज़र से देखा कि कारणों के कारण के अलावा कोई शरण नहीं है, और जैसा कि उसने, ईश्वर की पूर्ण एकता और उसके प्रभुत्व के अपने सर्वोच्च विश्वास के माध्यम से

ब्रह्माण्ड ने पूरी तरह से अनुभव किया कि ईश्वर की समग्र अभिव्यक्तियों के अतिरिक्त, जो समस्त सृष्टि पर सर्वोच्च शासन करती हैं, प्रत्येक वस्तु के लिए विशेष अभिव्यक्तियाँ भी हैं और सर्व-दयालु होने के कारण, उनकी प्रार्थना ने रात, समुद्र और व्हेल को उनके अधीन करने का साधन प्रदान किया। ईश्वर की एकता के प्रति उनके दृढ़ विश्वास के प्रकाश के माध्यम से, जो सब कुछ पर पूर्ण नियंत्रण रखते हैं, व्हेल का पेट उनके लिए एक पनडुब्बी बन गया, और पहाड़ जैसी लहरों से दहाड़ता हुआ भयानक समुद्र एक शांत मैदान, भ्रमण के लिए एक सुखद स्थान बन गया। ईश्वर की एकता पर आधारित और उसकी घोषणा करने वाली उनकी प्रार्थना ने आकाश को सभी बादलों से साफ करने और चंद्रमा को उनके सिर पर लालटेन की तरह चमकने के लिए भी काम किया। वे चीजें जो उन्हें हर तरफ से दबा रही थीं, उन्हें धमका रही थीं, अब उनके प्रति एक दोस्ताना चेहरा दिखा रही थीं। इस प्रकार वह मोक्ष के तट पर पहुँच गया, जहाँ एक लौकी के पौधे के नीचे उसने पूरी तरह से महसूस किया कि उसके प्रभु ने उस पर किस हद तक कृपा की है।

अब हम उस स्थिति से सौ गुना अधिक भयानक स्थिति में हैं जिसमें पैगम्बर योना (उन पर शांति हो) ने स्वयं को पहली बार पाया था। हमारी रात भविष्य है। जब हम अपने धार्मिक दायित्वों के प्रति असावधानी के साथ अपने भविष्य को देखते हैं, तो यह उनकी रात की तुलना में सौ गुना अधिक अंधकारमय और भयावह होता है। हमारा समुद्र यह गतिशील, अस्थिर पृथ्वी है। इस समुद्र की प्रत्येक लहर अपने साथ हजारों शवों को लाती है, और इसलिए यह उनके समुद्र की तुलना में हजार गुना अधिक भयावह है। हमारी मछली हमारी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा की वासनाओं और सनकियों से बनी है, जो हमारे शाश्वत जीवन को नष्ट करने का प्रयास करती है। ऐसी मछली उसकी मछली से हजार गुना अधिक हानिकारक है। क्योंकि उसकी मछली सौ साल की उम्र को नष्ट कर सकती थी, जबकि हमारी मछली एक ऐसे जीवन को नष्ट करना चाहती है जो करोड़ों साल तक चलेगा।

यह हमारी सच्ची स्थिति है, हमें पैगम्बर योना (उन पर शांति हो) के समान कार्य करना चाहिए; सभी साधनों और कारणों से दूर होकर, हमें सीधे अपने प्रभु की शरण लेनी चाहिए, जो कारणों का कारण है। हमें कहना चाहिए:

तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है, निश्चय ही मैं अत्याचारियों में से हूँ।

हमें अवलोकन से प्राप्त होने वाली निश्चितता के साथ समझना और जानना चाहिए कि केवल वही, हमारा प्रभु, जो भविष्य को अपने आदेश के अधीन रखता है, संसार को अपने पूर्ण नियंत्रण में रखता है, और हमारी दुष्टतापूर्ण आत्माओं को अपने निर्देशन में रखता है, वही हमसे भविष्य की हानि, इस संसार की हानि, तथा हमारी दुष्टतापूर्ण आत्माओं की वासनाओं और इच्छाओं को दूर कर सकता है, जो हमारी उपेक्षा और पथभ्रष्टता के कारण हमारे विरुद्ध एकजुट हो गई हैं।

आकाश और पृथ्वी के रचयिता के अलावा और कौन सा ऐसा व्यक्ति है जो हमारे हृदय में होने वाली हर बात को, उसके सूक्ष्मतम और गुप्त विचारों तक को जान सकता है, और परलोक की स्थापना करके, हमें संसार की अनगिनत दमघोंटू लहरों से बचाकर हमारे लिए भविष्य को रोशन कर सकता है? अनिवार्य रूप से विद्यमान परमेश्वर के अलावा कोई भी, कोई भी व्यक्ति किसी भी तरह से हमारी सहायता या हमें बचा नहीं सकता; हम केवल उसकी इच्छा और अनुमति से ही बच सकते हैं।

जैसा कि मामला था, योना की प्रार्थनाओं का नतीजा यह हुआ कि व्हेल उसके लिए एक सवारी या जहाज बन गई और समुद्र एक शांत मैदान बन गया; रात उसके लिए चाँद की रोशनी से शांत हो गई। हमें भी यही प्रार्थना करनी चाहिए:

तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है, निश्चय ही मैं अत्याचारियों में से हूँ।

इस वाक्य के साथ कि आपके अलावा कोई देवता नहीं है, हमें अपने भविष्य पर भगवान की दया मांगनी चाहिए; वाक्यांश के साथ कि आप सभी महिमावान हैं, हमें पूछना चाहिए

हमारी दुनिया पर रहम की दुआ करें; इस वाक्य के साथ कि मैं भी उन लोगों में से हूँ जिन्होंने खुद पर ज़ुल्म किया है, हमें अपनी रूह पर रहम की दुआ करनी चाहिए। इस तरह हमारा भविष्य कुरान से रोशन माहौल में ईमान की रोशनी से रोशन हो सकता है और हमारी रात का खौफ और खौफ शांति और खुशी में बदल सकता है। साथ ही, जब हम सालों और सदियों की लहरों के बीच इस धरती पर सफर करते हैं, एक ऐसा समुद्र जिस पर अनगिनत लोग सवार हुए हैं और जिसमें से अनगिनत लोग जीवन और मृत्यु के क्रम से शून्य में फेंक दिए गए हैं, हमें इस्लाम की सच्चाई के जहाज पर सवार होना चाहिए, जो बुद्धिमान कुरान के घाटों में बनाया गया है, ताकि हम सुरक्षा और मुक्ति के किनारे पर जीवन का अपना कर्तव्य पूरा कर सकें।

समुद्र का तूफ़ान और उथल-पुथल एक स्क्रीन पर बदलते दृश्यों की तरह, हमेशा नए-नए दिखने वाले मनभावन दृश्यों की एक श्रृंखला बन जाएगा, और भयावह अकेलेपन और भय को पैदा करने के बजाय वे हमारे दिमाग को प्रबुद्ध करेंगे और हमें अपने आस-पास की हर चीज़ पर चिंतन करने और सबक सीखने के लिए प्रेरित करेंगे। कुरान के मार्गदर्शन और सत्य और असत्य के मानदंड द्वारा दी गई शिक्षा के आधार पर, हमारी आत्मा अब हम पर सवार नहीं होगी, बल्कि हमारी सवारी बन जाएगी। जब हम इस पर सवार होंगे, तो यह हमें अनंत जीवन प्राप्त करने में मदद करेगी।

संक्षेप में, मनुष्य की प्रकृति व्यापक है; जैसे हम मलेरिया के संक्रमण से पीड़ित होते हैं और काँपते हैं, वैसे ही हम धरती के भूकंप और कंपन से भी पीड़ित होते हैं, और पुनरुत्थान के दिन पूरी सृष्टि में होने वाले शक्तिशाली झटकों से भी पीड़ित होंगे। जैसे हम एक सूक्ष्म जीव से डरते हैं, वैसे ही हम आकाशीय पिंडों के बीच दिखाई देने वाले एक उल्कापिंड से भी डरते हैं। जैसे हम अपने घर से प्यार करते हैं, वैसे ही हम पूरी दुनिया से भी प्यार करते हैं। जैसे हम अपने छोटे से बगीचे से प्यार करते हैं, वैसे ही हम अनंत और शाश्वत स्वर्ग से भी प्यार करते हैं, और हम इसे बहुत प्यार करते हैं। इसलिए, ऐसे प्राणी की पूजा की वस्तु, भगवान, हमारा आश्रय, हमारा उद्धारकर्ता, और हमारा लक्ष्य केवल वही हो सकता है जिसकी शक्ति की मुट्ठी में पूरा ब्रह्मांड है, और जिसके अधीन एक ही समय में परमाणु और ग्रह दोनों हैं। इसलिए मनुष्यों को लगातार प्रार्थना करने की ज़रूरत है, योना की तरह, उस पर शांति हो:

तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है, निश्चय ही मैं अत्याचारियों में से हूँ।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

सत्रहवीं झलक

दूसरा यूरोप और कुरान के छात्र

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

चूँकि पश्चिमी विज्ञान और सभ्यता में कुछ हद तक पुराने सईद के विचारों पर प्रभाव, जब नए सईद ने मन और हृदय में यात्रा शुरू की, तो उन्होंने हृदय की बीमारी और बड़ी कठिनाइयों का कारण बना। इस कारण से, जब नए सईद ने अपने मन से उस गलत दर्शन और पतित सभ्यता को दूर करना चाहा, ताकि अपनी दुष्ट आत्मा के सुझावों और फुसफुसाहटों को शांत किया जा सके, जो यूरोप के पक्ष में गवाही देते थे, तो उन्होंने यूरोप के सामूहिक व्यक्तित्व के साथ निम्नलिखित चर्चा करने के लिए मजबूर महसूस किया, जो एक मामले में बहुत संक्षिप्त और दूसरे में लंबी है।

इसे गलत नहीं समझा जाना चाहिए; यूरोप दो हैं। एक वह है जो ईसा के धर्म और इस्लामी सभ्यता से लाभ उठाता है, अपने वैज्ञानिक और तकनीकी आविष्कारों के माध्यम से मानव सामाजिक जीवन और न्याय की सेवा करता है, दूसरा वह है जो प्रकृतिवादी और भौतिकवादी दर्शन पर आधारित है और सभ्यता की बुराइयों को सद्गुण मानकर मानव जाति को दुराचार और पथभ्रष्टता की ओर धकेल रहा है। उस समय आत्मा की यात्रा करते हुए, मैंने यूरोप के इस दूसरे सामूहिक व्यक्तित्व से कहा, जो अपने हाथ में लाभकारी विज्ञान और सभ्यता के सद्गुणों के स्थान पर बेकार, हानिकारक दर्शन और भ्रष्ट सभ्यता रखता है:

हे दूसरे यूरोप, जान लो! तुमने अपने दाहिने हाथ में अंधकारमय, पथभ्रष्ट दर्शन और अपने बाएं हाथ में भ्रष्ट, हानिकारक सभ्यता ले रखी है। फिर तुम दावा करते हो कि मानवता की खुशी उनमें निहित है। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे हाथ टूट जाएँ और तुम्हारी दो भेंटें तुम्हें मौत के घाट उतार दें।

हे अभागे आत्मा, जो अविश्वास और कृतघ्नता फैलाता है! क्या भ्रष्ट विवेक वाला और मानसिक या आध्यात्मिक बीमारियों से पीड़ित व्यक्ति महंगे कपड़ों, दिखावटी, भ्रामक चमक-दमक और सांसारिक सुखों से खुश रह सकता है?

क्या तुम नहीं देखते कि जो व्यक्ति हर उम्मीद की पूर्ति न होने से निराश या मोहभंग हो जाता है, उसके लिए मिठास खट्टी हो जाती है, सुख दुख में बदल जाता है और दुनिया संकीर्ण हो जाती है? तुम्हारी बुराई के संपर्क में आने वाला व्यक्ति, जिसका दिल और आत्मा तुम्हारे गुमराह करने से पीड़ित हो गया है और निराश और व्यथित हो गया है, वह तुम्हारी दी हुई चीज़ों से कैसे खुशी पा सकता है? क्या किसी को तब खुश कहा जा सकता है जब उसका शरीर एक भ्रामक, क्षणभंगुर स्वर्गीय स्थिति में हो या जब उसकी आत्मा और दिल नारकीय पीड़ा में हों? देखो, तुमने इस तरह से दुखी मानवता को गुमराह किया है, और उन्हें झूठे स्वर्ग में नारकीय पीड़ाएँ दी हैं।

हे मानवजाति की दुष्ट आत्मा! निम्नलिखित दृष्टांत पर विचार करें और देखें कि आपने मानवजाति को कहां पहुंचा दिया है। हमारे सामने दो रास्ते हैं। हम एक को चुनते हैं और चलना शुरू करते हैं। हर कदम पर असहाय लोगों पर गुंडों द्वारा हमला किया जाता है जो उनका सब कुछ लूट लेते हैं, उनके घरों को नष्ट कर देते हैं, और उन्हें इतनी बर्बरता से मारते हैं कि स्वर्ग भी उनके लिए रोता है। जहाँ भी हम देखते हैं, हमें एक ही दृश्य दिखाई देता है, उत्पीड़कों की चीखों और उत्पीड़ितों की चीखों और विलापों से भरा हुआ। चूँकि जब दूसरे लोग पीड़ा में होते हैं तो हमें दर्द होता है, इसलिए हमारा विवेक ऐसे अन्याय या विलाप को सहन नहीं कर सकता। इसलिए, जो लोग ऐसी घटनाएँ देखते हैं, वे या तो सभी मानवीय भावनाओं को त्याग देंगे और जब तक वे स्वयं सुरक्षित हैं, तब तक दूसरों के विनाश की चिंता नहीं करेंगे, बर्बरता की चरम सीमा के सामने आत्मसमर्पण कर देंगे, या हृदय और तर्क की माँगों को पूरी तरह से अनदेखा कर देंगे।

हे यूरोप, जो पाप और गुमराही से भ्रष्ट हो गया है और ईसा के धर्म से दूर चला गया है! तूने अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल किया है, जो दज्जाल की तरह सिर्फ़ एक आँख वाला है, मानवता को इस नारकीय स्थिति में एक "उपहार" के रूप में लाने के लिए और फिर, जब तूने देखा कि यह बीमारी इतनी लाइलाज है कि यह मानवता को सबसे ऊँचे से सबसे नीचे की ओर ले जाती है, उन्हें पशुता के सबसे निचले स्तर पर ले जाती है, तो तू लोगों को बेहोश करने के लिए इलाज के रूप में आकर्षक मनोरंजन और कल्पनाएँ पेश करता है। हालाँकि, तुम्हारा इलाज तुम्हें मार देगा। तूने मानवता के लिए जो रास्ता खोला है और जो खुशी तूने उन्हें दी है, वह दृष्टांत के पहले रास्ते से मिलती जुलती है।

दूसरा रास्ता, जो बुद्धिमानी से कुरआन ने मानव जाति को प्रदान किया है, वह यह है: हम देखते हैं कि हर स्थान, हर कस्बे और हर स्थान पर एक न्यायप्रिय शासक के सिपाही अपना कर्तव्य निभाते हैं। कभी-कभी शासक के अधिकारी आते हैं,

---

23 दज्जाल (ईसाई परंपरा में ईसा मसीह विरोधी) वह व्यक्ति या व्यक्ति या आंदोलन है जो ईश्वर के अस्तित्व न होने का दावा करता है, धर्म का घोर विरोध करता है और लोगों के जीवन से उसे मिटाने का प्रयास करता है। (ट्र.)

सरकार द्वारा उन्हें दिए गए हथियार और अन्य सामान ले लो, और उन्हें उनके डिस्चार्ज पेपर दे दो। सैनिक प्रसन्न हैं, हालाँकि बाहर से वे दुखी दिखते हैं क्योंकि उनके प्यारे घोड़े और हथियार वापस ले लिए गए हैं; लेकिन अब वे सम्राट से मिल सकते हैं और उनके देश की राजधानी में लौट सकते हैं। यदि सेना हटाने वाले अधिकारी किसी ऐसे रंगरूट से मिलते हैं जो उन्हें नहीं जानता और वे उससे अपने हथियार सौंपने के लिए कहते हैं, तो वह रंगरूट उनसे कहता है, "मैं सम्राट का सैनिक हूँ और उनकी सेवा में हूँ। मेरा अंतिम गंतव्य उनके पास है। यदि उन्होंने आपको यहाँ भेजा है, तो आपका स्वागत है। यदि नहीं, तो दूर रहो, क्योंकि चाहे आप कितने भी हों, मैं आपके साथ लडूँगा - अपने लिए नहीं, क्योंकि मैं खुद का मालिक नहीं हूँ, मैं अपने सम्राट का हूँ: मेरा व्यक्तित्व और मेरे हथियार दोनों मेरे मालिक की अमानत में हैं। इसलिए मैं आपके सामने झुकूँगा नहीं बल्कि अपने सम्राट के भरोसे को बनाए रखूँगा और उनकी शाही गरिमा और सम्मान की रक्षा करूँगा।"

यह दूसरे मार्ग पर खुशी और आनंद के हजारों उदाहरणों में से केवल एक है। यात्रा के दौरान, हम लगातार जन्म के नाम पर खुशी और उत्सव के साथ नए सैनिकों को इकट्ठा या संगठित होते देखते हैं, जबकि कई अन्य लोगों को मृत्यु के नाम पर जयकारों और सैन्य बैंड के साथ छुट्टी दी जाती है। बुद्धिमान कुरान ने मानवता को यह मार्ग उपहार के रूप में दिया है। यदि लोग इसका सम्मान करते हैं और इसे मार्गदर्शक के रूप में उपयोग करते हैं, तो वे इस दूसरे मार्ग में प्रवेश करेंगे।

फिर न तो उनपर कोई भय आएगा और न वे शोकाकुल होंगे (10:62)

हे दूसरे, भ्रष्ट यूरोप! तुम्हारी अनेक सड़े-गले और निराधार नींवें इस प्रकार हैं। तुम कहते हो, “सभी जीवित प्राणी, सबसे बड़े देवदूत से लेकर सबसे छोटी मछली तक, अपने स्वयं के स्वामी हैं; वे अपने नाम से काम करते हैं, और अपने ही आनंद के लिए प्रयास करते हैं। उन्हें जीवन का अधिकार है, और जीवन में उनका एकमात्र उद्देश्य जीवित रहना है।” क्या तुम उनके बीच सार्वभौमिक पारस्परिक सहायता को नहीं देखते, जिसे उनके सर्व-उदार निर्माता ने उदारता के सिद्धांत के रूप में स्थापित किया है, जिसका ब्रह्मांड के सभी क्षेत्रों में पूरी तरह से पालन किया जाता है? पौधे जानवरों की मदद करते हैं, और जानवर मानवता की मदद करते हैं। लेकिन, मान लीजिए कि पारस्परिक सहायता के इस सार्वभौमिक नियम की दयालु, उदार अभिव्यक्तियाँ संघर्ष और कलह हैं, तो तुम उपदेश देते हो कि जीवन संघर्ष से बना है। यह कैसे सच हो सकता है? क्या तुम यह नहीं देख सकते कि सभी खाद्य पदार्थों के कण या परमाणु शरीर की कोशिकाओं को पोषण देने में मदद करते हैं? यह पारस्परिक सहायता हर चीज के एक उदार भगवान के आदेश का पालन करने से उत्पन्न होती है, और यह साबित करती है कि कोई भी जीवित प्राणी खुद का स्वामी नहीं है। लेकिन आपकी एक और घटिया नींव यह है कि आप कहते हैं, "हर चीज़ खुद की मालिक है या खुद की मालिक है।" इस बात का एक और स्पष्ट प्रमाण यह है कि कोई भी चीज़ खुद की मालिक नहीं है: सभी जीवित प्राणियों में सबसे सम्माननीय, और सबसे व्यापक इच्छाशक्ति और सबसे व्यापक कार्य क्षेत्र से संपन्न व्यक्ति मानवता है। इसके बावजूद, हमारे दैनिक कार्यों जैसे कि सोचना, बोलना, आदि में भी हमारी भूमिका महत्वपूर्ण है।

खाना-पीना और खाना, जो हम अपनी इच्छा और शक्ति से करते हैं, वह बहुत छोटा है। तो जो लोग अपने इन सबसे साधारण कामों का सौवाँ हिस्सा भी नहीं रखते, वे खुद पर स्वामित्व और आधिपत्य का दावा कैसे कर सकते हैं?

यदि इस सबसे सम्माननीय प्राणी को, जो स्वतंत्र इच्छा के व्यापक दायरे से संपन्न है, अपने स्वामित्व और प्रभुत्व में इतनी कम हिस्सेदारी प्राप्त है, तो अन्य सजीव और निर्जीव चीजें किस हद तक अपने ऊपर प्रभुत्व का दावा कर सकती हैं?

हे यूरोप! तुम इस भ्रम में इसलिए पड़े हो क्योंकि तुम्हारी बुद्धि ने तुम्हें अपने प्रभु को भूला दिया है, जो हर चीज़ का निर्माता है। परिणामस्वरूप, तुम्हारे सच्चे स्वरूप के बारे में इस भ्रम ने तुम्हें सभी चीज़ों और कार्यों को (भौतिक) कारणों से जोड़ दिया है, और जो ईश्वर का है उसे झूठे "दावेदारों" के साथ बांट दिया है। यह सभी जीवित प्राणियों को एक अणु के वजन की शक्ति, एक बाल की इच्छा की क्षमता, चेतना की एक चमक और जीवन की एक छोटी सी चमक के माध्यम से अपनी अंतहीन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए असंख्य घृणा और शत्रुता के साथ संघर्ष करने के लिए मजबूर करता है। उनके पास जो कुछ भी है (शक्ति और इच्छा, चेतना और जीवन के नाम पर) वह उनकी एक भी ज़रूरत को पूरा नहीं कर सकता। जब दुर्भाग्य उन पर आता है, तो वे बहरे और अंधे कारणों से मदद मांगते हैं। लेकिन अविश्वासियों की अपीलें बर्बाद होने के लिए नियत हैं (13:14)।

आपकी अंधकारमय और अंधकारमय प्रतिभा ने मानवता के दिन को झूठी, भ्रामक रोशनी से जगमगाती रात में बदल दिया है। वे रोशनियाँ मानवता के चेहरे पर खुशी से नहीं मुस्कुरातीं, बल्कि वे उनकी दयनीय और शोकाकुल स्थिति में उनकी मूर्खतापूर्ण खुशी का मज़ाक उड़ाती हैं।

आपकी प्रतिभा के छात्र हर जीवित प्राणी को एक दुखी प्राणी के रूप में देखते हैं जिस पर हर तरफ से अंधकार का हमला है। वे दुनिया को विलाप का घर मानते हैं, और इसमें सभी आवाज़ें मृत्यु और पीड़ा पर विलाप करती हैं। आपकी प्रतिभा से पूरी तरह से शिक्षित छात्र फिरौन और अत्याचारी बन जाते हैं, लेकिन ऐसे फिरौन और अत्याचारी कि वे सबसे नीच चीजों की पूजा करते हैं और हर लाभकारी साधन से इस तरह जुड़ जाते हैं जैसे कि ये साधन उनके स्वामी हों। वे दिखने में विद्रोही होते हैं, लेकिन सुख के लिए खुद को इतना विनम्र बना लेते हैं कि वे सबसे तुच्छ लाभ के लिए शैतान के पैर भी चूम लेते हैं। वे बहुत शक्तिशाली प्रतीत होते हैं, लेकिन चूँकि उनके पास (अपनी आंतरिक दुनिया में) कोई सहारा नहीं है, इसलिए वे वास्तव में असीम रूप से कमजोर हैं। आपके छात्र केवल अपनी शारीरिक भूख को संतुष्ट करना चाहते हैं, देशभक्ति और आत्म-बलिदान की आड़ में अपने व्यक्तिगत लाभ का पीछा करते हैं, और अपने लालच और दंभ को संतुष्ट करने के लिए काम करते हैं।

वे केवल अपने आप से प्रेम करते हैं और उसके लिए सब कुछ त्याग देते हैं।

कुरआन के सच्चे विद्यार्थी ईश्वर के बन्दे हैं, लेकिन वे इतने सम्मानित बन्दे हैं कि वे किसी बड़े से बड़े प्राणी या हित के सामने भी अपने आपको छोटा नहीं समझते और जन्नत के परम लाभ को भी अपनी इबादत का लक्ष्य नहीं बनाते। वे नम्र और विनम्र हैं, लेकिन केवल अपने रचयिता के सामने और उसकी आज्ञा से ही अपने आपको नम्र करते हैं और दोनों लोकों में समस्त मानवजाति के कल्याण के लिए अपने आपको खपाते हैं। वे दरिद्र हैं, लेकिन अपने दयालु रब ने जो कुछ उनमें रखा है, उसके कारण वे सब से स्वतंत्र हैं; वे दुर्बल हैं, लेकिन अपने रब की शक्ति के कारण सब से बलवान हैं, जिसकी शक्ति असीम है। इस क्षणभंगुर संसार को जीवन का लक्ष्य बनाना तो दूर, वे जन्नत में प्रवेश भी नहीं चाहते और उससे प्रसन्न नहीं होते। क्या कुरआन अपने सच्चे विद्यार्थियों को इस क्षणभंगुर संसार को जीवन का लक्ष्य बनाने की अनुमति देगा, जबकि वह उन्हें अनन्त जन्नत को भी अपना अंतिम लक्ष्य बनाने की अनुमति नहीं देता? (उनका लक्ष्य केवल अपने रब की प्रसन्नता प्राप्त करना है और जन्नत तो केवल एक पुरस्कार है।)

इस प्रकार आप समझ सकते हैं कि इन दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के प्रयासों का उद्देश्य क्या भिन्न है।

आप आगे छात्रों के उत्साह और आत्म-बलिदान की तुलना कर सकते हैं
अपने भ्रष्ट दर्शन के शिष्यों के साथ बुद्धिमान कुरान को इस प्रकार पढ़ाओ:

आपके भ्रष्ट दर्शन के शिष्य अपने स्वार्थ के लिए अपने परिवार से भी पलायन कर जाते हैं, यहां तक कि उनके खिलाफ मुकदमा भी दायर कर देते हैं।
जबकि कुरान के विद्यार्थी आकाश और पृथ्वी के सभी धर्मी निवासियों को अपने परिवार के सदस्य मानते हैं और उनके साथ इतना गहरा और सच्चा रिश्ता महसूस करते हैं कि वे उनके लिए प्रार्थना करते हैं, और कहते हैं, "हे ईश्वर, सभी ईमान वाले पुरुषों और महिलाओं को क्षमा कर!" उनकी खुशी कुरान के विद्यार्थियों को खुश करती है। वे सबसे बड़ी चीज़ों को भी, जैसे कि ईश्वर का सर्वोच्च सिंहासन और सूर्य, ईश्वर के कर्तव्यनिष्ठ और अधीनस्थ अधिकारियों और अपने जैसे सेवकों और प्राणियों के रूप में देखते हैं।

कुरान अपने विद्यार्थियों को इतनी खुशी और उल्लास प्रदान करता है कि निन्यानबे प्रार्थना की माला के स्थान पर, यह अपने विद्यार्थियों को निन्यानबे दुनियाओं के सभी परमाणुओं को प्रार्थना की माला के रूप में देता है जो निन्यानबे ईश्वरीय नामों की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करते हैं। यह उनसे कहता है, "इनके साथ अपनी महिमा और प्रार्थनाएँ पढ़ें!" कुरान के ऐसे संत छात्रों को देखें जैसे अब्दुल-कादिर अल-जिलानी, अर-रुफाई,24 और

---

24 अहमद इब्न अली इब्न याह्या अर-रुफई (1120-1184), रुफैया सूफी संप्रदाय के संस्थापक, इस्लाम के सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित संतों में से एक हैं। (ट्र.)

राख-शाधिली,25 और देखें कि कैसे उन्होंने ब्रह्मांड की हर चीज़ का इस्तेमाल किया, परमाणुओं की श्रृंखलाओं, वर्षा की बूंदों और सभी प्राणियों की सांसों तक का उपयोग परमेश्वर की महिमा, उल्लेख और प्रशंसा करने के लिए किया।

इस प्रकार, कुरआन की चमत्कारी व्याख्या को देखिए और देखिए कि इससे मनुष्य किस प्रकार उन्नत होते हैं - यद्यपि वे एक सूक्ष्म जीव से पराजित होते हैं और थोड़े से दुःख और चिंता से संकट और निराशा में चले जाते हैं, फिर भी देखिए कि कुरआन के ज्ञानवर्धक मार्गदर्शन से वे किस उच्च पद पर पहुँचते हैं, उनकी क्षमताओं का किस सीमा तक विकास होता है। ऐसे लोग संसार और उसकी सामग्री को अपनी माला जपने, अपने दैनिक पाठ के लिए अपर्याप्त समझते हैं, और वे अपनी प्रार्थनाओं, महिमाओं और स्तुतियों के उद्देश्य के रूप में स्वर्ग को तुच्छ समझते हैं। इसके बावजूद, वे स्वयं को ईश्वर के सबसे छोटे प्राणी से बड़ा या अधिक गुणी नहीं समझते। वे अत्यंत गरिमा को अत्यंत विनम्रता और नम्रता के साथ जोड़ते हैं। आप इससे देख सकते हैं कि भ्रष्ट दर्शन के छात्र कितने पतित हैं।

तो, उन सत्यों के बारे में जो भ्रष्ट लोगों की एक-आंख वाली प्रतिभा है
पश्चिमी दर्शनशास्त्र कुरान के मार्गदर्शन को गलत तरीके से समझता है - जो दोनों दुनियाओं पर विचार करता है, जो अपनी दो चमकती आँखों से उन्हें देखता है, अदृश्य को भेदता है, और अपने दोनों हाथों से दोनों दुनियाओं में मानव जाति की खुशी की ओर इशारा करता है - कहता है:

> ऐ इंसानों! जो हस्ती और माल तुम्हारे हाथ में है, वह तुम्हारा नहीं है; वह तुम्हारी अमानत है। वह मालिक का है; वह बड़ा दयावान और बड़ा कृपालु है, जो सब कुछ जानता है और सब पर अधिकार रखता है। वह तुमसे अपनी वह सम्पत्ति खरीदना चाहता है, जो उसने तुम्हें सौंपी है, ताकि वह तुम्हारी खातिर सुरक्षित रहे, ताकि तुम उसे खो न दो। वह तुम्हें इसके बदले में बहुत बड़ी कीमत देगा। एक सैनिक की तरह, तुम्हारे पास भी कुछ जिम्मेदारियाँ और कर्तव्य हैं, इसलिए उसके नाम पर और उसके लिए काम करो। वह तुम्हें वह सब देता है, जिसकी तुम्हें ज़रूरत है और जो कुछ तुम जीत नहीं सकते, उससे तुम्हारी रक्षा करता है।
>
> आपके जीवन का उद्देश्य उनके नामों और आवश्यक गुणों की अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करना है। जब दुर्भाग्य आता है, तो आप कहते हैं, "निश्चित रूप से हम ईश्वर के हैं और उनकी सेवा में हैं, और निश्चित रूप से हमें उनके पास लौटना है (2: 156)। इसलिए, हे दुर्भाग्य, यदि आप उनकी अनुमति से आए हैं, तो स्वागत करें। हम उनकी ओर लौट रहे हैं और उनके दर्शन की इच्छा रखते हैं। वह जब भी चाहेंगे, हमें जीवन के कर्तव्यों और कठिनाइयों से मुक्त कर देंगे। यदि, हे दुर्भाग्य, यह आपके हाथों से होना है, तो यह

---

25 शेख हसन अश-शदिली (मृत्यु 1258): इस्लाम के अग्रणी, सर्वाधिक प्रसिद्ध संतों में से एक।
उन्होंने शादिलियाह की स्थापना की, जो सबसे महत्वपूर्ण सूफी भाईचारों में से एक है। (ट्र.)

> ठीक है। लेकिन अगर उसने तुम्हें मेरे भरोसे की सच्चाई को परखने के लिए आने दिया है, लेकिन मुझे तुम्हारे सामने खुद को समर्पित करने की अनुमति नहीं दी है, तो जब तक मेरे पास शक्ति है, मैं कभी भी उसके भरोसे को किसी ऐसे व्यक्ति के सामने समर्पित नहीं करूंगा जो इसे प्राप्त करने का हकदार नहीं है।"

यह दो तरीकों की वास्तविकता को देखने में सक्षम होने के कई उदाहरणों में से एक है। लेकिन लोग मार्गदर्शन और गुमराही में भिन्न होते हैं, और असावधानी के कई स्तर होते हैं। हर कोई इस सत्य को उसके सभी स्तरों में पूरी तरह से नहीं समझ सकता। असावधानी इंद्रियों को सुन्न कर देती है। खासकर वर्तमान युग में, इसने इंद्रियों को इस हद तक सुन्न कर दिया है कि "सभ्य" लोग इस तीव्र दर्द के प्रति असंवेदनशील हैं। हालाँकि, विज्ञान में विकास के कारण बढ़ी संवेदनशीलता और हर दिन दसियों हज़ार मौतों की चेतावनियाँ अभी भी असावधानी के इस परदे को चीर सकती हैं। लेकिन यह कितना अफ़सोस की बात है कि मुस्लिम देशों में बहुत से लोग पश्चिमी लोगों की अंधी नकल करते हैं और उनके अधार्मिक विचारों और वैज्ञानिक भौतिकवाद के प्रभाव में गुमराही का रास्ता अपनाते हैं।

ऐ नौजवानों, खास तौर पर मुस्लिम देशों में रहने वाले! पश्चिमी देशों की नकल करने की कोशिश मत करो! इस दूसरे यूरोप के हाथों इतनी बुरी किस्मत झेलने के बाद भी तुम कैसे उसके भ्रष्ट विचारों पर भरोसा कर सकते हो और उनका अनुसरण कर सकते हो? जो लोग उनके साथ बदतमीजी करते हैं, वे अनजाने में उनके साथ मिल जाते हैं और खुद को और अपने भाई-बहनों को मौत की सज़ा देते हैं। ध्यान रहे कि जितना ज़्यादा तुम अनैतिकता में उनका अनुसरण करोगे, उतना ही ज़्यादा तुम अपने देशप्रेम के दावों का खंडन करोगे! क्या इस तरह से उनका अनुसरण करने का मतलब "राष्ट्रीय" मूल्यों के प्रति समर्पण को तुच्छ समझना और राष्ट्र का उपहास करना है? ईश्वर हमें और आपको सीधे रास्ते पर ले जाए।

चौबीसवीं चमक

महिलाओं के लिए ड्रेस कोड

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ऐ नबी! अपनी पत्नियों और बेटियों से कह दो और ईमानवालों की स्त्रियों से भी कह दो कि वे अपने ऊपर कुछ वस्त्र डाल लें (जब वे घर से बाहर हों और ऐसे पुरुषों के सामने हों जिनसे विवाह करने पर उन्हें रक्त-सम्बन्ध के कारण मना नहीं किया गया हो)। (33:59)

T उनकी कविता महिलाओं को घूंघट करने का आदेश देती है। हालाँकि, अनैतिक सभ्यता कुरान के इस आदेश का विरोध करती है; वह महिलाओं के पर्दा करने को उनके लिए स्वाभाविक नहीं मानती, तथा इसे गुलामी का एक रूप मानती है।

उत्तर

मैं इस पवित्र कुरान में ज्ञान के अनेक उदाहरणों में से केवल चार का ही वर्णन करूंगा, जो यह दर्शाते हैं कि पर्दा करना महिलाओं के लिए पूर्णतया स्वाभाविक है, तथा इसके विपरीत कोई भी कथन महिलाओं की जन्मजात प्रकृति के विरुद्ध है।

बुद्धि का पहला उदाहरण

महिलाओं के लिए घूंघट करना स्वाभाविक है और उनका जन्मजात स्वभाव इसकी मांग करता है। क्योंकि महिलाएं स्वभाव से कमज़ोर, कोमल और नाजुक होती हैं, और उन्हें अपने और अपने बच्चों, जिन्हें वे अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करती हैं, दोनों के लिए सुरक्षा और मदद की ज़रूरत महसूस होती है। इसलिए, उनमें खुद को प्यार करने और तिरस्कार न करने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है।

इसके अलावा, हर दस में से छह या सात महिलाएँ या तो उम्र में बढ़ रही हैं या बदसूरत हैं। वे अपनी उम्र नहीं दिखाना चाहतीं और बदसूरत के रूप में जानी नहीं जाना चाहतीं। उनमें से कई ईर्ष्या के कारण दूसरों के संबंध में बदसूरत नहीं दिखना चाहतीं जो अधिक "सुंदर" हैं। इसके अलावा,

वे आक्रामकता या बदनामी के शिकार होने से डरते हैं, और अपने पतियों द्वारा बेवफाई का आरोप नहीं लगाना चाहते हैं। ये सभी और इसी तरह के अन्य कारक स्वाभाविक रूप से उन्हें खुद को ढकने के लिए प्रेरित करते हैं। अगर ध्यान से देखा जाए, तो यह बुजुर्ग महिलाएं हैं जो खुद को सबसे ज्यादा छिपाती हैं। दस महिलाओं में से केवल दो या तीन ही ऐसी होती हैं जो युवा और सुंदर दोनों होती हैं और खुद को प्रदर्शित करने में असहज महसूस नहीं करती हैं।

यह एक तथ्य है कि लोग उन लोगों की नज़रों से असहज और आहत महसूस करते हैं जिन्हें वे पसंद नहीं करते हैं, अक्सर इसे असहनीय पाते हैं। वास्तव में, अगर एक सुंदर, बेढंगे कपड़े पहने महिला दस पुरुषों में से दो या तीन की नज़रों से खुश होती है जो उससे विवाह कर सकते हैं, तो वह शेष सात या आठ की नज़रों को सहन नहीं कर सकती। साथ ही, चूँकि एक सुंदर महिला जो नैतिक रूप से भ्रष्ट नहीं है, संवेदनशील है और आसानी से प्रभावित होती है, वह निश्चित रूप से अभद्र, गंदी नज़रों से परेशान होगी, जिसका अनुभव हानिकारक साबित हुआ है, और जो वास्तव में जहरीला है। हम यहाँ तक सुनते हैं कि यूरोप में, जहाँ महिलाएँ खुद को नहीं ढकती हैं, कई महिलाएँ नज़रों से परेशान होती हैं और पुलिस से शिकायत करती हैं, कहती हैं, “ये बदमाश हमें घूरते रहते हैं और हमें परेशान करते हैं।” इसका अर्थ यह है कि आधुनिक सभ्यता द्वारा महिलाओं का पर्दा करना उनकी प्रकृति के विपरीत है, जबकि कुरान में पर्दा करने का आदेश न केवल महिलाओं की प्रकृति के अनुरूप है, बल्कि यह करुणा की इन खानों को पतन, अपमान और वास्तव में गुलामी और दरिद्रता से बचाता है, जो अनंत काल तक उनके योग्य साथी हो सकते हैं।

इसके अलावा, महिलाएं स्वभावतः अजनबी पुरुषों से डरती हैं।
डर स्वाभाविक रूप से सुरक्षा की मांग करता है। आठ या नौ महीने तक बच्चे को पालने का भारी बोझ उठाने के अलावा, जो निश्चित रूप से आठ या नौ मिनट के आनंद को कड़वा कर देगा, आठ या नौ मिनट के अवैध आनंद के बदले में आठ या नौ साल तक बच्चे को पालने की आपदा को झेलने की भी संभावना है। जैसा कि अक्सर होता है, एक महिला को उन पुरुषों से स्वाभाविक डर होता है जो अजनबी होते हैं, और उसका स्वभाव उसे उनसे दूर रहने के लिए मजबूर करता है। उसकी स्वाभाविक कमजोरी उसे अजनबियों की भूख को भड़काने और उनके हमले का कारण बनने से रोकती है, यह दिखाते हुए कि उसका लबादा उसकी ढाल और गढ़ है। मुझे बताया गया कि एक जूता पॉलिश करने वाले ने राजधानी शहर में एक उच्च पदस्थ व्यक्ति की नंगी टांगों वाली पत्नी को बाजार में, लोगों के सामने दिनदहाड़े घेर लिया था। यह उन लोगों के बेशर्म चेहरे पर तमाचा है जो महिलाओं के घूंघट का विरोध करते हैं।

बुद्धि का दूसरा उदाहरण

स्त्री-पुरुष के बीच ठोस और मजबूत संबंध, तथा प्रेम और रुचि केवल सांसारिक जीवन की आवश्यकताओं से उत्पन्न नहीं होती। वास्तव में, स्त्री केवल सांसारिक जीवन में ही अपने पति की साथी नहीं होती; वह अनंत जीवन में भी उसकी साथी होती है और वह उसका होता है। चूँकि वह ऐसी है, इसलिए उसे अपने पति, अपने शाश्वत साथी के अलावा दूसरों की नज़र अपनी सुंदरता की ओर आकर्षित नहीं करनी चाहिए, और उसे अपमानित नहीं करना चाहिए और उसकी ईर्ष्या को नहीं जगाना चाहिए। चूँकि, विश्वास के अनुसार, उसके पति का उसके साथ संबंध इस सांसारिक जीवन तक ही सीमित नहीं है, इसलिए वह उसके सौन्दर्य के वर्षों के दौरान उसके प्रति केवल पशुवत प्रेम नहीं रखता, बल्कि उसे न केवल युवा और सुंदर होने पर बल्कि उसके बुढ़ापे में भी ईमानदारी से प्रेम और सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वह दूसरे, अनंत जीवन में भी उसकी साथी होगी; निश्चित रूप से, मानवता की आवश्यकता है कि वह बदले में अपनी सुंदरता को केवल उसके सामने प्रस्तुत करे और अपना प्रेम केवल उसी तक सीमित रखे। अन्यथा उसे बहुत कम लाभ होगा, लेकिन बहुत कुछ खोना होगा।

इस्लाम की मांग है कि पति और पत्नी एक दूसरे के लिए एक अच्छे साथी होने चाहिए। यह विशेष रूप से धर्म के मामले में होना चाहिए। वह पति कितना खुश है जो अपनी पत्नी के अच्छे धार्मिक जीवन को देखता है और उसका अनुसरण करता है, ताकि वह शाश्वत जीवन में उसका साथ न खो दे। वह पत्नी कितनी खुश है जो अपने पति के अच्छे धार्मिक जीवन को देखती है और अपने शाश्वत मित्र को न खोने के लिए एक धर्मपरायण, धार्मिक महिला बन जाती है। उस आदमी के लिए अफसोस है जो व्यभिचार में लिप्त है, जो उसे हमेशा के लिए उसकी धार्मिक पत्नी खो देगा। वह महिला कितनी बदकिस्मत है जो अपने ईश्वर का अनुसरण नहीं करती-

वह अपने आदरणीय, पवित्र पति को खो देती है और अपने शाश्वत, धन्य मित्र को खो देती है। और उस दुखी पति-पत्नी पर हज़ारों विपत्तियाँ आती हैं जो एक-दूसरे का अनुसरण करते हुए अपराध और अपव्यय करते हैं, और एक-दूसरे को नरक की आग में जाने में मदद करते हैं!

बुद्धि का तीसरा उदाहरण

पारिवारिक जीवन में खुशहाली पति-पत्नी के बीच आपसी विश्वास, सच्चे सम्मान और प्रेम से संभव और निरंतर है। अभद्र पोशाक और अभद्रता इस आपसी विश्वास, सम्मान और प्रेम को नष्ट कर देती है। अभद्र पोशाक पसंद करने वाली कई महिलाएं दूसरों के सामने सुंदर और आकर्षक दिखना चाहती हैं। (अधिकांश पति सोचते हैं कि उनकी पत्नियाँ जो अभद्र पोशाक पसंद करती हैं, वे खुद को दूसरे पुरुषों से प्यार करवाना चाहती हैं जो उन्हें उनसे अधिक सुंदर लगते हैं।) हमेशा ऐसे पुरुष हो सकते हैं जो किसी भी पत्नी के पति से अधिक सुंदर हों। उनमें से दस में से नौ को वे पसंद आएँगे।

ऐसे पुरुष जो अपने पतियों से ज़्यादा सुंदर हैं। और बीस में से सिर्फ़ एक पुरुष को ऐसी महिलाएँ नहीं मिलतीं जो उसकी पत्नी से ज़्यादा सुंदर हों। फिर, जोड़ों के बीच आपसी प्यार और सम्मान के खत्म होने के अलावा, बेहद बदसूरत और नीच भावनाएँ पैदा हो सकती हैं, जैसे कि:

स्वभाव से, पुरुष उन महिलाओं के प्रति कोई वासना महसूस नहीं करते हैं जो विवाह के लिए निषिद्ध संबंधों के अंतर्गत आती हैं, जैसे कि उनकी बहनें, क्योंकि ऐसे रिश्तेदारों के चेहरे उनके करीबी रिश्तेदारों के कारण स्नेह और वैध प्रेम का संकेत देते हैं, और इस प्रकार किसी भी यौन प्रवृत्ति को नहीं जगाते हैं। लेकिन शरीर के उन हिस्सों को खुला छोड़ना जिन्हें शरीयत ने करीबी रिश्तेदारों के लिए उजागर करने से मना किया है, जैसे कि पैर, कुछ नीच आत्माओं में बेहद बुरी भावनाएँ जगा सकते हैं। क्योंकि एक करीबी रिश्तेदार का चेहरा करीबी रिश्तेदारी का संकेत देता है और रिश्तेदारी की डिग्री के बाहर दूसरों के चेहरों से मिलता जुलता नहीं है। हालाँकि, एक नंगी टाँग उन भावनाओं में एक विहित अजनबी के समान ही होती है जो जगा सकती हैं। चूँकि इसमें अपने मालिक के करीबी रिश्तेदारी को याद दिलाने के लिए कोई विशिष्ट चिह्न नहीं होता है, इसलिए यह करीबी रिश्तेदारों के कुछ पुरुषों की कामुक नज़रों को आकर्षित कर सकता है जो कम चरित्र वाले होते हैं। ऐसी नज़रों का मतलब है एक ऐसा पतन जो किसी के रोंगटे खड़े कर दे।

बुद्धि का चौथा उदाहरण

हर कोई बच्चे पैदा करना चाहता है। कोई भी राष्ट्र या सरकार ऐसी नहीं है जो जनसंख्या वृद्धि का समर्थन न करती हो। वास्तव में, सबसे महान पैगम्बर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने घोषणा की, "विवाह करो और बढ़ो, क्योंकि पुनरुत्थान के दिन मैं अन्य समुदायों की तुलना में तुम्हारी बड़ी संख्या पर गर्व करूंगा।"26 हालांकि, अभद्र पोशाक विवाहों की संख्या में कमी का कारण बनती है। क्योंकि सबसे अधिक भ्रष्ट और आधुनिक युवक भी चाहता है कि उसकी पत्नी पवित्र हो। चूँकि वह नहीं चाहता कि वह अभद्र हो-

वह स्वयं की तरह अविवाहित रहना पसंद करता है, और यहां तक कि अवैध संबंधों में भी पड़ जाता है।

महिलाएं अपने पति के व्यवहार को उस सीमा तक सीमित नहीं कर सकतीं जिस सीमा तक पुरुष अपने पति के व्यवहार को सीमित कर सकते हैं। घर के आंतरिक मामलों की निर्देशक होने के नाते, और इसलिए अपने पति की सारी संपत्ति, संपत्ति और बच्चों की जिम्मेदारी उसी पर होती है, महिलाओं की सबसे ज़रूरी विशेषता वफ़ादारी और आत्मविश्वास है। अभद्र पोशाक की वजह से पति का उस पर से भरोसा उठ सकता है और वह संदेह की पीड़ा झेल सकता है। वास्तव में, साहस और

---

[26] अब्दुर-रज्जाक, अल-मुसन्नाफ, 6:173; अल-अजलूनी, कश्फ अल-खफ़ा', 1:380। (ट्र.)

उदारता, दो सराहनीय गुण जो पुरुषों में पाए जाते हैं, उन्हें (पारंपरिक समुदायों में) महिलाओं में पुरुषों की तरह नहीं माना जाता है, क्योंकि वे विश्वास और वफादारी की कमी का संकेत दे सकते हैं। पुरुषों के प्राथमिक कर्तव्य सुरक्षा, भरण-पोषण, दयालु होना और सम्मान करना हैं, लेकिन महिलाओं से अपेक्षित वफादारी अधिक है। महिलाओं के लिए अपने पतियों के व्यवहार को प्रतिबंधित करना अधिक कठिन है। जबकि एक महिला को एक ही समय में एक से अधिक पुरुषों के साथ साझा नहीं किया जा सकता है और न ही विवाहित किया जा सकता है, एक पुरुष विवाह में एक से अधिक महिलाओं को रख सकता है।

हमारे देश की तुलना यूरोप से नहीं की जा सकती, क्योंकि वहां द्वंदयुद्ध जैसे हिंसक तरीकों से, चाहे कितनी भी अश्लील पोशाक क्यों न पहनी जाए, सम्मान की रक्षा एक हद तक की जा सकती है। जो व्यक्ति किसी सम्माननीय, स्वाभिमानी व्यक्ति की पत्नी पर नज़र डालता है, वह ऐसा तभी करता है, जब वह अपनी जान अपने हाथ में ले चुका होता है।27

इसके अलावा, भूमध्यसागरीय देशों के लोगों को छोड़कर यूरोप के लोग अधिकांशतः ठंडे और शीत ऋतु वाले हैं, जैसा कि वहां की जलवायु में होता है।
हालाँकि, यूरोप की तुलना में, मुस्लिम भूमि उष्ण है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि पर्यावरण का लोगों की नैतिकता पर प्रभाव पड़ता है। उन ठंडे देशों में, अभद्र पोशाक उन ठंडे लोगों की शारीरिक इच्छाओं और इच्छाओं को केवल अपेक्षाकृत रूप से उत्तेजित करती है, और इससे बहुत अधिक दुर्व्यवहार नहीं होता है। लेकिन अभद्र पोशाक गर्म देशों के आसानी से प्रभावित और संवेदनशील लोगों की शारीरिक इच्छाओं को लगातार उत्तेजित करती है, और बहुत अधिक दुर्व्यवहार, बर्बादी, युवा पीढ़ियों की कमजोरी और ताकत का नुकसान करती है। महीने में एक बार या हर बीस दिन में प्राकृतिक जरूरतों को पूरा करने के बजाय, लोग हर कुछ दिनों में ऐसा करने के लिए मजबूर महसूस करते हैं। चूँकि उन्हें हर महीने एक से दो सप्ताह के लिए अपनी पत्नियों से दूर रहना पड़ता है, क्योंकि वे अपनी मासिक धर्म जैसी आकस्मिकताओं के कारण बाध्य होते हैं, वे अपनी शारीरिक इच्छाओं से हार जाते हैं, और अवैध संबंधों की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं।

शहरी लोग ग्रामीण महिलाओं के पहनावे के बहाने महिलाओं का पर्दा नहीं हटा सकते। क्योंकि ग्रामीण महिलाओं को अपने और अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए बाहर काम करना पड़ता है और भारी काम करना पड़ता है, जिससे वे आमतौर पर घिसी-पिटी और कुछ हद तक खुरदरी हो जाती हैं। इसलिए, उनका आंशिक रूप से पर्दा न होना न तो शहरी महिलाओं की तरह लोगों का ध्यान आकर्षित करता है और न ही कामुक इच्छाओं को भड़काता है। इसके अलावा, चूंकि गांवों में भी कुछ ही बदचलन, आलसी पुरुष होते हैं, इसलिए शहरों में देखी जाने वाली बुराइयों का दसवां हिस्सा भी वहां नहीं पाया जाता। इसलिए ऐसी तुलना नहीं की जा सकती।

---

27 यह ऐतिहासिक रूप से ऐसा ही था। (ट्र.)

पहला पत्र

आलंकारिक प्रेम और सच्चा प्रेम

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

सवाल:

विपरीत लिंग के प्रति प्रेम, जिसे मुस्लिम संतों और विद्वानों द्वारा "लाक्षणिक प्रेम" कहा जाता है, कभी-कभी सच्चा या वास्तविक प्रेम (निर्माता के प्रति प्रेम) बन सकता है। क्या यह दुनिया के प्रति प्रेम के साथ हो सकता है?

उत्तर: संसार के दो मुख हैं; एक नश्वर और क्षणभंगुर, दूसरा दर्पण जिसमें दिव्य नाम प्रकट होते हैं और जो एक क्षेत्र है।

अगले जीवन के लिए बीज बोए जाते हैं। अगर इसके प्रेमी इसके क्षणभंगुर चेहरे से मुंह मोड़कर दूसरे की ओर मुड़ सकें, तो ऐसा प्रेम ईश्वर के प्रेम में बदल सकता है। लेकिन ऐसे प्रेमियों को अपने विशेष, छोटे और नाशवान संसार को संपूर्ण विशाल बाह्य संसार नहीं समझना चाहिए। अगर वे खुद को भूल जाते हैं, बाहरी दुनिया में डूब जाते हैं और उससे प्यार करने लगते हैं, तो वे, गुमराह लोगों के साथ, प्रकृति पूजा के दलदल में डूब जाएंगे - जब तक कि कोई चमत्कारिक रूप से उनकी मदद के लिए हाथ न आए।

इस सादृश्य पर विचार करें: हम चार लोग चार दीवारों वाले एक कमरे में हैं, और प्रत्येक दीवार पर एक पूरी लंबाई का दर्पण है। इससे कम से कम पाँच कमरे दिखाई देते हैं: एक वास्तविक और हम सभी के लिए सामान्य, और हमारे प्रत्येक दर्पण में प्रतिबिंबित “निजी” कमरे।

हममें से हर कोई अपने निजी कमरे के आकार, रूप और रंग को अपने दर्पण में हेरफेर करके बदल सकता है। उदाहरण के लिए, हम दर्पण को रंग कर उसे हरा या लाल बना सकते हैं, या उसे अलग-अलग आकार दे सकते हैं। लेकिन हम साझा वास्तविक कमरे को इतनी आसानी से नहीं बदल सकते। हालाँकि निजी और आम कमरे लगभग एक जैसे दिखते हैं, लेकिन उनका स्वभाव और प्रबंधन क्षमता काफी अलग है।

आप अपनी प्रतिबिंबित, निजी कक्ष को उंगली से नष्ट कर सकते हैं, जबकि आप साझा वास्तविक कक्ष का एक पत्थर भी नहीं हिला सकते।

इसी तरह, दुनिया एक सजा हुआ स्टेशन है जिसमें हर व्यक्ति का जीवन एक पूर्ण लंबाई वाला दर्पण है। इस स्टेशन में, हममें से हर किसी की एक निजी दुनिया है जिसमें हम सब एक दूसरे के साथ घुलमिल जाते हैं।

स्तंभ, केंद्र या द्वार हमारा अपना जीवन है। हमारी निजी दुनिया की तुलना एक ऐसे पृष्ठ से की जा सकती है जिस पर हमारे कर्म हमारे जीवन की कलम से दर्ज किए जाते हैं। हम अपनी निजी दुनिया से प्यार करते हैं, लेकिन अनिवार्य रूप से महसूस करते हैं कि यह दुनिया हमारे जीवन के इर्द-गिर्द बनी है और इसलिए, हमारे जीवन की तरह, क्षणभंगुर, अस्थिर और नाशवान है।

इसे देखते हुए, हमें अपना हृदय ईश्वरीय नामों के प्रकटीकरणों को समर्पित करना चाहिए, न कि नाशवान वस्तुओं को। इसके अलावा, हमें यह जानना चाहिए कि हमारा निजी संसार हमें एक खेत के रूप में सौंपा गया है जिसमें बीज बोने हैं ताकि हमारा स्वर्ग विकसित हो सके, और हमें इसे उन फलों के लिए प्यार करना चाहिए जो हम दूसरी दुनिया में प्राप्त करेंगे। अगर हम अपने कर्मों के फलों और ईश्वरीय अभिव्यक्तियों के प्रति अपना प्रेम समर्पित करते हैं, तो दुनिया के प्रति हमारा प्रेम ईश्वर के प्रति प्रेम में बदल जाएगा। अन्यथा, जैसा कि कहा गया है: उन लोगों की तरह मत बनो जो ईश्वर को भूल गए, और इसलिए उसने उन्हें खुद को भूलने के लिए प्रेरित किया; वे अधर्मी हैं (59:19), हम खुद को और अपनी निजी दुनिया की अस्थायी प्रकृति को भूलकर अपनी निजी दुनिया में डूब सकते हैं, और इस तरह अपने सांसारिक जीवन को इस तरह से अपना सकते हैं जैसे कि हम और यह हमेशा के लिए रहेगा-

कभी।

दुनिया के क्षणभंगुर चेहरे के प्रति ऐसा प्रेम अंतहीन पीड़ा और पीड़ा का कारण बनता है, क्योंकि यह एक दयनीय करुणा और निराशापूर्ण कोमल हृदय को जन्म देता है। संवेदनशील प्रेमी सभी प्राणियों के प्रति दया महसूस करते हैं और तदनुसार, सभी सुंदर, नश्वर प्राणियों के नाश से उनकी भावनाएँ आहत होती हैं। चूँकि वे उनके लिए कुछ नहीं कर सकते, इसलिए वे बहुत निराशा से पीड़ित होते हैं।

दूसरी ओर, जो लोग परमेश्वर को पाते हैं, वे करुणा और कोमलता की ऐसी भावनाओं के कारण उत्पन्न होने वाली बीमारियों का इलाज खोज लेते हैं।
यह समझते हुए कि सभी जीवित प्राणियों की आत्माएँ, जिनके नाश के लिए उन्हें इतनी दया आती है, दर्पण हैं जिनमें एक स्थायी व्यक्ति के स्थायी नाम निरंतर प्रतिबिंबित होते हैं, उनकी कोमलता स्वीकार करने वाले आनंद और मन की शांति में बदल जाती है। वे समझते हैं कि सभी सुंदर (लेकिन नश्वर और नाशवान) प्राणियों के पीछे एक शुद्ध अनुग्रह और एक पवित्र सौंदर्य है जो उनकी नाजुक कारीगरी, अलंकरण और उस आश्चर्य के माध्यम से स्थायी रूप से प्रकट होता है जिसके साथ वे कृपालु और प्रकाशित हैं।

और इसलिए वे समझते हैं कि कैसे मृत्यु और नाश होना केवल सौंदर्य और सुखों को ताज़ा करने और बढ़ाने और ब्रह्मांड में देखी गई दिव्य कलात्मकता को प्रदर्शित करने के लिए नवीनीकरण की प्रक्रियाएँ हैं। सभी दिव्य अभिव्यक्तियों में उनका आनंद और प्रशंसा बढ़ती है, साथ ही उनका उत्साह भी बढ़ता है।

वह शाश्वत है।

नौवां पत्र

मानवीय भावनाओं और प्रवृत्तियों का अभिविन्यास, और ईमान (विश्वास-विश्वास) और इस्लाम (मुस्लिम होना)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

T जो इस दुनिया को एक सैन्य अतिथिगृह मानते हैं और इस प्रकार जीने वाले लोग सभी लोगों में सबसे अधिक खुश रहते हैं। वे सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा स्वीकृत और प्रिय होने के स्तर तक पहुँच सकते हैं, जो सर्वोच्च आध्यात्मिक पद है, और वे सबसे मूल्यवान वस्तु को लगभग कुछ भी नहीं बेचते हैं। ऐसे लोग सीधे मार्ग पर चलते हुए खुशहाल जीवन जीते हैं और भटकते नहीं हैं।

सांसारिक मामले और चीज़ें लगभग कांच की तरह बेकार और भंगुर हैं, जबकि परलोक की चीज़ें हीरे की तरह मूल्यवान हैं और उन्हें तोड़ना असंभव है। सभी मानवीय प्रवृत्तियाँ, जैसे जिज्ञासा और प्रेम, जुनून और इच्छाएँ, लोगों में परलोक में एक खुशहाल जीवन पाने में मदद करने के लिए प्रत्यारोपित की जाती हैं। यदि कोई इस जीवन के लिए उनका शोषण करता है, तो वह हीरे की कीमत पर भंगुर कांच ही खरीदता है।

इस विषय पर, मैं एक बात पर ज़ोर देना चाहूँगा: प्रेम एक बहुत ही प्रबल भावना है। नश्वर प्राणियों के लिए इसे महसूस करना या तो प्रेमियों को अंतहीन दर्द और दुःख में डाल देता है या, चूँकि नश्वर प्राणी इतने सच्चे प्रेम के लायक नहीं हैं, इसलिए प्रेमी स्थायी प्रियतम की तलाश की ओर अग्रसर होते हैं। बाद के मामले में, यह सच्चा प्रेम बन जाता है।

एक व्यक्ति की हज़ारों भावनाओं में से प्रत्येक के दो पहलू होते हैं: आलंकारिक और वास्तविक। उदाहरण के लिए, हर कोई भविष्य के बारे में चिंता करता है, भले ही उन्हें इस बात की कोई गारंटी न हो कि वे कल जीवित रहेंगे। फिर, उन्हें एहसास होता है कि वे अपने नियत समय पर ही मरेंगे। नतीजतन, वे अपने अनिश्चित भविष्य के बारे में चिंता करना बंद कर देते हैं और मृत्यु से शुरू होने वाले अपने अनंत भविष्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह एक ऐसा भविष्य है जिसके बारे में चिंता करना ज़रूरी है, खासकर उन लोगों के लिए जो ईश्वरीय आज्ञाओं पर ध्यान नहीं देते।

इसी तरह, लोगों को धन और पद के लिए बहुत जुनून होता है। लेकिन वे जल्द ही समझ जाते हैं कि धन, प्रसिद्धि और पद इसके लायक नहीं हैं, क्योंकि ऐसी चीजें उनकी गरिमा को खत्म कर सकती हैं, दिखावा और पाखंड जैसे अपमानजनक दृष्टिकोण को प्रकट कर सकती हैं, या उन्हें दूसरों के सामने झुकने और खुद को नम्र बनाने का कारण बन सकती हैं। लेकिन सबसे बढ़कर, ये चीजें अस्थायी हैं। अंत में, ऐसे लोग आध्यात्मिक पदों और ईश्वर की निकटता की ओर झुकते हैं और अच्छे कामों में खुद को व्यस्त रखते हैं ताकि उनके पास अपने अनंत जीवन के लिए प्रावधान हो। इस प्रकार क्षणिक चीजों को प्राप्त करने की उनकी अत्यधिक महत्वाकांक्षा शाश्वत चीजों को प्राप्त करने में बदल जाती है।

लोगों का महत्वहीन, क्षणभंगुर चीज़ों के प्रति अत्यधिक झुकाव हठी हो सकता है। लेकिन अगर उन्हें अंततः एहसास हो जाए कि इस हठीले लगाव से कोई फ़ायदा नहीं है, तो ऐसी हठ आस्था की सच्चाई या इस्लाम के मूल सिद्धांतों के लिए दृढ़ता बन सकती है, साथ ही अगले जीवन के लिए प्रयास करने के लिए भी।

अगर लोग अपनी आध्यात्मिक शक्तियों का इस्तेमाल अपनी कामुक और सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए करते हैं और इस दुनिया में ऐसे जीते हैं जैसे कि वे हमेशा यहीं रहेंगे, तो वे शक्तियाँ अनैतिक गुणों को जन्म देंगी और बहुत बर्बादी का कारण बनेंगी। लेकिन अगर लोग इनका इस्तेमाल परलोक में समृद्धि के लिए करते हैं, जीवन की ज़रूरी ज़रूरतों को नज़रअंदाज़ किए बिना, तो ये शक्तियाँ दोनों दुनियाओं में प्रशंसनीय नैतिक गुणों और ज्ञान और सत्य के अनुसार खुशी की ओर ले जाएँगी।

आजकल उपदेशकों की सलाह अप्रभावी होने का एक कारण यह है कि वे लोगों को अपना स्वभाव बदलने के लिए आमंत्रित करते हैं। वे सलाह देते हैं: "ईर्ष्यालु या महत्वाकांक्षी मत बनो, शत्रुता मत करो या जिद्दी मत बनो, दुनिया से प्यार मत करो," इत्यादि। ऐसी सलाह बेकार है, क्योंकि यह मानव स्वभाव के विरुद्ध है। इसके बजाय, इन ऊर्जाओं को अच्छे कामों में लगाया जा सकता है और सकारात्मक लक्ष्यों की ओर निर्देशित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, दुनिया के लिए प्यार को दूसरी दुनिया के लिए प्यार में बदला जा सकता है, शत्रुता को अपने शारीरिक स्व के खिलाफ निर्देशित किया जा सकता है, और ईर्ष्या अच्छे काम करने के लिए प्रतिस्पर्धा करने का एक साधन बन सकती है।

मुस्लिम विद्वानों ने इस बात पर विस्तार से चर्चा की है कि क्या इस्लाम (मुस्लिम होना) और ईमान (विश्वास-विश्वास) अलग-अलग हैं। कुछ कहते हैं कि वे एक ही हैं और दूसरे कहते हैं कि वे अलग-अलग हैं, हालाँकि एक दूसरे के बिना स्वीकार्य नहीं है। मैं उनके बीच एक अंतर देखता हूँ, जो इस प्रकार है: इस्लाम एक पक्ष चुनना है, जबकि ईमान का अर्थ है निश्चितता के साथ पुष्टि करना।

दूसरे शब्दों में, इस्लाम या मुसलमान होने का मतलब है सच्चाई का साथ देना, उसके प्रति समर्पित होना और उसका पालन करना। ईमान या मोमिन होने का मतलब है इस्लाम की सच्चाई की पुष्टि करना और उसे स्वीकार करना। मैं कुछ ऐसे लोगों को जानता हूँ जो कुरान की आज्ञाओं की पुरज़ोर वकालत करते हैं, भले ही वे मोमिन न हों।

ऐसे लोगों को शाब्दिक अर्थ में मुसलमान माना जा सकता है (उनमें से जो

आत्मसमर्पण) क्योंकि वे इस्लाम के कुछ तत्वों का पालन करते हैं, लेकिन उन सभी पर विश्वास नहीं करते। कुछ विश्वासियों को मुस्लिम नहीं माना जा सकता, क्योंकि वे कुरान की आज्ञाओं पर ज़्यादा ध्यान नहीं देते या उनका पालन करने की कोशिश नहीं करते।

प्रश्न: क्या इस्लाम के बिना ईमान या मुसलमान होना - दैनिक जीवन में आज्ञाकारिता और अभ्यास के बिना - किसी व्यक्ति के लिए दूसरी दुनिया में समृद्ध होने के लिए पर्याप्त है?

उत्तर: जो लोग कुरान के आदेशों के अनुसार जीवन जीते हैं, लेकिन ईमान नहीं रखते, और जो ईमान वाले ईश्वरीय आदेशों को अपने जीवन में लागू नहीं करते, वे परलोक में सफल नहीं होंगे। इस्लाम के प्रमाण, जो सृष्टि के सभी कणों जितने असंख्य और प्राणियों की श्रृंखला जितने मजबूत हैं, तथा कुरान और ईमान की सच्चाइयों को रिसाले-ए-नूर में इतनी स्पष्टता से समझाया गया है कि वे पाठक को दृढ़ ईमान और समर्पण प्रदान करते हैं।

जब भी मैं शाह नक्शबंद के रोज़ाना के अनुष्ठान में अपने विश्वास को स्वीकार करने के बाद यह पढ़ता हूँ: "हम इस स्वीकारोक्ति के साथ जीते हैं, और हम इसके साथ मरते हैं, और कल हम इसके साथ पुनर्जीवित होंगे," मुझे लगता है कि मैं विश्वास का एक भी सत्य नहीं छोड़ूँगा, भले ही मुझे पूरी दुनिया की पेशकश की जाए। मेरे लिए एक विश्वास के सत्य के विपरीत कोई भी विचार सोचना असहनीय है, एक सेकंड के लिए भी। अगर पूरी दुनिया मेरी निजी संपत्ति होती, तो मेरा शारीरिक आत्म भी एक विश्वास के सत्य की स्थापना के बदले में इसे त्यागने का विरोध नहीं करता।

जब मैं यह पढ़ता हूँ कि: "हम उन सभी पैगम्बरों पर ईमान लाए हैं जिन्हें तूने भेजा है, और हम उन सभी धर्मग्रंथों पर ईमान लाए हैं जिन्हें तूने भेजा है, और हम उन सभी की पुष्टि करते हैं।" मैं इसके विपरीत सोचना या विश्वास करना असंभव समझता हूँ, और गुमराह लोगों को असीम रूप से मूर्ख और नासमझ मानता हूँ।

मैं आपके माता-पिता को अपना अभिवादन और सम्मान भेजता हूँ। मैं उनसे मेरे लिए प्रार्थना करने के लिए कहता हूँ। वे मेरे अपने माता-पिता की तरह हैं, क्योंकि आप धर्म में मेरे भाई हैं। मैं आपके गाँव के सभी लोगों को भी अपना अभिवादन भेजता हूँ, खास तौर पर उन लोगों को जो आपको वचन पढ़ते हुए सुनते हैं।

वह शाश्वत है।

उनतीसवाँ पत्र

परमेश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अल्लाह आकाश और धरती का प्रकाश है। (24:35)

D रमज़ान के पवित्र महीने के दौरान , मुझे एक ऐसा अनुभव हुआ प्रकाश फैलाने वाली कविता के रहस्य की असंख्य चमक: ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है। मेरा दिल आश्वस्त था कि सभी जीवित प्राणी ईश्वर से एक ही प्रार्थना करते हैं,

जैसे कि उवेस अल-क़रानी:

हे परमेश्वर, आप मेरे भगवान हैं और मैं आपका सेवक हूँ;
आप निर्माता हैं और मैं बनाया गया हूँ;
आप सर्वप्रदाता हैं और मैं ही प्रदत्तकर्ता हूँ...

और मुझे महसूस हुआ कि 18,000 लोकों में से प्रत्येक लोक को एक दिव्य नाम से प्रकाश प्राप्त होता है।

दुनिया की तुलना एक बहु-पंखुड़ी वाली गुलाब की कली से की जा सकती है जिसमें कई तरह की दुनियाएँ एक-दूसरे में लिपटी हुई हैं। मैंने हर एक के पर्दे के पीछे या नीचे एक नई दुनिया देखी। प्रत्येक दुनिया ने खुद को अंधकार में प्रकट किया और

भयावह निराशा, जैसा कि दर्शाया गया है:

> या जैसे विशाल गहरे सागर में अन्धकार के पर्दे हों, जो एक बड़ी लहर से ढके हों, एक के ऊपर एक बड़ी लहरें हों, एक के ऊपर एक काले बादल हों, एक अन्धकार दूसरे के ऊपर ऐसा हो कि यदि मनुष्य अपना हाथ बढ़ाए तो उसे मुश्किल से दिखाई दे। जिस किसी के लिये परमेश्वर ने ज्योति न ठहराई हो, उसके लिये ज्योति भी नहीं। (24:40)

मेरे दर्शन में एक दिव्य नाम अचानक प्रकट हुआ और असावधानी के कारण अंधकार में दिखाई देने वाले प्रत्येक जगत को प्रकाशित कर दिया। हृदय या कल्पना की यह यात्रा बहुत समय तक चली। आगे जो बताया गया है वह इस प्रकार है

सारांश:

पशु जगत बहुत उदास लग रहा था, क्योंकि पशु नपुंसक और कमजोर हैं, उनकी असंख्य ज़रूरतें हैं और वे भयंकर भूख से पीड़ित हैं। लेकिन दयालु भगवान का नाम अचानक सर्व-प्रदाता के टॉवर के ऊपर चमकते सूरज की तरह प्रकट हुआ और दया के प्रकाश से उस दुनिया को पूरी तरह से रोशन कर दिया।

उसके बाद, मैंने उस दुनिया में एक और दयनीय दुनिया देखी जिसमें युवा शक्तिहीन ज़रूरतों में हताश होकर संघर्ष कर रहे थे। अचानक सर्व-करुणामय नाम सर्व-देखभाल करने वाले के टॉवर से ऊपर उठ गया और इतनी खूबसूरती से उस दुनिया को रोशन कर दिया कि उसने दुख के आँसुओं को खुशी, प्रसन्नता और धन्यवाद के आनंद के आँसुओं में बदल दिया।

फिर मानव दुनिया खुद को प्रकट करती है, मानो किसी स्क्रीन पर हो। यह इतना अंधकारमय, उदास और भयावह था कि मैं घबरा गया और चिल्लाया: "कितना दयनीय!" मैंने देखा कि लोगों में अनंत इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएँ, सार्वभौमिक विचार और कल्पनाएँ, और स्वर्ग में अनंत काल और अनंत सुख के लिए महान झुकाव और स्वभाव हैं। फिर भी, उनकी अनंत कमजोरी, नपुंसकता और ज़रूरत के अलावा, वे असंख्य दुर्भाग्य और शत्रुतापूर्ण हमलों के संपर्क में हैं। वे अकेले या समूहों में, एक छोटे से उथल-पुथल भरे जीवन, एक दयनीय आजीविका और निरंतर क्षय और अलगाव के दुखद प्रहारों के बीच बहते हैं। जब वे अंततः कब्र तक पहुँचते हैं, जो (लापरवाह लोगों के लिए) अनंत अंधकार की ओर खुलने वाले द्वार के रूप में दिखाई देती है, तो उन्हें एक अंधेरे गड्ढे में फेंक दिया जाता है। मैं अपनी सारी इंद्रियों और अपनी बुद्धि, दिल और आत्मा के साथ, इस तरह के दयनीय रूप से अंधेरे और उदास दुनिया को देखकर लगभग आँसू में गिर गया।

लेकिन तब सर्वज्ञ के अर्थ में सर्व-न्याय करने वाला दिव्य नाम प्रकट हुआ, साथ ही सर्व-दयालु के अर्थ में सर्व-दयालु नाम, सर्व-क्षमा करने वाले के अर्थ में सर्व-करुणामय नाम, सभी के उत्तराधिकारी के अर्थ में मृतकों को जीवित करने वाला नाम, सर्व-उपकार करने वाले के अर्थ में पुनर्जीवित करने वाला नाम, और स्वामी के अर्थ में प्रभु का नाम। उन नामों ने उस अंधकारमय मानवीय दुनिया के भीतर कई क्षेत्रों को प्रकाशित किया और परलोक की चमकदार दुनिया से उन पर खिड़कियाँ खोलकर, उस पर प्रकाश फैलाया।

इसके बाद, एक अन्य विशाल स्क्रीन पर पृथ्वी और उसकी सामग्री को प्रदर्शित किया गया।
विज्ञान के अस्पष्ट नियम और भ्रष्ट दर्शन के सिद्धांत इसे भयावह और निराशाजनक रूप में दर्शाते हैं। मानवता की दयनीय स्थिति, पुरानी पृथ्वी पर अनंत अंतरिक्ष में तैरती हुई, अंदर से निरंतर ज्वालामुखी विस्फोट की स्थिति में और विघटन के लिए प्रवृत्त, इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ रही है जैसे कि

एक साल में सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाना, भयावह रूप से निराशाजनक लग रहा था। मैं चकित था और चक्कर महसूस कर रहा था।

लेकिन अचानक ही, ब्रह्मांड और पृथ्वी के निर्माता, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, प्रभु, ईश्वर, आकाश और पृथ्वी के स्वामी, सूर्य और चंद्रमा के वश में करने वाले नाम दया, भव्यता और प्रभुता के रूप में प्रकट हुए। उन्होंने उस दुनिया को इतना प्रकाशित कर दिया कि मैंने इसे मानवता के अधीन एक सुरक्षित, परिपूर्ण और सुंदर जहाज के रूप में देखा, ताकि लोग आनंद या व्यवसाय के लिए यात्रा कर सकें।

संक्षेप में, मैंने देखा कि 1,001 दिव्य नामों में से प्रत्येक एक सूर्य की तरह है जो उनमें से एक दुनिया को प्रकाशित करता है। प्रत्येक में कई क्षेत्र शामिल हैं, और अन्य सभी नाम ईश्वर की एकता के कारण उस नाम की पूर्ण अभिव्यक्ति के साथ कुछ हद तक क्रमबद्ध संबंध में खुद को प्रकट करते हैं।

अंधकार के प्रत्येक पर्दे के पीछे एक अलग रोशनी को पहचानते हुए, मेरा दिल कल्पना पर सवार होकर स्वर्ग की दुनिया की ओर ऊपर की ओर यात्रा करना चाहता था। मैंने देखा कि वे चमकदार ग्रह, जो मुस्कुराते हुए प्रतीत होते हैं, पृथ्वी से बड़े हैं और उससे तेज़ घूमते हैं। अगर उनमें से एक भी भ्रमित हो गया, तो वह दूसरे से टकरा जाएगा और ब्रह्मांड को नष्ट कर देगा। इसलिए मैंने स्वर्ग को एक अंधकारमय, असीम और भयावह स्थान के रूप में देखा, जिसमें चलते या स्थिर तारे आग और प्रकाश बिखेर रहे थे। मुझे यहाँ आने का पछतावा हुआ।

लेकिन फिर दिव्य सुंदर नाम आकाश और पृथ्वी के स्वामी और फ़रिश्तों और आत्मा के स्वामी प्रकट हुए और इसका अर्थ बताया: हमने निकटतम आकाश को दीपों से सजाया है (67:5) और: उसने सूर्य और चंद्रमा को वश में कर लिया है (13:2)। अंधकार में स्थित प्रत्येक तारे को उन नामों के शक्तिशाली प्रकाश से एक चमक मिली, और आकाश ऐसे प्रकाशित हो गया मानो जितने तारे थे उतने ही दीप जलाए गए हों।

वह स्थान, जिसे पहले अंधकारमय और खाली माना जाता था, स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों द्वारा भीड़भाड़ वाला, सजीव और चमकीला हो गया था। सूर्य और तारे, अनंत काल के राजा की सेना के रूप में सेवा करते हुए, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे एक महान युद्धाभ्यास कर रहे हों, राजसी राजा की भव्यता और उनके प्रभुत्व की महिमा। अगर मेरे पास पर्याप्त शक्ति होती, अगर मेरे शरीर के कण मेरी आज्ञा का पालन करते, और अगर मैं सभी प्राणियों की भाषाओं में ऐसा कर सकता, तो मैं यह कहता:

> ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है। उसके प्रकाश का दृष्टांत ऐसा है मानो एक आले में एक दीपक हो, दीपक कांच में बंद हो, कांच मानो एक चमकीला तारा हो, जो एक धन्य वृक्ष, जैतून से प्रकाशित हो रहा हो, जो न तो पूर्व का है और न ही पश्चिम का, जिसका तेल लगभग अपने आप चमक उठेगा

> यद्यपि उस पर आग का कोई प्रभाव न पड़ा हो। प्रकाश ही प्रकाश है। अल्लाह जिसे चाहता है अपने प्रकाश की ओर मार्ग दिखाता है। (24:35)

हालाँकि, मैंने सभी प्राणियों की ओर से उस आयत का पाठ किया और जागते हुए यह कहते हुए धरती पर लौट आया: "विश्वास के प्रकाश और कुरान के लिए सारी प्रशंसा ईश्वर को है।"

ग्यारहवीं किरण

विश्वास के कुछ फल

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

दूसरे मामले का सारांश

रिसाले-ए-नूर में जेनलिक रेहबेरी ("युवाओं के लिए मार्गदर्शिका") नामक ग्रंथ में बताया गया है कि मृत्यु उतनी ही अपरिहार्य है, जितनी दिन के बाद रात या पतझड़ के बाद सर्दी। जिस तरह यह जेल उन लोगों के लिए एक अस्थायी गेस्टहाउस है, जो एक के बाद एक इसमें प्रवेश करते हैं और बाहर निकलते हैं, उसी तरह पृथ्वी भी एक लंबी सड़क पर एक कारवां सराय की तरह है; यहां कारवां, अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए दौड़ते हुए, आगे बढ़ने से पहले रात भर रुकते हैं। निश्चित रूप से मृत्यु, जिसने पृथ्वी के सभी शहरों को सौ बार पृथ्वी की आंत में खाली कर दिया है, हमसे जीवन की मांगों से कहीं अधिक मांग करती है। रिसाले-ए-नूर ने इस भयानक सत्य की व्याख्या की है, जिसका संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है: चूंकि मृत्यु को समाप्त नहीं किया जा सकता है और चूंकि कब्र का द्वार बंद नहीं किया जा सकता है, निश्चय ही यह मानव जाति की सबसे बड़ी चिंता होनी चाहिए और निश्चय ही इस संभावना की जांच करना हमारे सर्वोत्तम हित में है?

ऐसा ही एक रास्ता है - रिसाले-ए-नूर द्वारा दिखाया गया रास्ता और कुरान की शिक्षाओं से प्रेरित रास्ता। नीचे एक संक्षिप्त सारांश दिया गया है:

मृत्यु या तो शाश्वत निष्पादन है - एक ऐसा फाँसी का तख्ता जिस पर एक व्यक्ति और उसके दोस्त और रिश्तेदार लटके रहेंगे - या यह एक तरह का प्रवेश द्वार है दूसरे, स्थायी क्षेत्र में, खुशी का एक महल जो उन लोगों के लिए तैयार किया गया है जो विश्वास रखते हैं। जहाँ तक कब्र की बात है, यह या तो एकांत कारावास का एक अँधेरा, अथाह गड्ढा है या एक ऐसा दरवाज़ा है जो इस दुनिया की जेल से बाहर की ओर एक स्थायी, रोशन बगीचे और दावत की जगह की ओर खुलता है। इस सत्य को गेन्क्लिक रेहबेरी में इस प्रकार समझाया गया है:

उदाहरण के लिए: इस जेल प्रांगण में कई फाँसी के तख्ते बनाए गए हैं, और दीवार के ठीक पीछे एक बहुत बड़ा लॉटरी कार्यालय खोला गया है; दुनिया के हर व्यक्ति ने एक टिकट खरीदा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस जेल में बंद पाँच सौ लोगों को एक-एक करके, बिना किसी अपवाद के, उस प्रांगण में बुलाया जाएगा: बचने की कोई उम्मीद नहीं है। कोई भी घोषणाएँ सुन सकता है: "आओ और अपनी फांसी की सज़ा का दस्तावेज़ प्राप्त करो और फाँसी के तख्ते पर चढ़ो!" या "अपने हाथ में वह आदेश लो जो तुम्हें अनंत काल के लिए एकांत कारावास की सज़ा सुनाता है और उस दरवाज़े से अंदर जाओ!" या "बधाई हो! तुम्हारा टिकट लाखों की कीमत का है। आओ और इसे ले लो!"

हम अपनी आँखों से देखते हैं कि लोग एक के बाद एक फाँसी के तख्ते पर चढ़ रहे हैं। फिर भी, जबकि कुछ लोग फाँसी के तख्ते पर केवल फाँसी के लिए चढ़ते हैं, हम जेल के प्रांगण में काम कर रहे ईमानदार अधिकारियों की रिपोर्ट से जानते हैं कि कुछ लोग फाँसी के तख्ते का इस्तेमाल सीढ़ी की तरह कर रहे हैं, और दीवार फांदकर उस पार स्थित लॉटरी कार्यालय में प्रवेश कर रहे हैं।

इस समय, दो प्रतिनिधि मंडल हमारी जेल में प्रवेश करते हैं। एक प्रतिनिधि मंडल संगीत वाद्ययंत्र, शराब और स्वादिष्ट मिठाइयाँ और पेस्ट्री लाता है, जिन्हें वे हमें खिलाने का प्रयास करते हैं। लेकिन मिठाइयाँ वास्तव में जहरीली होती हैं, क्योंकि मानव रूप में राक्षसों ने उनमें जहर मिला दिया है।

दूसरा प्रतिनिधिमंडल शिक्षा और प्रशिक्षण के कागजात, वैध खाद्य पदार्थ और वैध पेय पदार्थ लेकर आता है। इस प्रतिनिधिमंडल के सदस्य ये चीजें हमारे सामने पेश करते हैं और बड़ी गंभीरता से कहते हैं:

"पहले प्रतिनिधिमंडल द्वारा लाए गए उपहार एक परीक्षा हैं; यदि आप उन्हें स्वीकार करते हैं और खाते हैं, तो आपको वहाँ फाँसी पर लटका दिया जाएगा, जैसे कि आपने दूसरों को उनके सामने लटकते देखा है। हालाँकि, यदि आप इस देश के शासक के आदेश पर हमारे द्वारा लाए गए उपहारों को स्वीकार करते हैं, और यदि आप शिक्षा और प्रशिक्षण के इन कागजों पर लिखी प्रार्थनाएँ और प्रार्थनाएँ पढ़ते हैं, तो आपको फाँसी से बचा लिया जाएगा। बिना किसी संदेह के विश्वास करें कि आप में से प्रत्येक को शाही उपहार के रूप में लाखों की कीमत वाली लॉटरी टिकट मिलेगी। लेकिन अगर आप ये अवैध, जहरीली मिठाइयाँ खाते हैं, तो यह इन आदेशों में लिखा है - ऐसे आदेश जिनसे हम सभी सहमत हैं -

जब तक तुम्हें फाँसी के तख्ते पर नहीं लटका दिया जाता, तब तक तुम ज़हर के असर से पीड़ित रहोगे।"

जैसा कि इस तुलना में है, ईमान और आज्ञाकारिता रखने वाले लोगों के लिए - बशर्ते कि वे सच्चे ईमान की स्थिति में विदा हों - एक अनंत और अक्षय खजाने का टिकट नियत समय पर फाँसी के फंदे से परे मानव भाग्य की लॉटरी से निकाला जाएगा, जिसके बारे में हम हमेशा जानते हैं। हालाँकि, जो लोग आख़िरत में ईमान नहीं रखते और जो बुराई में लगे रहते हैं, उनके लिए अवैधानिक

कर्म, अविश्वास और पाप के लिए, इस बात की सौ प्रतिशत संभावना है कि यदि वे पश्चाताप नहीं करते, तो उन्हें न्यायिक आदेश द्वारा मृत्युदंड और अनंत काल के लिए दंडित किया जाएगा। जो लोग मानव आत्मा की अमरता में विश्वास करते हैं, फिर भी वे पाप और बुराई के मार्ग पर चलते हैं, उनके लिए निन्यानबे प्रतिशत संभावना है कि उन्हें स्थायी एकांत कारावास की सजा दी जाएगी। इस बारे में निश्चित समाचार एक सौ चौबीस हज़ार पैगम्बरों ने दिया था, जिनमें से सभी अपनी सच्चाई के प्रमाण के रूप में असंख्य चमत्कारों से सुसज्जित थे। यही समाचार एक सौ चौबीस मिलियन से अधिक संतों ने दिया है, जो आध्यात्मिक माध्यम से पैगम्बरों द्वारा लाए गए समाचारों के निशानों और छायाओं को पहचानते और पुष्टि करते हैं - जैसे कि एक फिल्म के पर्दे पर देखा जाता है। इसी तरह, हज़ारों-लाखों सटीक विद्वानों, इस्लामी कानून के व्याख्याकारों और सत्यनिष्ठ विद्वानों ने निर्णायक प्रमाणों और शक्तिशाली तर्कों के साथ, इन दो प्रतिष्ठित लोगों के समूहों द्वारा प्रदान की गई जानकारी को तर्कसंगत और तार्किक निश्चितता के साथ स्थापित किया है।

अब उस व्यक्ति की स्थिति पर विचार करें, जो किसी एक व्यक्ति की सलाह पर, जिस सुरक्षित मार्ग पर वह चल रहा था, उसे छोड़ देता है और एक लंबे तथा अधिक खतरनाक मार्ग को चुनता है, तथा पहले उल्लेखित सत्य के लोगों - उन चंद्रमाओं, सूर्यों और सितारों, मानवता के उन पवित्र नेताओं - के सामूहिक ज्ञान को नजरअंदाज कर देता है, जिन्होंने सीधा मार्ग दिखाया है जो सीधे शाश्वत सुख की ओर ले जाता है।

ऐसे व्यक्ति की स्थिति यह है: इस यात्रा पर निकलने के बाद, वह अभागा व्यक्ति किसी को यह कहते हुए सुनता है कि छोटा रास्ता अपनाने से खतरे की एक प्रतिशत संभावना है और सड़क के अंत में एक महीने की कैद की संभावना है। इसलिए, एक व्यक्ति की झूठी सलाह पर, हमारा यात्री छोटा रास्ता छोड़कर लंबा रास्ता अपना लेता है। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि यह हानिरहित लगता है, हालाँकि वास्तव में इस मार्ग में कोई लाभ नहीं है। उसी समय, असंख्य बुद्धिमान और सुविज्ञ व्यक्ति उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे छोटे और आसान मार्गों को न छोड़ें - जो निश्चित रूप से उन्हें अंततः स्वर्ग और शाश्वत सुख की ओर ले जाएगा। हालाँकि, उन्होंने उनकी बातों को नज़रअंदाज़ कर दिया और अधिक कठिन, अधिक कष्टदायक मार्ग को चुना - जो निन्यानबे प्रतिशत निश्चित रूप से उन्हें नर्क की कैद और अनंत दुख की ओर ले जाएगा।

निश्चय ही, ऐसे दुष्ट ने अपना दिमाग, अपना दिल और अपनी आत्मा खो दी है, क्योंकि केवल एक शराबी पागल ही कुछ मच्छरों के हल्के डंक से बचकर सुरक्षित रास्ते पर भागेगा और उस मार्ग पर भागेगा जिसके किनारे ड्रेगन छिपे हुए हैं, जो उस बेचारे दुष्ट पर हमला करने और उसके अंग-भंग करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

चूँकि यह स्थिति की वास्तविकता है, इसलिए हम कैदियों को दूसरे, धन्य प्रतिनिधिमंडल के उपहारों को स्वीकार करना चाहिए ताकि हम अपने कारावास की विपत्ति का पूरी तरह से बदला ले सकें। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह एक मिनट के प्रतिशोध या कुछ मिनटों के दुराचार के आनंद ने हमें कई वर्षों के कारावास की सजा दी है, जिससे हमारी दुनिया एक जेल बन गई है, बदला लेने के लिए हमें अपने जेल जीवन के एक या दो घंटे को एक या दो दिन की पूजा में बदल देना चाहिए। इस तरह हम उस धन्य प्रतिनिधिमंडल के उपहारों की बदौलत दो या तीन साल की सजा को बीस या तीस साल के स्थायी जीवन में बदल पाएंगे; इस तरह हम बीस या तीस साल की जेल की सजा को नरक में लाखों वर्षों की कैद से माफ़ी के साधन में बदल पाएंगे, इस प्रकार हमारे अनंत जीवन को उस रोने के प्रतिशोध में मुस्कुराने की अनुमति मिलेगी जो हमारे क्षणभंगुर संसार की विशेषता है। यह दर्शाते हुए कि जेल प्रशिक्षण और शिक्षा का स्थान है, हमें अपने राष्ट्र और देश के अच्छे आचरण वाले, भरोसेमंद और उपयोगी सदस्य बनने का प्रयास करना चाहिए।

जेल अधिकारियों, वार्डन और प्रशासकों को यह भी देखना चाहिए कि जिन लोगों को वे डाकू, आवारा, हत्यारे और दुराचारी मानते हैं - और इस तरह देश के लिए हानिकारक हैं - वे वास्तव में शिक्षा के इस सबसे धन्य स्थान में अध्ययनरत छात्र हैं। और उन्हें इस उदारता के लिए गर्व महसूस करना चाहिए और भगवान को धन्यवाद देना चाहिए।

तीसरा मामला

नीचे एक शिक्षाप्रद घटना का सारांश दिया गया है जिसका वर्णन जेनक्लिक रेहबेरी में किया गया है:

मैं एक बार राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस के दौरान एस्कीशेहर जेल की खिड़की के पास बैठा था। जेल के सामने वाले स्कूल की छोटी लड़कियाँ स्कूल के मैदान में खेल रही थीं और जयकारे लगा रही थीं। अचानक, मैंने उन्हें पचास साल बाद देखा, उनके भविष्य की परिस्थितियाँ मुझे फिल्म के पर्दे पर फिल्म की तरह दिखाई दे रही थीं।

मैंने देखा कि उन पचास से साठ छात्राओं में से चालीस से पचास छात्राएँ अपनी कब्रों में धूल में मिल चुकी थीं और कष्ट झेल रही थीं। बाकी दस बदसूरत सत्तर वर्षीय थीं, जिन्हें उन लोगों ने तिरस्कृत कर दिया था जिनसे उन्हें प्यार की उम्मीद थी क्योंकि उन्होंने युवावस्था में अपनी पवित्रता को बनाए नहीं रखा था। यह देखकर, मैं उनकी दयनीय स्थिति देखकर रो पड़ा। जेल में मेरे कुछ दोस्तों ने मेरा रोना सुना और मुझसे पूछा कि क्या हुआ है, लेकिन मुझे उनसे कहना पड़ा कि वे मुझे कुछ समय के लिए अकेला छोड़ दें।

आपको यह समझना चाहिए कि मैंने जो देखा वह वास्तविक था, काल्पनिक नहीं। जिस तरह गर्मी और पतझड़ के बाद सर्दी आती है, उसी तरह जवानी की गर्मी और बुढ़ापे की पतझड़ के बाद कब्र और मध्यकाल की सर्दी आती है।

क्षेत्र: यदि कोई ऐसा उपकरण होता जो भविष्य की घटनाओं को उसी तरह दिखा सकता जिस तरह फिल्में अतीत की घटनाओं को दिखा सकती हैं, तो पचास साल पहले की घटनाएं वर्तमान में दिखाई जातीं, और गुमराह और बुरे लोगों को पचास साल बाद की उनकी स्थिति दिखाई जाती; वे दर्द और घृणा से चिल्लाते, और अपने वर्तमान सुख और अवैध सुख की स्थिति पर कड़वी पीड़ा व्यक्त करते।

एस्कीशेहिर जेल में इन टिप्पणियों में व्यस्त रहने के दौरान, एक तरह का सामूहिक व्यक्तित्व, जो बुराई और गुमराही को प्रोत्साहित करता है, मेरे सामने मानव रूप में एक शैतान की तरह अवतरित हुआ। उसने कहा:

"हम जीवन के सभी सुखों और खुशियों का स्वाद लेना चाहते हैं, और दूसरों को भी ऐसा ही अनुभव कराना चाहते हैं।"
उन्हें भी चखो; हमारे काम में बाधा मत डालो!"

जवाब में मैंने कहा:

"चूँकि तुम सुख और आनंद के लिए मृत्यु को याद नहीं करते, बल्कि, खुद को बुराई और गुमराही में डुबो देते हो, तो यह जान लो कि तुम्हारी गुमराही की वजह से सारा अतीत मर चुका है और अस्तित्वहीन है: यह एक उजाड़ और सबसे भयानक कब्रिस्तान है, जो सड़ी हुई लाशों से भरा हुआ है। उन अनगिनत वियोगों से जो तुमने झेले हैं और अपने दोस्तों की मृत्यु से जो दर्द पैदा होता है - वह दर्द, जो तुम्हारे प्रियजनों के साथ पुनर्मिलन की कोई उम्मीद नहीं होने के कारण, तुम्हारे दिल और दिमाग पर जो कुछ बचा है, उस पर एक गंभीर प्रभाव डालता है - जल्द ही उन तुच्छ नशे में धुत्त सुखों को नष्ट कर देगा जो तुम्हारे वर्तमान का निर्माण करते हैं। जहाँ तक भविष्य की बात है, तो तुम्हारे विश्वास की कमी के कारण, वह भी एक अंधेरे, मृत और उजाड़ बंजर भूमि से अधिक कुछ नहीं है। और चूँकि दुर्भाग्यपूर्ण लोग जो आने वाले हैं

अस्तित्व के इस क्षेत्र में उभरने के लिए और वर्तमान में भी जल्लाद की मौत की तलवार से उनका सिर काट दिया जाएगा और, आपकी धारणा के अनुसार, उनके साथ आपकी चिंता और संबंध के कारण, जो आपके बुद्धिमान प्राणी होने से उपजा है, गैर-अस्तित्व में फेंक दिया जाएगा, गंभीर चिंताएं आपके अविश्वासी सिर पर लगातार बरसेंगी, जो आपकी क्षुद्र, अनैतिक खुशी को पहचान से परे नष्ट कर देंगी।

"यदि आप गुमराही और बुराई को त्यागकर सच्चे विश्वास और धार्मिकता के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तो आप विश्वास के प्रकाश के माध्यम से देखेंगे कि अतीत न तो अस्तित्वहीन है और न ही सड़ी हुई लाशों से भरा कब्रिस्तान है; बल्कि, यह एक वास्तविक, चमकदार दुनिया है जिसे भविष्य में बदल दिया गया है: यह अमर आत्माओं के लिए एक प्रतीक्षा कक्ष है जो आने वाली दुनिया में खुशी के महलों में प्रवेश करेंगे। चूंकि यह ऐसा है, इसलिए यह कोई दर्द नहीं देता है; इसके विपरीत, किसी के विश्वास की डिग्री और ताकत के आधार पर, यह दुनिया में एक प्रकार का स्वर्गीय आनंद देता है। भविष्य भी, जब देखा जाता है

विश्वास की नज़र से देखा जाए तो यह कोई अँधेरा, उजाड़ बंजर भूमि नहीं है, बल्कि एक ऐसी भूमि है जिसके अनंत सुख के महलों में दावतों और उपहारों की प्रदर्शनी का आयोजन एक दयालु, दयावान और महामहिम और परोपकारी व्यक्ति द्वारा किया गया है - जिसके पास असीम दया और उदारता है और जो वसंत और गर्मियों को उपहारों से लदी हुई मेज़ों में बदल देता है। चूँकि विश्वास की चलचित्र स्क्रीन भविष्य को ऐसा ही दिखाती है और चूँकि विश्वास

यह भी जागरूकता देता है कि लोगों को मृत्यु के द्वार से वहाँ भेजा जा रहा है, हर कोई इस दुनिया में रहते हुए उस स्थायी क्षेत्र से संबंधित किसी न किसी तरह के आनंद का अनुभव कर सकता है, अपने विश्वास की डिग्री और ताकत के अनुसार। निष्कर्ष में, सच्चा, दर्द रहित आनंद केवल विश्वास में ही पाया जा सकता है और केवल विश्वास के माध्यम से ही संभव है।

"चूंकि यह हमारी चर्चा से संबंधित है, इसलिए हम कुछ ऐसा समझाएंगे जो जेनक्लिक रेहबेरी में एक पोस्टस्क्रिप्ट के रूप में शामिल किया गया था, अर्थात् इस दुनिया में भी विश्वास द्वारा उत्पन्न हजारों लाभों और सुखों का एक उदाहरण। यह इस प्रकार है:

“उदाहरण के लिए, कल्पना कीजिए कि आपकी प्यारी इकलौती संतान मृत्यु की पीड़ा झेल रही है और आप उसकी दर्दनाक मौत के बारे में बेहद चिंतित हैं।
अचानक, खिद्र या लुकमान जैसा कोई चिकित्सक एक अद्भुत दवा लेकर आता है, जिसे वह आपके प्रियजन को देता है। आपकी प्यारी, सबसे प्यारी बच्ची मौत से मुक्त होकर अपनी आँखें खोलती है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उसके ठीक होने और मौत से बचने पर आपको कितनी खुशी और राहत महसूस होगी?

“उदाहरण में बताए गए बच्चे की तरह, अनगिनत लोग जिनसे आप प्यार करते हैं और जिनके लिए आप चिंतित हैं, आपकी नज़र में, अतीत के कब्रिस्तान में हमेशा के लिए सड़ने वाले हैं। अचानक, लुकमान द वाइज़ की तरह, विश्वास की सच्चाई दिल की खिड़की से कब्र पर रोशनी डालती है, जिसे अनंत विनाश का एक विशाल स्थान माना जाता है। विश्वास की सच्चाई और रोशनी की बदौलत, सभी मृतक जीवन में आ जाते हैं, मानो कह रहे हों, 'हम नहीं मरे और नहीं मरेंगे; हम फिर से आपसे मिलेंगे!' इस वास्तविकता का अनुभव करने पर आपको कितनी असीम खुशी और उल्लास महसूस होगा! इस दुनिया में वही असीम खुशी और उल्लास देकर, विश्वास साबित करता है कि यह एक बीज की तरह है - एक बीज जो, अगर मूर्त हो जाए, तो एक निजी स्वर्ग, अनंत सुख का एक सच्चा तौबा-वृक्ष बन जाएगा।”

अपनी हठधर्मिता पर कायम रहते हुए, मानव रूप में उस शैतान ने इस प्रकार उत्तर दिया: "कम से कम हम अपना जीवन

जानवरों की तरह बिता सकते हैं, आनंद और मौज-मस्ती में डूबे हुए, मनोरंजन और अपव्यय में लिप्त होकर, और इन सूक्ष्म और नाजुक मामलों के बारे में अपने दिमाग से सभी विचारों को निकाल कर!"

मेरा उत्तर इस प्रकार था:

"नहीं, तुम पशु की तरह नहीं जी सकते, क्योंकि पशुओं के लिए न तो भूतकाल होता है, न भविष्यकाल। उन्हें न तो भूतकाल का दुख होता है, न पश्चाताप, न ही भविष्यकाल की चिंता या भय। पशु को तो शुद्ध सुख मिलता है। वह सुखपूर्वक रहता है, अपने रचयिता को धन्यवाद और स्तुति देता है। यहां तक कि वध होने वाला पशु भी कुछ नहीं महसूस करता। जब चाकू से उसका गला काटा जाता है, तो उसे पीड़ा होती है, लेकिन वह पीड़ा क्षणिक होती है और क्षण भर में गायब हो जाती है। इसका अर्थ यह है कि अदृश्य को अज्ञात रखना, वहां क्या होगा, यह बताए बिना ईश्वरीय दया और करुणा का महान उदाहरण है; निर्दोष पशुओं के लिए तो यह और भी बड़ा वरदान है। लेकिन मनुष्य के संवेदनशील होने के कारण, और चूंकि उसका भूतकाल और भविष्य कुछ हद तक अदृश्य से निकलता हुआ दिखाई देता है, इसलिए दृश्य जगत के पर्दे के पीछे जो कुछ छिपा है, वह पूरी तरह छिपा नहीं रह सकता; परिणामस्वरूप, हे मनुष्य, तुम पशुओं की तरह निश्चिंत और निश्चिंत होकर नहीं रह सकते। अतीत के बारे में पछतावा, जुदाई का दर्द और भविष्य की चिंताएँ आपके वर्तमान के क्षणभंगुर सुखों को राख में मिला देती हैं, जिससे वे जानवरों द्वारा भोगे जाने वाले सुखों से सौ गुना कम आकर्षक हो जाते हैं। चूँकि यह एक सच्चाई है, इसलिए या तो अपनी बुद्धि को त्याग दो, अपने आप को एक पशु बना लो, और इस तरह मोक्ष प्राप्त करो या, वैकल्पिक रूप से, सच्चे विश्वास के माध्यम से अपने होश में आओ, कुरान पर ध्यान दो, और इस क्षणभंगुर दुनिया में भी शुद्ध सुख का अनुभव करो, जो जानवरों द्वारा भोगे जाने वाले सुख से सौ गुना अधिक है।

मेरे इन शब्दों ने कुछ देर के लिए मेरे विरोधी को चुप करा दिया। लेकिन अपनी जिद में वह एक बार फिर मेरी ओर मुड़ा और बोला: "ठीक है, तो हम कम से कम पश्चिम के अधार्मिक लोगों की तरह तो रह ही सकते हैं।"

मैंने उत्तर दिया:

"जिस तरह से आप जानवरों की तरह नहीं रह सकते, उसी तरह आप पश्चिम के अधार्मिक लोगों की तरह भी नहीं रह सकते। क्योंकि अगर वे एक पैगम्बर को भी नकारते हैं, तो वे दूसरों पर विश्वास करते हैं। भले ही वे पैगम्बरों को न पहचानें, वे ईश्वर में विश्वास कर सकते हैं। और अगर वे ईश्वर को नहीं जानते, तो भी उनके पास कुछ व्यक्तिगत विशेषताएँ और गुण हो सकते हैं, जिनके ज़रिए वे पूर्णता पाते हैं। लेकिन अगर कोई मुसलमान अंतिम पैगम्बर, ईश्वर के सबसे महान पैगम्बर, उन पर और उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जिनका धर्म और मिशन सार्वभौमिक है, को नकारता है, तो वे किसकी ओर जा सकते हैं? क्योंकि वे किसी अन्य पैगम्बर को स्वीकार करने में असमर्थ होंगे और उन्हें स्वयं ईश्वर से भी मुंह मोड़ना पड़ेगा। क्योंकि ईश्वर और अन्य सभी पैगम्बरों के बारे में उनका ज्ञान पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, के ज़रिए उन तक पहुँचा है; उनके बिना, अन्य पैगम्बर किसी के दिल में कैसे जगह बना सकते हैं?

यही कारण है कि जहाँ बहुत से लोगों ने, आरंभिक काल से ही, अन्य धर्मों को त्यागकर इस्लाम धर्म स्वीकार किया है, वहीं बहुत कम लोग, यदि कोई हैं, सच्चे यहूदी या ईसाई बन पाए हैं। इस्लाम को त्यागने वाले मुसलमान पूरी तरह से अधार्मिक बन जाते हैं: एक नियम के रूप में, उनका चरित्र भ्रष्ट हो जाता है और वे देश और राष्ट्र के लिए ख़तरा बन जाते हैं।"

यह तर्क सुनकर, मानव वेश में जिद्दी शैतान को कोई सहारा नहीं मिला। जवाब देने में असमर्थ, वह गायब हो गया और नरक में चला गया।

तो, यूसुफ के इस स्कूल में मेरे सहपाठियों! वास्तविकता वही है जैसा मैंने वर्णन किया है, रिसाले-ए-नूर द्वारा पुष्टि की गई है, जिसने अपने प्रमाणों के साथ, पिछले बीस वर्षों में कई जिद्दी आत्माओं की जिद को कम किया है और कई लोगों को विश्वास दिलाया है। चूंकि यह ऐसा है, इसलिए हमें विश्वास और सही आचरण के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए - एक ऐसा मार्ग जो सुरक्षित और आसान है, और जो हमारे और हमारे राष्ट्र के सदस्यों के जीवन को न केवल इस दुनिया में बल्कि अगली दुनिया में भी लाभ पहुंचाता है। खुद को व्यर्थ और अंततः दर्दनाक कल्पनाओं में लिप्त करने के बजाय, हमें अपना खाली समय कुरान की उन सूराओं को पढ़ने में बिताना चाहिए जिन्हें हमने याद किया है और उनका अर्थ उन दोस्तों से सीखना चाहिए जो उन्हें सिखा सकते हैं। हमें उन विहित प्रार्थनाओं की भरपाई करनी चाहिए जिन्हें हम अतीत में करने में विफल रहे हैं। और, एक-दूसरे के अच्छे गुणों का लाभ उठाते हुए, हमें इस जेल को एक धन्य बगीचे में बदलने की कोशिश करनी चाहिए जिसमें अच्छे चरित्र के बीज पोषित हो सकें। इस तरह के धार्मिक कार्यों के साथ, हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए ताकि जेल का शासक और संबंधित लोग दयालु स्वामी और मार्गदर्शक बन सकें, जिन्हें यूसुफ के स्कूल में लोगों को स्वर्ग के लिए तैयार करने और उनके प्रशिक्षण और शिक्षा की देखरेख करने का कर्तव्य सौंपा गया हो, न कि वे नरक के स्वर्गदूतों की तरह यातना देने वाले बनें, जो अपराधियों और हत्यारों के ऊपर खड़े रहते हैं।

चौथा मामला

फिर से, इस मामले को जेनक्लिक रेहबेरी में समझाया गया है । एक बार कुछ भाइयों ने मुझसे निम्नलिखित प्रश्न पूछा जो मेरी मदद कर रहे थे:

"पचास दिनों से तुमने इस भयानक विश्व युद्ध के बारे में कुछ भी नहीं पूछा है, न ही कोई जिज्ञासा दिखाई है, जिसने पूरी दुनिया को अराजकता में डाल दिया है, जबकि यह इस्लाम और मुस्लिम दुनिया के भाग्य से बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है। हालाँकि, कुछ धार्मिक और विद्वान रेडियो को ध्यान से सुनते हैं, और कुछ लोग इसके परिणामस्वरूप सामूहिक प्रार्थनाओं से भी विचलित हो जाते हैं। क्या इस युद्ध से अधिक महत्वपूर्ण कोई और घटना है? या क्या इसके बारे में चिंतित होना किसी तरह से हानिकारक है?"

मेरा उत्तर इस प्रकार था: "जीवन की

पूंजी बहुत कम है और किए जाने वाले कार्य बहुत बड़े हैं। संकेंद्रित वृत्तों की तरह, प्रत्येक व्यक्ति के पास चिंता के कुछ क्षेत्र होते हैं जो एक दूसरे के भीतर मौजूद होते हैं: उनके पास हृदय और पेट के क्षेत्र होते हैं; शरीर और घर के क्षेत्र; जिस क्वार्टर में वे रहते हैं और जिस शहर या नगर में वे रहते हैं, उसके क्षेत्र; उनके देश का क्षेत्र, पृथ्वी और मानव जाति के क्षेत्र, और सभी जीवित प्राणियों और पूरी दुनिया का क्षेत्र। प्रत्येक व्यक्ति के पास उन क्षेत्रों में से प्रत्येक में कुछ कर्तव्य हो सकते हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण और स्थायी कर्तव्य वे हैं जो निकटतम, सबसे छोटे क्षेत्र से संबंधित हैं, जबकि सबसे कम महत्वपूर्ण और अस्थायी कर्तव्य सबसे दूर, सबसे बड़े क्षेत्र से संबंधित हैं। इस मानक के अनुसार, ऐसे कर्तव्य हो सकते हैं, जिनका महत्व और क्षेत्र एक दूसरे के व्युत्क्रमानुपाती हैं। लेकिन सबसे बड़े क्षेत्र के आकर्षण के कारण, सबसे छोटे क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण कर्तव्यों की उपेक्षा की जाती है, क्योंकि लोग अनावश्यक, तुच्छ और परिधीय मामलों में व्यस्त हो जाते हैं। यह उनके जीवन की पूंजी को व्यर्थ में नष्ट कर देता है और उन्हें अपना कीमती समय बेकार की चीजों पर बर्बाद करने के लिए मजबूर करता है। उदाहरण के लिए, जो कोई युद्ध की घटनाओं का अनुसरण करता है, वह अपने दिल में एक पक्ष का समर्थन करने लग सकता है, और परिणामस्वरूप अत्याचार को भी अनुकूल दृष्टि से देख सकता है और उसका हिस्सा बन सकता है।

"प्रश्न के पहले भाग के संबंध में, सभी लोग - विशेषकर मुसलमान - लगातार इस विश्व युद्ध से भी अधिक महत्वपूर्ण घटनाओं का सामना कर रहे हैं, तथा एक ऐसे मुद्दे का सामना कर रहे हैं जो विश्व प्रभुत्व से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।
वास्तव में, यदि सभी के पास जर्मनों और अंग्रेजों की दौलत और थोड़ी सी भी समझ होती, तो वे इस समस्या का समाधान खोजने में अपना सब कुछ लगा देते। यह समस्या, जिसके बारे में सैकड़ों हज़ारों पैगम्बरों, संतों और शुद्ध विद्वानों ने हमें बताया है, ब्रह्मांड के स्वामी और संचालक द्वारा दिए गए हज़ारों वादों और प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करते हुए, इस प्रकार है:

"विश्वास के कारण हर किसी के लिए एक शाश्वत संपत्ति जीतने की संभावना मौजूद है, जो पृथ्वी जितनी विशाल है, बगीचों और महलों से भरी हुई है। हालाँकि, विश्वास के बिना, वह संपत्ति हासिल नहीं की जा सकती। इस युग में, भौतिकवाद के प्रकोप के कारण कई लोग हार रहे हैं। एक निश्चित संत विद्वान, जो कुछ छिपी हुई वास्तविकताओं को उजागर करने में सक्षम थे, ने एक बार एक जिले में देखा कि चालीस लोगों में से केवल कुछ ही जीते; बाकी हार गए। क्या कोई भी चीज, यहाँ तक कि पूरी दुनिया पर सत्ता और प्रभुत्व भी, इस तरह के नुकसान की भरपाई कर सकती है?

"हम रिसाले-ए-नूर के छात्र जानते हैं कि परलोक में सुख के लिए आवश्यक कर्तव्यों का परित्याग करना मूर्खता होगी, और उस पर ध्यान न देना मूर्खता होगी।"

एक बेहतरीन वकील जो निन्यानबे प्रतिशत लोगों को उनके केस जीतने में मदद करता है, और इसके बजाय खुद को छोटी-छोटी बातों में उलझा लेता है जैसे कि हम हमेशा के लिए इस दुनिया में ही रहेंगे। इस कारण से, हम रिसाले-ए नूर के छात्र आश्वस्त हैं कि अगर हममें से हर कोई आज की तुलना में सौ गुना अधिक बुद्धिमान होता, तो भी हम अपनी बौद्धिक पूंजी का उपयोग उसी सही उद्देश्य के लिए करते।

"यहाँ मेरे नए भाइयों से, जो मेरे साथ कारावास की विपत्ति में भागीदार हैं, मैं यह कहना चाहूँगा। आप अभी तक रिसाले-ए-नूर को उतना नहीं जान पाए हैं जितना मेरे पुराने भाइयों को, जो मेरे साथ यहाँ आए थे। उन्हें और उनके जैसे हज़ारों छात्रों को गवाह के तौर पर बुलाते हुए, मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि रिसाले-ए-नूर इस युग का अग्रणी 'वकील' है, जो बुद्धिमानी भरे कुरान की चमत्कारिकता से प्रेरित है और जो लोग इसका अध्ययन करते हैं, उन्हें उनके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण मामले को जीतने में मदद करने में सक्षम है। वास्तव में, पिछले बीस वर्षों में इसने बीस हज़ार लोगों को सच्चा ईमान हासिल करने में मदद की है - जो अपने आप में एक गारंटी है कि उनका मामला सफल होगा। यद्यपि पिछले अठारह वर्षों से मेरे शत्रुओं और विभिन्न विधर्मियों तथा भौतिकवादियों ने क्रूरतापूर्वक सरकार के कुछ सदस्यों को मेरे विरुद्ध कर दिया है और अधिकारियों ने हमें चुप कराने के लिए हमें कैद कर लिया है, जो कि उन्होंने पहले भी करने की कोशिश की है, वे रिसाले -ए-नूर के इस्पात किले को बनाने वाले एक सौ तीस 'उपकरणों' में से केवल दो या तीन की ही आलोचना कर पाए हैं। दूसरे शब्दों में, रिसाले-ए-नूर

जो व्यक्ति अपने जीवन का सबसे बड़ा मुकदमा जीतने के लिए वकील रखना चाहता है, उसके लिए यह काफी है। साथ ही, डरो मत, क्योंकि रिसाले-ए-नूर पर प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता! दो या तीन अपवादों को छोड़कर, इसके सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ सरकार के प्रतिनिधियों और अन्य प्रमुख व्यक्तियों के बीच स्वतंत्र रूप से प्रसारित हो रहे हैं। ईश्वर की इच्छा से, एक समय आएगा जब सम्मानित राज्यपाल और अधिकारी इन रोशनियों को कैदियों में इस तरह वितरित करेंगे जैसे कि वे भोजन और दवा हों ताकि जेलों को वास्तव में सुधार के प्रभावी घरों में बदला जा सके।”

आठवें मामले का सारांश

इस आठवें अंक में मैं परलोक में ईमान के सौवें हिस्से के बारे में बताने की योजना बना रहा था जो मानवता के लिए तथा इस दुनिया और परलोक में उनकी खुशहाली के लिए है। हालाँकि, चूँकि चमत्कारी कुरान परलोक में खुशी हासिल करने में ईमान के लाभों के बारे में और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं छोड़ता है, और चूँकि इस दुनिया में मानवता के लिए ईमान के लाभों पर रिसाले -ए-नूर में विस्तार से चर्चा की गई है, इसलिए पाठक कुरान और रिसाले-ए-नूर के संबंधित खंडों का संदर्भ ले सकते हैं। यहाँ, हम परलोक में ईमान के सैकड़ों परिणामों में से केवल तीन या चार का सारांश देंगे-

मानव के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

पहला: जिस तरह एक व्यक्ति का अपने घर से रिश्ता होता है, उसी तरह उसका उससे परे की दुनिया से भी रिश्ता होता है। इसी तरह, जिस तरह उसका अपने रिश्तेदारों से रिश्ता होता है, उसी तरह उसका बाकी मानव-जाति से भी रिश्ता होता है। और जिस तरह वे इस दुनिया में एक तरह की अस्थायी स्थायित्व की इच्छा रखते हैं, उसी तरह वे अनंत काल के क्षेत्र में एक स्थायी स्थायित्व के लिए भी उत्कट इच्छा रखते हैं। जिस तरह एक व्यक्ति भोजन के लिए अपने पेट की ज़रूरत को पूरा करने का प्रयास करता है, उसी तरह वह स्वभाव से अपने मन, हृदय, आत्मा और मानवता के रूपक पेट को पोषण प्रदान करने के लिए प्रयास करने के लिए बाध्य होता है। उनकी इच्छाएँ और माँगें ऐसी हैं कि अनंत काल और चिरस्थायी सुख के अलावा कुछ भी उन्हें संतुष्ट नहीं कर सकता। जैसा कि दसवें वचन में उल्लेख किया गया है, जब मैं छोटा था, तो मैंने खुद से पूछा: "क्या आप दुनिया के शासक के रूप में एक लाख साल तक जीना चाहते हैं, लेकिन फिर अनंत काल तक अस्तित्वहीन हो जाना चाहते हैं? या आप एक साधारण और कभी-कभी कठिन अस्तित्व रखना पसंद करेंगे, लेकिन हमेशा के लिए जीना चाहते हैं?" मैंने देखा कि मेरी कल्पना हमेशा बाद वाले विकल्प को चुनती थी, कहती थी: “मैं हमेशा जीना चाहता हूँ, चाहे वह नर्क में ही क्यों न हो!”

इस प्रकार, चूँकि इस संसार के सुख कल्पनाशील क्षमता को संतुष्ट नहीं करते, जो मानव सार का सेवक है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि मानवता का व्यापक सार, अपने स्वभाव से ही, अनंत काल से जुड़ा हुआ है। क्योंकि असीम आशाओं और इच्छाओं से घिरे होने के बावजूद, मानवता के पास अपनी पूंजी के रूप में केवल इच्छाशक्ति की एक तुच्छ क्षमता है, क्योंकि वे पूर्ण गरीबी से त्रस्त हैं। तो, परलोक में विश्वास एक ऐसा शक्तिशाली और पर्याप्त खजाना है, खुशी और आनंद का ऐसा साधन, सहायता और लाभ का ऐसा आश्रय और स्रोत, और इस दुनिया के अंतहीन दुखों के सामने सांत्वना का ऐसा साधन है कि अगर इसे पाने के लिए इस दुनिया के जीवन का बलिदान भी करना पड़े, तो भी यह एक सस्ती कीमत होगी।

इसका दूसरा फल और मानव व्यक्तिगत जीवन से संबंधित लाभ:

इसे तीसरे मामले में समझाया गया था, और इसे गेनक्लिक रेहबेरी में फुटनोट के रूप में पाया जा सकता है।

मानवता की सबसे निरंतर और सबसे बड़ी चिंता यह है कि हम एक दिन कब्र में चले जाएंगे, जैसे हमारे मित्र और रिश्तेदार हमसे पहले जा चुके हैं। एक अभागा इंसान, जो एक मित्र के लिए अपनी आत्मा तक का बलिदान करने को तैयार है, कल्पना करता है कि उससे पहले कब्र में गए अनगिनत लाखों मनुष्यों को अनंत विनाश की सजा दी गई है, और यह अनुमान उन्हें नर्क की यातनाएँ देता है। ठीक इसी समय, परलोक में विश्वास प्रकट होता है, हमारी आँखें खोलता है और पर्दा उठाता है। यह हमें बताता है: "देखो!"

और विश्वास के साथ देखने पर हम देख सकते हैं कि हमारे साथी अनन्त विनाश से बच गये हैं और प्रकाश से भरी दुनिया में खुशी से हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं;

इस बात को समझकर हम एक आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करते हैं जो जन्नत के सुखों का प्रतिबिम्ब है। रिसाले-ए-नूर में इस दूसरे फल की व्याख्या से संतुष्ट होकर हम यहाँ चर्चा को समाप्त करेंगे।

तीसरा लाभ: मनुष्य अपनी श्रेष्ठ विशेषताओं, अपनी व्यापक क्षमताओं, पूजा करने की अपनी सार्वभौमिक क्षमता और अपने जीवन को बनाने वाले अस्तित्व के व्यापक क्षेत्रों के कारण अन्य जीवों से श्रेष्ठ है। हालाँकि, मनुष्य की विशेषताएँ जैसे प्रेम, उत्साह, भाईचारा और मानवता, इस क्षणभंगुर वर्तमान समय की सीमा के अनुसार अर्जित की जाती हैं, जो अतीत और भविष्य के बीच सीमित है, जो दोनों ही अंधकारमय और अस्तित्वहीन हैं।

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति अपने पिता, भाई या बहन, अपने जीवनसाथी, राष्ट्र या देश से प्यार करता है और उनकी सेवा करता है, जिनमें से किसी को भी वह पहले नहीं जानता था; वे इनमें से किसी को भी इस दुनिया से चले जाने के बाद नहीं देखेंगे। चूँकि जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति का अर्थ है कि यह बहुत ही असंभव है कि कोई व्यक्ति किसी एक रिश्ते में पूरी तरह से वफ़ादारी या ईमानदारी हासिल कर पाएगा, इसलिए उनके गुण और श्रेष्ठताएँ आनुपातिक रूप से कम हो जाती हैं। फिर, ठीक उस बिंदु पर जहाँ वे जानवरों से भी निचले स्तर पर गिर जाते हैं और पहले से भी अधिक दयनीय हो जाते हैं क्योंकि उनके पास बुद्धि और तर्क है, परलोक में विश्वास इस व्यक्ति की सहायता के लिए आता है। यह वर्तमान को, जो कब्र जितना संकीर्ण है, इस हद तक विस्तृत करता है कि यह अतीत और भविष्य को समाहित करता है और अस्तित्व के एक क्षेत्र को दुनिया जितना व्यापक रूप से प्रकट करता है, जो पूर्व-अनंत काल से लेकर अनंत काल तक फैला हुआ है। यह महसूस करते हुए कि अपने जीवनसाथी, माता-पिता और भाई-बहनों के साथ संबंध स्वर्ग में अनंत काल तक जारी रहेंगे, वे इस दुनिया में रहते हुए उनसे प्यार करते हैं, उनका सम्मान करते हैं, उनकी मदद करते हैं और उन पर दया करते हैं। इस नये बोध के साथ, व्यक्ति जीवन और अस्तित्व के इस व्यापक क्षेत्र में व्याप्त रिश्तों पर आधारित ऐसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों का शोषण इस संसार के व्यर्थ मामलों और उसके क्षुद्र हितों के लिए नहीं करेगा। सच्ची निष्ठा और ईमानदारी प्राप्त करने में सक्षम होने पर, व्यक्ति के अच्छे गुण और उपलब्धियाँ तदनुसार विकसित होने लगती हैं, और उसकी मानवता उदात्त हो जाती है।

जबकि वे इस जीवन के आनंद में गौरेया से भी मेल नहीं खा सकते, वे ब्रह्मांड में सबसे महान और सबसे खुश मेहमान बन सकते हैं, सभी जानवरों से श्रेष्ठ, साथ ही ब्रह्मांड के मालिक के सबसे प्यारे और सबसे प्रशंसित सेवक भी हो सकते हैं। चूंकि यह बात रिसाले-ए-नूर में भी स्पष्ट की गई है, इसलिए हम यहां इतना ही कहकर संतुष्ट हो जाते हैं।

परलोक में विश्वास का चौथा लाभ , जो निम्न से संबंधित है

मानव सामाजिक जीवन: रिसाले-ए-नूर की नौवीं किरण में वर्णित इस लाभ का सारांश इस प्रकार है :

बच्चे, जो मानव जाति का एक तिहाई हिस्सा हैं, वास्तव में मानव जीवन जी सकते हैं और वास्तव में मानवीय क्षमताओं को बनाए रख सकते हैं, यदि उन्हें परलोक में ईमानदारी से विश्वास हो। परलोक में विश्वास के बिना, वे अपने सांसारिक जीवन को तुच्छ और अर्थहीन विकर्षणों से भरकर अपने अंतिम विस्मृति पर महसूस होने वाली चिंता की भरपाई करने के लिए मजबूर होते हैं। क्योंकि उनके आस-पास अपने जैसे बच्चों की लगातार मौतों का उनके संवेदनशील दिमाग और कमजोर दिलों पर ऐसा प्रभाव पड़ता है, जो दूरगामी इच्छाओं और कमजोर आत्माओं को पालते हैं, कि यह उनके लिए जीवन को यातना बना देता है और उनकी बुद्धि को पीड़ा का साधन बना देता है। हालाँकि, अगर उन्हें परलोक में विश्वास दिलाया जाता है, तो वे अपने साथियों की मौत पर जो चिंताएँ महसूस करते थे, जिनसे वे खुद को अर्थहीन विकर्षणों में डुबो कर बचने की कोशिश करते हैं, वे सच्चाई का एहसास होने पर खुशी और उल्लास में बदल जाएँगे। परलोक में विश्वास के आधार पर वे कहेंगे: “मेरा भाई या साथी मर गया है और स्वर्ग में एक पक्षी बन गया है।

वह (या वह) अब हमसे कहीं ज़्यादा उड़-उड़कर मौज-मस्ती कर रहा है। और हालाँकि मेरी माँ मर चुकी है, लेकिन वह ईश्वरीय दया के दायरे में चली गई है। एक दिन मैं उसे स्वर्ग में देखूँगा, जहाँ वह मुझे एक बार फिर अपनी बाहों में ले लेगी।" इस तरह का एहसास इन बच्चों को एक ऐसी स्थिति में जीने में सक्षम करेगा जो उनके लिए एक इंसान के तौर पर उपयुक्त है।

परलोक में विश्वास करने के माध्यम से ही वृद्ध, जो मानव जाति का एक तिहाई हिस्सा हैं, अपने जीवन के अपरिहार्य विलुप्त होने और इस तथ्य के सामने सांत्वना पाने में सक्षम हैं कि वे भी जल्द ही पृथ्वी की आंतों में समा जाएंगे और उनकी कीमती और प्यारी दुनिया खत्म हो जाएगी। परलोक में विश्वास के बिना, वे दयालु, सम्मानित पिता और वे कोमल, आत्म-त्यागी माताएँ दिल और आत्मा में इतनी व्याकुल और व्यथित हो जाएँगी कि उनकी दुनिया उनके लिए निराशा की जेल और जीवन पीड़ा का भारी बोझ लगने लगेगी। लेकिन परलोक में विश्वास उन्हें संबोधित करते हुए कहता है: "चिंता मत करो! एक उज्ज्वल, शाश्वत जीवन तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है और वहाँ तुम शाश्वत युवावस्था का आनंद उठाओगे। तुम अपने प्यारे बच्चों और उन रिश्तेदारों के साथ खुशी से फिर से मिलोगे जिन्हें तुमने खो दिया है। तुम्हारे सभी अच्छे कर्म सुरक्षित हैं और वहाँ तुम्हें उनके लिए पुरस्कृत किया जाएगा।" आख़िरत पर ईमान उन्हें इतनी तसल्ली और खुशी देता है कि अगर उन्हें सौ बार भी बुढ़ापा आए तो भी उन्हें निराशा नहीं होगी।

मानव जाति का एक तिहाई हिस्सा युवा वर्ग से बना है। अपनी अशांत भावनाओं और भावनाओं के कारण, यदि वे परलोक में अपना विश्वास खो देते हैं और नरक की यातनाओं को ध्यान में नहीं रखते हैं, तो उन्हें अपनी साहसी बुद्धि को नियंत्रित करने में कठिनाई होती है, समाज के ईमानदार सदस्यों की संपत्ति और सम्मान को खतरा होता है।

कमजोर और बुजुर्गों की शांति और सम्मान के साथ-साथ उनकी प्रतिष्ठा भी गंभीर खतरे में पड़ जाएगी। एक युवा एक मिनट के आनंद के लिए एक खुशहाल घर को तबाह कर सकता है, और उसके बाद के वर्षों की कैद उसे जंगली जानवर बना देगी। लेकिन अगर आख़िरत पर ईमान आ जाए

उनकी सहायता के लिए, वे जल्दी से अपने होश में आ जाते हैं, सोचते हुए: "यह सच है कि सरकारी मुखबिर मुझे नहीं देख सकते और मैं उनसे छिप सकता हूँ, लेकिन सर्वशक्तिमान सम्राट के फ़रिश्ते, जिनके पास नर्क नामक जेल है, मुझे देख रहे हैं और मेरे सभी बुरे कामों को रिकॉर्ड कर रहे हैं। मैं आज़ाद नहीं हूँ और मुझे अपने हाल पर छोड़ दिया गया है: मैं एक यात्री हूँ जिस पर कर्तव्य का भार है। एक दिन मैं भी बूढ़ा और कमज़ोर हो जाऊँगा।" अचानक यह व्यक्ति उन लोगों के लिए सहानुभूति और सम्मान महसूस करने लगता है जिन पर वे पहले बिना सोचे-समझे हमला कर देते थे। इस सच्चाई की व्याख्याओं से संतुष्ट होकर, जो पाठक रिसाले-ए-नूर में पा सकते हैं, हम यहाँ चर्चा को समाप्त करते हैं।

मानव जाति का एक और महत्वपूर्ण वर्ग है बीमार, उत्पीड़ित, गरीब, हमारे जैसे लोग जो विपत्ति से पीड़ित हैं और जेल में सड़ रहे कैदी हैं, जिन्हें कड़ी सजा दी जाती है। अगर परलोक में ईमान उनकी मदद नहीं करता, तो उनका जीवन अवश्य ही पीड़ा से भरा होगा।

बीमारी उन्हें लगातार मौत की याद दिलाती है; अत्याचारी का घमंडी विश्वासघात, जिसके सामने वे अपनी इज्जत नहीं बचा पाते, उन्हें बहुत तकलीफ देता है; गंभीर आपदाओं में संपत्ति या संतान का नुकसान बेहिसाब निराशा लाता है; और पांच या दस साल जेल में बिताने की असहनीय कठिनाई अथाह दर्द और मानसिक पीड़ा का कारण बनती है। विश्वास के बिना, ये सभी विपत्तिपूर्ण परिस्थितियाँ दुनिया को उन लोगों के लिए एक भयानक जेल में बदल देती हैं जो उन्हें अनुभव करते हैं और जीवन एक जीता जागता नरक बन जाता है। लेकिन अगर आख़िरत में विश्वास उनकी मदद करता है, तो वे राहत महसूस करना शुरू कर देते हैं और, उनके विश्वास की सीमा तक, उनकी परेशानी, निराशा, चिंता और बदला लेने की इच्छा कम हो जाती है और कभी-कभी पूरी तरह से गायब भी हो जाती है।

मैं तो यहां तक कह सकता हूं कि अगर आख़िरत में ईमान ने मुझे और मेरे कुछ भाइयों को इस भयानक विपत्ति में मदद न की होती जो कि इस गलत कारावास की स्थिति है, तो हम कारावास का एक दिन भी नहीं झेल पाते: यह मौत के समान असहनीय होता और शायद हमें जीवन को अलविदा कहने पर मजबूर कर देता। लेकिन ईश्वर का असीम धन्यवाद, क्योंकि अपने भाइयों के दुख को झेलने के बावजूद, जिन्हें मैं अपने जीवन जितना ही प्यार करता हूं; रिसाले-ए-नूर की हज़ारों प्रतियों और अपनी अनमोल, सोने की परत चढ़ी पुस्तकों को खोने और उनके लिए रोने के बावजूद, जिन्हें मैं अपनी आंखों जितना ही प्यार करता हूं; और इस तथ्य के बावजूद कि मैं ज़रा सा भी अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता या दूसरों के द्वारा हावी नहीं हो सकता, मैं कसम खाता हूं कि प्रकाश और शक्ति

परलोक में विश्वास ने मुझे धैर्य, सहनशीलता, सांत्वना और दृढ़ता प्रदान की। वास्तव में, इसने मुझे अपनी परीक्षा के कष्टदायक परिश्रम को सहन करके एक बड़ा पुरस्कार प्राप्त करने का उत्साह दिया है, क्योंकि जैसा कि मैंने इस ग्रंथ की शुरुआत में कहा था, मैं खुद को जोसेफ के स्कूल कहलाने के योग्य शिक्षा के स्थान का छात्र मानता था। अगर बुढ़ापे में कभी-कभार होने वाले दर्द और बीमारियाँ न होतीं, तो मैं अपने पाठों को अधिक लगन और अधिक मन की शांति के साथ सीखता। हालाँकि, हम विषय से भटक गए हैं, और मुझे उम्मीद है कि इसके लिए मुझे माफ़ कर दिया जाएगा।

साथ ही, हर किसी का घर उनके लिए एक छोटी सी दुनिया है, शायद एक छोटा सा स्वर्ग भी। अगर परलोक में विश्वास उस घर की खुशियों का आधार नहीं है, तो उस परिवार के सदस्यों को करुणा, प्रेम के अनुपात में पीड़ा और चिंता का सामना करना पड़ेगा।

, और अपने परिवार के प्रति लगाव महसूस करते हैं। उनका स्वर्ग नर्क में बदल जाएगा और उनके पास अस्थायी मनोरंजन और विकर्षणों के साथ अपने दिमाग को सुन्न करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। एक शुतुरमुर्ग की तरह जो यह सोचकर रेत में अपना सिर घुसा लेता है कि वे शिकारी को दिखाई नहीं देंगे, ये बेचारे लोग इस उम्मीद में अपने सिर को लापरवाही में डुबो देते हैं कि मृत्यु, पतन और अलगाव उन्हें नहीं मिल सकता। वे अस्थायी रूप से खुद को सुन्न करके अपनी भयावह स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता खोजते हैं। उदाहरण के लिए, माँ अपने बच्चों को खतरे में देखकर लगातार काँपती है, जिनके लिए वह अपनी आत्मा का बलिदान कर सकती है। बच्चे, अपने पिता या भाई-बहनों को उन विपत्तियों से बचाने में असमर्थ होने के कारण लगातार दु:ख और भय महसूस करते हैं जो परिवारों पर अक्सर आती रहती हैं। इस प्रकार, इस उथल-पुथल भरे सांसारिक जीवन में, परिवार का कथित रूप से संतुष्ट जीवन कई मामलों में अपनी खुशी खो देता है, और इस संक्षिप्त सांसारिक अस्तित्व में बनाए गए रिश्तेदारी और घनिष्ठ संबंध सच्ची वफादारी, हार्दिक ईमानदारी, निस्वार्थ सेवा या वास्तविक प्रेम का परिणाम नहीं देते हैं। अच्छा चरित्र उसी अनुपात में कम होता जाता है और अक्सर पूरी तरह से खत्म हो जाता है। लेकिन अगर आख़िरत में ईमान उस घर में प्रवेश करता है, तो यह उसे पूरी तरह से रोशन कर देता है: उसके सदस्य एक-दूसरे के प्रति सम्मान और प्रेम विकसित करते हैं, न सिर्फ़ इस छोटी सी दुनियावी ज़िंदगी में रिश्तों की खातिर, बल्कि आख़िरत यानी खुशी के अनंत क्षेत्र में बने रहने के लिए। वे एक-दूसरे का सम्मान करते हैं, प्यार करते हैं और एक-दूसरे के प्रति दया दिखाते हैं; वे एक-दूसरे के प्रति वफ़ादार होते हैं और एक-दूसरे की खामियों को नज़रअंदाज़ करते हैं और उनके अच्छे चरित्र में भी उसी हिसाब से इज़ाफ़ा होता है। नतीजतन, घर में सच्ची इंसानियत की खुशी विकसित होने लगती है। , और करुणा
चूँकि यह भी रिसाले-ए-नूर में स्पष्ट किया गया है, इसलिए हम यहाँ चर्चा को छोटा कर देते हैं।

,

इसके अलावा, एक शहर उन लोगों के लिए एक बड़े घर की तरह है जो वहाँ रहते हैं। अगर उस बड़े परिवार के सदस्य आख़िरत में ईमान नहीं रखते हैं, तो वे पाप के बजाय पाप में पड़ जाएँगे।

ईमानदारी, सौहार्द, सद्गुण, आपसी प्रेम और सहायता, आत्म-बलिदान, तथा ईश्वरीय प्रसन्नता और पारलौकिक पुरस्कार की चाहत - ये सभी अच्छे आचरण का आधार बनते हैं - स्वार्थ, दिखावा, पाखंड, बनावटीपन, रिश्वतखोरी और धोखाधड़ी जैसे दोष हावी हो जाएँगे। अराजकता और बर्बरता सतही व्यवस्था और नाममात्र की मानवता के मुखौटे के नीचे हावी हो जाएगी, जो शहर के जीवन को विषाक्त कर देगी। बच्चे बेकार के उपद्रवी बन जाएँगे, युवा नशे में डूब जाएँगे, शक्तिशाली लोग अत्याचार शुरू कर देंगे, और बुज़ुर्ग रोने के लिए छोड़ दिए जाएँगे।

इसी प्रकार, एक देश भी एक घर है - एक राष्ट्रीय परिवार का घर।
यदि ऐसे घर में परलोक में विश्वास व्याप्त हो, तो वहां सच्चा सम्मान, सच्ची करुणा, निःस्वार्थ प्रेम, पारस्परिक सहायता, ईमानदार सेवा, अच्छे सामाजिक संबंध, दिखावटी दान, तथा अन्य अनेक श्रेष्ठताएं और सद्गुण पनपने लगेंगे।

परलोक में विश्वास बच्चों से कहता है: "झगड़ा करना बंद करो, क्योंकि जन्नत जीतने लायक है!" और उन्हें कुरान की शिक्षा के माध्यम से आत्म-नियंत्रण सिखाता है।

यह युवाओं से कहता है: "नरक सचमुच मौजूद है: अपनी असावधानी छोड़ दो!" इस प्रकार उन्हें होश में लाया जाता है।

यह अत्याचारी से कहता है: “यदि तुम इसी मार्ग पर चलते रहे तो तुम्हें घोर यातना मिलेगी!” और उन्हें न्याय के आगे झुकने पर मजबूर करता है।

यह बुजुर्गों से कहता है: "आने वाले संसार में न केवल शाश्वत खुशी होगी जो इस संसार में आपके द्वारा अनुभव की जाने वाली किसी भी चीज़ से कहीं ज़्यादा होगी, बल्कि शाश्वत यौवन भी होगा। उन्हें अपने लिए जीतने की कोशिश करें!" इस प्रकार उनके आंसुओं को मुस्कुराहट में बदल दिया जाता है।

परलोक में विश्वास हर समूह में, चाहे वह विशेष हो या सार्वभौमिक, अपने अनुकूल प्रभाव दिखाता है और उन्हें प्रकाशित करता है। समाजशास्त्रियों और नैतिक दार्शनिकों को, जो मानव जाति के सामाजिक जीवन से संबंधित हैं, इस पर ध्यान देना चाहिए। यदि परलोक में विश्वास से होने वाले बाकी हजारों लाभों की तुलना उन पाँच या छह से की जाए, जिनका हमने संक्षेप में उल्लेख किया है, तो हम समझ सकते हैं कि यह केवल विश्वास ही है जो इस दुनिया और परलोक में सुख का साधन है।

पंद्रहवीं किरण

सृष्टिकर्ता से स्वयं सृष्टिकर्ता के बारे में पूछना

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और हम उसी से सहायता चाहते हैं।

सूरतुल की अंतिम आयत में निहित सत्यों में से एक- फ़ातिहा - उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने अनुग्रह किया, न कि उनका जो तेरे प्रकोप के भागी हुए, न उनका जो भटक गए - जो मार्गदर्शन और सीधे मार्ग पर चलने वालों की तुलना गुमराह और विद्रोह करने वालों से करता है, और जो रिसाले-नूर में सभी तुलनाओं का स्रोत है , सूरतुन्-नूर की निम्नलिखित आयत द्वारा भी अत्यंत अद्भुत ढंग से व्यक्त किया गया है :

> अल्लाह आसमान और ज़मीन का नूर है। उसके नूर की मिसाल एक आले की तरह है जिसमें एक चिराग़ है। चिराग़ एक क्रिस्टल में है और क्रिस्टल एक मोती की तरह चमकता हुआ सितारा है, जो एक धन्य जैतून के पेड़ के तेल से जलाया जाता है जो न तो पूरब का है और न ही पश्चिम का। तेल लगभग खुद ही रोशनी देता है, भले ही उसे कोई आग न छुए। रोशनी पर रोशनी! अल्लाह जिसे चाहता है अपने नूर की तरफ़ ले जाता है। अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बनाता है। अल्लाह हर चीज़ का पूरा ज्ञान रखता है। (24:35)

और इस श्लोक द्वारा:

> या उनके काम ऐसे हैं जैसे अँधेरे के परदे एक गहरे समुद्र को उसकी गहराइयों में ढके हुए हों, और एक लहर से ढके हुए हों, जिसके ऊपर एक लहर हो, जिसके ऊपर एक बादल हो, अँधेरे के परदे एक दूसरे के ऊपर ऐसे ढेर हो गए हों कि जब कोई अपना हाथ बढ़ाता है तो उसे मुश्किल से दिखाई देता है। क्योंकि जिसे अल्लाह ने कोई प्रकाश नहीं दिया, उसके पास कोई प्रकाश भी नहीं है। (24:40)

पहली आयत ही रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) को "नूर" (प्रकाश) नाम दिए जाने का मुख्य कारण थी। द सुप्रीम साइन (अयातु-अल-कुबरा) में यात्री ने पूरे ब्रह्मांड और सभी प्राणियों से सवाल किया

अपने रचयिता को खोजने, खोजने और जानने के लिए। वे उसे तैंतीस तरीकों और निर्णायक प्रमाणों के माध्यम से जानते थे, जो ज्ञान और दृष्टि या अवलोकन पर आधारित निश्चितता के आधार पर निश्चितता की डिग्री तक थे। इस अथक, अतृप्त यात्री ने सदियों और आकाश और पृथ्वी के विभिन्न स्तरों के माध्यम से अपने मन, हृदय और कल्पना के साथ यात्रा की, पूरे विश्व का निरीक्षण किया जैसे कि यह एक ही शहर हो। अपने तर्क को कभी कुरान पर और कभी दर्शन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, और कल्पना की शक्तिशाली दूरबीन के माध्यम से सबसे दूर के स्तरों को देखते हुए, यात्री ने सत्य को वैसे ही देखा जैसे वे वास्तविकता में हैं और आंशिक रूप से हमें उनके बारे में सर्वोच्च संकेत में बताया।

अब, यात्री ने अपनी कल्पना की यात्रा में जिन अनेक दुनियाओं और स्तरों में प्रवेश किया, जो प्रकृति में प्रतिनिधित्वात्मक और पूरी तरह से वास्तविकता के अनुरूप थी, उनमें से केवल तीन को यहाँ संक्षेप में समझाया गया है ताकि सूरतुल-फातिहा के अंत में तुलना के केवल एक पहलू को स्पष्ट किया जा सके। यह तर्क की शक्ति से संबंधित है। यात्री के अन्य दर्शन और अन्य तुलनाएँ रिसाले-ए-नूर के प्रासंगिक भागों में पाई जा सकती हैं।

पहला उदाहरण निम्नलिखित के समान है

यात्री, जो केवल अपने सृष्टिकर्ता को खोजने और उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए संसार में आया है, अपने तर्क को इस प्रकार संबोधित करता है: “हमने अपने सृष्टिकर्ता के विषय में सब कुछ पूछा है और हमें पूरी तरह से संतोषजनक उत्तर प्राप्त हुए हैं।

अब, जैसा कि कहावत में कहा गया है: "सूर्य के बारे में जानने के लिए सूर्य से ही पूछना होगा," हम अपने निर्माता के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक और यात्रा करेंगे, उसके पवित्र गुणों, जैसे ज्ञान, इच्छा और शक्ति, और उसके दृश्यमान कार्यों और उसके नामों की अभिव्यक्तियों के माध्यम से।" और इस तरह यात्री दुनिया में प्रवेश करता है। फिर गुमराह लोगों की तरह - जो सूरतुल-फातिहा के अंत में वर्णित दूसरी धारा या मार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं - वे पृथ्वी के जहाज पर सवार होते हैं। वे विज्ञान और दर्शन के चश्मे पहनते हैं जो कुरान की बुद्धिमत्ता का पालन नहीं करते हैं, और भूगोल के कार्यक्रम के साथ असंगत दिखते हैं जो कुरान का नक्शा नहीं बनाते हैं।

वे निम्नलिखित देखते हैं:

पृथ्वी एक अनंत शून्य में तोप के गोले से सत्तर गुना तेज गति से यात्रा कर रही है, एक वर्ष में बीस हजार वर्ष की दूरी तय कर रही है। इसने अपने ऊपर लाखों प्रजातियों के दुखी, असहाय जीवों को ले लिया है। यात्री को एहसास होता है कि अगर पृथ्वी एक मिनट के लिए भी अपना रास्ता भटक जाए, या किसी भटके हुए तारे से टकरा जाए, तो वह टूटकर बिखर जाएगी

अंतरिक्ष में, इन सभी दयनीय प्राणियों को शून्यता और अनस्तित्व में डाल दिया। आयत में संकेतित धारा की भयानक आपदा को महसूस करते हुए, न तो उन लोगों की जिन पर आपका क्रोध आया है, न ही उन लोगों की जो भटक गए हैं, और अंधेरे के पर्दों की घुटन भरी उदासी ने एक अथाह समुद्र को उसकी गहराई में ढक दिया है, यात्री चिल्लाता है: "हाय! हमने क्या किया है? हम इस भयानक जहाज पर क्यों चढ़े? हम कैसे बच सकते हैं?" फिर अंधे दर्शन के चश्मे को तोड़ते हुए, यात्री उन लोगों की धारा में शामिल हो जाता है जिन्हें आपने (सच्चे मार्गदर्शन के साथ) अनुग्रहित किया है। अचानक कुरान की बुद्धि उनकी सहायता के लिए आती है, उनके तर्क को एक दूरबीन प्रदान करती है जो हर चीज की सटीक सच्चाई दिखाती है।

“अब देखो!” यह कहता है। यात्री देखता है और निम्नलिखित देखता है:

“आकाश और पृथ्वी का प्रभु” नाम आकाश में सूर्य की तरह उदय होता है

(67:15) प्रभु ने पृथ्वी को एक सुव्यवस्थित और सुरक्षित जहाज के समान बनाया है, और उसमें जीवधारियों को उनके भोजन सहित भर दिया है, और उसे ब्रह्माण्ड रूपी सागर में सूर्य के चारों ओर भ्रमण कराया है, ताकि वह असंख्य लाभ और लाभ प्राप्त करे।

बुद्धिमानी के उदाहरण, मौसम की उपज को उन लोगों तक पहुंचाना जिन्हें भोजन की आवश्यकता है। भगवान ने दो स्वर्गदूतों थावर (बैल) और हट (मछली) को जहाज के कप्तान के रूप में नियुक्त किया है; वे भगवान के शानदार क्षेत्र के माध्यम से, सर्वशक्तिमान निर्माता के प्राणियों और मेहमानों के आनंद के लिए इसे अपनी यात्रा पर ले जाते हैं। यात्री समझता है कि यह ईश्वर के सत्य को दर्शाता है जो आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है, और इस प्रकार इस नाम की अभिव्यक्तियों के माध्यम से अपने निर्माता को ज्ञात करता है जो प्रकाश है। अपने पूरे दिल और आत्मा के साथ यात्री चिल्लाता है: "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता भगवान, दुनिया के भगवान के लिए है," और उन लोगों के समूह में शामिल हो जाता है जिन्हें आपने अनुग्रहित किया है।

दूसरा उदाहरण

दुनिया भर में अपनी यात्रा के दौरान यात्री जो देखता है उसका दूसरा उदाहरण इस प्रकार है:

पृथ्वी के जहाज को छोड़कर यात्री जानवरों और मानव जाति की दुनिया में प्रवेश करता है। वे उस दुनिया को प्राकृतिक विज्ञान के चश्मे से देखते हैं जो आत्मा से रहित है, और निम्नलिखित देखते हैं:

---

28 यह श्लोक अर्थ में चमत्कारी है। यह पृथ्वी की तुलना एक ऐसे जानवर से करता है जो अपने लाभ के लिए मानव जाति के अधीन है, हालाँकि वह अंतरिक्ष में बहुत तेज़ी से यात्रा करता है। इसके कंधे इसकी ऊँची भूमि या पहाड़ हैं, जहाँ मनुष्यों के लिए भोजन जमा पाया जाता है। (अनुवाद)

इन असंख्य प्राणियों की ज़रूरतें अनंत हैं और वे अनगिनत हानिकारक शत्रुओं और निर्दयी घटनाओं के निरंतर हमले के अधीन हैं, जबकि उनके पास इतनी पूंजी है जिससे वे अपनी ज़रूरतों का केवल हज़ारवाँ, बल्कि लाखोंवाँ हिस्सा ही पूरा कर सकते हैं। उनकी शक्ति भी शायद इन हानिकारक चीज़ों से लड़ने के लिए ज़रूरी शक्ति का दस लाखवाँ हिस्सा है। एक बुद्धिमान प्राणी होने के कारण और अपने साथियों के प्रति दया के कारण उनसे जुड़ाव महसूस करते हुए, यात्री उनकी भयानक दुर्दशा में उन पर दया करता है और उनके लिए इतना दुखी होता है कि वे नारकीय पीड़ा सहते हैं। वे इस अभागे संसार में आने के लिए हज़ार बार पछताने लगते हैं कि अचानक कुरान की बुद्धिमता की एक चमक उनकी मदद के लिए आती है, उन्हें उन लोगों की दूरबीन देती है जिन पर आपने कृपा की है, और कहती है: "देखो!" यात्री इसके माध्यम से देखता है और देखता है कि ईश्वर के प्रकट होने के माध्यम से आकाशों और पृथ्वी का प्रकाश है, असंख्य ईश्वरीय नाम, जैसे कि अत्यंत दयालु, अत्यन्त दयावान, सर्व-प्रदान करने वाला, सर्व-प्रदान करने वाला, सर्व-दानी, सर्व-रक्षक, प्रत्येक सूर्य की तरह इन आयतों की निशानियों में उदय हो रहे हैं: कोई भी जीवित प्राणी ऐसा नहीं है जो उसके माथे के बाल से न पकड़ा हो (11:56); कितने ही जीवित प्राणी ऐसे हैं जो अपने लिए भोजन नहीं रखते, परन्तु ईश्वर उन्हें और वास्तव में तुम्हारे लिए भी भोजन उपलब्ध कराता है (29:60); निश्चय ही हमने आदम की संतान को (बहुत से विशेषणों से) सम्मानित किया है (29:70), और नेक और धर्मपरायण लोग सदैव धन्य (स्वर्गों) में रहेंगे (82:13)। वे मनुष्यों और पशुओं की दुनिया को दया और उपकारों से भरकर उसे किसी प्रकार की अस्थायी जन्नत में बदल देते हैं। अब यात्री को समझ में आ गया है कि ये आयतें इस बात को सुनिश्चित करती हैं कि इस शानदार, शिक्षाप्रद अतिथिगृह के सर्व-दयालु मेजबान को पूरी तरह से जाना जाए। यात्री हज़ार बार दोहराता है, सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जो सारे संसार का स्वामी है!

तीसरा उदाहरण

यात्रा के दौरान यात्री द्वारा किये गए सैकड़ों अवलोकनों में से तीसरा उदाहरण इस प्रकार है:

जो यात्री अपने निर्माता को उसके नामों और गुणों के माध्यम से जानना चाहता है, वह अपने मन और कल्पना से कहता है: "आओ! अपने शरीरों को धरती पर छोड़कर, हम आत्माओं और फ़रिश्तों की तरह स्वर्ग में चढ़ेंगे। हम स्वर्ग के निवासियों से अपने निर्माता के बारे में पूछेंगे।" उनकी आत्मा उनकी कल्पना पर चढ़ती है, उनका मन उनके विचारों पर चढ़ता है, और साथ में वे स्वर्ग में चढ़ जाते हैं। वे खगोल विज्ञान को अपना मार्गदर्शक मानते हैं और उस दर्शन की दृष्टि से देखते हैं जो धर्म और उन लोगों की धारा पर ध्यान नहीं देता है जिन्होंने आपके क्रोध को भड़काया है और जो भटक गए हैं। यात्री निम्नलिखित देखता है:

हज़ारों आकाशीय पिंड और ज्वलंत तारे, जिनमें से प्रत्येक पृथ्वी से हज़ार गुना बड़ा है और तोप के गोले से सौ गुना तेज़ गति से घूम रहा है, अनजाने में, बेजान, लक्ष्यहीन होकर घूम रहा है। अगर इनमें से कोई पिंड एक सेकंड के लिए भी अपना रास्ता भूल जाता है, तो वह उस अनंत अंतरिक्ष में किसी दूसरे बेहोश पिंड से टकरा जाएगा, जिससे प्रलय के दिन की तरह पूरी तरह से भ्रम और अराजकता पैदा हो जाएगी।

वे जिस ओर भी देखते हैं, यात्री भय और निराशा से भर जाता है: उन्हें हज़ार बार अफसोस होता है कि वे स्वर्ग में चढ़ गए हैं। उनका मन और कल्पना बहुत परेशान और भ्रमित हैं। मन और कल्पना चिल्लाती है: "हमारा कर्तव्य सुंदर सत्यों को देखना और इंगित करना है। हम अब ऐसे नारकीय बदसूरत और पीड़ादायक तमाशे देखना या जानना नहीं चाहते हैं; हम इस कार्य से पीछे हटते हैं!" फिर अचानक, ईश्वर के प्रकट होने से आकाश और पृथ्वी का प्रकाश होता है, असंख्य नाम जैसे "आकाश और पृथ्वी का निर्माता", "सूर्य और चंद्रमा का वश में करनेवाला", और "सर्वलोकों का पालनहार", प्रत्येक आयतों की निशानियों में सूर्य की तरह उदय होते हैं जैसे कि और हमने सबसे निचले आकाश (दुनिया के स्वर्ग) को दीपों से सजाया है (67:5); तो क्या वे कभी अपने ऊपर के आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे कैसे बनाया और सजाया है? (50:6), और ... फिर उसने आकाश की ओर संकेत किया, और उसे सात आकाशों में बनाया (2:20)। उन्होंने सारे आकाश को प्रकाश और फ़रिश्तों से भर दिया, और उसे एक विशाल मस्जिद और सैन्य छावनी में बदल दिया। यात्री उन लोगों की धारा में प्रवेश करता है जिन पर तूने अनुग्रह किया है, और भटकने वालों से और अंधकार के पर्दों से बचा लिया जाता है जो एक अथाह समुद्र को उसकी गहराई में ढक लेते हैं। यात्री एक सुव्यवस्थित, सुंदर और शानदार भूमि देखता है, जो स्वयं स्वर्ग के समान अद्भुत है। यह देखकर कि उसके निवासी महाप्रतापी सृष्टिकर्ता को ज्ञात कर रहे हैं, यात्री के मन और कल्पना का मूल्य एक हजार गुना बढ़ जाता है, और उसका कार्य भी।

रिसाले-ए-नूर का हवाला देते हुए यात्री की अन्य टिप्पणियों, जो इन तीनों के साथ तुलनीय हैं, और अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के ज्ञान जो उसके नामों के प्रकटीकरण के माध्यम से प्राप्त होता है, यहाँ हम केवल कुछ संक्षिप्त संकेतों का उल्लेख करेंगे। दुनिया भर के उस यात्री की तरह, हम ज्ञान, इच्छा और शक्ति के कार्यों और अभिव्यक्तियों के माध्यम से ब्रह्मांड के निर्माता से बहुत संक्षेप में परिचित होने की कोशिश करेंगे, जो उनके सात पवित्र गुणों में से तीन हैं। विस्तृत व्याख्या के लिए, हम आपको रिसाले-ए-नूर के प्रासंगिक भागों का संदर्भ देते हैं।

उनतीसवीं चमक

विश्वास मानव जाति के लिए सबसे बड़ा वरदान क्यों है?

यह अध्याय इस वाक्यांश से संबंधित है, सारी प्रशंसा और आभार परमेश्वर के लिए है।

इस लघु ग्रंथ में, विश्वास के उन अनंत लाभों और प्रकाशों में से, जो लोगों को यह घोषणा करने के लिए प्रेरित करते हैं कि सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, केवल आठ का ही वर्णन किया जाएगा।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

पहला बिंदु

सबसे पहले, निम्नलिखित दो बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए:

- दर्शनशास्त्र (जो धर्म का पालन नहीं करता) एक काला चश्मा है जो हर चीज़ को बदसूरत और भयावह दिखाता है। इसके विपरीत, सच्चा धार्मिक विश्वास एक पारदर्शी, स्पष्ट, चमकदार चश्मा है जो हर चीज़ को सुंदर और प्यारा दिखाता है।

- क्योंकि वे सभी प्राणियों के साथ जुड़े हुए हैं, सभी चीजों के साथ एक प्रकार का लेन-देन करते हैं, और स्वभाव से ही अपने आस-पास की चीजों से मिलने, बातचीत करने और पड़ोसी होने के लिए बाध्य हैं, इसलिए मनुष्यों के छह पक्ष या पहलू हैं: बायां, दायां, सामने, पीछे, ऊपर और नीचे।

ऊपर बताए गए दोनों में से किसी भी चश्मे को पहनने पर मनुष्य को
इन ओर स्थित प्राणियों और परिस्थितियों को देख सकते हैं।

दायाँ पक्ष: इस पक्ष या पहलू का मतलब अतीत है। जब अतीत को अधार्मिक दर्शन के चश्मे से देखा जाता है, तो यह एक विशाल, अंधकारमय, भयावह, उलटा कब्रिस्तान प्रतीत होता है, जिसका प्रलय का दिन पहले ही आ चुका है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह दृश्य मनुष्यों में बहुत भय, डर और निराशा पैदा करता है।

हालांकि, जब इस पक्ष को आस्था के चश्मे से देखा जाता है, तो भले ही यह दायरा उलट-पुलट हो गया लगता है, लेकिन इसमें किसी तरह की जनहानि नहीं हुई है।
इसके बजाय यह समझा जाता है कि इसके चालक दल और निवासियों को स्थानांतरित कर दिया गया है

एक बेहतर, रोशनी से भरी दुनिया के लिए। कब्रों और गड्ढों को भूमिगत सुरंग माना जाता है, जो दूसरी, रोशनी से भरी दुनिया की ओर ले जाने के लिए खोदी गई हैं। इसका मतलब यह है कि विश्वास से मनुष्य को जो खुशी, राहत, संतोष और मन की शांति मिलती है, वह ईश्वरीय कृपा है जो उन्हें हज़ारों बार यह कहने पर मजबूर करती है: "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है!"

बायाँ भाग: बायाँ भाग भविष्य को दर्शाता है। अब जब भविष्य को दर्शनशास्त्र के चश्मे से देखा जाता है, तो यह एक विशाल, अंधेरी, भयावह कब्र के रूप में दिखाई देता है जो हमें सड़ा देगी और हमें साँपों और बिच्छुओं का भोजन बना देगी। लेकिन जब विश्वास के चश्मे से देखा जाता है, तो यह सर्वशक्तिमान ईश्वर, निर्माता, दयालु और दयालु द्वारा मनुष्यों के लिए तैयार किए गए भोज के रूप में दिखाई देता है, जिसमें सभी प्रकार के बेहतरीन और सबसे स्वादिष्ट भोजन और पेय शामिल हैं। और यह बनाता है

उन्हें हज़ारों बार कहना चाहिए: “सारी स्तुति और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है!”

ऊपर: जब कोई व्यक्ति स्वर्ग की ओर देखने के लिए दर्शनशास्त्र के चश्मे का उपयोग करता है, तो उसे अरबों सितारों और स्वर्गीय पिंडों की अत्यंत तेज़ और विविध गतिविधियों पर एक भयानक भय और आतंक महसूस होता है, जो अंतहीन अंतरिक्ष में जंगली घोड़ों की तरह दौड़ रहे हैं। हालाँकि, जब कोई आस्तिक उन्हें देखता है, तो वह देखता है कि जिस तरह सेना के युद्धाभ्यास एक कमांडर की देखरेख और आदेश पर किए जाते हैं, उसी तरह सितारे प्रकाश फैलाने वाले दीपक हैं जो स्वर्ग की दुनिया को सुशोभित करते हैं। नतीजतन, उन घोड़ों की दौड़ पर आतंक और भय महसूस करने के बजाय, वे मित्रता और प्रेम से भर जाते हैं। विश्वास की उदारता के बदले में हजारों बार "सभी प्रशंसा और आभार भगवान के लिए हैं!" कहना निश्चित रूप से कम है, जो स्वर्ग की दुनिया को इतने सौम्य तरीके से दर्शाता है।

नीचे: जब कोई व्यक्ति अपने पैरों के नीचे की धरती को देखने के लिए दर्शनशास्त्र की नज़र से देखता है, तो वह देखता है कि यह एक ऐसा जानवर है जिसे बिना किसी उद्देश्य के सूर्य के चारों ओर घूमने के लिए छोड़ दिया गया है, या एक ऐसी नाव है जिसका कोई कप्तान नहीं है, और वे भय और चिंता से ग्रसित हो जाते हैं। लेकिन जब वे विश्वास के चश्मे से देखते हैं, तो वे इसे दयालु ईश्वर के जहाज के रूप में देखते हैं, जो मानव जाति को ईश्वर की आज्ञा के तहत सूर्य के चारों ओर एक सुखद यात्रा पर ले जाता है, जिसमें सभी आवश्यक भोजन, पेय और कपड़े सवार होते हैं। और इसलिए वे इस महान उपहार के लिए पूरे दिल से "सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं!" कहना शुरू करते हैं जो विश्वास से निकलता है।

सामने: यदि कोई व्यक्ति जो दर्शनशास्त्र में लिप्त है, इस ओर देखता है, तो वह देखता है कि सभी जीवित प्राणी, चाहे मनुष्य हों या जानवर, काफिले से काफिले में और बहुत तेजी से गायब हो रहे हैं। यानी वे अस्तित्वहीन हो रहे हैं और उनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है। क्योंकि वे जानते हैं कि वे भी अस्तित्वहीन हो रहे हैं।

एक ही लक्ष्य के लिए अभिशप्त होने पर, वे दु:ख से लगभग अपना दिमाग खो देते हैं। लेकिन एक आस्तिक के लिए जो उसी चीज़ को विश्वास की नज़र से देखता है, इस तरफ़ यात्रा करने वाले लोग अस्तित्वहीन दुनिया में नहीं जा रहे हैं; बल्कि, वे खानाबदोशों की तरह एक चरागाह से दूसरे चरागाह में स्थानांतरित हो रहे हैं। वे एक क्षणभंगुर क्षेत्र से एक शाश्वत स्थायी क्षेत्र में जा रहे हैं; जिस खेत पर उन्होंने काम किया है, वहाँ से उस कार्यालय में जहाँ वे अपनी तनख्वाह लेते हैं; कठिनाई और कठिनाई के स्थान से आराम और दया के स्थान पर। और इसलिए वे इस पहलू को खुशी और कृतज्ञता के साथ देखते हैं।

रास्ते में आने वाली प्रत्यक्ष कठिनाइयाँ, जैसे कि मृत्यु और कब्र, वास्तव में अपने परिणामों के संदर्भ में खुशी के साधन हैं। क्योंकि प्रकाश से भरी दुनियाओं की ओर जाने वाला मार्ग कब्र से होकर गुजरता है, और सबसे बड़ी खुशी सबसे खराब, सबसे दुखद आपदाओं के परिणामस्वरूप आती है। उदाहरण के लिए, पैगंबर जोसेफ, उन पर शांति हो, मिस्र के उप-शासक होने की खुशी तभी प्राप्त हुई जब उन्हें उनके भाइयों ने एक कुएं में फेंक दिया और जुलैखा की बदनामी के कारण जेल में डाल दिया।29

इसी प्रकार, अपनी माँ के गर्भ से संसार में आने वाला बच्चा इस संसार में केवल उन थकाऊ, कष्टदायक कठिनाइयों के परिणामस्वरूप ही सुख प्राप्त करता है, जो वह रास्ते में झेलता है।

पीछे: जब कोई दर्शन के चश्मे से उन लोगों को देखता है जो पीछे से आते हैं, तो उन्हें इस सवाल का कोई जवाब नहीं मिलता: "वे कहाँ से आए हैं और कहाँ जा रहे हैं? और वे इस दुनिया के दायरे में क्यों आए?" स्वाभाविक रूप से प्रश्नकर्ता घबराहट और संदेह की पीड़ा में रहता है। लेकिन अगर वे विश्वास के चश्मे से देखते हैं, तो वे समझेंगे कि मनुष्य पर्यवेक्षक हैं जिन्हें शाश्वत प्रभु ने ब्रह्मांड के प्रदर्शन में प्रदर्शित शक्ति के अद्भुत चमत्कारों पर विचार करने और उनका अध्ययन करने के लिए दुनिया में भेजा है। जिस स्तर पर वे शक्ति के उन चमत्कारों के मूल्य और भव्यता को समझते हैं और जिस हद तक वे शाश्वत प्रभु की भव्यता की ओर इशारा करते हैं, उसके अनुसार अपने ग्रेड प्राप्त करने के बाद, मनुष्य शाश्वत प्रभु के दायरे में वापस आ जाएगा। और इसलिए वे कहेंगे, "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता भगवान के लिए है!" विश्वास के पक्ष के लिए जिसने उन्हें समझ के इस आशीर्वाद तक पहुँचाया है।

---

[29] कुछ मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार, ज़ुलैख़ा उस मंत्री की पत्नी का नाम है, जिसने पैगम्बर जोसेफ़ (उन पर शांति हो) को गुलाम के रूप में खरीदा था। वह उनके साथ मौज-मस्ती करना चाहती थी, लेकिन जब पैगम्बर जोसेफ़ ने उसे अस्वीकार कर दिया, तो उसने उन्हें कैद करने का आदेश दिया। कुरान, 12:23-35 देखें। (ट्र.)

चूँकि विश्वास के अनुग्रह के लिए, जो ऊपर वर्णित अंधकार की परतों को हटाता है, यह कहते हुए की गई प्रशंसा, "सारी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए है!" भी एक आशीर्वाद या अनुग्रह है, इसलिए इसके लिए भी प्रशंसा और धन्यवाद की आवश्यकता होती है।

इसके लिए तीसरी बार स्तुति और धन्यवाद अर्पित करने की आवश्यकता होती है, जिसके लिए चौथी बार की आवश्यकता होती है, और इसी प्रकार, स्तुति की एक अनंत श्रृंखला बनती है जो इस वाक्यांश के एक बार उच्चारण से पैदा होती है: "सभी स्तुति और आभार ईश्वर के लिए हैं!"

दूसरा बिंदु

हमें कहना चाहिए, “सारी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए है!” विश्वास की उदारता के लिए जो इन छह पक्षों को प्रकाशित करती है, क्योंकि विश्वास छह पक्षों के अंधकार को दूर करने और इस प्रकार बुराई को दूर करने के कारण एक महान उपकार या आशीर्वाद होने के अलावा, इस तथ्य के संबंध में भी एक वरदान और उपकार है कि यह इन पक्षों को प्रकाशित करता है और इस प्रकार लाभ आकर्षित करता है। इसलिए चूँकि मनुष्य स्वभाव से सभ्य है, इसलिए वे छह पक्षों के सभी प्राणियों से जुड़े हुए हैं, और विश्वास के अनुग्रह के माध्यम से इन पक्षों से लाभ उठाने की संभावना रखते हैं।

इस प्रकार, आयत के अर्थ के अनुसार, जिस ओर भी तुम मुड़ो, वहाँ ईश्वर का "चेहरा" है (2:115), मनुष्य छह दिशाओं में से जिस ओर भी हो, उसे ज्ञान प्राप्त होता है। वास्तव में, एक आस्तिक के पास एक ऐसा जीवन होता है जो वास्तव में दुनिया की नींव से लेकर उसके अंत तक फैला होता है। उनका यह जीवन एक ऐसे जीवन के प्रकाश से लाभान्वित होता है जो पूर्व-अनंत काल से लेकर उत्तर-अनंत काल तक फैला होता है। साथ ही, विश्वास के कारण, जो छह दिशाओं को प्रकाशित करता है, वर्तमान संकीर्ण समय और स्थान जिसमें मनुष्य खुद को पाते हैं, एक विशाल दुनिया में परिवर्तित हो जाते हैं। यह विस्तृत दुनिया उनके घर की तरह हो जाती है, जबकि अतीत और भविष्य उनकी आत्मा और दिल के लिए वर्तमान समय की तरह हो जाते हैं: उनके बीच की दूरी गायब हो जाती है।

तीसरा बिंदु

चूँकि विश्वास समर्थन और सहायता के बिंदु प्रदान करता है, इसलिए इसके लिए प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है कि “सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं!”

मानवता को अपनी नपुंसकता और अपने विरोधियों की बहुलता के कारण सहायता या भरोसे के स्रोत की आवश्यकता है, ताकि वे उन लोगों को पीछे हटाने के लिए उस स्रोत में शरण ले सकें जो उनके विरुद्ध हैं। इसी तरह, अपनी आवश्यकताओं की अधिकता और अपनी अत्यधिक जन्मजात गरीबी के कारण, उन्हें सहायता के स्रोत की आवश्यकता है, जिससे वे सहायता मांग सकें, ताकि इसके माध्यम से वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

हे मानवजाति! तुम्हारा सहारा या भरोसा केवल ईश्वर पर विश्वास है। तुम्हारी आत्मा और विवेक के लिए सहायता का एकमात्र स्रोत परलोक पर विश्वास है। इसलिए जो व्यक्ति इन दोनों स्रोतों से अनभिज्ञ है, उसके हृदय और आत्मा में निरंतर भय बना रहता है, और उसका विवेक निरंतर पीड़ाग्रस्त रहता है। लेकिन जो व्यक्ति पहले बिंदु पर भरोसा करता है और दूसरे से सहायता मांगता है, उसके हृदय और आत्मा में अनेक सुख और मित्रता के उदाहरण अनुभव होते हैं: परिणामस्वरूप वे सांत्वना पाते हैं और उनके विवेक को शांति और संतुष्टि मिलती है।

चौथा बिंदु

विश्वास का प्रकाश वैध सुखों के आसन्न लुप्त होने से उत्पन्न होने वाले दर्द को दूर करता है, यह दिखाते हुए कि इसी तरह के सुख हमेशा मौजूद हैं और भविष्य में फिर से आएंगे। इसके अलावा, वरदानों के स्रोत को इंगित करके, यह सुनिश्चित करता है कि वे वरदान अनंत काल तक जारी रहें और कम न हों।

साथ ही, मिलन के सुख को उनके समान सुखों के साथ दर्शाकर, यह वियोग और जुदाई के दर्द को दूर करता है। यानी, एक सुख में वियोग के विचार के कारण कई दुख होते हैं, जबकि विश्वास उस सुख की पुनरावृत्ति को ध्यान में रखकर उन्हें दूर करता है। सुख के नवीनीकरण में और भी सुख हैं। यदि वह वृक्ष अज्ञात है जिससे फल लिया जाता है, तो फल तक सीमित सुख उसे खा लेने पर गायब हो जाता है, जिससे दुख होता है। लेकिन यदि वृक्ष ज्ञात है, तो फल के समाप्त होने पर कोई दुख नहीं होता, क्योंकि उस वृक्ष से दूसरे फल तोड़े जा सकते हैं जो उसकी जगह ले सकते हैं।

वास्तव में, नवीनीकरण अपने आप में एक आनंद है। क्योंकि मानव आत्मा को सबसे अधिक कष्ट अलगाव से होने वाली पीड़ाओं से होता है। विश्वास का प्रकाश सुखों से अलग होने की पीड़ाओं को उनके स्थान पर समान सुखों द्वारा प्रतिस्थापित करके तथा उन्हें प्राप्त करने की आशा के माध्यम से दूर करता है।

पांचवां बिंदु

ईमान की रोशनी उन चीज़ों को दिखाती है जिन्हें इंसान अपने लिए अजनबी और दुश्मनी भरा समझता है या बेजान और खोई हुई चीज़ों को जैसे कि जीवों के बीच अनाथ, दोस्त और भाई-बहन, ज़िंदा और ईश्वर की महिमा करने वाले के तौर पर देखता है। यानी जो इंसान लापरवाही की नज़र से देखता है, वह दुनिया के जीवों को दुश्मनों की तरह नुकसानदेह समझता है और डरता है: उसे हर चीज़ पराया नज़र आती है। क्योंकि गुमराही की नज़र से, अतीत और भविष्य की चीज़ों के बीच भाईचारे का कोई बंधन नहीं होता: सिर्फ़ एक संकेत होता है-

उनके बीच महत्वपूर्ण, आंशिक संबंध हैं। नतीजतन, गुमराह लोगों के बीच भाईचारा हजारों वर्षों में से केवल एक मिनट के बराबर है।

विश्वास के अनुसार, सभी शरीर जीवित हैं, एक दूसरे से परिचित हैं और एक दूसरे के साथ मैत्रीपूर्ण हैं। विश्वास यह भी दर्शाता है कि उनमें से प्रत्येक अपने अस्तित्व की भाषा के माध्यम से अपने निर्माता की महिमा करता है। यह इस संबंध में है कि सभी शरीरों में प्रत्येक के लिए उपयुक्त एक प्रकार का जीवन और आत्मा है। इसलिए जब शरीरों को विश्वास के प्रकाश में देखा जाता है तो उनके बारे में कुछ भी डरावना या भयावह नहीं होता है; इसके बजाय मित्रता और प्रेम होता है।

गुमराही का दृष्टिकोण मनुष्य को, अपनी मांगों और आकांक्षाओं को पूरा करने में शक्तिहीन, मालिकहीन और बिना रक्षक के रूप में देखता है; यह उन्हें दु:खी और दुखी देखता है, अपनी नपुंसकता के कारण रोते अनाथों की तरह। इसके विपरीत, विश्वास का दृष्टिकोण जीवित प्राणियों को अनाथों के रूप में नहीं बल्कि कुछ कार्यों के लिए नियुक्त अधिकारियों के रूप में, ईश्वर की महिमा और महिमा करने के कर्तव्य के साथ नियुक्त सेवकों के रूप में देखता है।

छठा बिंदु

आस्था का प्रकाश इस दुनिया और परलोक को दो ऐसी मेजों के रूप में दर्शाता है जो अनेक प्रकार की सौगातों से भरी हुई हैं: आस्थावान लोग आस्था के हाथ से, अपनी आंतरिक और बाह्य इंद्रियों और अपनी आध्यात्मिक क्षमताओं से उन तक पहुँचकर लाभ उठाते हैं। गुमराही के चश्मे से देखा जाए तो जीवों के लिए लाभ का दायरा कम होता जाता है और भौतिक सुखों तक सीमित रह जाता है। हालाँकि, आस्था के चश्मे से देखा जाए तो यह एक ऐसे क्षेत्र में फैल जाता है जो स्वर्ग और पृथ्वी को घेर लेता है। सच में, आस्थावान लोग सूर्य को अपने घर की छत पर लटका हुआ दीपक और चाँद को रात का उजाला मानते हैं।

इसी कारण सूर्य और चन्द्रमा उनके लिए ईश्वरीय कृपा के उदाहरण हैं और वह क्षेत्र जिससे ईमान वाले लाभ उठाते हैं वह आकाश से भी अधिक विस्तृत है। इसकी आयतों की वाक्पटुता के द्वारा उसने सूर्य और चन्द्रमा को अपने-अपने मार्ग में स्थिर रखा है और इस प्रकार तुम्हारे लिए उपयोगी बनाया है (14:33), और उसने आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसे तुम्हारे लिए उपयोगी बनाया है

(31:20), चमत्कारिक रूप से वाक्पटु कुरान इन अद्भुत उपकारों और आशीर्वादों की ओर संकेत करता है जो विश्वास से उत्पन्न होते हैं।

सातवां बिंदु

विश्वास के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि ईश्वर का अस्तित्व एक महान उपकार है जो अन्य सभी से बढ़कर है; यह एक स्रोत है, एक झरना है, जिसमें असंख्य प्रकार के उपकार, असंख्य प्रकार के आशीर्वाद और असंख्य प्रकार के उपहार निहित हैं।

इसलिए मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह स्तुति करके इस ऋण को चुकाए।

और सृष्टि में कणों की संख्या पर विश्वास के उपकार की प्रशंसा।
इनमें से कुछ उपकारों की ओर रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में संकेत किया गया है, जहां ईश्वर में विश्वास की चर्चा की गई है।

उन उपकारों में से एक जिसके लिए प्रशंसा और धन्यवाद अल-हम्दु लिल्लाह ("सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है!") कहकर पेश किया जाना चाहिए - अल-हम-दु के रूप में निश्चित उपपद अल के साथ हम्द (प्रशंसा) शब्द का उल्लेख करके, जिसका अर्थ है "सभी प्रशंसा" - ईश्वर का दयालु होने का उपकार है।

ईश्वर की दया का तात्पर्य उन जीवों की तरह असंख्य कृपाओं और उपहारों से है, जिन्हें दया की आवश्यकता है और जिन्हें दया की कृपा प्राप्त होती है। क्योंकि मनुष्य विशेष रूप से सभी जीवों से जुड़ा हुआ है, और इस कारण से वह उनके सुख से खुश होता है और उनके दुख से दुखी होता है। इस प्रकार एक व्यक्ति द्वारा प्राप्त कृपा उसके साथियों के लिए भी कृपा है।

ईश्वर का एक और महत्वपूर्ण गुण है, वह है करुणा। वह दयालु है और वह उन बच्चों और शिशुओं के समान ही अनेक प्रकार के वरदानों का स्रोत है, जिन्हें अपनी माताओं की कोमलता का वरदान मिला है, इसलिए वह उसी के अनुसार प्रशंसा और प्रशंसा का पात्र है। विवेकशील व्यक्ति जो मातृहीन, भूखे बच्चे के रोने पर दुःख और दया महसूस करता है, निश्चित रूप से एक माँ की अपने बच्चों के प्रति करुणा देखकर प्रसन्न होता है: वे इससे प्रसन्न और खुश होते हैं। इस प्रकार के सभी सुख अनुग्रह हैं और प्रशंसा और धन्यवाद की आवश्यकता रखते हैं।

ब्रह्मांड में मौजूद ज्ञान की सभी किस्मों और उदाहरणों की प्रशंसा और धन्यवाद की आवश्यकता वाले अन्य उपहारों या उपकारों में से एक है ईश्वरीय ज्ञान या ईश्वर का सर्वज्ञ होना। क्योंकि जिस तरह किसी व्यक्ति की आत्मा को ईश्वरीय दया की अभिव्यक्तियाँ और उसके हृदय को ईश्वरीय करुणा की अभिव्यक्तियाँ प्राप्त होती हैं, उसी तरह उनकी बुद्धि भी ईश्वरीय ज्ञान की सूक्ष्मताओं से आनंद प्राप्त करती है। इसलिए उन्हें "सर्व ज्ञान" के ऊँचे उच्चारण के माध्यम से अंतहीन प्रशंसा और प्रशंसा की आवश्यकता होती है।

स्तुति और आभार परमेश्वर के लिए है!”

इसके अलावा, ईश्वरीय संरक्षण या ईश्वर का सर्वरक्षक होना एक और उपकार है जिसके लिए प्रशंसा इस तरह से की जानी चाहिए कि “सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है!” इतनी महान कि इसकी ध्वनि से सारा स्थान भर जाए - इसे उतनी बार किया जाना चाहिए जितनी बार ईश्वरीय नाम सर्व-उत्तराधिकारी की अभिव्यक्तियाँ हैं, जितने वंशज हैं जो अपने पूर्वजों की मृत्यु के बाद भी जीवित रहते हैं, जितने प्राणी अगली दुनिया में हैं, और जितने मनुष्य के कर्म हैं जो संरक्षित हैं ताकि वे परलोक में अपना पुरस्कार प्राप्त कर सकें। क्योंकि उपकार की निरंतरता अधिक मूल्यवान है-

कृपा से भी अधिक सक्षम; सुख की स्थायीता सुख से भी अधिक सुखद है; स्वर्ग में शाश्वत स्थायित्व स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है, इत्यादि। परिणामस्वरूप, इसमें निहित सभी वरदानों के साथ, सर्वशक्तिमान ईश्वर का संरक्षण का गुण ब्रह्मांड में मौजूद सभी वरदानों से कहीं अधिक महान और श्रेष्ठ है। इस प्रकार इस गुण के लिए एक “सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं!” की आवश्यकता होती है जो इतना महान हो कि यह दुनिया को भर दे। आप बाकी दिव्य नामों और गुणों की तुलना यहाँ बताए गए चार नामों से कर सकते हैं, और चूँकि प्रत्येक में अनंत-अनंत वरदान या उपकार हैं, इसलिए प्रत्येक के लिए अनंत प्रशंसा और धन्यवाद की आवश्यकता है।

इसी प्रकार, पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो ईमान की कृपा प्राप्त करने का साधन हैं, जिनके पास नेमतों के सभी खजाने खोलने का अधिकार है, वे भी ऐसे उपकार हैं कि मानव जाति को अनंत काल तक उनकी प्रशंसा और प्रशंसा करने का ऋण है।

इसी प्रकार, इस्लाम और कुरान की कृपाएं, जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की सभी प्रकार की कृपाओं का संकेन्द्रित रूप और स्रोत हैं, असीम प्रशंसा की हकदार हैं।

आठवां बिंदु

सारी प्रशंसा और आभार ईश्वर को है कि, जैसा कि महान कुरान ने अपने सभी अध्यायों और खंडों, सभी पृष्ठों और पंक्तियों, और सभी शब्दों और अक्षरों के साथ स्थापित किया है, यह ब्रह्मांड के रूप में जाना जाने वाला ब्रह्मांडीय पुस्तक उसकी सुंदरता और अनुग्रह और पूर्णता के गुणों को प्रकट करके, सर्व-शुद्ध और पवित्र की प्रशंसा और महिमा करता है। यह इस प्रकार है:

अपनी क्षमता के अनुसार, चाहे वह बड़ी हो या छोटी, इस ब्रह्मांडीय पुस्तक की प्रत्येक कढ़ाई अपने कढ़ाईकर्ता की प्रशंसा और गुणगान करती है, जो एक है और हमेशा से ही मांगा जाता है, उसकी महिमा के गुणों को प्रकट करके। साथ ही, उसकी सुंदरता और अनुग्रह के गुणों को प्रदर्शित करके, इस पुस्तक का प्रत्येक शिलालेख अपने लेखक की प्रशंसा करता है, जो सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय है। इसके अलावा, दिव्य सर्व-सुंदर नामों के प्रतिरूपण के साथ अनुग्रहित होने और उन्हें प्रतिबिंबित करने के कारण, इस पुस्तक के सभी शिलालेख, बिंदु और कढ़ाई सर्व-शुद्ध और पवित्र एक की प्रशंसा, महिमा और महिमा के माध्यम से प्रशंसा और गुणगान करते हैं। इसके अलावा, इस पुस्तक का प्रत्येक स्तोत्र अपने रचयिता की प्रशंसा और महिमा करता है, जो सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है।

सत्य की झलक

सत्य के बीज से फूल

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया में एक सभा में

इस्लाम और आधुनिक सभ्यता के बीच तुलना,
और वैज्ञानिक प्रतिभा और इस्लाम के मार्गदर्शन के बीच

INA शुक्रवार की रात को दिन की शुरुआत में एक सच्चा सपना

प्रथम विश्व युद्ध के बाद युद्ध विराम की अवधि के दौरान, प्रतिनिधित्व और आदर्श रूपों की दुनिया की एक सर्वोच्च सभा ने मुझसे पूछा था:

"हार के बाद मुस्लिम दुनिया में क्या उभरेगा?"

मैंने वर्तमान युग के प्रतिनिधि के रूप में उत्तर दिया और उन्होंने मेरी बात सुनी:

अपनी स्थापना के समय से ही इस राज्य ने इस्लामी दुनिया के लिए खुद को बलिदान करने के लिए अपने कर्तव्य को निभाया और खिलाफत के ध्वजवाहक के रूप में कार्य किया।

और तदनुसार इसने जिहाद नामक सामूहिक धार्मिक दायित्व को अपनाया,
इस्लामी स्वतंत्रता को बनाए रखें और ईश्वर के वचन का महिमामंडन करें।

समय के साथ इस राज्य, इस मुस्लिम राष्ट्र पर जो विपत्ति आई है,
इससे निश्चित रूप से मुस्लिम जगत में समृद्धि और स्वतंत्रता आएगी।

इस वर्तमान आपदा की भरपाई भविष्य में की जाएगी। जो व्यक्ति तीन खोता है और बदले में तीन सौ पाता है, उसे कोई नुकसान नहीं होता। एक उत्साही मजदूर की तरह, वे बेहतर भविष्य के लिए अपना वर्तमान बदल देते हैं।

इस आपदा ने हमारे जीवन में जो उत्प्रेरक या उत्प्रेरक है, उस करुणा और इस्लामी एकजुटता और भाईचारे को असाधारण स्तर तक जगा दिया है; इसने हमारे भाईचारे को अद्भुत प्रोत्साहन दिया है।

वर्तमान सभ्यता का स्वरूप बदल जाएगा, इसकी भ्रष्ट व्यवस्था नष्ट हो जाएगी; तब इस्लामी सभ्यता का उदय होगा। निश्चय ही मुसलमान ही स्वेच्छा से उसमें प्रवेश करने वाले प्रथम लोग होंगे।

यदि आप शरिया की सभ्यता और वर्तमान सभ्यता के बीच तुलना करना चाहते हैं, तो प्रत्येक के सिद्धांतों की बारीकी से जांच करें और उनके महत्व पर विचार करें।

नतीजे:

वर्तमान सभ्यता के सिद्धांत नकारात्मक हैं। इसकी नींव और मूल्य पांच नकारात्मक सिद्धांत हैं। इसकी मशीनरी इन्हीं पर आधारित है।

इसका आधार और भरोसा अधिकार के बजाय शक्ति या बल है, और बल का मूल लक्षण आक्रामकता और शत्रुता है, जिससे विश्वासघात उत्पन्न होता है।

इसका लक्ष्य, सद्गुण के स्थान पर, स्वार्थ की तुष्टि है, जिसका अनिवार्य लक्षण संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता है, और जिसका परिणाम अपराध है।

इसके जीवन का नियम सहयोग और पारस्परिक सहायता के बजाय संघर्ष है; संघर्ष की आवश्यक विशेषता विवाद और पारस्परिक प्रतिकर्षण है; परिणाम गरीबी है।

लोगों के बीच इसका मूल बंधन नस्लवाद या नस्लीय भेदभाव है, जो दूसरों के नुकसान के लिए विकसित होता है; यह दूसरों के अधिकारों के हनन से पोषित और मजबूत होता है।

नकारात्मक राष्ट्रवाद या नस्लवाद निरंतर, भयानक झड़पों, विनाशकारी टकरावों का मार्ग प्रशस्त करता है; परिणाम विनाश होता है।

पांचवां यह है: वर्तमान सभ्यता की मोहक सेवा वासनाओं और भावनाओं को उत्तेजित करती है, जिससे पशुवत इच्छाओं की पूर्ति में सहायता मिलती है; परिणाम होता है भोग-विलास।

वासनाओं और भावनाओं की मूल विशेषता हमेशा यही होती है: वे मनुष्यों को पशु में बदल देती हैं, उनका चरित्र बदल देती हैं; वे उन्हें विकृत कर देती हैं, उनकी मानवता को विकृत कर देती हैं।

इनमें से अधिकांश सभ्य लोग - यदि आप उन्हें अंदर से बाहर कर दें - वे वानरों, लोमड़ियों, साँपों, भालुओं और सूअरों के रूप में दिखाई देंगे। उनके चरित्रों ने उनके रूप निर्धारित कर दिए हैं। वे कल्पना में अपने फर और खाल में दिखाई देते हैं!

इसके विपरीत, शरिया पृथ्वी का संतुलन है। शरिया में दया कुरान के स्वर्ग से आती है। कुरानिक सभ्यता के सिद्धांत सकारात्मक हैं। खुशी के लिए इसका तंत्र पाँच सकारात्मक सिद्धांतों पर निर्भर करता है:

इसका आधार और अवलंबन शक्ति के स्थान पर अधिकार है और अधिकार का अपरिवर्तनीय लक्षण न्याय और संतुलन है, जो दीनता और दुष्टता को दूर कर मोक्ष, सुरक्षा और कल्याण को जन्म देता है।

इसका उद्देश्य स्वार्थ के बजाय सद्गुण है और सद्गुण का मूल चरित्र प्रेम और परस्पर आकर्षण है। इनसे सुख उत्पन्न होता है और शत्रुता मिट जाती है।

इसके जीवन का सिद्धांत संघर्ष और हत्या के बजाय सहयोग है, और सहयोग की आवश्यक विशेषता एकता और एकजुटता है; ये समुदाय को जीवंत करते हैं।

वासना और जुनून के स्थान पर, इसकी सेवा का रूप मार्गदर्शन है और मार्गदर्शन की आवश्यक विशेषता मानवता के लिए उपयुक्त तरीके से प्रगति और समृद्धि है, साथ ही आत्मा द्वारा अपेक्षित तरीके से ज्ञान और पूर्णता भी है।

जबकि नस्लवाद और नकारात्मक राष्ट्रवाद जनता के बीच एकता के बिंदु को नष्ट करते हैं, शरिया लोगों के बीच धर्म, नागरिकता, पेशे और विश्वास के भाईचारे के बंधन स्थापित करता है।

इन बंधनों की बुनियादी विशेषताएँ ईमानदारी से भाईचारा, और सामान्य मुक्ति, सुरक्षा और कल्याण हैं। शरिया केवल बाहरी हमलों के मामले में आत्मरक्षा की मांग करता है।

अब आप समझ गए होंगे कि मुसलमान वर्तमान सभ्यता को अपनाए बिना उससे दूर क्यों रहे।

आज तक मुसलमानों ने इस सभ्यता में स्वेच्छा से प्रवेश नहीं किया है, यह उन्हें पसन्द नहीं आई है, बल्कि उन पर दासता की बेड़ियाँ डाल दी गई हैं।

जबकि इसे मानवजाति के लिए इलाज होना चाहिए था, यह सभ्यता जहर बन गई है। इसने अस्सी प्रतिशत आबादी को बदहाली और दुख में डाल दिया है और दस प्रतिशत को झूठी खुशी दी है।

शेष दस प्रतिशत लोग बेचैनी में रह गए हैं, दोनों के बीच फंसे हुए हैं। व्यापार से मिलने वाला मुनाफा अत्याचारी अल्पसंख्यकों के पास चला गया है। लेकिन सच्ची खुशी वह है जो सभी को मिले, या कम से कम बहुसंख्यकों के लिए मुक्ति।

कुरान, जो मानवता के लिए दया के रूप में अवतरित हुआ है, केवल उसी सभ्यता को स्वीकार करता है जो सभी को, या कम से कम बहुसंख्यकों को, सुख पहुंचाए। वर्तमान सभ्यता में वासनाएं अप्रतिबंधित हैं, आवेग और कल्पनाएं भी स्वतंत्र हैं; यह एक पशुवत स्वतंत्रता है।

लोगों पर भावनाएं हावी हो जाती हैं, आवेग और कल्पनाएं भी निरंकुश हो जाती हैं; उन्होंने अनावश्यक आवश्यकताओं को आवश्यक बना दिया है, तथा सहजता और राहत को खत्म कर दिया है।

जबकि आदिम जीवन में व्यक्ति को चार चीजों की आवश्यकता होती थी, सभ्यता
उन्हें सौ लोगों का मोहताज बना दिया है, और उन्हें दरिद्र बना दिया है।

वैध श्रम लागत को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है। इसने मानवता को धोखाधड़ी और गैरकानूनी कामों की ओर धकेल दिया है। इसी वजह से सभ्यता ने नैतिकता के सार को भ्रष्ट कर दिया है।

इसने समाज और मानव जाति को कुछ धन और चमक दी है, लेकिन इसने व्यक्ति को अनैतिक और दरिद्र बना दिया है। इसके कई प्रमाण हैं।

इस दुष्ट सभ्यता ने पूर्वकाल की सारी बर्बरता और अपराध, सारी क्रूरता और विश्वासघात एक साथ उगल दिया है, और इसका पेट अभी भी उबकाई खा रहा है।30

यह तथ्य कि इस्लामी दुनिया अलग-थलग रहने में सक्षम है, दोनों का अर्थ है-

यह सभ्यता अत्यंत महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है। यह सभ्यता स्वीकार करने में अनिच्छुक रही है, तथा इसने उदासीन रवैया अपनाया है।

सचमुच, प्रतिष्ठित शरीयत में ईश्वरीय प्रकाश का विशिष्ट गुण स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता है।

इसी गुण के कारण मार्गदर्शन के प्रकाश ने कभी भी मनुष्य को भटकने नहीं दिया।

रोम की प्रतिभा, (यूरोपीय) सभ्यता की भावना, उस पर हावी होने के लिए।

शरीयत के मार्गदर्शन को दर्शन के साथ नहीं जोड़ा जा सकता

न तो इस पर कलम लगाओ, न ही इसका अनुसरण करो।

करुणा और विश्वास की गरिमा आत्मा में पाई जाती है

इस्लाम, और शरीयत की सच्चाईयाँ जिन्हें उसने पोषित किया है - चमत्कारिक व्याख्या के कुरान ने शरीयत की सच्चाईयों को अपने चमकदार हाथों में ले लिया है;

शरिया के ये सारे सत्य मूसा के उस चमकते हाथ में एक छड़ी की तरह हैं। भविष्य में वह जादूगर सभ्यता उसके सामने आश्चर्य से झुक जाएगी।

अब, इस पर ध्यान दें: दो प्रतिभाशाली लोग थे - प्राचीन ग्रीस और रोम, एक ही वंश के जुड़वां बच्चे। एक कल्पनाशील था, दूसरा भौतिकवादी।

पानी और तेल की तरह, वे कभी एक साथ नहीं मिल सकते। ऐसी घटना के लिए समय की आवश्यकता थी, सभ्यता ने ऐसा करने का प्रयास किया और ईसाई धर्म ने भी कोशिश की, लेकिन कोई भी उन्हें एक साथ नहीं मिला सका।

---

30 यानी सभ्यता और भी भयानक उल्टी करेगी। इसने दो विश्व युद्धों के रूप में इस तरह उल्टी की है कि इसने हवा, जमीन और समुद्र को गंदा कर दिया है, उन्हें खून से रंग दिया है।

दोनों ने अपनी आंशिक स्वतंत्रता को बचाए रखा। वे एक ही शरीर में दो आत्माएँ बनकर रह गए हैं; अब उन्होंने अपना शरीर बदल लिया है; एक जर्मन बन गया है, दूसरा फ्रांसीसी।

उन्हें एक प्रकार का पुनर्जन्म अनुभव हुआ है। हे मेरे स्वप्न-भाई!
समय ने यही दिखाया है। उन जुड़वां प्रतिभाओं ने उन्हें एक साथ लाने के किसी भी कदम को अस्वीकार कर दिया है;

वे अभी भी मेल-मिलाप नहीं कर पाए हैं। चूँकि वे जुड़वाँ हैं, वे भाई और दोस्त हैं, प्रगति में साथी हैं; लेकिन वे लड़े हैं और कभी एक-दूसरे के साथ नहीं बने हैं
शांति।

तो फिर यह कैसे हो सकता है कि कुरान की रोशनी और शरीयत का मार्गदर्शन, जबकि उसका स्रोत, उत्पत्ति और प्रकट होने का स्थान बिल्कुल अलग है, रोम की प्रतिभा, आधुनिक सभ्यता की भावना के साथ सामंजस्य स्थापित कर ले और उसके साथ जुड़ जाए?

वह प्रतिभा और यह मार्गदर्शन - उनकी उत्पत्ति अलग-अलग है: मार्गदर्शन स्वर्ग से उतरता है, प्रतिभा धरती से उभरती है। मार्गदर्शन दिल में काम करता है और प्रतिभा दिमाग में काम करती है।

प्रतिभा मन में काम करती है और दिल को भ्रमित करती है।
आत्मा को जन्म देती है, उसके बीजों को अंकुरित करती है और फलती-फूलती है; अंधकारमय मानव स्वभाव इससे प्रकाशित होता है।

पूर्णता के लिए मार्गदर्शन की क्षमता अचानक बढ़ जाती है; यह शारीरिक आत्मा को एक विनम्र सेवक बना देती है; यह उत्साही और प्रयासशील मनुष्यों को एक दिव्य चेहरा प्रदान करती है।

जहाँ तक प्रतिभा का प्रश्न है, यह अपना ध्यान मुख्यतः शारीरिक आत्मा और भौतिक अस्तित्व पर केन्द्रित करती है; यह प्रकृति में आती है, आत्मा को कृषि योग्य क्षेत्र बनाती है और शारीरिक क्षमताएँ विकसित और फलती-फूलती हैं;

यह आत्मा को वश में कर लेता है, जिससे बीज सूख जाते हैं; यह मानवजाति में शैतानी विशेषताएं प्रदर्शित करता है। लेकिन मार्गदर्शन दोनों जीवन को खुशी देता है - इस और अगले - और इस दुनिया और अगले दोनों में प्रकाश फैलाता है, मानवजाति को ऊपर उठाता है।

प्रतिभावान व्यक्ति, एक आँख से अंधे मसीह विरोधी की तरह, केवल इसी जीवन और इसी को देखता है।
यह भौतिकवादी और संसार-प्रेमी है। यह मनुष्य को पशु बना देता है।

प्रतिभा बहरी प्रकृति की पूजा करती है और अंधी शक्ति की सेवा करती है। लेकिन मार्गदर्शन सचेत कला (प्रकृति के रूप में प्रकट) को पहचानता है और बुद्धिमान शक्ति (जो प्रकृति को अस्तित्व प्रदान करती है) की ओर मुड़ता है। प्रतिभा पृथ्वी पर कृतघ्नता का पर्दा खींचती है जबकि मार्गदर्शन धन्यवाद का प्रकाश बिखेरता है।

इसी कारण से प्रतिभा बहरी और अंधी होती है, जबकि मार्गदर्शन सुनना और देखना होता है। प्रतिभा के दृष्टिकोण से, पृथ्वी की देन स्वामित्वहीन लूट है;

यह उन्हें हड़पने और चुराने की इच्छा को बढ़ावा देता है, बिना किसी आभार के, क्रूरतापूर्वक उन्हें प्रकृति से दूर कर दें।

मार्गदर्शन की दृष्टि से धरती के सीने और ब्रह्माण्ड के चेहरे पर फैली हुई नेमतें दया के फल हैं; वह प्रत्येक नेमत के नीचे एक कृपालु हाथ को देखती है, और कृतज्ञतापूर्वक उसे चूम लेती है।

मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि सभ्यता में अनेक सद्गुण हैं, लेकिन वे ये न तो ईसाई धर्म की संपत्ति हैं, न ही यूरोप की खोज।

न ही वे इस शताब्दी की उपज हैं; वे मानवता की सामान्य संपत्ति हैं, जो समय के साथ विचारों और अध्ययनों के संयोजन के परिणामस्वरूप, प्रकट धर्मों के नियमों से उत्पन्न हुई हैं, और जन्मजात आवश्यकता से उभरती हैं,

और विशेष रूप से इस्लामी क्रांति से मुहम्मद की शरिया। कोई भी इन पर स्वामित्व का दावा नहीं कर सकता।

प्रतिनिधित्व जगत से सभा के नेता ने एक और प्रश्न पूछा:

प्रश्न: "विपत्तियाँ हमेशा विश्वासघात का परिणाम होती हैं, लेकिन पुरस्कार का मार्ग प्रशस्त करती हैं। हे वर्तमान शताब्दी के मनुष्य! ईश्वरीय नियति ने आघात पहुँचाया है और ईश्वरीय आदेश ने सजा सुनाई है।

"तुमने ऐसा क्या किया कि ईश्वरीय आदेश और नियति दोनों ने तुम्हारा ऐसा न्याय किया - कि ईश्वरीय आदेश ने तुम्हें इस विपत्ति की सजा सुनाई और तुम्हें पीटा?

“यह सदैव बहुमत की गलती होती है जो सामान्य आपदाओं का कारण बनती है।”

मैंने जवाब में कहा:

उत्तर: मानव जाति की गलत सोच, निम्रोद जैसी हठधर्मिता, फिरौन जैसी अहंकारिता धरती पर बढ़ती गई और तब तक बढ़ती गई जब तक कि वे स्वर्ग तक नहीं पहुंच गए। मानवता ने सृष्टि के संवेदनशील रहस्य का भी अपमान किया।

इसने पिछले युद्ध की थरथराहटों को प्लेग और जल प्रलय की तरह आकाश से बरसने दिया; इसने काफिरों पर एक स्वर्गीय प्रहार किया।

इसका मतलब यह है कि यह आपदा पूरी मानव जाति की आपदा थी। इसका सामान्य कारण, जिसमें पूरी मानव जाति शामिल थी, भौतिकवाद से उत्पन्न गलत सोच थी - पाशविक स्वतंत्रता, शारीरिक इच्छाओं और कल्पनाओं की निरंकुशता।

इसमें हमारा हिस्सा इस्लाम के स्तंभों की उपेक्षा और उनके परित्याग का परिणाम है। क्योंकि सृष्टिकर्ता सर्वशक्तिमान को चौबीस में से एक घंटा चाहिए था।

उसने हमें आदेश दिया, इच्छा व्यक्त की कि हम अपने भले के लिए पाँचों दैनिक प्रार्थनाओं के लिए एक घंटा निर्धारित करें। लेकिन आलस्य के कारण हमने उन्हें छोड़ दिया, लापरवाही में उनकी उपेक्षा की।

अत: हमें निम्नलिखित दण्ड मिला: उसने हमें इन पिछले पांच वर्षों के दौरान एक प्रकार की प्रार्थना करने के लिए बाध्य किया, जिसमें हमें लगातार चौबीस घंटे अभ्यास और कठिनाई के माध्यम से आगे बढ़ना और प्रयास करना पड़ता था।

उन्होंने हमसे साल में एक महीने उपवास करने की भी मांग की, लेकिन हमें दया आ गई।
हमारी शारीरिक आत्माएं, इसलिए प्रायश्चित के लिए उसने हमें पांच साल तक उपवास करने के लिए मजबूर किया।

वह चाहता था कि जो संपत्ति उसने हमें दी है, उसका हम चालीसवाँ या दसवाँ हिस्सा ज़कात के रूप में अदा करें। किन्तु हमने कंजूसी के कारण अन्याय किया, हमने अपनी संपत्ति में हराम को भी मिला दिया और स्वेच्छा से ज़कात नहीं दी।

फिर उसने हमारी जमा की हुई ज़कात हमसे ले ली और जो कुछ हमारे माल में हराम था उससे हमें बचा लिया। और जो काम करता है, उसी के अनुसार सज़ा मिलती है। और जो काम करता है, उसकी सज़ा भी वैसी ही होती है।31

अच्छे, नेक काम दो तरह के होते हैं: एक सकारात्मक और स्वैच्छिक, दूसरा नकारात्मक और मजबूरी में किया गया। सभी दुख और विपत्तियाँ अच्छे कर्म हैं, लेकिन वे नकारात्मक और मजबूरी में किए गए हैं। हदीस जो हमें इस बारे में बताती है32 सांत्वना देती है।

---

31 मैंने स्वप्न में हज का उल्लेख नहीं किया , क्योंकि हज और उसकी बुद्धिमत्ता की उपेक्षा करने से विपत्ति नहीं, बल्कि ईश्वरीय प्रकोप हुआ, और उसका दण्ड हमारे पापों का प्रायश्चित नहीं, बल्कि हमारे पापों में वृद्धि थी। यह उस उच्च इस्लामी नीति की उपेक्षा थी, जो हज में विद्यमान है और जो परस्पर परिचय के द्वारा विचारों में एकता और परस्पर सहायता के द्वारा सहयोग लाती है, और यह हज में निहित उन विशाल सामाजिक लाभों की उपेक्षा थी, जिन्होंने शत्रु के लिए इस्लाम के विरुद्ध लाखों मुसलमानों को नियोजित करने के लिए भूमि तैयार की है। वे भारतीय मुसलमान थे! यह समझकर कि वह उनका शत्रु है, उन्होंने अपने पिता (ओटोमन राज्य) को मार डाला, और अब वे उसकी लाश के पास रो रहे हैं। वहाँ तातार और कोकेशियाई लोग हैं! वे समझ गए कि जिसकी हत्या में उन्होंने शत्रु के साथ सहयोग किया है, वह उनकी बेचारी माँ है, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी! वे उसके चरणों में रो रहे हैं। ये अरब हैं! उन्होंने गलती से अपने वीर भाई को मार डाला और अब वे अपनी घबराहट में रोना भी नहीं जानते। ये अफ्रीकी हैं! उन्होंने अनजाने में अपने भाई को मार डाला और अब वे विलाप कर रहे हैं। यह मुस्लिम दुनिया है; इसने अपने ध्वजवाहक बेटे को मारने में दुश्मन की मदद की और अब यह अपने बाल नोच रहा है, कराह रहा है और विलाप कर रहा है। हज के लिए जल्दी से जल्दी जाने के बजाय, जो कि शुद्ध अच्छाई है, लाखों मुसलमानों को दुश्मन के झंडे के नीचे लंबी यात्राएं करनी पड़ीं, जो शुद्ध बुराई है। इस पर विचार करें और सावधान रहें!

32 मानव जाति का अभिमान कहता है: "एक विश्वासी जिस भी परिस्थिति में हो, वह उसके लिए अच्छा है। यह विश्वासियों के अलावा किसी और के लिए ऐसा नहीं है। क्योंकि अगर उसके साथ कुछ खुशी होती है, तो वह धन्यवाद देता है

इस पापी राष्ट्र ने रक्त से स्नान किया है; इसने कर्मों से पश्चाताप किया है। तत्काल पुरस्कार के रूप में, इस राष्ट्र के पाँचवें हिस्से यानी चार मिलियन लोगों को शहादत या ईश्वर के लिए युद्ध करने के माध्यम से संत की उपाधि दी गई; इससे उनका पाप मिट गया।

प्रतिनिधित्व की दुनिया से उन्नत विधानसभा की सराहना की
इन शब्दों।

मैं अचानक जाग गया; बल्कि यह सोने से पहले सच्ची जागृति की एक मुलाकात थी। मेरे विचार में, जागना एक सपना है और सपना एक तरह की जागृति है।

वहाँ मैं इस युग का प्रतिनिधि था, और यहाँ मैं हूँ सईद नूरसी!

सभी सच्ची पीड़ाएं गुमराही में हैं, और सभी सच्ची खुशी विश्वास में है: कल्पना में लिपटा एक महान सत्य

हे समझदार सहयात्री! हे प्रिय मित्र! यदि तुम सीधे मार्ग के प्रकाशमान मार्ग और ईश्वर के प्रकोप को झेलने वालों तथा पथभ्रष्ट लोगों के अंधकारमय मार्ग के बीच स्पष्ट अंतर देखना चाहते हो,

आओ, अपनी कल्पना को उड़ान दो, साथ मिलकर हम अस्तित्वहीनता के अंधेरे में जाएंगे। हम उस विशाल कब्र, उस शहर का दौरा करेंगे जो मृतकों से भरा है।

एक शाश्वत सर्वशक्तिमान ने अपनी शक्ति के हाथ से हमें अस्तित्वहीनता के अंधकार से बाहर निकाला, हमें अस्तित्व पर चढ़ाया, और हमें इस संसार में, इस सुख रहित नगर में भेज दिया।

अब हम अस्तित्व की दुनिया में आ गए हैं, इस भयावह रेगिस्तान में।
आँखें खुल गई हैं और हमने छह दिशाओं में देखा है।

सबसे पहले, हम दया और सहायता की आशा करते हुए अपने सामने देखते हैं, लेकिन क्लेश और दर्द हम पर दुश्मनों की तरह हमला करता है। हम इससे डर जाते हैं और पीछे हट जाते हैं।

हम मदद की तलाश में प्राकृतिक तत्वों की ओर बायीं और दायीं ओर देखते हैं। लेकिन हम देखते हैं कि उनके दिल कठोर और निर्दयी हैं। वे अपने दांत पीसते हैं, हमें गुस्से और धमकी भरे अंदाज में देखते हैं। वे न तो हमारी विनती सुनते हैं और न ही शिकायत।

असहाय प्राणियों की तरह, हम निराश होकर अपनी निगाहें ऊपर की ओर उठाते हैं।
सहायता के लिए हम आकाशीय पिंडों की ओर देखते हैं, लेकिन वे हमें ख़तरनाक लगते हैं।

मानो हर कोई एक बम हो; अपने-अपने आवरणों से निकलकर वे अंतरिक्ष में तेज़ी से भाग रहे हों। लेकिन किसी तरह वे एक-दूसरे को छूते नहीं हैं।

अल्लाह की स्तुति करो, और यह उसके लिए अच्छा है। अगर कोई नुकसान उसे छूता है, तो वह धैर्य रखता है, और यह भी उसके लिए अच्छा है। (मुस्लिम, "ज़ुहद" 64; अद-दारिमी, "रिक़क" 61.) (ट्र.)

यदि कोई गलती से भी इसका मार्ग बदल दे, तो यह दृश्यमान, भौतिक जगत टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा; भगवान न करे! वे संयोग पर निर्भर होकर चलते हैं; उनसे कोई अच्छाई नहीं हो सकती।

निराशा में हम उस दिशा से अपनी दृष्टि वापस मोड़ लेते हैं, पीड़ादायक घबराहट से अभिभूत हो जाते हैं। हम अपना सिर झुका लेते हैं, अपनी छाती पर झुक जाते हैं; हम अपने आप को देखते हैं, अपने आप पर विचार करते हैं और स्वयं का अध्ययन करते हैं।

अब हम अपने दुखी मन से असंख्य ज़रूरतों की चीखें सुनते हैं। हज़ारों इच्छाओं की चीखें निकलती हैं। सांत्वना की उम्मीद करते हुए, हम डर जाते हैं।

उससे भी कोई फायदा नहीं होता। शरण लेने के लिए हम अपनी अंतरात्मा या चेतन प्रकृति से सलाह लेते हैं; हम साधन और मदद की तलाश में उसमें झाँकते हैं। अफ़सोस, हम फिर से बिना किसी मदद के रह जाते हैं; हमें अपनी चेतन प्रकृति की मदद करनी पड़ती है।

क्योंकि इसमें हज़ारों आकांक्षाएँ, उबलती हुई इच्छाएँ, उग्र भावनाएँ हैं, जो पूरे ब्रह्मांड में फैली हुई हैं। हम उन सभी से काँपते हैं, और मदद नहीं कर सकते।

अस्तित्व और अनस्तित्व के बीच बिना किसी सहायता के छोड़ दिए जाने पर, ये आकांक्षाएँ एक तरफ अतीत में अनंत काल तक और दूसरी तरफ भविष्य में अनंत काल तक फैल जाती हैं। वे इतनी व्यापक हैं। अगर चेतन प्रकृति दुनिया को निगल भी जाए, तो भी वह संतुष्ट नहीं होगी।

इस कष्टदायक मार्ग पर हमने जो भी रास्ता अपनाया है, उसमें हमें विपत्तियाँ ही मिली हैं। उन लोगों के मार्ग के कारण जिन्होंने ईश्वर के क्रोध को झेला है
और जो लोग भटके हुए हैं वे ऐसे ही हैं। यह संयोग और गुमराही ही है जो हमें इन रास्तों पर ले जाती है।

यह हम ही हैं जिन्होंने संयोग और गलत दिशा में जाने दिया है, और इसलिए हम अपनी वर्तमान स्थिति में आ गए हैं। हम ऐसी स्थिति में हैं कि हम अस्तित्व की शुरुआत और दुनिया के अंत के साथ-साथ निर्माता और मृतकों के पुनरुत्थान को भी भूल गए हैं।

हम ऐसी स्थिति में हैं जो नरक से भी बदतर है; यह अधिक भयंकर रूप से झुलसाती है और हमारी आत्माओं को कुचल देती है। हमने इन छह दिशाओं का सहारा लिया, लेकिन परिणाम यह हुआ।

यह एक निर्दयी अवस्था है, जिसमें भय और आतंक, नपुंसकता और कांपना, चिंता और अलगाव, अनाथ होना और निराशा शामिल है।

अब हम दोनों दिशाओं के विपरीत मोर्चे पर मोर्चा संभालेंगे (जहाँ से हमने दया और मदद माँगी थी, लेकिन निर्दयी स्थिति में आ गए) और उन्हें पीछे धकेलने की कोशिश करेंगे। सबसे पहले, हमारे पास अपनी ताकत का सहारा है, लेकिन अफसोस! हम शक्तिहीन हैं, कमजोर हैं।

दूसरा, हम अपनी आत्मा की ओर मुड़ते हैं, यह आशा करते हुए कि उनकी आवश्यकताएं शांत हो जाएंगी। लेकिन अफ़सोस! हम देखते हैं कि वे लगातार चिल्ला रहे हैं।

तीसरा, हम मदद के लिए पुकारते हैं, किसी उद्धारकर्ता की तलाश करते हैं; लेकिन सुनने और जवाब देने वाला कोई नहीं होता। हमें लगता है कि सब कुछ शत्रुतापूर्ण है, सब कुछ अजीब है। कुछ भी हमारे दिल को सुकून नहीं देता; कुछ भी सुरक्षा या सच्ची खुशी का एहसास नहीं देता।

चौथा, जितना अधिक हम आकाशीय पिंडों को देखते हैं, उतना ही अधिक वे हमें भय और विस्मय से भर देते हैं। एक भयावह अकेलेपन की भावना, जो विवेक को परेशान करती है, प्रकट होती है; यह मन को पीड़ा देती है और हमें भ्रम से भर देती है।

भाई! यही तो गुमराही का रास्ता है! इसी पर चलकर हमने अविश्वास का सारा अंधकार भोगा है। आओ, अब मेरे भाई, हम फिर से नास्तिकता की ओर मुड़ें।
अस्तित्व।

हम फिर आएंगे। इस बार हमारा रास्ता सीधा रास्ता और ईमान का रास्ता है। हमारे मार्गदर्शक और नेता ईश्वरीय कृपा और कुरान हैं, जो सदियों से उड़ते हुए बाज़ हैं।

एक समय, शाश्वत प्रभु की दया और कृपा ने हमारे अस्तित्व की इच्छा की, उनकी शक्ति ने हमें जन्म दिया, कृपापूर्वक हमें उनकी इच्छा के नियम पर स्थापित किया, तथा हमें चरण दर चरण पूरा किया।

फिर उसने दया करके हमें जीवन का वस्त्र पहनाया और हमें सर्वोच्च विश्वास का पद प्रदान किया, जिसकी सजावट प्रार्थना और अनिवार्य प्रार्थनाएँ हैं।

ये सभी पड़ाव हमारी लम्बी यात्रा में वरदानों के महल हैं। हमारी यात्रा को आसान बनाने के लिए, ईश्वरीय नियति ने हमारे माथे के चर्मपत्र पर एक आदेश अंकित किया है;

हम जहाँ भी जाते हैं, जिस भी समूह के साथ हम मेहमान होते हैं, हमारा स्वागत सच्चे भाईचारे के साथ किया जाता है। हम अपनी चीज़ों में से देते हैं और उनकी चीज़ों से लेते हैं: एक सुखद व्यापार।

वे हमारा पोषण करते हैं, हमें उपहारों से सजाते हैं, फिर हमें विदा करते हैं।
आख़िरकार हम दुनिया के दरवाज़े पर आ गए हैं। हमें एक शोर सुनाई देता है।

देखो, हम धरती पर आ गए हैं। हमने दृश्यमान दुनिया में कदम रख दिया है। यहाँ एक सैर-सपाटा और उत्सव है, जो दयालु ईश्वर ने मानव जाति के शोरगुल भरे निवास के लिए आयोजित किया है।

---

33 सर्वोच्च विश्वास मानव अहंकार या मानव होना या मानव स्वभाव है जो पूरे ब्रह्मांड में प्रकट होने वाले ईश्वर के नामों की अभिव्यक्तियों का केंद्र है। (ट्र.)

हम कुछ भी नहीं जानते, हमारा मार्गदर्शक और नेता दयालु की इच्छा है। हमारी कोमल आँखें इस मार्गदर्शक की प्रतिनिधि हैं। हम अपनी आँखें खोलते हैं और चारों ओर देखते हैं। क्या हमें वह पुराना समय याद है जहाँ से हम आए थे?

हम अजनबी थे, अनाथ थे, हमारे कई दुश्मन थे। हमें नहीं पता था कि हमारा रक्षक कौन है। अब, विश्वास की रोशनी के साथ, जो एक मजबूत स्तंभ है, हम अपने अंदर उन दुश्मनों के खिलाफ़ एक सहारा और मदद का बिंदु पाते हैं।

हमारा रक्षक, ईश्वर में विश्वास, हमारे शत्रुओं को दूर भगाता है। यह हमारी आत्माओं का प्रकाश है, हमारे जीवन का प्रकाश है, और हमारी आत्माओं की आत्मा है। अब हमारे दिल शांत हैं और हम शत्रुओं की उपेक्षा करते हैं, उन्हें पहचानते भी नहीं।

जब हमने अपनी पिछली यात्रा में अपनी चेतन प्रकृति से परामर्श किया, तो हमने
असंख्य चीखें, विलाप और शिकायतें सुनीं।

और इसलिए हम विपत्तियों से घिर गए। अब, हमारी आकांक्षाएँ और इच्छाएँ, हमारी क्षमताएँ और इंद्रियाँ, निरंतर अनंत काल की कामना करती हैं। लेकिन हम नहीं जानते थे कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए। हम इस बात से अनभिज्ञ थे कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए और हमारी चेतन प्रकृति विलाप करती और रोती रही।

तथापि, ईश्वर की स्तुति और आभार हो, कि इस बार हमें सहायता का एक बिन्दु मिल गया है; यह हमारी क्षमता और आकांक्षाओं को निरंतर जीवन प्रदान करता है, तथा उन्हें अनंत काल तक उड़ान भरने में सक्षम बनाता है।

यह उन्हें रास्ता दिखाता है, और उस उत्साहवर्धक, रहस्यमय बिंदु से—
परमेश्वर पर विश्वास - हमारी क्षमता सहायता प्राप्त करती है, जीवन का जल पीती है, और अपनी पूर्णता की ओर दौड़ती है।

ईमान का दूसरा ध्रुव पुनरुत्थान, मृतकों के पुनरुत्थान और शाश्वत सुख की पुष्टि है। ईमान इस सीप का मोती है और कुरान इसका प्रमाण है। मानव विवेक इसका संकेत देने वाला एक रहस्य है।

अब अपना सिर उठाओ और ब्रह्मांड को देखो। उससे बात करो। हमारे पिछले रास्ते पर यह कितना अद्भुत दिखाई देता था। अब यह हर तरफ मुस्कुरा रहा है, शान से पलकें झपका रहा है और बोल रहा है।

क्या तुम नहीं देखते - हमारी आँखें मधुमक्खियों की तरह हो गई हैं? वे ब्रह्मांड के बगीचे में हर जगह, फूलों की भीड़ के चारों ओर उड़ती हैं; प्रत्येक फूल इन मधुमक्खियों को स्वादिष्ट रस प्रदान करता है।

प्रत्येक फूल मित्रता, सांत्वना और प्रेम भी प्रदान करता है। हमारी आँखें उन्हें इकट्ठा करती हैं और गवाही के पराग को वापस लाती हैं। वे सबसे स्वादिष्ट शहद को प्रवाहित करते हैं।

जैसे ही हमारी नज़र आकाशीय पिंडों - सितारों या सूर्यों - की गतिविधियों पर पड़ती है, वे सृष्टिकर्ता की बुद्धि को उसके हाथों में सौंप देते हैं। महत्वपूर्ण सबक सीखते हुए और उसकी दया के प्रकटीकरण से, यह उड़ान भरता है।

ऐसा लगता है जैसे सूरज हमसे बात कर रहा है, कह रहा है: "मेरे भाइयों और बहनों! अकेले या डरे हुए महसूस मत करो। आपका स्वागत है, आप कितने अच्छे आए! यह निवास स्थान आपका है; मैं तो बस एक मोमबत्ती-धारक हूँ।

"मैं भी आपकी तरह ही हूँ, एक शुद्ध, पूर्ण आज्ञाकारी सेवक के अलावा कुछ नहीं। अपनी असीम दया से, अद्वितीय और शाश्वत रूप से चाहने वाले ने मुझे आपके लिए प्रकाश का सेवक बनाया है। प्रकाश और ऊष्मा मुझसे हैं, प्रार्थना और प्रार्थना आपसे है!"

अब चाँद को देखो! और तारे और समुद्र; हर कोई अपनी-अपनी भाषा में कहता है: "स्वागत है! आपका आना अच्छा हुआ! क्या आप हमें नहीं पहचानते?"

सहयोग के रहस्य को देखो, व्यवस्था के संकेतों पर कान लगाओ। हर कोई कहता है: "हम सभी सेवक हैं, सर्वशक्तिमान की दया के दर्पण हैं; चिंता मत करो, हमसे थको या डरो मत!

“गर्जन की गर्जना और घटनाओं की चीखें तुम्हारे अंदर भय या संदेह पैदा न करें, क्योंकि उनके भीतर दिव्य गायन, महिमा, प्रार्थना और विनती गूंजती हैं।

"अल्लाह तआला जिसने तुम्हें हमारे पास भेजा है, उनकी लगाम अपने हाथों में रखता है। ईमान की नज़र उनके चेहरों पर रहमत की निशानियाँ दिखाती है; हर कोई इसका एहसानमंद है।"

ऐ जागे हुए दिल वाले ईमान वालों! अपनी आँखों को थोड़ा आराम दो; अब उनकी जगह हम अपने संवेदनशील कानों को ईमान के मुबारक हाथों में सौंप देंगे। उन्हें दुनिया में भेज देंगे ताकि वे उसकी मनमोहक धुन सुनें।

जिन आवाजों और ध्वनियों को हम अपने पिछले मार्ग पर मृत्यु का सार्वभौमिक शोक और विलाप समझते थे, वे वास्तव में प्रार्थनाएं और प्रार्थनाएं, महिमा की पुकारें हैं।

हवा की बड़बड़ाहट, पक्षियों का चहचहाना, वर्षा की बूंदों की गड़गड़ाहट, समुद्र की बौछारें, बादलों की गड़गड़ाहट, पत्थरों की चरमराहट; ये सभी प्रार्थना और महिमा की सार्थक ध्वनियाँ हैं।

हवा की मधुर ध्वनियाँ, बादलों की गड़गड़ाहट, लहरों की ध्वनियाँ, ये सब ईश्वरीय महिमा के ही गान हैं। वर्षा का गान, पक्षियों का चहचहाना, ये सब दया के ही गुणगान हैं - उनकी भाषाओं में सत्य के संकेत हैं।

वस्तुओं की ध्वनियाँ अस्तित्व की ध्वनियाँ हैं: वे कहते हैं, "मैं भी अस्तित्व में हूँ।"
मौन-सा प्रतीत होने वाला ब्रह्मांड निर्बाध रूप से बोलता है: "हे बकवादी साथी, हमें मृत मत समझो!"

पक्षियों को या तो उदारता की खुशी होती है या दया का अवतरण, जो उन्हें गाने पर मजबूर करता है। अपनी अलग-अलग आवाज़ों, अपने गीतों से वे दया की सराहना करते हैं, उदारता पर उतरते हैं और धन्यवाद देते हुए उड़ जाते हैं।

वे स्पष्ट रूप से कहते हैं: “हे ब्रह्माण्ड के प्राणियों, हे भाइयों और बहनों!
हम कितने बढ़िया हालात में रहते हैं; हमें कोमलता से पाला जाता है, हम अपने भाग्य से खुश हैं!” अपनी चोंचें आकाश की ओर उठाकर वे हवा में अपने हर्षित गीत भेजते हैं।

ब्रह्मांड अपनी संपूर्णता में एक भव्य ऑर्केस्ट्रा है; इसके पाठ विश्वास के प्रकाश के माध्यम से सुने जाते हैं। क्योंकि बुद्धि संयोग के अस्तित्व को अस्वीकार करती है और अस्तित्व में व्यवस्था किसी भी निर्माण या घटना को यादृच्छिक संयोग के लिए जिम्मेदार ठहराए जाने से रोकती है।

साथी यात्री! अब हम चित्रण की इस दुनिया को छोड़ रहे हैं, छवियों के दायरे से नीचे उतर रहे हैं। हम तर्क के क्षेत्र में रुकेंगे, अपनी आँखों के सामने हमने जो यात्रा की है उसका अनुसरण करेंगे और उनकी तुलना करेंगे।

हमारा पहला, दर्दनाक मार्ग उन लोगों का है जिन पर ईश्वर का क्रोध आया है, और जो भटक गए हैं। यह विवेक पर, उसके सबसे अंदरूनी हिस्से पर, पीड़ा और भयंकर दर्द डालता है। चेतना यह दिखाती है; हमने अपने विवेक के विपरीत उस रास्ते पर यात्रा की।

हमें इससे बचना होगा, हमें ऐसा करने की आवश्यकता है - या तो दर्द को कम किया जाना चाहिए, या मानवीय भावनाओं को सुन्न किया जाना चाहिए - अन्यथा हम इसे सहन नहीं कर सकते, क्योंकि मदद के लिए हमारी पुकार पर ध्यान नहीं दिया जाता।

मार्गदर्शन उपचार है, लेकिन शारीरिक प्रवृत्तियाँ और कल्पनाएँ भावनाओं को अवरुद्ध करती हैं। शारीरिक प्रवृत्तियों और कल्पनाओं के प्रति समर्पण के लिए सांत्वना की आवश्यकता होती है, और सांत्वना के लिए विस्मृति, व्याकुलता, व्यस्तता और मनोरंजन की आवश्यकता होती है

ताकि धोखे के वे तत्व अंतरात्मा को मूर्ख बना सकें और आत्मा को सुला सकें, जिससे उसे कोई दर्द महसूस न हो। अन्यथा, वह भयंकर पीड़ा अंतरात्मा को झुलसा देती है, विलाप असहनीय होता है और निराशा की पीड़ा सहन नहीं की जा सकती।

इसका मतलब यह है कि जितना ही कोई सीधे रास्ते से भटकता है, उतना ही वह इस स्थिति से पीड़ित होता है, और उसकी अंतरात्मा चिल्लाती है। हर सुख के भीतर एक दुख है, जो इस स्थिति का एक निशान है।

इसका अर्थ यह है कि सभ्यता की चमक-दमक, जो कल्पना, वासना, मनोरंजन और अपव्यय का मिश्रण है, वह पथभ्रष्टता से उत्पन्न भयंकर संकट का भ्रामक इलाज है; चमक-दमक एक विषैली नशीली दवा है।

मेरे प्यारे दोस्त! दूसरे रास्ते पर, उस रोशनी से भरी सड़क पर, हमने महसूस किया मन की एक ऐसी अवस्था जिसमें जीवन आनंद और साधारण खुशी का स्रोत बन जाता है।

हमने समझा कि दूसरा तरीका आत्मा को एक ऐसी अवस्था से भर देता है जिसकी आस्था की ताकत के अनुसार अलग-अलग डिग्री होती है। शरीर को आत्मा के माध्यम से आनंद मिलता है और आत्मा को चेतना के माध्यम से आनंद मिलता है।

अंतःकरण में तत्काल आनंद की अनुभूति होती है; हृदय में आध्यात्मिक स्वर्ग विद्यमान होता है। चिंतनशील विचार उस आनंद को और बढ़ाने के लिए उसे खोलते हैं, जबकि चेतना रहस्यों का अनावरण करती है।

जितना अधिक हृदय जागृत होता है, जितना अधिक विवेक उत्तेजित होता है और आत्मा उत्तेजित होती है, उतना ही अधिक आनंद मिलता है; अग्नि प्रकाश में और शीत ऋतु ग्रीष्म ऋतु में परिवर्तित हो जाती है।

अंतरात्मा में स्वर्ग के द्वार खुल जाते हैं और दुनिया स्वर्ग बन जाती है। इसके भीतर हमारी आत्माएं उड़ान भरती हैं, बाजों और पतंगों की तरह ऊंची उड़ान भरती हैं, विनती करती हैं, प्रार्थना करती हैं।

प्रिय साथी यात्री! अभी के लिए विदा। आइये हम सब मिलकर प्रार्थना करें और फिर हम फिर से मिलने के लिए अलग हो जायेंगे!

हे ईश्वर! हमें सीधे मार्ग पर ले चलो। आमीन।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हे परम दयालु, हे परम दयावान, हे परम स्वतंत्र, एकेश्वर, हे सर्वजीवित, हे स्वयंभू, हे सर्वज्ञ, हे सर्वन्यायी, हे सर्वपवित्र और सर्वशुद्ध!

आपके महानतम नाम की खातिर, और चमत्कारी व्याख्या वाले कुरान की महान योग्यता और पवित्रता के लिए, और सबसे शानदार पैगंबर के सम्मान के लिए - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उन लोगों पर अनुग्रह करें जिन्होंने इस पुस्तक को प्रकाशन के लिए तैयार किया और इसे प्रकाशित किया, और रिसाले-ए- नूर के सभी छात्रों - विश्वास और कुरान के छात्रों - को जन्नतुल-फिरदौस में शाश्वत खुशी के साथ -

और उन्हें ईमान और क़ुरआन की सेवा में सफलता प्रदान कर। और उनके अच्छे कर्मों में इस किताब के प्रत्येक अक्षर के लिए एक हज़ार पुण्य जोड़ दे ।

आमीन! और उन्हें धैर्य, दृढ़ता और पूरी ईमानदारी के साथ प्रकाश के ग्रंथों को प्रकाशित करने में सहायता प्रदान करें । आमीन! हे दयालुओं में सबसे दयालु! रिसाले-ए-नूर के सभी छात्रों को दोनों दुनिया में खुश रखें। आमीन!

और उन्हें इंसानों के शैतानों और जिन्नों की बुराइयों से बचाओ। आमीन!
और इस गरीब, असहाय सैद के अपराधों को क्षमा कर। आमीन!

प्रकाश के सभी छात्रों के नाम पर ,
नर्सी ने कहा

अनुक्रमणिका

ए

'अब्दुल-कादिर अल-जिलानी, 131

खुशी का निवास, 118

इब्राहीम (पैगंबर), 2, 53-54, 88

अबुल-अला अल-मारी, 109

एडम (पैगंबर), 101, 105, 170

दुःख, 123

अफ़्रीकी, 187

अल-हम्दु लिल्लाह, 2, 179

'अली इब्न अबी तालिब, 131

अल-मथनावी अन-नूरी, xv

स्वर्गदूत; नरक के, 158

पशु जगत, xi, 13

मसीह विरोधी, 185

अरब, 187

अरस्तू, 107, 111

मूसा के कार्य, xiv

इलाहा इल्लल्लाह से शर्मिंदा, 8

सहायता; पारस्परिक, 187; पारस्परिक का सार्वभौमिक कानून, 129

नास्तिकता, ix, 104-105, 108

बी

विश्वास, ix-xiv, 5-6, 8, 18, 22-25, 28-29, 33-37, 39-40, 43, 49, 51-52, 59-
64, 70, 76, 78, 83-85, 87-88, 95-
97, 109, 118-121, 126, 137, 143-
145, 150-152, 155-166, 173-180, 183-184, 188,
190-194; भाग्य में, 97; ईश्वर में, 22, 25, 177, 179, 191;
ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में, 34; ईश्वर और परलोक में, 22;
परलोक, 152, 160-166, 177; अदृश्य में, 5; लाभ, 160; सहायता
बिंदु प्रदान करना, 130, 176, 182, 191; साहस से उत्पन्न होना, 8;
सत्य, xiv, 39, 42, 118; मार्ग, 8, 158, 190

पाशविकता, 128

बिस्मिल्लाह, 1-2

भाईचारा, 32, 42-43, 90, 177-178, 181, 183; विश्वास, 183

बुराक, 48, 120

सी

विपत्ति, 181, 186-187

कोकेशियान, 187

कार्य-कारण, 54, 117-118

कारण, 127, 136, 138, 186-187; रचनात्मक प्रभाव को जिम्मेदार ठहराना, 110

निश्चितता, 124-125; ज्ञान पर आधारित, 34, 168; दृष्टि या अवलोकन पर आधारित, 168

चरित्र, 138; अच्छा, 26-27, 105, 107, 158, 165

शुद्धता, 154

बच्चे, 163, 165-166, 170, 179

ईसाई धर्म, 184, 186

ईसाई, 87, 89, 158

सभ्यता, 43, 71, 76, 90-93, 115, 117-
119, 127, 135-136, 181-186, 193;
इस्लामी, 127, 181; आधुनिक, 43, 90-
93, 136, 181, 185; शरीयत, 182; बुराइयाँ, 127; जादूगर, 184

करुणा, 95, 157, 165-166, 170, 179

संघर्ष, 129
विवेक, 189-191, 193-194
सृजन, 179

डी

मसीह विरोधी, 128
मृत्यु, xii, 6, 22-24, 28-29, 33-34, 36-37, 39, 42, 45-46, 48-50, 52, 54, 57, 61-62, 88, 95-96, 100, 116-118, 126, 129-130, 133, 142-143, 151, 155-156, 164-165, 175, 179, 192; निवास के परिवर्तन के रूप में, 49; सांसारिक कर्तव्यों से मुक्ति के रूप में, 39; अनन्त पीड़ा की ओर ले जाने वाली सजा के रूप में, 39, 151; प्रियजनों से दर्दनाक अलगाव के रूप में, 29; पुनर्मिलन के साधन के रूप में, 29; की घड़ी, 22, 37; की पीड़ा, 156; की वास्तविकता, 36
देवता, 123-126
डेनिज़ली, 39, 42-43, 95
डेनिज़ली जेल, 42, 95
दरवेश, 46
निराशा, 132, 189, 193
निरंकुशता, 186
(दिव्य) भाग्य, 34, 37, 42-43, 70, 97-99, 186, 190; लॉटरी, 37
गरिमा, 129, 132, 184
अपव्यय, 133, 137
दिव्यता, 68, 102, 106, 130
प्रलय दिवस, 171
ड्यूटी, 126

और

पृथ्वी, 125-126, 131
अहंकार, 52, 61, 101-102, 110-111, 190
मिस्र, 31, 105, 175
इंग्लैंड, 44
अंग्रेजी, xiv, 159
इस्कीसिर जेल, 154-155
यूरोप, 91, 127-131, 133, 136, 139, 186; सामूहिक व्यक्तित्व, 127; दूसरा, 127, 133

ईश्वर का अस्तित्व, 25, 178

एफ

परिवार, 42, 92, 131, 137, 165-166; जीवन, 92
अल-फ़राबी, 107, 109, 111
अल-फ़ातिहा, 167-168
परमेश्वर का भय, 23, 82
फ़िनलैंड, 44
प्रथम बुद्धि, 109
स्वतंत्रता, 181, 183, 186
स्वतंत्र इच्छा, 130
फ्रेंच, 185

जी

युवा गाइड ("युवाओं के लिए एक गाइड"), 151, 154, 156, 158, 161
उदारता, 139
जर्मन, 159, 185
अल-ग़ज़ाली, 109
ग्लेम्स, द, xv
सत्य की झलक, xv, 111, 181
महिमा, 61, 78, 192; दया, 192
अच्छे कर्म; दुख और विपत्तियाँ, 187
सरकार, 129, 138
ग्रीस; प्राचीन, 184
गंभीर, xii, 8, 10, 16, 21-22, 24, 28-29, 33-35, 37, 39, 41, 45-46, 49-51, 61-62, 74, 115-118, 120, 148, 151, 154, 156, 161-162, 174-175, 188; द्वार, 151; प्रकाशित दुनिया के द्वार के रूप में, 49; मध्यवर्ती क्षेत्र, 16, 37, 154; इंटरमीडिएट वर्ल्ड ऑफ, 62, 67, 70, 74, 117-118, 120
लालच, 130
मार्गदर्शन, 123, 126, 132-133
गाइड, 129, 133

एच

हज, 187

hamd (praise), 179

खुशी; शाश्वत, 153, 156

हृदय; शाश्वत प्रेम के लिए बनाया गया, 53; शाश्वत चाहने वाले का दर्पण, 53

असावधानी, 125, 133; पर्दा, 133

नरक, x-xi, xiii-xiv, 6, 18, 22, 37, 46, 59, 69, 95, 116, 153-154, 158, 161, 163-166, 189

लाचारी, 18, 23, 66, 69, 76; पहले ईश्वर, 23; अपने को साकार करना, 23

इसके बाद, x-xi, xiii, 8, 12-13, 18, 21-22, 28, 33, 35, 37, 40-41, 45, 48-49, 63, 65, 67, 72, 75, 78-79, 86, 96, 110, 115, 120, 125, 143-144, 148, 152, 159-166, 177, 178-179

सम्मान, 129, 139

होटल सेहिर, 95

हौरिस, 83

मानवता, 96, 153, 160-162, 165-166; आरोहण और अवरोहण, 67

मानव; पूर्णता, 32, 35, 90, 108, 118; आत्मत्व, 52, 61, 101-103, 105, 107, 109-111, 113, 190

विनम्रता, 132

हट (मछली), 169

मैं

इब्न सिना, 107, 109, 111

मूर्तिपूजा, 92, 105

अवैध आनंद, 136

बीमारी, 128, 164

इलुमिनिस्ट्स (इशराक़िय्युन), 109

आस्था, 143-144

अमरता, 153

कारावास, 160, 164

भारतीय मुसलमान, 187

विरासत, 92

इशारातुल-एजाज़, 91

इस्लाम, 143-145

इस्लाम, ix, xiii, 1, 6, 25, 42, 70, 76, 84, 93, 109, 126, 131-132, 137, 144-145, 158, 180-181, 183-185, 187, 190, 191, 193; के स्तंभ, 187

इस्तांबुल, 45, 56, 75

जे

जन्नतुल-फिरदौस (सबसे ऊंची मंजिल)। स्वर्ग), 194

ईर्ष्या, 135, 137

यीशु (पैगंबर), 87, 127-128

यहूदी, 87, 89, 158

जिहाद, 181

योना (पैगम्बर), 123-126

यूसुफ (पैगंबर), 41, 158, 165, 175

न्याय, 127, 166, 182

क

खिद्र, 156

रिश्तेदारी, 138

कोरह, 75

एल

लैलातुल-क़द्र, 43

पत्र, द, xv

जीवन, ix-x, xii, 2, 10, 12-13, 16, 18, 21-22, 28-29, 31-33, 35-38, 40, 42-49, 51-53, 56-57, 59-64, 69-75, 81, 84, 86, 88, 90-93, 95-96, 98, 100, 105-106, 108, 112, 115, 118-119, 125- 132, 137, 139, 141-145, 148, 151, 154-156, 159-166, 173, 176, 178, 182-183, 185, 191, 194; हृदय, आत्मा, 100

प्रकाश, 124, 126, 130; कुरान, 185

प्रेम, ix, xi, 27, 49, 53-55, 76-77, 81-84, 88, 92, 95, 117-118, 120-121, 126, 129-130, 135, 137-138, 141-144, 154, 156, 162, 164-166, 174, 178, 183, 191; लाक्षणिक, 137, 141; के लिए

ईश्वर, ८४, १४२; शाश्वत, प्रियतम के लिए, ८३; परलोक के लिए, १४४; संसार के लिए, ११, १४२, १४४; ब्रह्माण्ड के अस्तित्व के कारण के रूप में-

तनाव, 81; सच्चा प्यार, 141

लुकमान, 156

एम

(दिव्य) अभिव्यक्तियाँ; प्रत्येक वस्तु और प्राणी के लिए विशिष्ट, 124; अभिव्यक्तियाँ जो समस्त सृष्टि पर सर्वोच्च शासन करती हैं, 124

विवाह, 91-92, 138; प्रजनन के लिए, 92

शहादत, 188

भौतिकवाद, ix, xi, 44, 105, 108, 133, 159, 186; वैज्ञानिक, xi, 44, 133; प्लेग, 159

मौलाना जामी', 55

संदेशवाहक; सबसे महान, 157

गुमराही, 125, 127-128, 133; कायरता, 8

विनम्रता, 132

चंद्रमा, 124-125

नैतिकता, 139

मूसा (पैगम्बर), xiv-xv, 2, 44, 87, 184

मुहम्मद (पैगम्बर), 24, 29, 34-35, 45, 65, 79, 86, 95-96, 157, 180, 186; सबसे महान् संदेशवाहक, 138; अंतिम पैगम्बर के रूप में, 157; ईश्वर के सबसे महान संदेशवाहक के रूप में, 157; सत्य, 95; व्यक्ति, 95

आस्तिक, 144

मुस्लिम, 8, 12, 26, 34, 38, 42, 71, 87, 109, 133, 139, 141, 144-145, 157-159, 175, 181, 183, 187-188; समुदाय, 12

मुताज़िली स्कूल, 109

एन

राष्ट्रवाद, 182-183; आक्रामक, 32, 90; नकारात्मक, 182-183

राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस, 154

प्रकृतिवाद, ix, 44, 105, 107-108, 113

प्रकृतिवादी, 2, 93, 105

प्रकृति, 185-186, 189-191; सृजनात्मक शक्ति को श्रेय देते हुए, 110

नया कहा, 74, 111, 127

निम्रोद, 105, 186

अस्तित्वहीनता, 36, 51, 55-57, 95-96, 98, 103, 117, 128, 155, 161, 169, 174-175, 188-190; अंधकार, 51, 98, 188

नॉर्वे, 44

हठ, xiv, 144, 157, 186

वृद्धावस्था, 137

ओल्ड सैड, 74, 99, 111, 127

उमर खय्याम, 109

(दिव्य) एकता, 124, 149

पी

स्वर्ग, x, xii-xiii, 6, 10, 15-18, 22, 28-29, 32, 46, 49, 51, 53, 59-60, 62, 67, 69-70, 83-84, 93, 112, 118, 120-121, 126, 131-132, 142, 148, 153, 158, 162-163, 166, 170-171, 180, 194; सुख, 162; सर्वोच्च लाभ, 131

धैर्य, 23, 29, 39, 41, 165, 194

देशभक्ति, 130, 133

पेन ऑफ पावर, 52

किताब के लोग, 89

पूर्णता, 23, 28, 32, 35, 57, 59, 63-
65, 70-71, 73, 81-82, 87, 90, 97-98, 106, 108-109, 118, 120-121, 183, 185, 191; परमेश्वर की आराधना और सेवा के ज़रिए, 88; सीखने के ज़रिए, 63-64

फिरौन, चौदह, 16, 31, 61, 105, 110, 186; अहंकार, चौदह

फिरौन, 130

दार्शनिक, 8

दर्शन, xi, xiii, 24, 31-32, 90, 93, 105-111, 127, 131-132, 148, 168-
170, 173-175, 184; नियम, xiii

पुनरुत्थान और सर्वोच्च का स्थान
सभा, 22, 117

आनंद, x, 5-6, 23, 28, 31-32, 34-36, 38-
40, 42, 45, 54, 57, 65, 70, 72, 82-
83, 86-87, 92, 97-98, 109, 115-116, 118-119, 128-129, 131, 136, 142, 148-149, 154-157, 161-162, 164, 166, 174-175, 177, 179-180, 188, 190, 193-194; ईश्वर के भय से, 82

बहुदेववाद, 104, 107, 109

संभावना, 136

अनंत काल के बाद, 162, 176

गरीबी, 1, 18, 22-24, 46, 58, 64, 66, 69, 73, 76, 90, 107-109, 118, 161, 176, 182

प्रार्थना, 8, 61-68, 75, 77, 124, 131, 192, 194; तरह का, 66; सक्रिय, 66, 75; मौखिक और सक्रिय, 75; हमारे स्वभाव की जीभ से पेश किया गया, 75; सक्रिय और स्वभाव से, 66; मौखिक और दिल से, 66

प्रार्थना, 9-10, 65, 91, 123, 192; विहित, 158; आत्मा, हृदय और मन को सांत्वना देना, 10; ग्रहण,

65; निर्धारित, 9-12, 21, 23, 38-39, 85; धर्म के स्तंभ के रूप में, 9; अनिवार्य, 190

पूर्व-अनंत काल, 162, 176

(दिव्य) संरक्षण, 179

जेल, 38-43, 95, 151-152, 154, 158, 163-164, 175; जोसेफ स्कूल के रूप में, 41, 158, 165

कैदी, 33, 38-43, 154, 160, 164

नबी, 105-110

संरक्षण, 135-136

क्यू

कुरान, ix-x, xii-xiv, 10, 16-17, 21, 24, 28-29, 31-32, 38-39, 41-44, 49-
50, 53, 70, 74, 77, 79, 88-94, 101, 111-113, 115, 118-121, 126-129, 131-133, 135-136, 144-145, 150-

151, 157-158, 160, 166, 168-169, 175, 178, 180, 182-185, 190-191, 194; की सभ्यता, 182; चमत्कारी, 160; चमत्कारपूर्ण प्रदर्शन, xiv, 38, 44, 93, 132, 184, 194; की चमत्कारपूर्णता, 90; की आज्ञाओं और निषेधों का पालन करना, 24; सत्य और असत्य की कसौटी के रूप में-

हुड, 126; मार्गदर्शन, 126, 132; अद्वितीयता, 89; चमत्कारिक रूप से वाक्पटु, 178; विद्यार्थी, 32, 74, 131; शिक्षाएँ, 151; सत्य, xiv, 145; बुद्धि, 168-169; बुद्धिमान, 160; परमेश्वर के वचन के रूप में, 181

आर

दौड़, 32, 52, 90, 163

नस्लीय भेदभाव, 182

नस्लवाद, 32, 90, 104, 182-183

किरणें, द, xv

तर्क, द, xv

अनंत काल का क्षेत्र, 16

सस्वर पाठ, १३२

सुलह, 42

प्रतिबिंब, xiii, 2, 44, 47, 77-78, 162
स्मरण, 2
सम्मान, 127, 129, 137-139, 162, 164-
166, 175-176, 178
पुनरुत्थान, 22, 61, 74, 110, 117, 126,
138, 189, 191; दिन, 126, 138; पुष्टि, 191; शारीरिक, 110
रिसाले-ए-नूर के छात्र, 159-160
रोम, 184-185; प्रतिभा, 184-185
अर-रुफ़ाई, 131

एस

संतत्व, 188
संत, 131-132
मोक्ष, 124, 126
शैतान, 130
विज्ञान; अंध विश्वास, xiv; कानून, xiii
वैज्ञानिकता, xi, 31, 44, 93
आत्मत्व; ईश्वरत्व की कुंजी के रूप में
नाम, 101
आत्म-बलिदान, 130-131
अपनी आत्मा और संपत्ति को परमेश्वर को बेचना, 15; अपनी आत्मा और
संपत्ति को स्वर्ग के बदले में बेचना, 15-16
वियोग, 46, 57; पीड़ा, 177; वेदना, 45
शद्दाद, 105
शाह नक्शबंद, 145
शरिया, 86, 138, 182-186; मार्गदर्शन, 184-185; मुहम्मद, 186; नियम,
86; सत्य, 184
ash-Shadhili, 132
उल्का, 126
सिक्के-ए तसदीक-ए गेबी, xi
पाप; प्रमुख, 11-12, 21, 23-24
सीरत ब्रिज, 22
सामाजिक जीवन, 127
एकजुटता, 32, 90, 181, 183
आत्मा; दुष्ट-आदेश, 125, 127-128
आकस्मिकताओं का क्षेत्र, 84
स्पिरिट्स, 155, 163, 170, 183-185, 191, 193-194
आध्यात्मिक आनंद, 36, 162
मूसा का डंडा, xiv-xv, 44, 184
सीधा रास्ता, 39, 107, 113, 133, 143,
167, 188, 190, 193-194
सूफ़ी संप्रदाय, 131
प्रार्थना, 8, 13, 50, 64-66, 123-125, 147, 190, 192; पैगंबर योना
की प्रार्थना, 123-124
सुप्रीम साइन, द, (अयातुल-कुबरा), 167-168
सर्वोच्च सिंहासन, 85, 123, 131
सुप्रीम ट्रस्ट, 69, 78, 190
सूरतुल-फ़ातिहा, 167-168
सुरतु'एन-नूर, 167
संदेह, 138
स्वीडन, 44

टी

तातार, 187
आभार, 85
धन्यवाद, 2-3, 6, 23, 64, 81, 99, 148
थावर (बैल), 169
जीभ; पूर्ण असहायता की, 66; प्राकृतिक आवश्यकताओं की, 66; क्षमता
की, 66; स्वभाव की, 1
स्वर्ग का तौबा वृक्ष, 6, 101, 156
सृष्टि का वृक्ष, 69-70, 87
सच्चा, दर्द रहित आनंद केवल विश्वास में ही पाया जा सकता है, 156
(दिव्य) विश्वास, 69, 78, 101, 103-104, 190

में

अविश्वास; अंधकार, 59, 190; निरपेक्ष, xi, xiv; जिद्दी, स्वेच्छाचारी, xiv;
मार्ग, 8

संयुक्त राज्य अमेरिका, 44

एकता, 183, 187

(दिव्य) एकता, xiv, 44, 62, 108

सार्वभौमिकता, 84

ब्रह्मांड; की सच्ची प्रकृति, ix; सृष्टि की पुस्तक के रूप में, 76; की पुस्तक, 17

अनदेखा, 132

शहरी लोग, 139

उवेस अल-क़रानी, 147

वी

प्रकाश का छंद, xi

में

पश्चिमी लोग, 133

पश्चिमी दर्शन, 132

महिलाओं; की प्रकृति, 136; के लिए ड्रेस कोड, 135, 137, 139

शब्द, द, xv, 115, 145

विश्व, x-xiv, 1, 5-6, 8, 10, 13, 16-17, 22, 25, 28-29, 32-37, 44-52, 54-57, 60-62, 64, 67, 70, 72-73, 76, 78-79, 82, 85, 87-91, 93, 95-96, 98, 100-101, 106, 110, 112, 115-120, 125- 126, 128, 130-132, 137, 141-145, 147-149, 151-152, 155-166, 168-171, 174-181, 184-185, 187-190, 192-194

दुनिया; दया की, 117-118; प्रतिनिधित्व की, 181, 186, 188; प्रतिनिधित्व की प्रतिनिधित्व या आदर्श रूप, 181; प्रतिनिधित्व या अमूर्त रूप, 70; आत्माओं, 8; परलोक, 148; अदृश्य, 96, 117

विश्व युद्ध, 43, 158-159, 181

प्रथम विश्व युद्ध, 181

द्वितीय विश्व युद्ध, 43

आराधना, x, 7-8, 10, 12-13, 32, 34-35, 39-41, 54, 61-62, 64-68, 70-71, 73, 77-78, 81, 83-89, 99, 103, 105, 106-107, 111, 117, 120, 123, 126, 131, 141, 154, 162; केवल परमेश्वर को प्रसन्न करने और उसके लिए किया गया, 66; परमेश्वर का, 87; प्रशिक्षण, कर्तव्यों का प्रतिनिधित्व करता है, 12

और

युवा लोग, 133

युवावस्था, 18, 22, 34-35, 37-39, 74, 78, 81, 154, 163-164, 166; की इच्छाएँ, 34; शाश्वत, 163, 166; का नशा, 78; का सुख, 37

युशा हिल, 56

साथ

ज़काह, 91, 187

जक्कुम नरक का पेड़, 6, 101, 105, 107

ज़ुलेखा; की बदनामी, 175

ईश्वर के नामों और गुणों की सूची

ए

(दिव्य) गुण; सौंदर्य और अनुग्रह, 180; महिमा, 180

बी

सर्वसुन्दर, 55, 67, 77-78, 84-85, 98-99, 120, 180

सर्व-हितकारी, 148

सर्व-प्रदान, 55, 170

प्रावधान प्रदान करनेवाला, 2-3, 12

सी

सर्व-देखभाल, 148

कारणों का कारक, 124-125

सर्व-करुणामय, xi-xii, 1, 5-9, 11, 15, 21, 23, 25, 29, 31, 33, 45, 47-48, 53, 59, 66-67, 69, 77, 81, 83, 89, 95, 97, 101, 115-116, 119, 123-124, 127, 132, 135, 141, 143, 147-148, 151, 156, 167, 170, 173-174, 179-181, 194

सृष्टिकर्ता, ix, xiii, 8-9, 16-18, 21, 29, 46-48, 53, 70, 72, 76, 81-82, 84-85, 87, 99, 101-103, 106, 108-110, 125, 129-131, 141, 147, 149, 157, 167-171, 174, 178, 187, 191; स्वर्ग और पृथ्वी का, 125; ब्रह्मांड का, 171

ऑल-क्रशिंग, 48

और

शाश्वत प्रिय, 54, 88

अनन्तकाल से मांगा गया, 3, 8, 12, 17, 49, 51, 53, 55, 60, 81, 110, 117-118, 180, 192

शाश्वत स्वामी, १

अनन्त, 123; शासक, 1

सर्वोत्कृष्ट, 187

एफ

सर्व-अनुकूल, xii

सर्व-क्षमाशील, 148

सर्व-क्षमाशील, xi-xii

जी

सर्व-उदार, 66

जीवनदाता, 48, 98

सर्व-महिमावान, 38, 40-42, 78-79, 96, 123-126

सर्व-दयालु, 49

ऑल-ग्रेट, 5, 62, 78

सबसे महान ईश्वरीय नाम, 194

गार्जियन, 60-61, 76, 123

एच

सर्व-श्रवण, 111

वारिस-टू-ऑल, 148

ऑल-हाई, 123

सर्व-पवित्र, 194

मैं

सर्व-स्वतंत्र, 194

सर्व-विरासत, xii, 179

जे

सर्व-न्याय, xii, 55, 65, 148, 194

क

सर्वज्ञ, तेरहवीं, ७९, ९६, १११, ११६, ११९, 126, 149, 180

एल

ऑल-लिविंग, 25, 29, 79, 194

प्रभु, xiii, 8-10, 12, 16, 19, 23, 29, 43, 50, 52, 65-66, 68, 76-77, 79, 82, 87, 123-
126, 129-131, 147-149, 169-171; सर्वोच्च सिंहासन का, 123

आधिपत्य, xiii, 24, 28, 66, 77-78, 102, 106, 109, 130, 149

एम

ऑल-मैजेस्टिक, 55, 59-60, 77, 82-84, 96, 102, 104, 106, 109-110, 120,
164, 169, 171, 192

मेजेस्टी, 156, 180

मेकर, 96, 189

(दिव्य) दया, 179

दयालु, xi-xii, 1-2, 5, 7, 9, 11, 15, 18, 21-22, 25, 29, 31, 33, 45, 47,
48-
50, 53, 55, 58-59, 61-62, 64, 73, 81, 83, 89, 95, 97, 100-101, 113,
115, 118-119, 121, 123, 127, 135, 141, 143, 147-148, 151, 156,
167, 170, 173-174, 179-181, 190-191, 194

सर्वशक्तिमान, 2, 62, 65, 69, 101, 104, 108, 110, 123

नरेश, 16

दयालुओं में सबसे दयालु, 13, 29, 79, 123

सर्व-उदारवादी, बारहवीं, 6, 12, 17, 23, 47-48, 50, 53, 69, 72, 78, 116, 129,
132, 148, 170

एन

अनिवार्यतः विद्यमान एक, 125

सर्व-पोषण, xii

सर्व-उत्पत्ति, 99

सर्व-अतिशय, 48

मालिक, 159, 162

ब्रह्माण्ड का स्वामी और संचालक, 159

पी

सर्व-स्थायी, 55, 119

पावर, 168, 171, 175

सर्वशक्तिमान, xiii, 1, 18, 67, 109-110,
116, 118, 149, 180, 188

सर्व-संरक्षण, 170, 179

रक्षक, 66

सर्व-प्रावधान, xi, 2, 8, 84, 147, 170

ज़रूरतों का प्रदाता, 64

ऑल-प्योर, 180, 194

आर

मृतकों का उद्धारक, 148

सर्व-पुनरुत्थान, xii

शरीयत का खुलासा करनेवाला, 86

पुनर्जीवित, 148

सर्व-पुनर्जीवित, xii

एस

सर्व-दर्शी, 17

स्वनिर्भर, 16

स्व-निर्वाह, 25, 29, 79, 194

सॉवरेन, xii, 106, 164, 175, 190

सूर्य और चंद्रमा का वशीकरण, xiii, 171

सस्टेनर, 8, 123

टी

सच्चा प्रिय, 54, 56-57, 117

में

परम सत्य, 24, 99

परम सत्य और सदा-स्थिर, 99

अद्वितीय और शाश्वत रूप से प्रार्थनीय, 192

में

सर्वज्ञ, xii, 8, 17, 46-47, 55, 61, 67, 69, 76, 79, 96, 99, 102, 112, 116,
119, 126, 148, 179, 194